आओ ! संस्कृत सीखें !

(भाग-3)

-: गुजराती लेखक :-

पं. शिवलालभाई-पाटण

-: हिन्दी-संपादक :-

आचार्य श्री रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.

आओ ! संस्कृत सीखें
(भाग-3)

-: गुजराती लेखक :-

पं. शिवलालभाई नेमचंदभाई शाह-पाटण

हिन्दी अनुवाद के संपादक

परम शासन प्रभावक, महाराष्ट्र देशोद्धारक **पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद् विजय रामचन्द्रसूरीश्वरजी महाराजा** के तेजस्वी शिष्यरत्न **बीसवीं सदी के महान् योगी, नवकार साधक पूज्यपाद पंन्यासप्रवर श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य** के चरम शिष्यरत्न प्रवचन-प्रभावक, सरस्वती नंदन, जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर **पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.**

277

प्रकाशक

दिव्य संदेश प्रकाशन

C/o. सुरेन्द्र जैन, Office No. 304, 3rd Floor,
बे.व्यु. बिल्डिंग, विंग-ईस्ट बे, डॉ. एम.बी. वेलकर स्ट्रीट,
कालबादेवी, मुंबई-400 002.
Cell 84 84 84 84 51 (only whatsapp)

हिन्दी आवृत्ति : प्रथम • **मूल्य :** 360/- रुपये • **प्रतियाँ :** 500
विमोचन : दि. 11-8-2026
विमोचन स्थल : श्री प्रेमसूरि आराधना भवन, पिंडवाडा, (राज.)
• **Website :** divyasandesh.store

आजीवन सदस्य योजना

आजीवन सदस्यता शुल्क - 4000/- रु.

• आप जैन धर्म के रहस्य, जैन इतिहास, जैन तत्त्वज्ञान, जैन आचार मार्ग, प्रेरणादायी कथाएँ आदि का अध्ययन करना चाहते हों तो आज ही आप **दिव्य संदेश प्रकाशन** मुम्बई की आजीवन सदस्यता प्राप्त कर लें। सदस्य बनते ही अध्यात्मयोगी निःस्पृह शिरोमणि स्व. पूज्यपाद पंन्यासप्रवर **श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्यश्री** एवं उन्हीं के चरम शिष्यरत्न प्रवचन प्रभावक परम पूज्य ***आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.*** सा. द्वारा लिखित उपलब्ध 7 पुस्तकें दी जाएंगी और **अर्हद् दिव्य संदेश** मासिक तथा भविष्य में हिन्दी भाषा में प्रकाशित पुस्तकें (Open Book Exam साधु–साध्वी उपयोगी पुस्तकें एवं पुनः मुद्रित पुस्तकों को छोड़कर) घर बैठे प्राप्त होगी। आप आजीवन सदस्यता शुल्क मुंबई या बैंगलोर के पते पर दिव्य संदेश प्रकाशन-मुंबई के नाम से चैक व ड्राफ्ट से भेजें।

प्राप्ति स्थान

1. चेतन हसमुखलालजी मेहता
बोरीवली (West) (M.S.)
M. 9867058940

2. प्रवीण गुरुजी
C/o. श्री आत्म कमल लब्धिसूरि
जैन पुस्तकालय
श्री आदिनाथ जैन टेंपल,
चिकपेठ, बेंगलोर-560 053.
M. 9036810930

3. चंदन एजेन्सी
607, चीरा बाजार,
मुंबई-400 002.
M.9820303451

आजीवन सदस्यता शुल्क

Rs. 4000/- ***भिजवाने का पता एवं पुस्तक-प्राप्ति-स्थान :***

(1) दिव्य संदेश प्रकाशन
C/o. सुरेन्द्र जैन, Office No. 304, 3rd Floor, बे व्यु बिल्डिंग,
विंग-ईस्ट बे, डॉ. एम.बी. वेलकर स्ट्रीट, कालबादेवी,
मुंबई-400 002. Mobile : 84 84 84 84 51 (only whatsapp)

(2) दिव्य संदेश प्रचारक
प्रकाश बड़ोल्ला, 52, 3rd Cross, शंकरमट रोड, शंकरपुरा,
बैंगलोर-560 004. M. 8971230600

प्रकाशक की कलम से...

अध्यात्मयोगी, नि:स्पृह शिरोमणि, नमस्कार महामंत्र के बेजोड साधक **पूज्यपाद पंन्यास प्रवर श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य** के कृपापात्र चरम शिष्यरत्न **मरुधररत्न, सरस्वती नंदन, जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** के संयम सुवर्ण वर्ष की अनुमोदनार्थ उन्हीं के द्वारा हिन्दी भाषा में संपादित **277वीं पुस्तक 'आओ ! संस्कृत सीखें भाग-3''** का प्रकाशन करते हुए हमें अत्यंत ही हर्ष हो रहा है। भवोदधित्राता अपने गुरुदेवश्री के कालधर्म के बाद वि.सं. 2038 से प्रारंभ हुई उनकी साहित्य यात्रा निराबाध गति से चल रही है, जो निकट भविष्य में **300 के अंक को पार कर जाएगी ।**

यद्यपि श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ में हिन्दी भाषी विशाल वर्ग हैं, परंतु श्वे.मू. जैन संघ का विपूल साहित्य गुजराती भाषा में है। हिन्दी साहित्य की बहुत बडी कमी थी, परंतु वर्षों पूर्व वि.सं. 2046 में जयपुर शहर में शिखरबद्ध जिनालय की प्रतिष्ठा के पावन प्रसंग पर जब **मु.श्री रत्नसेनविजयजी म.सा.** ने देखा कि– **''दिगंबर, स्थानकवासी और तेरापंथी का हिन्दी भाषा में विपूल साहित्य है, परंतु श्वे. मूर्तिपूजक संघ का हिन्दी साहित्य बहुत ही कम है।''** इस बात को लक्ष्य में रखकर **पू. मुनिराजश्री** ने हिन्दी भाषा में साहित्य सर्जन का संकल्प किया। अपने परमोपकारी गुरुदेवश्री की असीम कृपावृष्टि के फल स्वरुप वे इस कार्य में अच्छी सफलता हासिल कर सके। आज वह साहित्य का 277 की सीमा को पार कर चूका है। निकट भविष्य में ही उनकी 300 वीं पुस्तक के प्रकाशन की संभावना है।

हमें आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास हैं कि पूज्यश्री द्वारा संपादित यह प्रकाशन हिन्दी भाषी प्रजा के लिए खूब उपयोगी बनेगा ।

संपादक की कलम से...

वि.सं. 1193 में गुजरात के सम्राट् सिद्धराज जयसिंह ने कलिकाल सर्वज्ञ **हेमचन्द्राचार्यजी** को संस्कृत व्याकरण रचने के लिए विनती की थी ।

बुद्धि निधान **हेमचन्द्रसूरिजी म.** ने एक ही वर्ष की अल्पावधि में लघुवृत्ति, बृहद्वृत्ति तथा बृहन्न्यास युक्त **'सिद्ध हेमचन्द्र शब्दानुशासनम्'** व्याकरण की रचना की थी ।

18 देशों के अधिपति सम्राट् कुमारपाल महाराजा ने भी इस व्याकरण का अभ्यास कर संस्कृत भाषा पर प्रभुत्व किया था ।

इसी व्याकरण को सरलता से समझने के लिए उपाध्याय श्री मेघविजयजी ने **'चंद्रप्रभा हैम कौमुदी'** की रचना तथा **महोपाध्याय श्री विनयविजयजी म.** ने **'हैमलघु-प्रक्रिया'** की भी रचना की थी ।

गुजराती भाषा समझने वाला भी संस्कृत भाषा को सीख सके, इसके लिए पाटण (गुज.) के पंडितवर्य **श्री शिवलालभाई** ने **हैम संस्कृत प्रवेशिका-भाग-1, 2 व 3** की रचना की थी ।

मैंने भी अपनी मुमुक्षु अवस्था में **पू.मु.श्री धुरंधरविजयजी म.** तथा **पू.मु.श्री वज्रसेनविजयजी म.सा.** के पास **सिद्धहेमसंस्कृत प्रवेशिका भाग 1 व 2** का तथा दीक्षा बाद पाटण में **पं. शिवलालभाई** के पास **सिद्धहेमशब्दानुशासनम्-लघुवृत्ति** तथा **बृहद्वृत्ति** का अभ्यास किया था ।

हिन्दी भाषी प्रजा भी संस्कृत भाषा का अभ्यास सरलता से कर सके, इस लक्ष्य को ध्यान में रखकर वर्षों पूर्व **सिद्धहेम संस्कृत प्रवेशिका** के **भाग 1 व 2** का हिन्दी भावानुवाद तैयार किया था । अब तीसरे भाग का भी हिन्दी में प्रकाशन हो रहा है ।

इस तीसरे भाग में अनुवाद में **मु.श्री स्थूलभद्रविजयजी म.** ने भी खुब श्रम लिया है, इसके लिए वे धन्यवाद के पात्र है ।

संस्कृत व्याकरण में भी कृदन्त और तद्धित के प्रत्ययों के सूत्र बहुत है । संस्कृत व्याकरण के सात अध्यायों में पांचवे, छटे और सातवें अध्याय के सैकडों सूत्र कृदन्त और तद्धित संबंधी ही है ।

सिद्धहेम प्रवेशिका की तीसरी बुक में लगभग यही विषय है ।

इस भाग का अच्छी तरह से अभ्यास किया जाय तो संस्कृत भाषा पर अच्छा प्रभुत्व प्राप्त हो सकता है ।

भाषा बोध का सही उपयोग तत्त्वज्ञान का अभ्यास ही है ।

पूर्वाचार्य महर्षियों ने भावी प्रजा के हित के लिए संस्कृत भाषा में सैकडों ग्रंथों का सर्जन किया है ।

इस पुस्तक का अभ्यास कर सभी पुण्यात्माएं जीवन में तत्त्वज्ञान को प्राप्त करे और उसके फल स्वरुप आत्म कल्याण के मार्ग में खूब खूब आगे बढे, इसी शुभ कामना के साथ !

जैन पौषध शाला
सुमेरपुर (राज.)
दि. 03-07-2026

आचार्य रत्नसेनसूरि

Introduction

संपादक का संक्षिप्त-जीवन परिचय

गृहस्थ नाम	: राजु (राजमल चोपड़ा)
माता का नाम	: चंपाबाई
पिता का नाम	: छगनराजजी गेनमलजी चोपड़ा
जन्मभूमि	: बाली (राज.)
जन्म तिथि	: भादो सुद-3, संवत् 2014 दि. 16-9-1958
बचपन में धार्मिक अभ्यास	: पंच प्रतिक्रमण-नवस्मरण आदि
ब्रह्मचर्यव्रत स्वीकार	: 18 जून 1974
व्यावहारिक अभ्यास	: 1st year B.Com. (पार्श्वनाथ उम्मेद कॉलेज फालना-राज.)
दीक्षा दाता	: **पू.पं. श्री हर्षविजयजी गणिवर्य**
गुरुदेव	: अध्यात्मयोगी पू. पंन्यास **श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य**
दीक्षा दिन	: माघ शुक्ला 13, संवत् 2033 दि. 2-2-1977
समुदाय	: शासन प्रभावक पू.आ. **श्री रामचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.**
दीक्षा दिन विशेषता	: भारत भर में लगभग 50 ऊपर दीक्षाएँ
108 मुमुक्षु वरघोड़ा	: 9 जनवरी 1977, मुंबई
दीक्षा स्थल	: न्याति नोहरा-बाली राज.
दीक्षा समय उम्र	: 18 वर्ष
बड़ी दीक्षा	: फाल्गुन शुक्ला 12, संवत् 2033
बड़ी दीक्षा स्थल	: घाणेराव (राज.)
प्रथम चातुर्मास	: संवत् 2033 पाटण पू.पं. श्री हर्षविजयजी के सान्निध्य में ।

- **अभ्यास :** प्रकरण, भाष्य, 6 कर्मग्रंथ, कम्मपयडी, पंचसंग्रह, न्याय, काव्य, कोश, संस्कृत-प्राकृत व्याकरण, संस्कृत-प्राकृत साहित्य वाचन, ज्योतिष, आगम वाचन आदि ।
- **भाषा बोध :** हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती, राजस्थानी, संस्कृत, प्राकृत, मराठी आदि ।
- **प्रथम प्रवचन प्रारंभ :** फागुन सुदी 14, संवत् 2034 पाटण (गुजरात) ।
- **चातुर्मासिक प्रवचन प्रारंभ :** बाली संवत् 2038 ।

- **विहार क्षेत्र :** राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, कर्णाटक, तामिलनाडू ।
- **चातुर्मास :** राजस्थान में 12, गुजरात में 11, मध्यप्रदेश में 1, महाराष्ट्र में 21, कर्णाटक में 3, तामिलनाडू में 2 ।
- **पादविहार :** लगभग 49,000 कि.मी. ।
- **अंजन शलाका एवं प्रतिष्ठाएं :** मंड्या (कर्णाटक) वलवण, कामसेट, भायंदर (महा.) राजपुरा, भोपाल सागर, करेडा तीर्थ, राजसमंद, (दयालशा किल्ला), भारुंदा (राज.) आदि में अंजनशलाका प्रतिष्ठा, जयपुर (राज.) में शिखरबद्ध मंदिर की प्रतिष्ठा, बेंगलोर में 3 गृह जिनालय, पूना तथा कोयम्बत्तुर में एक-एक गृह जिनालय। एम्पायर स्क्वेअर-चिंचवड में संघ मंदिर की प्रतिष्ठा ।
- **(छ'री पालित संघ में मार्गदर्शन-प्रवचन) :** बरलूट से शत्रुंजय, गोदन से जैसलमेर, वल्लभीपुर से पालीताणा, लुणावा से राणकपुर पंचतीर्थी ।
- **छ'री पालक निश्रादाता :** उदयपुर से केशरियाजी, गिरधरनगर से शंखेश्वर, धूलिया से नेर, कराड़ से कुंभोज, सोलापुर से बार्शी, भिवंडी से महावीर धाम, कर्जत से मानस मंदिर, हस्तगिरि से शत्रुंजय होकर गिरनार, शत्रुंजय बारह गाऊ, सेवाडी से राणकपूर पंचतीर्थी, बेंगलोर से सुशीलधाम, कोयम्बत्तूर से अव्वलपुंदरी, उदयपुर से दयालशा किल्ला ।
- **प्रथम पुस्तक आलेखन :** ``**वात्सल्य के महासागर**'' वि.सं.संवत् 2038 ।
- **अद्यावधि प्रकाशित पुस्तकें :** 278 ।
- **शिष्य-प्रशिष्य : स्व.मु. श्री उदयरत्नविजयजी म., स्व.मुनि श्री केवलरत्नविजयजी म., स्व.मुनि श्री कीर्तिरत्नविजयजी म., मुनि श्री प्रशांतरत्नविजयजी म., मुनि श्री शालिभद्रविजयजी म., मुनि श्री स्थूलभद्रविजयजी म., स्व. मुनि श्री यशोभद्रविजयजी म., मुनि श्री विमलपुण्यविजयजी म., मुनि श्री निर्वाणभद्रविजयजी म. मुनि श्री पुण्यबलविजयजी म.**
- **उपधान निश्रा दाता :** कुर्ला, धुले, येरवडा, आदीश्वर धाम (दो बार), कर्जत, विक्रोली, मोहना, पालीताणा (दो बार), सेसली, कीर्तिस्तंभ (घाणेराव), नासिक, सुशीलधाम (बेंगलोर), मैसूर, महावीर धाम (मुंबई), लोढा धाम, सुखधाम (राज.), महावीर जैन विद्यालय-उदयपुर ।
- **गणि पदवी :** वैशाख वदी-6, विक्रम संवत् 2055, दि.7-5-1999 चिंचवड गाँव, पूना ।
- **पंन्यास पदवी :** कार्तिक वदी-5, वि.सं. 2061, दि.2-12-2004 श्रीपालनगर, मुंबई ।
- **आचार्य पदवी :** पोष वदी-1, विक्रम संवत् 2067, दि. 20-1-2011 थाणा ।

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ संख्या
पाठ-1 धातुपाठ में अपठित धातु	1
पाठ-2 स्वार्थिक प्रत्ययान्त धातुएँ	6
पाठ-3 कण्ड्वादि धातुएँ	10
पाठ-4 यङन्त धातुएँ (यङन्त प्रक्रिया)	13
पाठ-5 यङ्लुप् धातु (यङ्लुबन्त प्रक्रिया)	20
पाठ-6 नाम धातु	24
पाठ-7 कृदन्त	35
पाठ-8 कृदन्त	60
पाठ-9 कृदन्त	69
पाठ-10 कृदन्त	83
पाठ-11 विशेष प्रत्यय विधि	102
पाठ-12 रक्तादि संस्कृत भक्ष्य पर्यन्त अर्थ	108
पाठ-13 शेष अर्थों में प्रत्यय	117
पाठ-14 इकण् प्रत्यय	131
पाठ-15 वहति आदि अर्थ	143
पाठ-16 `वह उसका है' `वह उसमें है' अर्थ में	163
पाठ-17 प्रकृत आदि अर्थ	178
पाठ-18 तद्धित विधि	186
तद्धित परिशिष्ट नियम	197
व्याकरण में द्वित्व के विषय में कुछ नियम	201
धातुकोश:	204
शब्दकोश:	208

॥ शासनपति श्री महावीरस्वामिने नमः ॥
॥ श्रीमद् प्रेम-रामचन्द्रसूरि-पं.श्री भद्रंकर-वज्रसेनविजयेभ्यो नमः ॥

शब्द-प्रमाण-साहित्य-छन्दो-लक्ष्म-विधायिनाम्
श्री हेमचन्द्रपादानां प्रसादाय नमो नमः ॥

पहला–क्रियापद प्रकरण

पाठ–1

धातुपाठ में अपठित धातु

मार्ग दर्शिका पुस्तक के नियम –

धातु-पठित और अपठित इस प्रकार दो भेद है ।

1) पठित :– धातु पाठ में पठित (=कहे हुए) है, वे धातु ।

2) अपठित :– धातु पाठ में अपठित (=नहीं कहे हुए) है, वे धातु ।

अपठित धातु **लौकिक, सौत्र** और **वाक्य-करणीय** इस प्रकार से तीन भेद है । पठित धातुओं में भी इसी प्रकार तीन भेद है ।

लौकिक धातु = जिन धातुओं का लोक व्यवहार में प्रयोग किया है, लेकिन लोकोत्तर व्यवहार में नहीं है ।

सौत्र धातु = जिन धातुओं का प्रयोग व्याकरण के सूत्रों में किया गया है ।

वाक्य-करणीय धातु = जिन धातुओं का प्रयोग शिष्ट पुरुषों के द्वारा वाक्य बनाने में किया गया है ।

(वाक्य-करणीय धातु भी जिनका लोक व्यवहार में प्रयोग हुआ है, वे लौकिक कहे गए है और सूत्र में प्रयोग किये गए है वे सौत्र कहे गए है । वाक्य करणीय और सौत्र लोकोत्तर व्यवहार में प्रयोग किये गए है, परंतु लौकिक लोकोत्तर व्यवहार में प्रयोग नहीं किये गए है ।)

भू आदि सभी दस गणों के [1]धातु पाठ में कहे हुए धातु पहले दिये हुए है। अब यहाँ, धातुपाठ में न कहे अपठित–लौकिक, सौत्र और वाक्य करणीय धातु दिये हुए है–

(1) लौकिक धातुएँ

क्लव् (ग.1.आ.)=फीका पडना –*विक्लवते ।*

वीज (ग.10.पर.)=लहराना, पंखा करना । –[2]*वीजयति ।*

हील (ग.10.पर.)=निंदा करनी, अपमान करना ।–*हीलयति/अवहीलयति ।*

[3]**अन्दोल (ग.10.पर.)**=हिलना, झूलना, डोलना ।–*अन्दोलयति ।*

हिन्दोल (ग.10.पर.)=हिलना, झूलना, डोलना ।–*हिन्दोलयति ।*

प्रेङ्खोल (ग.10.पर.)=हिलना, झूलना, डोलना ।–*प्रेङ्खोलयति ।* आदि

(2) सौत्र धातुएँ

स्तम्भ् (ग.5/9.पर.)=अटक जाना, अक्कड होना–*स्तभ्नाति । स्तभ्नोति ।*

उद् + स्तम्भ् में स्तम्भ् के `स्' का लोप होता है ।–*उत्तभ्नाति ।*

स्तभ्यते (कर्मणि) ।

स्तुम्भ् (ग.5/9.पर.)=अटक जाना, अक्कड होना–*स्तुभ्नाति । स्तुभ्नोति ।*

स्कम्भ् (ग.5/9.पर.)=अटक जाना, अक्कड होना–*स्कभ्नाति । स्कभ्नोति ।*

स्कुम्भ् (ग.5/9.पर.)=अटक जाना, फैलाना – *स्कुभ्नाति । स्कुभ्नोति ।*

तन्द्रा (ग.2.पर.)=आलस करना – *तन्द्राति । तन्द्रालु* = *आलसी ।*

जु (ग.1.पर.)=वेगवाला होना – *जवति ।*

तर्क् (ग.1.पर.)=विचार करना – *तर्कति । तर्क* = *विचार ।*

अर्घ् (ग.1.पर.)=मूल्य करना – *अर्घति । अर्घः* = *मूल्यम्* = *कीमत ।*

टिप्पणी 1. सिद्धहेम व्याकरण में दिये धातुपाठ ।

2. वीज + इ–द्वि. पाठ 35 नियम. 2 की सुचना के अनुसार अकारान्त धातु के बाद अशित् प्रत्यय आने पर अन्त्य 'अ' का लोप होता है ।)

वीज् + इ – वीजि + ति (भाग-2 पाठ 1 नियम 2 से)

वीजि + अ (शव्) + ति = वीजयति ।

3. दसवे गण में **दुल्** (पर.) = हिलना धातु है । – दोलयति । दोला (स्त्री) = झूला ।

तुर् (ग.1.पर.)=जल्दी जाना – ***तोरति । तुरः*** = *शीघ्रगामी ।*

आतुरः = *रोगी । **तुरो गच्छति इति तुरगः*** = *अश्व ।*

लुल् (ग.1.पर.)=कांटना, डोलना – ***लोलति । आलोल*** = *डोलता ।*

पश् (ग.1.उभ.)=बाधा करनी, गुंथना, जाना । –***पशति । पशते ।***

स्पश् (ग.1.उभ.)=बाधा करनी, गुंथना, जाना । –***स्पशति । स्पशते ।***

पस् (ग.1.उभ.)=जाना, बांधना, रहना । –**पसति । पसते । प्रस्त्यम् गृहम् ।**

चुक्ष् (ग.1.पर.)=स्वच्छता रखनी । –**चुक्षति ।**

आदि अन्य धातुएँ

(3) वाक्य–करणीय धातुएँ

चुलुम्प् (ग.1.पर.)=छेदना । – ***चुलुम्पति ।***

कूच (ग.1.पर.)=खोलना । – ***कूचति ।***

उल्लल (ड) (ग.10.पर.)=उलडना, उछालना ।–***उल्ललयति । उल्लडयति ।***

अवधीर (ग.10.पर.)=तिरस्कार करना ।–***अवधीरयति । अवधीरणा ।***

उद्धुष् (ग.6.पर.)=उच्छ्वास लेना, रोमांचित होना ।– ***उद्धुषति ।***

आदि अन्य धातुएँ

शब्द

आशा (स्त्री)=दिशा, आशा ।

दुराप (वि.)=कठिनाई से प्राप्त हो ।

दुःखेनाप्यते दुरापः ।

नीप (पुं)=कदंब वृक्ष ।

प्रखर (वि)=ज्यादा ।

भीरू (स्त्री)=डरपोक स्त्री ।

संबोधन में–**हे भीरु !**

विग्रह (पुं.)=शरीर, युद्ध, अलग करना ।

धातु

स्तम्भ् (ग.1.आ.)=अटक जाना, अक्कड होना । **स्तम्भते । स्तम्भः ।**

स्कम्भ् (ग.1.आ.)=अटक जाना, अक्कड होना । **स्कम्भते ।**

स्तुभ् (ग.1.आ.)=अटक जाना, रुकना । **स्तोभते दोषः । स्तोभः ।**

क्षप (ग.10.पर.)=प्रेरणा करना, खपाना । **क्षपयति ।**

परिशिष्ट नियम :–

1) एक ही धातु में पूर्व में देखी गई, कर्म में रही हुई क्रिया के साथ एक-अभिन्न अकर्मक क्रिया होती है जिसकी, उस प्रकार के (कर्म कर्त्ता रुप) कर्त्ता में धातु को **ञि, क्य** और **आत्मनेपद** होता है ।

(1) चैत्र कटं करोति – चैत्र चटाई करता है ।

(2) क्रियते कटः स्वयमेव – चटाई स्वयं ही की जाती है ।

यहाँ दोनों वाक्य में धातु एक ही है और क्रिया भी एक ही है । परंतु पहले वाक्य का कर्म दूसरे वाक्य में कर्ता से रुप में प्रयोग किया गया है, अतः **कर्म कर्त्ता रुप** हुआ है । इसलिए दूसरे वाक्य में क्रिया अब अकर्मक है ।

चटाई आसानी से बन जाय वैसी होने से कर्ता के व्यापार क्रिया की विवक्षा नहीं की है । अर्थात् **'चैत्र चटाई करता है'** ऐसा नहीं कहते हुए चटाई आसानी से हो जाय वैसी है, इसलिए **'कट स्वयमेव क्रियते'** अर्थात् चटाई अपने आप ही की जाती है, ऐसा कहना है ।

ऐसे प्रयोग को **कर्मकर्त्तरि प्रयोग** कहते है, क्योंकि कर्म को कर्ता गिना गया है ।

कर्म कर्त्तरि के रुप सामान्य से कर्मणि जैसे ही है–जैसे कर्मणि प्रयोग में ञि, क्य और आत्मनेपद होता है, वैसे कर्म कर्त्तरि प्रयोग में भी होता है ।

उदा. सूदः तण्डुलान्पचति, सूदेन किम्, तण्डुलाः स्वयमेव पच्यन्ते ।

अर्थात् – चावल अच्छे होने से जल्दी पक जाते है, इसलिए रसोई बनानेवाले को अल्प ही प्रयत्न करता पडा है, अतः रसोइया पकाता है...ऐसी विवक्षा नहीं की है–**'अल्पत्वादविवक्षा' ।** परंतु चावल स्वयमेव अपने आप ही पक जाते है, ऐसी विवक्षा की है ।

संस्कृत वाक्य

1. मिलन्त्याशासु जीमूता विक्लवन्ते दिवि ग्रहाः ।
उपक्षययति प्रावृट् क्षीयन्ते[1] कामि-विग्रहाः ।।

2. धनेन स्तम्भते सर्वः स्तभ्नात्यन्यश्च विद्यया ।
विद्याधनसमृद्धोऽपि यो न स्तभ्नोति सज्जनः ।।

3. नीपानन्दोलयन्नेष प्रेङ्खोलयति मे मनः ।
पवनो वीजयन्नाशा ममाशामुच्चुलुम्पति ।।

4. तावत्खरः प्रखरमुल्ललयांचकार ।

5. अयं स नो तिष्ठति संगमोत्सुको ।
विशङ्कसे भीरु ! यतोऽवधीरणाम् ।
लभेत वा प्रार्थयिता न वा श्रियं ।
श्रिया दुरापः कथमीप्सितो भवेत् ।।

6. अत्रान्तरे कश्चिच्छाखामृगः वातासार - समाहतः प्रोद्धुषितशरीरो दन्तवीणां वादयन् वेपमानस्तच्छमीमूलमासाद्योपविष्टः ।

टिप्पणी 1. स्वयमेव क्षीयन्ते इत्यर्थः ।

पाठ-2

स्वार्थिक प्रत्ययान्त धातुएँ

धातुएँ दो प्रकार की है –**(1) शुद्ध धातुएँ** और **(2) प्रत्ययान्त (साधित) धातुएँ ।** शुद्ध धातुएँ `भू' आदि पहले कही हुई है । अब यहाँ (पाठ 2, 3, 4, और 5 में) प्रत्ययान्त (साधित) धातुएँ `गोपाय' इत्यादि कहते है–

1) गुप् (=रक्षण करना), **धूप्, विच्छ्, पण्** और **पन्** धातुओं को स्वार्थ (अपने अर्थ) में **आय** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **गोपायति । धूपायति । विच्छायति ।**

`पण्' और `पन्' धातु `आय' प्रत्यय लगने पर परस्मैपदी होते है । पणायति । पनायति ।

कभी–**पणायते । पनायते** (आत्मनेपदी होता है ।)

व्यापार अर्थ में `पण्' धातु को अन्य मत से `आय' नहीं लगता है–**शतस्य पणते** = सौ (रुपये) का व्यापार करता है ।

2) `कम्' धातु को स्वार्थ में **इ (णिङ्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **कामयते ।**

3) `ऋत्' धातु को स्वार्थ में **ईय (ङीय)** प्रत्यय लगता है और आत्मनेपदी होता है । उदा. **ऋतीयते ।**

4) विकरण प्रत्यय नहीं लगता हो तब, **`आय'** आदि ऊपर कहे हुए प्रत्यय विकल्प से लगते है ।

उदा. **गोपायिता, गोपिता, गोप्ता ।** कर्मणि में-**गोपाय्यते ।** (भा.2. पा. 35. नि.2 की सुचना से `अ' का लोप) – गुप्यते ।

परोक्षा में–**गोपायांचकार, जुगोप ।**

पणायांचकार, (द्वितीया–पा.26. नि 1 (i) से) **पेणे । कामयिता, कमिता । ऋतीयिता, अर्तिता । ऋतीयांचक्रे, आनर्त्त ।**

5) 'गर्हा करना' इस अर्थ में **'गुप्'** धातु को, और **'क्षमा करना'** इस अर्थ में **'तिज्'** धातु को स्वार्थ में **स (सन्)** प्रत्यय होता है।

उदा. **जुगुप्सते ।** गर्हते इत्यर्थः । = वह गर्हा करता है।

तितिक्षते । सहते इत्यर्थः । = वह सहन करता है।

6) 'संशय' और **'प्रतिकार'** इन दो अर्थ में **कित्** धातु को स्वार्थ में **'सन्'** प्रत्यय लगता है।

उदा. **विचिकित्सति मे मनः ।** संशेते इत्यर्थः ।

(द्वि.पा. 24 नि. 5.3 देखे) (=मेरा मन संशय करता है।)

व्याधि चिकित्सति । प्रतिकरोतीत्यर्थः ।

=व्याधि का प्रतिकार (इलाज) करता है।

7) 'निशान' अर्थ में **'शान्'** धातु को, **आर्जव** अर्थ में **'दान्'** धातु को, **'विचार'** अर्थ में **'मान्'** धातु को, और **'वैरुप्य'** अर्थ में **'बध्'** धातु को, स्वार्थ में **सन्** प्रत्यय लगता है। तथा द्वित्व होने पर पूर्व का 'इ' स्वर दीर्घ (ई) होता है।

उदा. **शीशांसते । शीशांसते** शस्त्रम् । =शस्त्र को तीक्ष्ण करता है।

दीदांसते । दीदांसति । =सरलता रखता है।

मीमांसते धर्मम् । धर्म का विचार करता है।

बीभत्सते । विरुपता करता है, मुँह बिगाडता है।

(द्वि. पा.13. नि.14. नियम देखे)

(**शीशांसते**–शान्+स+ते, द्वि. पा.14. नि.16. से शा+शान्+स+ते, द्वि. पा.14. नि.7 से श+शान्+स+ते, द्वि. पा.35 नि.9 से शि+शान्+स+ते – इस नियम से इ का दीर्घ ई होने पर–शीशांसते।)

धातुएँ

गुप् (ग.1.पर.)=रक्षण करना। *–गोपायति ।*

धूप् (ग.1.पर.)=संताप करना। *–धूपायति ।*

विच्छ् (ग.6.पर.)=जाना। *–विच्छायति ।*

पण् (ग.1.आ.)=व्यापार करना, खरीदना, बेचना, स्पर्धा करना, स्तुति करना। ***पणायति। – व्यवहरति स्तौति चेत्यर्थः।***

पन् (ग.1.आ.)=रक्षण करना। ***–पनायति।***

कम् (ग.1.आ.)=अभिलाषा करना। ***–कामयते।***

ऋत् (ग.1.पर.)=घृणा करना, जाना, स्पर्धा करना। ***–ऋतीयते।***

गुप् (ग.1.आ.)=छिपाना। ***–गोपते। गोपनम्। गुप्तिः।***

= गर्हा करना। ***–जुगुप्सते। जुगुप्सा - गर्हा।***

(ग.4.पर.)=व्याकुल होना। ***–गुप्यति।***

(ग.10.पर.)=प्रकाश करना, रक्षण करना। ***–गोपयति।***

तिज् (ग.1.आ.)=क्षमा करना। ***–तितिक्षते कोपम्।***

=तीक्ष्ण करना। ***–तेजते। तेजनम्। तीक्ष्णः। तिग्मम्। तेजः।***

(ग.10.पर.)=तीक्ष्ण करना। ***– उत्तेजयति।***

कित् (ग.1.पर.)=निवास करना। ***– केतति। निकेतनम्।***

=संक्षय करना। ***– विचिकित्सति मे मनः।***

=प्रतिकार करना। ***– चिकित्सत्यातुरं वैद्यः।***

चिकित्सा – दवा, इलाज।

शान् (ग.1.उभ.)=तीक्ष्ण करना। ***– शीशांसते। शीशांसति शस्त्रम्।***

दान् (ग.1.उभ.)=सरल होना। ***– दीदांसते। दीदांसति।***

मान् (ग.1.आ.)=विचार करना। ***–मीमांसते धर्मम्। मीमांसा=****विचार।*

(ग.10.यु.)=पूजा करना। ***– मानयति। मानति।***

बध् (ग.1.आ.)=विरुप करना। ***बीभत्सते।***

बिभत्स (वि.) खराब।

=बांधना। ***बधते।***

(ग.10.पर.)=बांधना। ***बाधयति।***

शण् (ग.10.पर.)=तीक्ष्ण करना। ***शाणयति।***

शि (ग.5.उभ.)=पतला करना, तीक्ष्ण करना । ***शिनुते । शिनोति ।***
सूद् (ग.1.आ.)=नाश पाना । ***सूदते ।***
सूद् (ग.10.पर.)=नाश करना । ***सूदयति ।***

शब्द

अश्रान्त (वि)=निरंतर, थके बिना । **न श्रान्तं यस्मिन्कर्मणि=*अश्रान्तम् ।***
आशु (अ.)=शीघ्र, जल्दी ।
उद्धुर (वि.)=तत्पर, धुंसरी बिना का । **उद्गता धूः अस्य=उद्धुरम् ।**
जात (पुं.)=समूह ।
वनीपक (पुं.)=याचक, मांगनेवाला ।
वृन्द (न.)=समूह ।
शात्रव (न.)=शत्रुओं का समूह । **शत्रुणां समूहः=*शात्रवम्*** [(अ(णव्)]

संस्कृत वाक्य

1. गोपायति क्षितिमिमां चतुरब्धिसीमां,
पापाज्जुगुप्सत उदारमतिः सदैव ।
वित्तं तु गोपयति यन्न वनीपकेभ्यो,
धीरो न गुप्यति महत्यपि कार्यजाते ।।

2. तितिक्षते क्षमी यस्तु सापराधेषु साधुषु ।
तेजयन्ति यमश्रान्तं बन्दिवृन्देरिता गिरः ।।

3. न सूदते मति र्यस्य यः सूदयति शात्रवम् ।
चिकित्सति च स व्याधिं साधु केतयति प्रजाः ।।

4. बीभत्सते परस्त्रीभ्यो यो बध्नाति मतिं रणे ।
बाधयन्ति न दुःखार्त्ताः केशान् यदरियोषितः ।।

5. शीशांसते खड्गलतां निशिनोत्यसिचन्द्रिकाम् ।
शाणयत्याशु गात्राणि यत्सैन्यं समरोद्धुरम् ।।

पाठ-3

कण्ड्वादि धातुएँ

1) **'कण्डू'** आदि धातुओं को स्वार्थ (अपने अर्थ) में **य (यक्)** प्रत्यय लगता है। (कण्डू आदि (कण्ड्वादि) धातु दस में से किसी भी गण में नहीं है, ये सभी धातु सौत्र है, इनको स्वार्थ में य लगने के बाद सामान्य रुप से धातुओं को लगता **अ (शव्)** विकरण प्रत्यय लगता है।)

उदा. कण्डू + य (यक्) + अ (शव्)[1] + ति = **कण्डूयति[2]** । (प.), **कण्डूयते** । (आ) (वर्तमान काल)

कर्मणि प्रयोग में – **कण्डूय्यते** ।

कर्त्तरी प्रयोग में ह्वस्तन आदि काल के रुप में तीसरा पुरुष एक वचन

ह्यस्तन में – अकण्डूयत् । (प.), अकण्डूयत । (आ.)

विध्यर्थ में – कण्डूयेत् । (प.), कण्डूयेत । (आ.)

आज्ञार्थ में – कण्डूयतु – तात्[4] । (प.), कण्डूयताम् । (आ.)

श्वस्तनी में – कण्डूयिता ।[3] (प. एवं आ.)

भविष्यन्ति में – कण्डूयिष्यति । (प.), कण्डूयिष्यते । (आ.)

क्रियातिपत्ति में – अकण्डुयिष्यत् । (प.), अकण्डूयिष्यत । (आ.)

परोक्षा में – कण्डूयांचकार । (प.), कण्डूयांचक्रे । (आ.)

अद्यतनी में – अकण्डूयीत् । (प.), अकण्डूयिष्ट । (आ.)–कर्तरी प्रयोग । अद्यतनी कर्मणि प्रयोग में–अकण्डूयि । अकण्डूयिषाताम् । अकण्डूयिषत ।

आशीर्वाद में–कण्डूय्यात् । (प.), कण्डूयिषीष्ट । (आ.)

टिप्पणी– **1.** द्वितीया पाठ.1. नि.2 से अ (शव्) विकरण प्रत्यय होता है ।
2. प्रथमा पाठ. 4 नि. 1 से पूर्व के 'अ' का लोप होता है ।
3. द्वितीया पाठ 35 नि. 2 की सूचना से 'अ' का लोप हुआ है ।
4. प्रथमा. पाठ. 32 नि. 3 से तु का तात् आदेश होता है ।

2) य (यक्) प्रत्यय लगने पर पूर्व का स्वर **दीर्घ** होता है ।

उदा. मन्तु + य = मन्तूय –

मन्तूय + अ (शव्) + ति = मन्तूयति । (प.) मन्तूयते । (आ.)

कण्ड्वादि धातुएँ

कण्डू (उ.)=खुजली करना, खुजलाना । ***कण्डूयति/कण्डूयते ।***

मही (आ.)=बढना, पूजा करना । ***महीयते ।***

ह्रणी (आ.)=लज्जा पाना, रोष करना । ***ह्रणीयते ।***

मन्तु (पर.)=रोष करना, वैर रखना । ***मन्तूयति ।***

वल्गु (पर.)=पूजा करना । ***वल्गूयति ।***

असु (पर.)=मन से जलना । ***असूयति ।***

उषस् (पर.)=प्रभात होना । ***उषस्यति ।***

तिरस् (पर.)=आच्छादन करना । ***तिरस्यति ।***

संभूयस् (पर.)=ज्यादा होना । ***संभूयस्यति ।***

भिषज् (पर.)=चिकित्सा करना । ***भिषज्यति ।***

वेला (पर.)=विलंब करना, देर करना । ***वेलायति ।***

खेला (पर.)=खेल करना, विलास करना । ***खेलायति ।***

मेधा (पर.)=जल्दी से ग्रहण करना । ***मेधायति ।***

मगध (पर.)=लपेटना । ***मगध्यति***[1] ***।***

सुख (पर.)=सुखी होना । ***सुख्यति ।***

अगद (पर.)=औषध करना । ***अगद्यति ।***

गद्गद (पर.)=बोलते बोलते अटकना । ***गद्गद्यति ।***

सपर (पर.)=पूजा करना । ***सपर्यति । सपर्या***=*पूजा ।*

समर (पर.)=युद्ध करना । ***समर्यति ।***

आदि अन्य धातुएँ ।

टिप्पणी– **1.** द्वितीया पा. 35 नि. 2 की सूचना से एवं प्र.पा. **4** नि. **1** से पूर्व के अ का लोप हुआ है ।

मगध् + य् + अ + ति = मगध्यति ।

धातु और शब्द

मह् = (ग.1. प.) पूजा करना । *महति ।*
मह = (ग.10. प.) पूजा करना । *महयति ।*
माहेयी = (स्त्री) गाय । *मह्यां भवा माहेयी ।*
बंह् / मंह् = (ग.1. आ.) बढना । *बंहते । मंहते ।*
सुख = (ग.10. पर.) सुख करना । *सुखयति ।*
सुखायते = (नामधातु) **सुखमनुभवति ।** – पाठ 6 नि.18.

संस्कृत वाक्य

1. अहो बहिर्निपतितै र्विष्ठामूत्रकफादिभिः ।
   ह्णीयन्ते प्राणिनोऽमी कायस्यान्तः स्थितै र्न किम् ॥

2. **नित्यं महति माहेयीं भक्त्या महयति द्विजान् ।**
   लोके महीयते यस्य कीर्ति र्लक्ष्मीश्च मंहते ॥

3. शब्दादयो यं विषयाः सुखयन्ति निरापदम् ।
   सुखायते श्रिया नित्यं विद्यया यश्च सुख्यति ॥

4. **एवं खेलायमानेषु तत्र पौरजनेष्वथ ।**
   दध्यौ स्वामी किमीदृक्षा क्रीडान्यत्रापि कुत्रचित् द्रष्टा भवति ? ॥

5. फलेन मूलेन च [1]वारिभूरुहां, मुनेरिवेत्थं मम यस्य वृत्तयः ।
   त्वयाद्य तस्मिन्नपि दण्डधारिणा कथं न पत्या धरणी ह्णीयते ॥

टिप्पणी– 1. **वारिभूरुहाम्**–वार्येव भूः–उत्पत्तिस्थानं वारिभूः, तस्यां रोहन्त-उत्पद्यन्ते वारिभूरुहः, तेषां–कमलानां **फलेन** पद्माक्षलक्षणेन, **मूलेन** कन्दादिना मृणालेन च, **यस्य मम**–हंसस्य ।

पाठ-4

यङन्त धातुएँ (यङन्त प्रक्रिया)

1) भृश और 2) आभीक्ष्ण्य अर्थ में यङ् प्रत्यय व्यंजनादि एक स्वरवाले धातु को–

1) व्यंजनादि एक–स्वरवाले धातु को **भृश=अच्छी तरह से** अथवा **अतिशय अर्थ में**, तथा **आभीक्ष्ण्य=बार-बार अर्थ में य (यङ्)** प्रत्यय विकल्प से लगता है ।

उदा. भृशं पचति–पच् + य (यङ्) = **पच्य–**

पुनः पुनः पचति – पच् + य (यङ्) = **पच्य–**

2) यङन्त धातु का एकस्वरी आद्य अंश द्वित्व होता है । **पपच्य–**

3) **'नी'** आदि का आगम (जुडाव) न आया हो ऐसे 'यङन्त' धातु के द्वित्व होने पर पूर्व के स्वर का **आ** अथवा **गुण** होता है ।

उदा. **पपच्य–पापच्य** (यहाँ पूर्व के स्वर 'अ' का 'आ' हुआ है ।)

पापच्य = अच्छी तरह से पकाना, ज्यादा पकाना, बार-बार पकाना ।

4) 'यङन्त' धातुएँ **आत्मनेपदी** होते है ।

उदा. पापच्य + ते–

द्वितीया पाठ-1 नि. 7 से विकरण प्रत्यय अ(शव्) लगने पर–

पापच्य + अ + ते–

प्रथमा पाठ-4 नि.1 से अ का लोप–पापच्य् + अ + ते = **पापच्यते ।**

पापच्यते = वह अच्छे से पकाता है, ज्यादा पकाता है, बार-बार पकाता है ।

भृशं पुनः पुनर्वा ज्वलति = **जाज्वल्यते** । यहाँ पूर्व के अ का आ हुआ है ।

यङ् प्रत्यय विकल्प से लगते है अर्थात् विकल्प में–

''पापच्यते''–विकल्प से–''भृशं पचति, पुनः पुनर्वा पचति'' आदि वाक्य होता है ।

व्यंजनादि अनेक स्वरवाले एवं स्वरादि धातु को–

5) **अट्, ऋ, सूत्र, मूत्र, सूच, अश् और ऊर्णु** धातु को भृश और आभीक्ष्ण्य अर्थ में य(यङ्) विकल्प से होता है ।

उदा. भृशं पुनः पुनर्वा अटति=[1]**अटाट्यते ।**
भृशं पुनः पुनर्वा इयर्ति ऋच्छति वा=[2]**अरार्यते ।**
भृशं पुनः पुनर्वा सूत्रयति = **सोसूत्र्यते ।**
भृशं पुनः पुनर्वा मूत्रयति = **मोमूत्र्यते ।**
भृशं पुनः पुनर्वा सूचयति = **सोसूच्यते ।**
भृशं पुनः पुनर्वा अश्नुते, अश्नाति वा = **आशाश्यते ।**
भृशं पुनः पुनर्वा ऊर्णोति = **ऊर्णोनूयते ।**

3) कुटिल अर्थ में यङ् प्रत्यय

6) **गति अर्थवाले** व्यंजनादि एक स्वरवाले धातुओं को कुटिल (= टेढा) अर्थ में **यङ्** प्रत्यय लगता है ।

उदा. कुटिलं क्रामति=**चङ्क्रम्यते ।** (टेढा चलता है ।) नि.9 देखे ।
कुटिलं द्रमति=**दन्द्रम्यते ।** (टेढा-मेढा घूमता है ।)

4) गर्ह्य अर्थ में यङ् प्रत्यय

7) **गॄ[3], लुप्, सद्, चर्, जप्, जभ्, दंश्** और **दह्** धातुओं को गर्ह्य (=निन्द्य) अर्थ में यङ् प्रत्यय लगता है ।

उदा. गॄ–गर्ह्यम् निगिरति=**निजेगिल्यते ।** निन्दा हो इस तरह खाता है ।
लुप्–गर्ह्यम् लुम्पति = **लोलुप्यते ।**
सद्–गर्ह्यम् सीदति = **सासद्यते ।**

टिप्पणी– **1.** अट् + यङ् = अट्य–द्वि.पा. 35 नि. 3 से अट्यट्य द्वि. पा. 14 नि. 16 से अटट्य–इस पाठ के नि. 3 से अटाट्य = **अटाट्यते ।**

2. संयोग के बाद ऋ हो, ए से 'ऋ'कारान्त धातुओं को, एवं ऋ धातु को यङ् प्रत्यय लगने पर गुण होता है ।
ऋ + यङ् = अर्य – द्वि. पा. 35 नि. 3 से अर्यर्य–
द्वि.पा.14. नि.16. से अरर्य–इस पाठ के नि.3 से अरार्य=**अरार्यते ।** वैसे ही स्मृ+यङ्=**सास्मर्यते ।**

3. यङ् प्रत्यय लगने पर धातु के र् का ल् होता है ।
नि + गॄ + यङ्–द्वि. पा. 3 नि. 6 से निगीर्य–निगिल्य–**निजेगिल्यते ।**

चर्–गर्ह्यम् चरति = **चञ्चूर्यते** । नि. 11

जप्–गर्ह्यम् जपति = **जञ्जप्यते** । नि. 10

जभ्–गर्ह्यम् जम्भति, ते = **जञ्जभ्यते** ।

दंश्–गर्ह्यम् दशति = **दन्दश्यते** ।

दह्–गर्ह्यम् दहति = **दन्दह्यते** ।

यङन्त धातुओं में 'नी' आदि का आगम (जुडना)

8) **वञ्च्, स्त्रंस्, ध्वंस्, भ्रंश्, कस्, पत्, पद् और स्कन्द्**–इन यङ्न्त धातुओं के द्वित्व होने पर, पूर्व में **'नी'** जुडता है ।

उदा. **वञ्च्**–कुटिलं वञ्चति = **वनीवच्यते** । द्वि.पा. 3 नि. 8. देखे ।

स्त्रंस्–भृशं पुनः पुनर्वा स्त्रसते = **सनीस्त्रस्यते** ।

ध्वंस्–भृशं पुनः पुनर्वा ध्वंसते = **दनीध्वस्यते** ।

(द्वि.पा.14. नि.13 से ध् का द्)

भ्रंश् – भृशं पुनः पुनर्वा भ्रंशते = **बनीभ्रस्यते** ।

कस् – कुटिलं कसति=**चनीकस्यते** । (द्वि.पा.24. नि.5 (3) से क का च)

पत् – कुटिलं पतति = **पनीपत्यते** ।

पद् – कुटिलं पद्यते = **पनीपद्यते** ।

स्कन्द् – कुटिलं स्कन्दति = **चनीस्कद्यते** ।

(द्वि.पा.24. नि.5 (2) से स् का लोप)

9) **'अ'** के बाद अनुनासिक हो ऐसे अनुनासिक अन्तवाले यङन्त धातु का द्वित्व होने पर, पूर्व में **म् (मु)** जुडता है ।

उदा. भृशं पुनः पुनर्वा भणति = [1]**बम्भण्यते** ।

10) **जप्, जभ्, दह्, दश् (दंश्), भञ्ज्** और **पश्** – ये यङन्त धातुओं का द्वित्व होने पर पूर्व में **म् (मु)** जुडता है ।

उदा. भृशं पुनः पुनर्वा भनक्ति = **बम्भज्यते** ।

भृशं पुनः पुनर्वा पशति = **पम्पश्यते** ।

टिप्पणी– 1. म् (मु) जुडने पर म् का व्यंजन के बाद अनुस्वार और स्व अनुनासिक विकल्प से होता है । – बंभण्यते । बम्भण्यते ।

11) **चर्** और **फल्** ये दो यङन्त धातु का द्वित्व होने पर पूर्व में **म् (मु)** जुडता है तथा उपान्त्य अ का उ होता है, परंतु उसका गुण ओ नहीं होता है ।

उदा. **चञ्चुर्यते । पम्फुल्यते ।**

पा. 5 नि. 1 और 2 से **चञ्चूर्ति । पम्फुल्ति ।**

यहाँ उपान्त्य उ का गुण ओ नहीं होता है ।

12) **ऋ** वाले यङन्त धातुओं का द्वित्व होने के बाद, पूर्व में **री** जुडता है ।

उदा. भृशं पुनः पुनर्वा नृत्यति–**नरीनृत्यते । परीपृच्छ्यते ।**

यङ् प्रत्यय लगने पर धातु में होने वाले परिवर्तन

13) **गा, पा, स्था, सा, दा (दा संज्ञा) मा** और **हा** (= त्याग करना) धातु का अन्त्यस्वर **आ** का व्यंजनादि कित् और ङित् प्रत्यय लगने पर **ई** होता है । (द्वि.पा. 6 नि. 2 देखे)

उदा. **गा–**भृशं पुनः पुनर्वा गायति = **जेगीयते ।**

पा–भृशं पुनः पुनर्वा पिबति = **पेपीयते ।**

स्था–भृशं पुनः पुनर्वा तिष्ठति = **तेष्ठीयते ।**

सा–भृशं पुनः पुनर्वा स्यति = **सेषीयते ।**

दा–भृशं पुनः पुनर्वा ददाति = **देदीयते ।**

धा–भृशं पुनः पुनर्वा दधाति = **देधीयते ।**

मा–भृशं पुनः पुनर्वा माति = **मेमीयते ।**

हा–भृशं पुनः पुनर्वा जहाति = **जेहीयते ।**

14) **घ्रा** और **ध्मा** धातु के स्वर का यङ् प्रत्यय पर **ई** होता है ।

उदा. **जेघ्रीयते । देध्मीयते ।**

15) धातु का स्वर यङ् प्रत्यय पर **दीर्घ** होता है ।

उदा. स्तु–**तोष्टूयते ।** चि–**चेचीयते ।**

16) **ऋ** का यङ् प्रत्यय पर **री** होता है ।

उदा. कृ–**चेक्रीयते ।** हृ–**जेह्रीयते ।**

यङन्त धातुओं के रुप

'लू' धातु

वर्तमान–**लोलूयते** । ह्यस्तन–**अलोलूयत** । विध्यर्थ–**लोलूयेत** । आज्ञार्थ–**लोलूयताम्** । श्वस्तन–**लोलूयिता** । भविष्य–**लोलूयिष्यते** । क्रियातिपत्ति–**अलोलूयिष्यत** । परोक्षा–**लोलूयांचक्रे** । अद्यतनी–**अलोलूयिष्ट** । आशीर्वत्ती–**लोलूयिषीष्ट** ।

'पच्' धातु

वर्तमान–**पापच्यते** । ह्यस्तन–**अपापच्यत** । विध्यर्थ–**पापच्येत** । आज्ञार्थ–**पापच्यताम** । श्वस्तन–पापच्य + इ + ता – द्वि पा. 35 नि. 2 के साथ जुडी सुचना से अन्त्य 'अ' का लोप – पापच्य् + इता–

17) व्यंजनांत धातु के बाद रहे हुए **'य्'** का अशित् प्रत्यय के बाद **लोप** होता है ।

उदा. पापच् + इता = **पापचिता** ।

भविष्यन्ति–**पापचिष्यते** । क्रियातिपत्ती–**अपापचिष्यत** ।

परोक्षा–**पापचांचक्रे** । अद्यतनी–**अपापचिष्ट** । आशीर्वत्ती–**पापचिषीष्ट** ।

कर्मणि प्रयोग में–**लोलूय्यते । पापच्यते ।**

परिशिष्ट नियम

1) **वध** अर्थ में **हन्** धातु के यङ् लगने पर, **घ्नी** आदेश होता है ।
उदा. **जेघ्नीयते ।** गति अर्थ में जङ्घन्यते । (द्वि.पा. 25. नि. 3.)

2) य से प्रारंभ होने वाले कित् ङित् प्रत्यय लगने पर शी का शय् होता है ।
उदा. **शय्यते । शाशय्यते ।** (द्वि. पा. 11. नि. 12.)

3) **स्वप् धातु** के **यङ्, ङ और कित् प्रत्यय** लगने पर स्वर सहित अन्तस्था **य्वृत** होता है । (द्वि. पा. 12. नि. 9.)
उदा. **सोषुप्यते । असूषुपत् । सुप्यते । सुषुप्सति ।**

4) यङ् प्रत्यय लगने पर **व्ये** और **स्थम्** धातु का **य्वृत** होता है ।
उदा. **वेवीयते । सेसिम्यते ।**

5) यङ् प्रत्यय लगने पर **श्वि** धातु का विकल्प से श्वृत होता है ।
उदा. **शोशूयते । शेश्वीयते ।**

6) `**गॄ** (ग. 9. पर.)' **शुभ्** और **रुच्** धातु को यङ् प्रत्यय नहीं लगता ।

7) **गॄ** धातु के स्वरादि प्रत्यय लगने पर हुए **र्** का **ल्** विकल्प से होता है ।
उदा. **गिरति । गिलति ।**

8) **अव** उपसर्ग के बाद रहे **स्तम्भ्** धातु के **स्** का आश्रय, ऊर्ज और अविदूर (ज्यादा दूर नहीं) अर्थ ज्ञात होता हो तो **ष्** होता है ।
उदा. **दुर्गमवष्टभ्नाति ।** किल्ले का आश्रय लेता है ।
दु:खेन गम्यतेऽस्मिन् इति **दुर्गः ।**
अहो वृषभस्य **अवष्टम्भः ।** (अहो वृषभ का बल !)
अवष्टन्धा शरत् । (शरद ऋतु पास है, ज्यादा दूर नहीं है ।)
उपष्टम्भः । भी होता है ।

धातु

सूत्र (ग.10. पर.)=गूंथना, व्यवस्था करना, प्रयत्न करना । ***सूत्रयति ।***
मूत्र (ग.10. पर.)=मूत्र करना । ***मूत्रयति ।***
सूच (ग.10. पर.)=सूचना करना, चुगली करना । ***सूचयति ।***
गृ (ग.6. पर.)=गलना, खाना । ***गिरति/गिलति।***[1]
जप् (ग.1. पर.)=जाप करना, चिंतन करना । ***जपति ।***
जभ् (ग.1. पर.)=मैथुन सेवन करना । [2]***जम्भति ।***
स्कन्द् (ग.1. पर.)=जाना, शोषण करना । ***स्कन्दति ।***
उज्झ् (ग.1. पर.)=त्याग करना, छोडना । ***उज्झति ।***
खिद् (ग.4. आ.)=दीन होना । ***खिद्यते ।***
दोलाय (नामधातु) (आ.)=डोलना । दोला इव आचरति=***दोलायते ।*** (पा.6. नि.6.)
कदर्थि (नामधातु) (पर.)=कदर्थना करना । कुत्सितमर्थनं करोति=***कदर्थयति ।*** (पा.6. नि.25.)

टिप्पणी– 1. गिलति – र् का ल् भी होता है ।
2. जभ् धातु के स्वर के बाद, स्वरादि प्रत्यय पर म् (मु) जुडता है । (जम्भति ।)

शब्द

अनवरत=(वि.)=हमेशा ।
उष्मन्=(पुं.)=गर्मी, बाफ ।
काचपटल=(न.)=कांच का आवरण ।
जालिका=(स्त्री.)=जाली ।
दानग्रहणिक=(वि.)=कर ग्रहण करनेवाला अधिकारी पुरुष ।
प्लव=(पुं)=बाढ़, प्रवाह ।
हृषीक=(नपुं.)=इन्द्रिय ।
वराक=(पुं.)=शिव ।
वारक (नपुं)=बिचारा ।
सन्तान=(पुं)=कल्पवृक्ष, वंश, कुल, विस्तार, परंपरा ।

संस्कृत वाक्य

एवं च स्थिते महाराज ! य इमे जिनवचनामृतबहिर्भूता: संसारोदरवर्तिनो जन्तवोऽनवरतं वराका बध्यन्ते दृढकर्मसन्तानरज्ज्वा, पीड्यन्ते विषयासन्तोष-बुभुक्षया, शुष्यान्ति विषयाशापिपासया, खिद्यन्ते निरन्तरभवचक्रभ्रमणेन, तुद्यन्ते परेर्षाशूलेन, जीर्यन्ते दीर्घसंसारावस्थानेन, दन्दह्यन्ते रागमहाज्वरेण, अन्धीक्रियन्ते कामकाचपटलेन, आक्रम्यन्ते भावदारिद्र्येण, अभिभूयन्ते जराराक्षस्या, आच्छाद्यन्ते मोहतिमिरेण, आकृष्यन्ते हृषीकतुरङ्गमै:, पापच्यन्ते क्रोधतीव्रवह्निना, अवष्टभ्यन्ते मानमहापर्वतेन, वेष्ट्यन्ते मायाजालिकया, प्लाव्यन्ते लोभसागरप्लवेन, परिताप्यन्त इष्टवियोग-वेदनया, दोदूयन्तेऽनिष्टसंगमतापेन, दोलायन्ते कालपरिणातिवशेन, तन्तम्यन्ते कुटुम्बपोषणपरायणतया कदर्थ्यन्ते कर्मदानग्रहणिकै:, अभिद्रुयन्ते महामोहनिद्रया, कवलीक्रियन्ते मृत्युमहामकरेण ।

पाठ-5

यङ्लुप् धातु (यङ्लुबन्त प्रक्रिया)

भृशं पुनः पुनर्वा भवति – भू + यङ् –

1) **यङ् प्रत्यय का अधिकतर लोप (लुप्) होता है,** परंतु द्वित्व होता है।

   उदा. भू + यङ्लुप् = बोभू–

2) यङ्लुप् धातुओं का समावेश **दूसरे गण** में होता है और **परस्मैपद** होता है। उदा. **बोभोति।**

3) व्यंजन से प्रारंभ होने वाले वित् प्रत्ययों के बाद, यङ्लुप धातुओं को अधिकतर **ई** होता है। उदा. **बोभवीति। बोभोति।**

धातु		*यङन्त*	*यङ्लुबन्त*
भू	–	बोभूयते।	बोभवीति-बोभोति।
रु	–	रोरूयते।	रोरवीति-रोरोति।
लप्	–	लालप्यते।	लालपीति-लालप्ति।
क्रम्	–	चङ्क्रम्यते।	चङक्रमीति-चङ्क्रन्ति।
जप्	–	जञ्जप्यते।	जञ्जपीति-जञ्जप्ति।

बोभू–**वर्तमान**–बोभवीति–बोभोति। बोभूतः। बोभुवति। (द्वि.पा.14. नि.3.)

ह्यस्तन–अबोभवीत्–अबोभोत्। अबोभूताम्। अबोभवुः।

(द्वि.पा. 14. नि. 6. एवं द्वि.पा. 12. नि. 5.)

पापच्–**वर्तमान**–पापचीति–पापक्ति। पापक्तः। पापचति।

ह्यस्तन–अपापचीत्–अपापक्। अपापक्ताम्। अपापचुः।

4) **ऋ वाले** यङ् लुप् धातु का द्वित्व होने के बाद, पूर्व में **रि, र्** और **री** जुडता है।

उदा. कृ–	चरिकरीति–चरिकर्ति।	चरिकृतः।	चरिक्रति।
	चर्करीति–चर्कर्ति।	चर्कृतः।	चर्क्रति।
	चरीकरीति–चरीकर्ति।	चरीकृतः।	चरीक्रति।

[1]नृत्—नरिनृतीति—नरिनर्ति । नरिनृत्तः । नरीनृतति ।
नर्नृतीति—नर्नर्त्ति । नर्नृत्तः । नर्नृतति ।
नरीनृतीति—नरीनर्ति । नरीनृत्तः । नरीनृतति ।

रूप	**चर्कृ**	**नर्नृत्**
वर्तमान	चर्कर्ति ।	नर्नर्त्ति ।
ह्यस्तन	अचर्कः ।	अनर्नर्त् ।
विध्यर्थ	चर्कृयात् ।	नर्नृत्यात् ।
आज्ञार्थ	चर्कर्तु ।	नर्नर्त्तु ।
श्वस्तन	चर्करिता ।	नर्नर्तिता ।
भविष्यंति	चर्करिष्यति ।	नर्नर्तिष्यति ।
क्रियातिपत्ति	अचर्करिष्यत् ।	अनर्नर्तिष्यत् ।
परोक्षा	चर्करांचकार ।	नर्नर्तांचकार ।
अद्यतनी	अचर्कारीत् ।	अनर्नर्तीत् ।
आशीः	चर्क्रियात् ।	नर्नृत्यात् ।

कर्मणि— बोभू—**वर्तमान**—बोभूयते । पापच्—पापच्यते ।
चरिकृ—**वर्तमान**—चरिक्रियते । नरिनृत्—नरिनृत्यते ।

परिशिष्ट नियम :—

1) **नृत्** धातु के **न्** का **यङ्** के विषय में **ण्** नहीं होता ।
उदा. नरीनृत्यते । नरिनर्त्ति ।

2) **अ** वर्ण का **ऋत** के **ऋ** के साथ तृतीया समास में **आर्** होता है ।
उदा. (1) शीतेन ऋतः शीतार्त्तः । (=जिसे ठंडी लगी हो वैसा ।)
(पा. 18. नि. 25 की टिप्पणी से त् का त्त हुआ है ।)
(2) भूतेन ऋतः भूतार्त्तः । (=जिसे भूत लगा हो वैसा)

टिप्पणी 1. द्वितीया. के उपान्त्य स्वर का पाठ 15 नि. 9 से गुण नहीं होगा । वैसे ही लोलुठीति । लोलुपीति इत्यादि । विकल्प से नरिनर्त्ति । लोलोट्टि । लोलोप्ति । इत्यादि ।

शब्द

अनु (अव्यय)=अनुसरण करके ।
``लक्ष्यीकृत्य ।''
निरङ्गी (स्त्री)=मुख ढकनेवाला वस्त्र का छोर ।
मुखाच्छादकवस्त्राञ्चलः ।
पुरधूपायितृ (पुं.)=हर, महादेव ।
पुरधूपायिता ।
पोपूया (स्त्री)=पवित्रता, पवित्रपना ।
ब्रुव (विशेषण)=निन्द्य ।
लावण्य (नपुं.)=सुन्दरता ।
शची (स्त्री.)=इन्द्राणी ।
शचीकामयितृ (पुं.)=इन्द्र ।
``शचीकामयिता ।''
श्रवस् (नपुं.)=कान ।
सामन् (नपुं.)=मधुरवचन ।
सुराप (विशेषण)=मदिरा पीनेवाला ।
(सुरां पिबति=सुरापः ।)
स्वर्गोप्तृ (पुं.)=इन्द्र (**`स्वर्गोप्ता)** ।''

संस्कृत वाक्य

1. भूतार्त्तवन्नरीनर्ति रारटीति सशोकवत् ।
दाहज्वरार्त्तवद् भूमौ सुरापो लोलुठीति च ।।
2. **बोभवीष्यप्सराः किं किं बोभोष्युद्यान-देवता ।**
यत्ते वर्वर्त्ति लावण्यं दीव्यतां वावदीति तत् ।।
3. कोपाध्माते कृतं साम कलहस्य विवर्धकम् ।
जाज्वलीति हि तोयेन तप्तं सर्पि र्न संशयः ।।

द्व्याश्रय महाकाव्ये सप्तमः सर्ग

4. कन्यां कामयमानस्तामन्येद्युः प्राविशत्पुरीम् ।
ऋतीयमानः स्वर्गोप्त्रा सोऽथ गोपायिता भुवः ।।76।।
5. **दृष्ट्वा विच्छायितारं तं पणायितृपथे तदा ।**
अनुविच्छित्र्यभूत्काचित् पणित्री नेष्टवस्तुनः ।।77।।

टिप्पणी

76. **कन्याम्** महेन्द्रस्वसारम् । **ऋतीयमानः** स्पर्धमानः ।
स दुर्लभः । **गोपायिता** रक्षिता ।
77. **विच्छायितारम्** गच्छन्तम् । **तुम्** दुर्लभम् ।
पणायितृपथे वणिक्पथे (हट्टमार्गे) **तदा** पुरप्रवेशकाले ।
अनु-विच्छित्री दुर्लभस्य पश्चाद् यान्ती सती । **पणित्री** व्यवहर्त्री ।

6. पुरधूपायितु र्जेता धूपिता नः स्मरोह्ययम् ।
इत्थमेनं पनायित्र्यां पनित्र्यासीन्न का तदा ॥78॥

7. शची कामयितुस्तुल्यं कमित्री कापि तं तदा ।
अन्वर्तितारं स्वं बालमृतीयित्र्यजुगुप्सत ॥79॥

8. महीयमाना नारीषु कण्डूयन्ती मुधा श्रवः ।
लालस्यमाना तमनु दोर्मूलं काप्यदर्शयत् ॥82॥

9. अशाश्यमानं मोमूत्र्यमाणं काप्युज्झितुं शिशुम् ।
असोसूत्र्यत सोसूच्यमाने तस्यागमोत्सवे ॥85॥

10. दृशौ प्रोर्णोनूयमानां निरङ्गी काप्युदक्षिपत् ।
चङ्क्रम्यमाणा जङ्गम्यमानां चाग्रेऽभ्यतर्जयत् ॥86॥

11. दृशा जेगिल्यमानेव तं लावण्यसुधामयम् ।
सासद्यमाना कामेन काप्यलोलुप्यत त्रपाम् ॥87॥

12. स्त्रीर्भृशं शोभमानास्ताः क्षोभयन्गृणती ब्रुवम् ।
अगाद् भृशं रोचमानः स स्वयंवरमण्डपम् ॥89॥

13. तत्र बोभूयमानश्री र्बोभुवच्छ्रीषु राजसु ।
कुर्वन्मण्डपपोपूयां सोध्यास्तोचितमासनम् ॥90॥

टिप्पणी

78. **नः** अस्माकम् । **धूपिता** संतापकः । **अयम्** दुर्लभः । **एनम्** दुर्लभम् ।
पनायित्र्याम् स्तुवत्याम् सत्याम् । **पनित्री** स्तोत्री ।

79. **कमित्री** इच्छन्ती । **अन्वर्तितारम्** अनुयान्तम् ।
ऋतीयित्री (दर्शनीय गच्छन्ती । **अजुगुप्सत** अनिन्दत् ।

82. **महीयमाना** पूजार्हा ।
लालस्यमाना अत्यर्थं सविलासा । **तम्** दुर्लभम् **अनु** लक्ष्यीकृत्य ।

85. **अशाश्यमानम्** भृशमभीक्ष्णं वा भुञ्जानम् । **असोसूत्र्यत** प्रायतत ।

86. **चङ्क्रम्यमाणा** कुटिलं क्रामन्ती ।

87. **जेगिल्यमानेव** (सानुरागं निरन्तरं विलोकनाद्) गर्हितं गिलन्तीव ।
सासद्यमाना गर्हितं सद्यमाना, निर्दयं पीड्यमानेत्यर्थः ।

90. **बोभूयमानश्रीः** बोभूयमाना उत्कृष्टीभवन्ती श्रीर्यस्य सः ।
बोभुवच्छ्रीषु बोभुवती पुनः पुनः भवन्ती श्रीर्वेषाभरणमण्डनादिकृता शोभा येषां ते–तेषु,
राजसु मध्ये ।

दुसरा–नामधातु प्रकरण

पाठ–6

नाम धातु

1) इच्छा अर्थ में 'काम्य' और 'क्यन्' प्रत्यय

1) द्वितीयान्त नाम से इच्छा के अर्थ में **'काम्य'** प्रत्यय विकल्प से लगता है ।
उदा. पुत्रमिच्छति–पुत्र+काम्य=**पुत्रकाम्य** (धातु)=पुत्र की इच्छा करना ।
पुत्रकाम्य+अ (शव्)+ति=**पुत्रकाम्यति ।** =वह पुत्र की इच्छा करता है ।
इदमिच्छति=**इदंकाम्यति ।** =वह उसकी इच्छा करता है ।
स्वरिच्छति=**स्वःकाम्यति ।** =वह स्वर्ग की इच्छा करता है ।
विकल्प से–**इदमिच्छति ।** इस प्रकार सर्वत्र वाक्य भी होता है ।

2) 'म्' कारान्त और अव्यय के सिवाय द्वितीयान्त नाम से इच्छा के अर्थ में **'य (क्यन्)'** और **'काम्य'** विकल्प से होता है ।
उदा. पुत्रमिच्छति – **पुत्रीयति ।** = पुत्र की इच्छा करता है । नि.3.
नावमिच्छति – **नाव्यति ।** = नाव की इच्छा करता है । नि.3.
वाचमिच्छति – **वाच्यति ।** = वाणी की इच्छा करता है ।
–प्र.पा. 34. नि. 1. की. टिप्पणी 1
इसी प्रकार से **पुत्रकाम्यति । वाक्काम्यति ।** –प्र.पा.34. नि. 1 देखे ।

3) **'क्यन्'** प्रत्यय लगने के बाद **'अ'** वर्ण का **'ई'** होता है ।
उदा. **पुत्रीयति ।** मालामिच्छति–**मालीयति ।**

2) इच्छा अर्थ में 'क्यन्' 'क्विप्' और 'क्यङ्' प्रत्यय

4) 'म्' कारान्त और अव्यय के सिवाय **उपमान स्वरुप द्वितीयान्त** और **आधार नाम** को **आचार अर्थ** में विकल्प से **'क्यन्'** प्रत्यय होता है ।
उदा. पुत्रमिवाचरति–**पुत्रीयति** छात्रम् ।
(=छात्र को पुत्र की तरह मानता (रखता) है ।

प्रासादे इवाचरति–**प्रासादीयति** कुट्याम् ।
(=झोपडी में महल की तरह आचरण करता है, रहता है ।

5) **उपमान कर्तानाम** को आचार अर्थ में विकल्प से **० (क्विप्)** प्रत्यय होता है ।
गल्भ, क्लीब और होड शब्द को **० (क्विप्)** प्रत्यय आत्मनेपदी होता है ।
उदा. अश्व इवाचरति–**अश्वति** । =घोडें की तरह आचरण करता है ।
दधि इवाचरति–**दधयति** । =दहि की तरह आचरण करता है ।
राजेवाचरति–**राजनति** । =राजा की तरह आचरण करता है ।
मधुलिडिवाचरति–**मधुलेहति** ।=भ्रमर की तरह आचरण करता है ।
गल्भ इवाचरति–**गल्भते** । =होशियार की तरह आचरण करता है ।
क्लीब इवाचरति–**क्लीबते** ।=नपुंसक की तरह आचरण करता है ।
होड इवाचरति–**होडते** । =मूर्ख की तरह आचरण करता है ।
गोधुगिवाचरति–**गोदोहति** ।
=गाय को दोहन करने वाले की तरह आचरण करता है ।

6) **उपमान कर्तानाम** को आचार अर्थ में विकल्प से **य (क्यङ्)** प्रत्यय होता है । **य (क्यङ्) प्रत्यय आत्मनेपदी है ।**
उदा. श्येन इवाचरति–**श्येनायते । हंसायते । अश्वायते ।**

7) **य (क्यन्), य (क्यङ्)** और **य (क्यङ्ष्)** प्रत्यय लगने पर पूर्व का स्वर दीर्घ होता है ।
उदा. निधिमिच्छति=**निधीयते । दधीयति ।** क्यन् नि.2.
श्येन इवाचरति=**श्येनायते ।** क्यङ्–नि. 6 देखे ।
अभृशो भृशो भवति=**भृशायते ।** क्यङ्–नि. 12 देखे ।
अलोहितो लोहितो भवति=**लोहितायति । लोहितायते ।**
–क्यङ्ष्–नि.13. देखे ।

8) **'स्' कारान्त** उपमान कर्तानाम को आचार अर्थ में विकल्प से **य (क्यङ्)** प्रत्यय लगता है और विकल्प से 'स्' का लोप होता है ।

उदा. पय इवाचरति=**पयायते ।** विकल्प से–**पयस्यते ।**

सर इवाचरति=**सरायते ।** विकल्प से–**सरस्यते ।**

9) **'ओजस्'** और **'अप्सरस्'** उपमान कर्तानाम को आचार अर्थ में विकल्प से **य (क्यङ्)** प्रत्यय लगता है और **'स्'** का नित्य लोप होता है ।

उदा. ओजः (ओजस्वी) इवाचरति=**ओजायते ।**

अप्सरा इवाचरति=**अप्सरायते ।**

10) **य (क्यन्)** और **य (क्यङ्)** प्रत्यय के बाद **ऋ** का **री** होता है ।

उदा. पितरमिच्छति–**पित्रीयति । मात्रीयति ।** क्यन्– नि. 2. देखे ।

पितेवाचरति–**पित्रीयते । मात्रीयते ।** क्यङ्–नि.6. देखे ।

11) कर्मणि प्रयोग के य(क्य)सिवाय यकारादि प्रत्यय के बाद, 'ओ' और 'औ' का क्रमशः अव् और आव् होता है ।

उदा. गामिच्छति–**गव्यति । नाव्यति ।** क्यन्–नि. 2. देखे ।

गौरिवाचरति–**गव्यते । नाव्यते ।** क्यङ्–नि. 6. देखे ।

3) च्वि प्रत्यय के अर्थ में क्यङ् और क्यङ्ष् प्रत्यय

12) **'भृश'** आदि कर्तानाम को **च्वि** के अर्थ में विकल्प से **य (क्यङ्)** प्रत्यय लगता है । तथा **'स्'** और **'त्'** का लोप होता है ।

उदा. अभृशो भृशो भवति=**भृशायते ।**

अनुन्मना उन्मना भवति=**उन्मनायते ।**

अवेहत् वेहत् भवति=**वेहायते ।**

अनोजस्वी ओजस्वी भवति=**ओजायते ।**

अपण्डितः पण्डितो भवति=**पण्डितायते ।**

इसी प्रकार–**शुचीयते । नीलायते । हरितायते ।**

मन्दायते । इत्यादि

13) **आ (डाच्)** प्रत्ययान्त और **लोहित** आदि **कर्तानाम** को **च्वि** के अर्थ में **य (क्यङ्ष्)** प्रत्यय लगता है । **क्यङ्ष् प्रत्यय उभयपदी है ।**

उदा. अपटत् पटत् भवति–**पटपटायति, पटपटायते ।**

(पा.16. नि. 7. (2) देखें ।)

अथवा–अपटपटा पटपटा भवति–**पटपटायति, पटपटायते ।**

अलोहितो लोहितो भवति–**लोहितायति, लोहितायते ।**

अश्यामो श्यामो भवति–**श्यामायति, श्यामायते ।**

अधूमः (अधूमवान्) धूमवान् भवति–**धूमायति, धूमायते ।**

(नि-7. देखें ।)

अनिद्रावान् निद्रावान् भवति–**निद्रायति, निद्रायते ।**

14) **'न्'** कारान्त नाम को **य (क्यन्), य (क्यङ्)** और **य(क्यङ्ष्)** प्रत्यय लगने के बाद पद बनता है ।

उदा. राजानमिच्छति–**राजीयति** । –क्यन्

राजा इवाचरति–**राजायते** । – क्यङ्

अचर्मवान् चर्मवान् भवति–**चर्मायति । चर्मायते ।** –क्यङ्ष्

यहाँ पद होने से न् का लोप हुआ है–प्र. पा. 47. नि. 2.

4) क्रमण (प्रवृत्ति) अर्थ में क्यङ् प्रत्यय

15) **पाप अर्थ** में रहे **'कष्ट, कक्ष, कृच्छ्र, सत्र और गहन'** – इन चतुर्थी अन्त वाले नामों को **क्रमण (प्रवृत्ति)** अर्थ में **क्यङ्** प्रत्यय लगता है ।

उदा. कष्टाय कर्मणे क्रामति=**कष्टायते ।**

=पापकर्म के लिए प्रवृत्ति करता है ।

वैसे ही–**कक्षायते । कृच्छ्रायते । सत्रायते । गहनायते ।**

सभी का अर्थ समान है–पाप कर्म के लिए प्रवृत्ति करता है ।

5) उच्चर्वण (पेट में से लाकर चबाना) अर्थ में क्यङ् प्रत्यय

16) **रोमन्थ कर्म नाम को उच्चर्वण अर्थ** में विकल्प से **क्यङ्** प्रत्यय लगता है ।

उदा. रोमन्थम् उच्चर्वयति=**रोमन्थायते गौः ।**=गाय उच्चर्वण करती है । (अभ्यवहृतं द्रव्यं **रोमन्थः ।**=खाया हुआ द्रव्य)

6) उद्‌वमन अर्थ में क्यङ् प्रत्यय

17) **फेन, उष्मन्, बाष्प** और **धूम** कर्मनाम को **उद्‌वमन अर्थ** में विकल्प से **क्यङ्** प्रत्यय लगता है ।

उदा.फेनमुद्‌वमति **फेनायते । वैसे ही–उष्मायते । बाष्पायते । धूमायते ।**

7) अनुभव अर्थ में क्यङ् प्रत्यय

18) **'सुख'** आदि कर्मनाम को **अनुभव अर्थ** में विकल्प से **'क्यङ्'** प्रत्यय लगता है ।

उदा. सुखमनुभवति–**सुखायते ।** वैसे ही **दु:खायते ।**

8) कृति (करना) अर्थ में क्यङ्, णिच् और क्यन् प्रत्यय

19) i) शब्द आदि कर्मनाम को **कृति** अर्थ में **क्यङ्** और **इ(णिच्)** प्रत्यय विकल्प से तथा

ii) **तपस्** कर्मनाम से **य (क्यन्)** प्रत्यय विकल्प से लगता है ।

उदा. शब्दं करोति–**शब्दायते । वैरायते । कलहायते ।** य (क्यन्)

वैसे ही **शब्दयति । वैरयति । कलहयति ।** इ(णिच्)

तप: करोति–**तपस्यति** । य (क्यन्)

20) **नमस्, वरिवस्** और **चित्र** कर्मनाम को **कृति अर्थ में** क्रमश: **अर्चा, सेवा** और **आश्चर्य** अर्थ में विकल्प से **य(क्यन्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. नम: करोति–**नमस्यति देवान्** ।=देवों की पूजा करता है ।

वरिव: करोति–**वरिवस्यति गुरून्** ।=गुरु की सेवा करता है ।

चित्रं करोति–**चित्रीयते ।** (आत्मनेपद होता है)=आश्चर्य करता है ।

9) निरसन (फेंकना, ऊंचा करना) आदि अर्थ में इ (णिङ्) प्रत्यय

21) **अंगवाची** कर्मनाम को निरसन अर्थ में **इ(णिङ्)** विकल्प से लगता है । **इ(णिङ्) प्रत्यय आत्मनेपदी है ।**

उदा. हस्तौ निरस्यति [1]**हस्तयते ।** वैसे ही-**पादयते । ग्रीवयते ।**

हस्तं करोति–**हस्तयति** । नि. 25 से इ(णिच्)

टिप्पणी 1. इ (णिङ्) प्रत्यय लगने पर द्वितीया पाठ 22 नि. 16 (1) भी लगता है । अर्थात्–अन्त्य स्वर का लोप होता है ।

22) **'पुच्छ'** कर्म को **उदसन** (ऊंचा फेंकना), **पर्यसन** (चारों ओर फेंकना) **व्यसन** (जोर से फेंकना) और **असन** (फेंकना) अर्थ में **इ (णिङ्)** प्रत्यय विकल्प से लगता है।

उदा. पुच्छम् उदस्यति–**उत्पुच्छयते** ।=पूंछ उछालता है।

पुच्छम् पर्यस्यति–**परिपुच्छयते** । =पूंछ को चारों ओर घुमाता है।

पुच्छम् व्यस्यति–**विपुच्छयते** ।=पूंछ को जोर से पछाडता है।

पुच्छम् अस्यति–**पुच्छयते** ।=पूंछ फेंकता है।

23) **'भाण्ड'** कर्म को **समाचयन**=इकट्ठा करना, ऐसे अर्थ में **इ(णिङ्)** प्रत्यय विकल्प से लगता है।

उदा. भाण्डानि समाचिनोति–**संभाण्डयते** । वैसे ही–**परिभाण्डयते** ।

=उपकरण, बर्तन या किराणा इकट्ठा करता है।

24) **चीवर** कर्म को '**परिधान**'=पहनना और '**अर्जन**'=प्राप्त करना, इन अर्थों में **इ(णिङ्)** प्रत्यय विकल्प से लगता है।

उदा. चीवरम् परिधत्ते–**परिचीवरयते** ।=कपडा पहनता है।

चीवरम् समाच्छादयति–**संचीवरयते** ।=कपडा पहनता है।

चीवरम् अर्जयति–**चीवरयते** ।=कपडा प्राप्त करता है।

चीवरम् समार्जयति=**संचीवरयते** ।=कपडा प्राप्त करता है।

10) कृ आदि (करना आदि) धातु के अर्थ में णिच् प्रत्यय

25) नाम को **कृ** आदि धातु के अर्थ में **इ(णिच्)** प्रत्यय बहुत प्रकार से लगता है।

उदा. मुण्डं करोति–**मुण्डयति छात्रम्** ।

मिश्रयति ओदनम् । **लवणयति सूपम्** ।

लघुं करोति–**लघयति** ।

छिद्रयति । **कर्णयति** । **दण्डयति** । **अन्धयति** । **अङ्कयति** ।

व्याकरणस्य सूत्रंकरोति–**व्याकरणं सूत्रयति** ।

द्वारस्योद्घाटनं करोति–**द्वारमुद्घाटयति** ।

पटुमाचष्टे करोति वा–[1]**पटयति ।**

स्थूलं–**स्थवयति** । दूरं–**दवयति** । युवानं–**यवयति ।**

क्षिप्रं–**क्षेपयति** । क्षुद्रं–**क्षोदयति** । प्रियं–[2]**प्रापयति ।**

स्थिरं–**स्थापयति** । पुच्छं–**पुच्छयति ।**

वृक्षमाचष्टे रोपयति वा **वृक्षयति ।**

कृतं गृह्णाति–**कृतयति । वर्णयति ।**

त्वचयति । –(त्वच शब्द अकारान्त है)

रूपं दर्शयति–**रूपयति ।**

रूपं निध्यायति–**निरूपयति ।**=रूप देखता है ।

वस्त्रं परिदधाति–**परिवस्त्रयति ।** =कपडा पहनता है ।

हस्तिनातिक्रामति–**अतिहस्तयति ।**=हाथी से उल्लंघन करता है ।

वर्मणा संनह्यति–**संवर्मयति ।**=बख्तर से सज्ज होता है ।

वीणया उपगायति–**उपवीणयति ।**=वीणा के साथ गाता है ।

सेनया अभियाति–**अभिषेणयति ।**=सेना के साथ जाता है ।

वास्या छिनत्ति–**वासयति ।**=चरबी से कांटता है ।

असिना छिनत्ति–**असयति ।**=तलवार से कांटता है ।

श्लोकैरुपस्तौति–**उपश्लोकयति ।**=श्लोकों के द्वारा स्तुति करता है ।

हस्तेनापक्षिपति–**अपहस्तयति ।**=हाथ से दूर करता है ।

पुष्पेणार्चयति–**पुष्पयति ।**=फुलों से पूजा करता है ।

पाशेन संयच्छति–**संपाशयति ।**=पाश से बांधता है ।

पाशं पाशाद्वा विमोचयति–**विपाशयति ।**=पाश में से छुडवाता है ।

कुलं प्रतीपं गच्छति–**प्रतिकूलयति ।**=प्रतिकूल होता है ।

कुलं अनुगच्छति–**अनुकूलयति ।**=अनुकूल होता है ।

पुत्रं सूते–**पुत्रयति ।**=पुत्र को जन्म देता है । इत्यादि

26) **'भोजन'** खाना और **'भोजननिवृत्ति'** न खाना, इन अर्थों में रहे व्रत शब्द को **कृ** आदि धातु के अर्थ में **इ (णिच्)** प्रत्यय लगता है ।

टिप्पणी **1.** द्वितीय पाठ 22 नि. 16 (1) (2) (3) (4) और (5) नियम, णिच् प्रत्यय लगने पर भी लगते है । पृथुं–**प्रथयति** । बहुं–**भूययति** ।

2. द्वितीया पाठ 36 नि. 1. (4)

उदा. पय एव मया भोक्तव्यमिति व्रतं करोति गृह्णाति वा=**पयोव्रतयति ।**

=मेरे द्वारा दूध ही पीने योग्य है ऐसा व्रत ग्रहण करता है ।

सावद्यन्नं मया न भोक्तव्यमिति व्रतं करोति गृह्णाति वा= **सावद्यान्नंव्रतयति ।**

=मेरे द्वारा सावद्य अन्न नहीं खाने योग्य है ऐसा व्रत ग्रहण करता है ।

27) **णिच्** प्रत्यय लगने पर **सत्य, अर्थ** और **वेद** के **अ** का **आ** होता है ।

उदा. सत्यमाचष्टे करोति वा **सत्यापयति । अर्थापयति । वेदापयति ।**

परिशिष्ट नियम :–

1) **भूख, प्यास** और **आसक्ति** में क्रमशः '**अशन**' का '**अशनाय,**' '**उदक**' का '**उदन्य**' और '**धन**' को '**धनाय**' ऐसे क्यन् प्रत्ययांत आदेश होते है ।

उदा. **अशनायति–**भूखा व्यक्ति अशन (भोजन) की इच्छा करता है ।

उदन्यति–प्यासा व्यक्ति पानी की इच्छा करता है ।

धनायति–लोभी व्यक्ति धन की इच्छा करता है ।

शब्द

उन्मनस् (वि.)=ऊंचे मनवाला । **उन्मनायते ।**

ऐन्द्री (स्त्री.)=पूर्वदिशा । **इन्द्रो देवताऽस्याः ।**

ओजस् (न.)=बल, तेज । **ओजायते ।**

कराल (वि.)=भयंकर ।

कादम्बरी (स्त्री.)=मदिरा, दारु ।

कार्थ (पुं.)=थोडा प्रयोजन । **ईषदर्थः कार्थः ।**

क्रकच (पुं.)=करवत ।

क्लीब (न.)=नपुंसक । **क्लीबते ।**

गल्भ (वि.)=होशियार । **गल्भते ।**

चित्र (न.)=चित्र, आश्चर्य ।

चीवर (न.)=कपडा, वस्त्र ।

चैद्य (पुं.)=चेदिदेश का राजा ।

तक्षक (पुं.)=एक प्रकार का साँप ।

त्वच (पुं.)=चमडी । **त्वचयति ।**

दमत् (व.कृ.)=आवाज करता, दम मारता ।

धीवर (पुं.)=मच्छीमार ।

नील (पुं.)=हरा रंग ।

पटत् (व.कृ.)=पटपट आवाज, ऐसी आवाजवाला । **पट इवाचरत् ।**

पाप (वि.)=पापी ।

पिङ्ग (वि.)=पीले रंग का ।

भटित्र (न.)=सलीये पर पकाया मांस ।

भृश (वि.)=ज्यादा, अतिशय ।

मख (पुं.)=यज्ञ ।
माथुर (पुं.)=मथुरा का राजा ।
'मथुरायां भवो माथुरः' ।
राजक (न.)=राजाओं का समुह ।
'राज्ञां समूहो राजकम्' ।
लोहित (वि.)=लाल । **'लोहितायते'।**
वसा (स्त्री.)=मेद, चरबी ।
विदग्ध (पुं.)=पंडित, चतुर ।
वेहत् (स्त्री.)=गर्भघातिनी गाय ।
वेताल (पुं.)=एक भैरव देव ।
हरित (पुं.)=हरा वर्ण ।
होड (पुं.)=मुर्ख । **'होडते' ।**
शची (स्त्री.)=इन्द्राणी ।
शकटी (स्त्री.)=सगडी ।
स्वर् (अव्यय)=स्वर्ग, आकाश ।

धातु

कील् (ग.1. पर.)=बांधना । **'कीलति' । उद् + कील् =** उखेडना ।
गल्भ् (ग.1. आ.)=होंशियारी करना, धृष्टता करना, सामने होना । **'गल्भते' ।**
चित्र् (ग.10. पर.)=चित्र बनाना । **''चित्रयति–आलेख्यं करोति'' ।**
नि+ध्यै (ग.1. पर.)=देखना । **''निध्यायति'' ।**
निर्+वा (ग.2. पर.)=शांत होना । **''निर्वाति'' ।**
पश् (ग.10. पर.)=बांधना । **''पाशयति'' । विपाशयति ।**
मन्द् (ग.1. आ.)=स्तुति, हर्ष, गर्व, आलस और गति करना । **''मन्दते'' ।**

संस्कृत वाक्य

1. न प्रागल्भायते मिथ्याकथनै र्यः कदाचन ।
   आजो प्रगल्भते दोर्भ्यां रिपो र्विघटयन्घटाः ।।
2. **चित्रैश्चित्रयति व्योम स रत्नाभरणांशुभिः ।**
   गरीयसा च चित्रेण यस्य चित्रीयते जनः ।।
3. व्यायामदृढदेहोऽपि मन्दते यो न सुन्दरः ।
   मन्दायते क्वचित्कार्थे परार्थे न च कर्हिचित् ।।
4. **विपाशयति यः शत्रून् बन्धनैरखिलानपि ।**
   विपाशयति चात्मानं ज्ञानात्कर्मक्षयं नयन् ।।
5. तत्र वारिचराः स्वैरं खादन्त्यन्योन्यमुत्सुकाः ।
   धीवरैः परिगृह्यन्ते गिल्यन्ते च बकादिभिः ।।

6. उत्कील्यन्ते त्वचयद्भि भृंजज्यन्ते च भटित्रवत् ।
भोक्तुकामै र्विपच्यन्ते निगाल्यन्ते वसार्थिभिः ॥

7. आरुह्यावाहयद्वाहानिव वीरः कुमारकान् ।
आरुरोह सरस्यापि पृष्ठं प्रष्ठो महौजसाम् ॥

8. ततः करालं वेतालरूपमाधाय दुष्टधीः ।
भूधरानप्यधरयन् प्रारब्धो वर्धितुं सुरः ॥

9. पातालकल्पे तस्यास्ये जिह्वया तक्षकायितम् ।
पिङ्गैस्तुङ्गे शिरः शैले केशै र्दावानलायितम् ॥

10. तस्यातिदारुणे दंष्ट्रे अभूतां क्रकचाकृती ।
जाज्वल्यमाने अङ्गार-शकट्याविव लोचने ॥

11. स व्यरंसीद्वर्धनान्न यावत्तावन्महौजसा ।
आहत्य मुष्टिना पृष्ठे स्वामिना वामनीकृतः ॥

12. पापाः कादम्बरीपान–विवशीकृत–चेतसः ।
जननीं हा प्रियीयन्ति जननीयन्ति च प्रियाम् ॥

13. न जानाति परं स्वं वा माद्यच्चलितचेतनः ।
स्वामीयति वराकः स्वं स्वामिनं किंकरीयति ॥

14. अशनीयन्सदा मांसं दयां यो हि चिकीर्षति ।
ज्वलति ज्वलने वल्लीं स रोपयितुमिच्छति ॥

15. मनः शुद्धिमबिभ्राणा ये तपस्यन्ति मुक्तये ।
त्यक्त्वा नावं भुजाभ्यां ते तितीर्षन्ति महार्णवम् ॥

16. किं बहुना, यदुचितं यौवनस्य, रुचितं चित्तवृत्तेः, आराधकं विदग्धानाम्, अबाधकं लोकद्वयस्य तद्, अपरमप्यविकलतया विवेकस्य, स्थिरतया कुलाभिमानस्य, स्वभ्यस्ततया विनयस्य भूयिष्ठतया च सत्त्ववृत्तेः, यथा न धर्मः सीदति, यथा नार्थः क्षयं व्रजति, यथा न राजलक्ष्मीरुन्मनायते, यथा न कीर्तिर्मन्दायते, यथा न प्रतापो निर्वाति, यथा न गुणाः श्यामायन्ते, यथा न श्रुतमुपहस्यते, यथा न परिजनो विरज्यते, यथा न मित्रवर्गो म्लायति, यथा न शत्रवस्तरलायन्ते, तथा सर्वमन्वतिष्ठत् (स राजा) ।

द्व्याश्रय–महाकाव्ये सप्तमः सर्गः ।

17. ये स्वयंवरे शीघ्रमागताः, तान् वुवूर्षून् नृपान् तस्याः दुर्लभदेव्याः प्रातिहारी वक्ष्यमाण-प्रकारेण शशंस–

18. न युयुत्सितुमिच्छन्ति द्विषो यं जीवकाम्यया ।
जीवीयज्जीवदोऽङ्गोऽयमिदंकाम्यसि सुभ्रु ! किम् ।।97।।

19. ऐन्द्र्यामिन्द्रति यः शास्त्रे गल्भते न तु होडते ।
अक्लीबमानेऽवन्तीशे किमत्र त्वं शचीयसे ।।99।।

20. यस्य वाचः पयायन्ते लावण्यं च पयस्यते ।
चैद्येऽप्सरायमाणा त्वं रन्तुमोजायसेऽत्र किम् ।।100।।

21. न यः कक्षायते कोपाल्लोभात्कृच्छ्रायते न च ।
नापि सत्रायते कामाद् माथुरं किं भजस्यमुम् ।।103।।

22. श्री र्न दुःखायते यत्र वाण्या वैरायते न च ।
शब्दायितयशः शङ्खः सोऽयं श्रीगूर्जरेश्वरः ।।106।।

23. नमस्यन्वरिवस्यंश्चाचित्रीयत तपस्यताम् ।
यश्च दुर्लभराजं तं नाम्नामुं किं वुवूर्षसि ।।107।।

24. साऽथ हस्तयमानाऽस्य कण्ठे चिक्षेप च स्रजम् ।
अश्वैरुत्पुच्छयमानै र्ययौ कुप्यच्च राजकम् ।।108।।

25. संभाण्डयन्ते संचीवरयमाणा मखाय ये ।
ते मन्त्रयन्तो ब्रह्माणस्तयोः पाणी अमिश्रयन् ।।110।।

टिप्पणी

97. **जीवकाम्यया** जीवितव्यवाञ्छया ।
जीवीयज्जीवदः जीवितव्येषिणां जीवितव्यदाता । **अङ्गः** अङ्गदेशाधिपः।

98. **शचीयसे** शचीवाचरसि ।

106. **वाण्या** वाण्या सह ।
शब्दायितयशः शङ्खः सशब्दीकृतकीर्तिकम्बुः ।

110. **मन्त्रयन्तः** मन्त्रमाचक्षाणाः ।

तीसरा-कृदन्त प्रकरण

पाठ-7

कृदन्त

1) धातु को जो प्रत्यय लगकर, धातु पर से शब्द बनते है, वे प्रत्यय **कृत्** कहलाते है ।

कृत् प्रत्यय जिन शब्दों के अंत में हो, वे कृदन्त कहलाते है ।

i) कृत्य प्रत्ययों का, **सकर्मक धातु से कर्मणि** (कर्म में) प्रयोग होता है और **अकर्मक धातु से भावे** (भाव में, क्रिया में) प्रयोग होता है । (प्र.पा. 45. नि.4.)

उदा. **कृत्यः कटो भवता ।** (=आपके द्वारा चटाई की जाती है । कर्मणि ।)

भवता शयितव्यम् । (=आपके द्वारा सोया जाता है । भावे ।)

भवता कार्यम् । (=आपके द्वारा किया जाता है । भावे ।)

ii) **प्रैष** (आज्ञापूर्वक विधि) **अनुज्ञा** (अनुमति, संमति अथवा छूट) और **अवसर** (समय प्राप्त होना) इनसे विशिष्ट कर्ता, कर्म और भाव अर्थ में धातु को **कृत्य प्रत्यय** और **पंचमी** (आज्ञार्थ) के प्रत्यय लगते है । (प्र.पा. 45. नि.6.)

उदा. **भवता खलु कटः कार्यः ।** (=आपके द्वारा अवश्य चटाई की जाय ।)

भवान् खलु कटं करोतु । (=आप अवश्य चटाई करो ।)

यहाँ पहले वाक्य में आज्ञा और दूसरे वाक्य में अनुज्ञा या अवसर बताया है ।

iii) कर्ता **शक्त** (शक्तिमान्) और **अर्ह** (योग्य) हो तब धातु को **कृत्य प्रत्यय** और **सप्तमी** (विध्यर्थ) के **प्रत्यय** लगते है ।

(प्र.पा. 45. नि.5.)

उदा. **भवता खलु भारो वाह्यः ।**

(=वास्तव में आपके द्वारा भार वहन करना शक्य है ।)

भवता खलु भारं वहेत् ।
(=आप वास्तव में भार को वहन करो, आप सशक्त हो ।)
भवता खलु कन्या वोढव्या ।
(=वास्तव में आपके द्वारा कन्या वहन करने (विवाह करने) योग्य है । (आपको शादी करनी चाहिए ।)
भवान् खलु कन्या वहेत् ।
(=वास्तव में आप कन्या को वहन करो, आप योग्य हो ।)

1) कृत्य कृदन्त

2) **य (घ्यण्), तव्य, अनीय, य** और **य (क्यप्)** ये पांच कृत् प्रत्यय **कृत्य** कहलाते है ।

3) कृत्य प्रत्यय सकर्मक धातु से कर्म में और अकर्मक धातु से भाव में प्रयोग होते है । (अर्थात्–कृत्य प्रत्ययों का सकर्मक धातु से कर्मणि प्रयोग होता है और अकर्मक धातु से भावे प्रयोग होता है ।)
प्रथमा पाठ 45 नि. 3-4-5-6 देखे ।
उदा. **कार्यः, कर्त्तव्यः, करणीयः, कृत्यः कटो भवता ।** (कर्मणि प्रयोग में)
भवता शयितव्यम्, शयनीयम्, शेयम् । (भावे प्रयोग में)
भवता कार्यम् कर्त्तव्यम् करणीयम् कृत्यम् ।
भवता देयम् । (द्वि.पा. 15 नि. 11. देखें ।)

4) **रुच्य, अव्यथ्य और वास्तव्य** – ये कृत्य कृदन्त कर्ता में–कर्त्तरि प्रयोग में होते है । (**रुच्** और **नव्यथ्** धातु को **य (क्यप्)** प्रत्यय लगा है और **वस्** धातु को **तव्य** प्रत्यय लगा है ।)
उदा. **रोचते इति रुच्यो मोदको मैत्राय ।**
=मैत्र को मोदक पसंद (रुचिकर) है ।
न व्यथते इति अव्यथ्यो मुनिः ।= मुनि व्यथा नहीं पाते है ।
वसति इति वास्तव्य ।= रहनेवाला, बसनेवाला ।

5) **भव्य, गेय, जन्य, रम्य, आपात्य** और **आप्लाव्य**=–ये कृत्य कृदन्त कर्ता में कर्त्तरि प्रयोग में विकल्प से होते है ।

उदा. **भवति असौ इति भव्यः ।** विकल्प से–**भव्यम् अनेन ।**
गायति इति गेयो माणवको [1]साम्नाम् ।
=बालक प्रियवचन गाता है । (य–प्रत्यय)
गेयानि माणवकेन सामानि ।
=बालक द्वारा प्रियवचन गाये जाय । (य–प्रत्यय)
जायतेऽसौ इति जन्यः । जन्यमनेन ।
य(घ्यण्) (द्वि. पा. 27. नि. 10. की टिप्पणी देखे)
रमयत्यसौ–रम्यः । रम्यते–रम्यः । (य-प्रत्यय)
आपतत्यसौ–आपात्यः ।
(=आकर गिरता है, हाजर होता है ।) **आपात्यमनेन ।**
आप्लवतेऽसौ–आप्लाव्यश्चैत्रो नद्याम् । (=चैत्र नदी में कुदा ।)
आप्लाव्यमनेन । (य(घ्यण्) प्रत्यय)

6) 'प्रवचनीय' आदि **'अनीय'** प्रत्ययान्त कृदन्त कर्ता में–कर्तरि प्रयोग में विकल्प से लगते है ।

उदा. **प्रवक्ति प्रब्रूते वा प्रवचनीयो गुरुः शास्त्रस्य ।**
(=गुरु शास्त्र कहनेवाले है ।)
प्रवचनीयं गुरुणा शास्त्रम् । (=गुरु के द्वारा शास्त्र कहे जाते है ।)
उपतिष्ठते इति उपस्थानीयः शिष्यो गुरोः ।
(=शिष्य गुरु की सेवा करनेवाले होते है ।)
उपस्थानीयः शिष्येण गुरुः ।
(=शिष्य के द्वारा गुरु सेवा की जाती है ।)
वैसे ही–**रमयतीति रमणीयो देशः ।** (=देश आनंददायी है ।)
मदयतीति मदनीया योषित् । (=स्त्री उन्माद पैदा करती है ।)
दीपयतीति दीपनीयं चूर्णम् । (=चूर्ण शोभा करता है ।)
मोहयतीति मोहनीयं कर्म । (=मोहनीय कर्म मोहित करता है ।)
ज्ञानमावृणोतीति ज्ञानावरणीयम् ।
(=ज्ञानावरणीय कर्म ज्ञान को आवरण करता है ।)

टिप्पणी 1. कृदन्त के कर्म को षष्ठी विभक्ति होती है ।

दर्शनमावृणोतीति दर्शनावरणीयम् ।
(=दर्शनावरणीय कर्म दर्शन को आवरण करता है ।)

7) **ऋ वर्णान्त धातुओं** को और **व्यंजनांत धातुओं** को **य (घ्यण्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. कृ–**कार्यम् ।** हृ–**हार्यम् ।** पच्–[1]**पाक्यम्**[2] **।** वच्-[3]**वाक्यम् ।**
(य(घ्यण्) णित् होने से वृद्धि–द्वि. पा. 5. नि. 2. से)

8) **'अवश्य'** अर्थ में **'उ' वर्णान्त** धातुओं को **य (घ्यण्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. लू–[4]**लाव्यम् ।** (=अवश्य कांटने योग्य ।) पा.6. नि.11. देखें ।)
पू–**पाव्यम्** (=अवश्य पवित्र करने योग्य ।)

9) **आ+सु, यु, वप्, रप्, लप्, त्रप्, डिप्, दभ्, चम्,** और **आ+नम्**–इन धातुओं को **य (घ्यण्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. आ+सु–**आसाव्यम् ।** (=अवश्य जन्म देने योग्य ।)
यु–**याव्यम्** (=अवश्य बांधने योग्य ।)

टिप्पणी **1.** त (क्त) प्रत्यय के बाद जिन धातुओं को इ (इट्) नहीं लगती, ऐसे धातु के च् और ज् का घित् प्रत्यय के बाद क्रमश क् और ग् होता है ।
उदा. पच्+अ (घञ्)=पाकः । सिच्–सेकः ।
पच्+य (घ्यण्)=पाक्यम् । सिच्–सेक्यम् ।
त्यज्+अ(घञ्)=त्यागः । रञ्ज्–रागः ।
भुज्+य (घ्यण्)=भोग्यम् । युज्–योग्यम् ।
त(क्त) के बाद–पच्–पक्वः । सिच्–सिक्तः । त्यज्–त्यक्तः ।
रञ्ज्–रक्तः । भुञ्ज्–भुक्तः । युज्–युक्तः । इ नहीं होती ।
पक्वः में त का व होता है ।

2. य(घ्यण्) में अवश्य अर्थ में च् और ज् का क् और ग् नहीं होता ।
उदा. पच्–पाच्यम् (=अवश्य पकाना ।)
रञ्ज्–रञ्जयम् । (=अवश्य रंगना ।)

3. वाक्यम् (=विशिष्ट पद समुदाय रूप वाक्य ।)
वाच्यम् (=कहने योग्य ।)

4. ति (क्ति) प्रत्यय पा.9. नि. 8. के पहले के अपवाद में, एक समान न हो वैसा उत्सर्ग प्रत्यय विकल्प से होता है ।
उदा. अवश्य लाव्यम् । य (घ्यण्) अपवाद प्रत्यय है ।
अवश्य लवितव्यम् । अवश्य लवनीयम् ।
तव्य और अनीय उत्सर्ग प्रत्यय है । एवं घ्यण के समान नहीं है ।

वप्–**वाप्यम्** । (=अवश्य वपन करने योग्य ।)
रप्–**राप्यम्** । (=अवश्य स्पष्ट बोलने योग्य ।)
लप्–**लाप्यम्** (=अवश्य बोलने योग्य ।)
अभि+लप्=**अभिलाप्यम्** (=अवश्य बोलने योग्य ।)
अप+त्रप्=**अपत्राप्यम्** (=अवश्य शरमाने योग्य ।)
डिप्–**डेप्यम्** । (=अवश्य फेंकने योग्य ।)
दभ्–**दाभ्यम्** –(=अवश्य ठगने योग्य ।)
आ+चम्=**आचाम्यम्** (=अवश्य चांटने योग्य ।)
आ+नम्= **आनाम्यम्** (=अवश्य नमस्कार करने योग्य ।)

10) धातु को **तव्य** और **अनीय** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **शयितव्यम्** । **शयनीयम्** (=अवश्य सोने योग्य) ।
वस्तव्यम् । **वसनीयम्** (=अवश्य रहने योग्य ।)
कर्तव्यम् । **करणीयम्** । (=अवश्य करने योग्य ।)
कर्तव्यः । **करणीयः** कटो भवता ।
(=आपके द्वारा अवश्य चटाइ बनाने (करने) योग्य है ।)

11) **स्वरान्त** धातुओं को **य** प्रत्यय लगता है एवं धातु के **आ** का **ए** होता है ।
उदा. चि–**चेयम्** (=अवश्य इकट्ठा करने योग्य ।)
जि–**जेयम्** ।(=अवश्य जीतने योग्य ।)
नी–**नेयम्** । (=अवश्य ले जाने योग्य ।)
शी-**शेयम्** । (=अवश्य सोने योग्य ।)
नू–**नव्यम्** । (=अवश्य स्तुति करने योग्य ।)
लू–**लव्यम्** । (=अवश्य कांटने योग्य ।)
भू–**भव्यम्** । (=अवश्य होने योग्य ।) पा.7. नि. 5. ।
दा–**देयम्** । (=अवश्य देने योग्य ।)
धा–**धेयम्** । (=अवश्य धारण करने योग्य ।)

12) **शक्, तक्, चत्, यत्, शस्, सह्, यज्, भज्** और **'प' वर्गान्त** धातुओं को **'य'** प्रत्यय लगता है ।

उदा. शक्–**शक्यम् ।** (=शक्तिमान होने योग्य ।),
तक्–**तक्यम् ।** (=हंसने योग्य ।)
चत्–**चत्यम् ।** (=मांगने योग्य ।),
यत्–**यत्यम्** । (=प्रयत्न करने योग्य ।)
शस्–**शस्यम् ।** (=मारने योग्य ।),
सह्–**सह्यम्** । (=सहने योग्य ।)
यज्–**यज्यम् ।** (=यज्ञ करने योग्य ।),
भज्–**भज्यम्** । (=भजने योग्य ।)

'प'वर्ग–तप्–**तप्यम् ।** (=तपने योग्य ।), लभ्–**लभ्यम्** (=पाने योग्य ।)
गम्–**गम्यम् ।** (=जाने योग्य ।)

13) उपसर्ग बिना **''यम्, मद्** और **गद्''** धातु को **'य'** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **यम्यम् ।** (=परोसने योग्य ।), **मद्यम्** (=मान करने योग्य ।),
गद्यम् (=बोलने योग्य ।) परंतु आयाम्यम् ।

14) उपसर्ग बिना **नाम के बाद** रहे **'वद्'** धातु को **य (क्यप्)** और **य** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **ब्रह्मोद्यम् । ब्रह्मवद्यम् ।** (=ब्रह्मवाक्य ।), **सत्योद्यम । सत्यवद्यम् ।** (=सत्य वचन) (द्वि. पा. 6. नि. 5. से व का उ)
परंतु वाद्यम् । प्रवाद्यम् ।

15) **दृ, वृ** (उभयपदी), **स्तु, जुष्, इ** और **शास्** धातुओं को **य (क्यप्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. दृ–**आदृत्यः** (=डरने योग्य ।), वृ–**प्रावृत्यः ।** (=ढकने योग्य ।)
स्तु–**स्तुत्यः** (=अवश्य स्तुति करने योग्य)
जुष्–**जुष्यः** । (कल्पना करने योग्य ।)
इ–**इत्यः** । (=जाने योग्य ।),
शास्–**शिष्यः** । (अनुशासन करने योग्य ।) (द्वि.पा. 12. नि. 6 से शास् के आस् का इस् हुआ है ।)

16) **कृप्, चृत्** और **ऋच् सिवाय** के **ऋ जिसके उपान्त्य में हो,** ऐसे धातुओं को **य (क्यप्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. वृत्–**वृत्यम्** । वृध्–**वृध्यम्** । गृध्–**गृध्यम्** । शृध्–**शृध्यम्** ।
–य (क्यप्) परंतु
–कृप्–कल्प्यम् । चृत्–चर्त्यम् । ऋच्–अर्च्यम् ।–य (घ्यण्)

17) **कृ, वृष्, मृज्, शंस्, गृह्, दुह्** और **जप्** धातुओं को विकल्प से **य(क्यप्)** प्रत्यय लगता है । (विकल्प से **य (घ्यण्)** भी लगता है ।)

उदा. कृ–**कृत्यम्, कार्यम्** । वृष्–**वृष्यम्, वर्ष्यम्** ।
मृज्–**मृज्यम्, मार्ज्यम्** । (द्वि.पा.13. नि. 1.)
शंस्–**शस्यम्, शंस्यम्** । गृह्–**गृह्यम्, गोह्यम्** ।
दुह्–**दुह्यम्, दोह्यम्** ।
जप्–**जप्यम्, जाप्यम्** । य(क्यप्) कित् होने से शंस् के अनुस्वार का लोप एवं शेष में गुण नहीं हुआ । एवं य(घ्यण्) णित् होने से वृद्धि हुई)

2) कर्तृ सूचक कृदन्त

'धातु सूचित क्रिया का कर्ता' इस अर्थ में – कर्ता में

18) धातु को **अक (णक)** और **तृ (तृच्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. पचति इति **पाचकः** । **पक्ता** । **पक्तारौ** ।
पठति इति **पाठकः** । **पठिता** । **पठितारौ** ।

19) धातु को **अ (अच्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. कृ–**करः** ।(=करनेवाला), हृ–**हरः** । (=हरण करनेवाला),
पच्–**पचः** । (=पकानेवाला) पठ्–**पठः** । (=पढानेवाला),
उद्+वह्–**उद्वहः** । (=विवाह करनेवाला)

20) **नन्दि आदि** धातुओं को **अन** प्रत्यय लगता है ।

उदा. नन्दयतीति **नन्दनः** । (=आनंदित करनेवाला),
वाशयतीति **वाशनः** । (=आवाज करनेवाला)
मदयतीति **मदनः** । (=मद करनेवाला),
दूषयतीति **दूषणः** ।(=दोषित करनेवाला),
साधयतीति **साधनः** । (=सिद्ध करनेवाला)
वर्धयतीति **वर्धनः** । (=बढानेवाला)
रोचयतीति **रोचनः** । (=पसंद करने वाला)

शोभयतीति **शोभन** (=शोभा करनेवाला)
सहते इति **सहनः** (=सहन करनेवाला)
रमते इति **रमणः** (=खेलनेवाला)
दाम्यतीति **दमनः** (=दबाने वाला),
विरोचते इति **विरोचनः** । (=विशेष पसंद करने वाला)
विकृन्ततीति **विकर्तनः** (=विशेष कांटने वाला)
तपते इति **तपनः** । (=तपानेवाला)
प्रतृदतीति **प्रतर्दनः** । (=प्रकट दु:खदेनेवाला)
दहतीति **दहनः** (=जलने/जलानेवाला)
यौतीति **यवनः** (=इकट्ठा करनेवाला),
पताति इति **पवनः** । (=पवित्र करनेवाला)
लुनातीति **लवणः** (=काटनेवाला) (न का ण निपात)
संक्रन्दतीति **संक्रन्दनः** (रोनेवाला),
संकृषतीति **संकर्षणः** । (=अच्छे से खींचनेवाला)
संहृष्यतीति **संहर्षणः** ।
सर्वान् दाम्यतीति **सर्वदमनः** ।
जनान् दाम्यतीति **जनार्दनः** ।
वित्तंविनाशयतीति **वित्तविनाशनः** । (=धन नाश करनेवाला)
मधु सूदयतीति **मधुसूदनः** ।
(=मधु नाम के शत्रु को नाश करने वाला–विष्णु ।) इत्यादि ।

21) **नामि** स्वर उपान्त्य में हो ऐसे धातुओं को तथा **प्री, कॄ, गॄ** और **ज्ञा** धातुओं को **अ (क)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **विक्षिपः** । **विलिखः** । **बुधः** । **युधः** । **कृशः** । **वितृदः** ।
(नामि स्वर उपान्त्य है)
प्री–प्रीणातीति **प्रियः** । कॄ–किरतीति **किरः** । **उत्किरः** ।
गॄ–गिलतीति **गिल** । **निगिलः** । ज्ञा–जानातीति **ज्ञः**[1] ।
(द्वि. पा. 25. नि. 9 से आ का लोप)

टिप्पणी 1. ज्ञः । ज्ञायकः । ज्ञाता । नन्दनः । नन्दकः । नन्दयिता । (नि.8 की टिप्पणी देखे) ।

22) उपसर्ग के बाद रहे हुए **श्या (श्यै)** सिवाय आकारान्त धातुओं को **अ(ड)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. आह्वयतीति **आह्व:**। **संव्य:**। **परिव्य:**। **प्रज्य:**। **अनुज्य:** । **प्रस्थ:**।
सुग्ल: । **सुत्र:** । **व्याल:** । **सुर:** ।

23) **ग्रह्** आदि धातुओं को **इन् (णिन्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **ग्राही** । **स्थायी** । **मन्त्री** । **अपराधी** । **उत्साही** । **निवासी** ।

उपपद समास-कृदन्त

24) कर्म के बाद रहे धातुओं को **अ (अण्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. कुम्भं करोति **कुम्भकार:** । तन्तून्वयति **तन्तुवाय:** ।
पापं हन्ति **पापघातो** यति: । द्वि. पा. 36. नि. 4.
भारं वहति **भारवाह:** । द्वारं पालयति **द्वारपाल:** ।
सूत्रं धारयति **सूत्रधार:** ।

25) कर्म के बाद रहे उपसर्ग रहित **गा (गै)** धातु को **अ (टक्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. वक्रं गायति **वक्रग:** । **सामग:** । **सामगी** । द्वि.पा. 25. नि. 9.
तथा द्वि.पा.35 नि.2 की सुचना से अन्त्य **'अ'** का लोप ।

26) कर्म के बाद रहे उपसर्ग बिना के **ह्वा (ह्वे)**, **वा (वे)** और **मा सिवाय** के **आकारान्त धातुओं** को **अ (ड)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. गां ददाति **गोद:** । **कम्बलद:** । **जलद:** ।
अङ्गुलिं त्रायते **अङ्गुलित्रम्** ।

27) **क्लेशादि** कर्म के बाद रहे हुए **अप + हन्** धातु को **अ (ड)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. क्लेशमपहन्ति **क्लेशापह:** । **तमोपह:** । **ज्वरापह:** ।

28) **कुमार** और **शीर्ष** कर्म के बाद रहे **हन् धातु** को **इ (णिन्)** प्रत्यय लगता है । (द्वि. पा.36 नि.4 देखे)

उदा. कुमारं हन्ति **कुमारघाती** । **शीर्षघाती** ।

29) कर्म के बाद रहे **हन् धातु** को **'अचित्त कर्ता होने पर' अ (टक्)** प्रत्यय लगता है । (द्वि. पा.25 नि. 3, 4 एवं 6 देखे)

उदा. वातं हन्ति–**वातघ्नं** तैलम् । **पित्तघ्नं** घृतम् । **श्लेष्मघ्नं** मधु ।

30) **ब्रह्म** आदि कर्म के बाद रहे **हन्** धातु को **अ (टक)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. ब्रह्म हन्ति **ब्रह्मघ्नः** । **कृतघ्नः** । **शत्रुघ्नः** । **वृत्रघ्नः** ।
भ्रूणघ्नः । **बालघ्नः** ।
(द्वि.पा. 25. नि. 6. एवं द्वि. पा.13 नि. 8 एवं 9 देखे)

31) **कुक्षि, आत्मन्** एवं **उदर**—इन कर्म के बाद रहे **भृ** धातु के बाद **इ (खि)**[1] प्रत्यय लगता है ।
उदा. कुक्षिमेव बिभर्ति **कुक्षिम्भरिः** । **आत्मंभरिः** । **उदरंभरिः** ।

32) कर्म के बाद रहे **'अर्ह्'** धातु को **अ (अच्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. पूजामर्हति **पूर्जाह** साधुः । **पूजार्हाः** साध्वी ।

33) दण्डादि सिवाय **आयुध** आदि कर्म के बाद में रहे **'धृ'** धातु को **अ (अच्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. धनुर्धरति **धनुर्धरः** । **शक्तिधरः** । **चक्रधरः** । **वज्रधरः** । **भूधरः** ।
जलधरः । **पयोधरः** । **शशधरः** । **विद्याधरः** । इत्यादि
दण्डादि में अ(अण्) प्रत्यय—**दण्डधारः** । **कर्णधारः** । **सूत्रधार** । **छत्रधार** । नि.24. ।

34) कर्म के बाद रहे **'हृ' धातु** के बाद **'वय'** और **'उद्यम का अभाव'** व्यक्त होता हो तब **अ (अच्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **अस्थिहर** श्वशिशुः । **कवचहरः** क्षत्रियकुमार । **अंशहरो** दायादः ।
मनोहर प्रासादः । **मनोहरा** माला ।
(यहाँ उद्यम नहीं है—उद्यम का अभाव है ।)
विरुद्ध उदाहरण—**भारहारः** खरः । =गधा भार उठाता है ।
(यहाँ गधे को भार उठाने का उद्यम करना पडता है ।)

35) **रजस्, फले** और **मल**—इन कर्म के बाद रहे **ग्रह्** धातु को **इ** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **रजोग्रहिः** कञ्चुकः । फलानि गृह्णाति **फलेग्रहि** वृक्षः ।
(फल का फले हुआ) **मलग्रहिः** कम्बलः ।

टिप्पणी 1. अव्यय सिवाय स्वरांत नाम से और अरुस् शब्द से खित् प्रत्ययान्त उत्तरपद के बाद 'म्' जुडता है और उसका स्वर ह्रस्व होता है । उदा. कुक्षिंभरिः । इत्यादि

36) **संख्या आदि कर्म** के बाद रहे **कृ** धातु के बाद **अ(ट)** प्रत्यय लगता है।

उदा. संख्यां करोति **संख्याकरः** । **एककरः** । **द्विकरः** । **त्रिकरः** ।
अहस्करः। **दिवाकरः**। **विभाकरः** । **भास्करः** । **दिनकरः** । (=सूर्य)
निशाकरः । **प्रभाकरः** । **रजनिकरः** । **दोषाकरः** । (=चन्द्र)
चित्रकरः । आदि

37) शब्दादि सिवाय कर्म के बाद रहे धातु को **हेतु, तत्शील** और **अनुकूल** कर्ता हो तो **अ (ट)** प्रत्यय होता है। (टित् प्रत्यय पर स्त्रीलिंग में इ (ङी) प्रत्यय लगता है।)

उदा. यशस्करोति **यशस्करी** विद्याः । **शोककरी** कन्या ।
कुलकरं धनम् । **क्रीडाकरः** । **श्राद्धकरः** ।
तीर्थकरः । **तीर्थंकर** । यहाँ विकल्प से म् जुडता है।
प्रेषणाकरः । **वचनकर** ।

38) कर्म शब्द कर्म के बाद रहे **कृ धातु** को **भृति-वेतन (पगार)** दिया जाता हो तो **अ (ट)** प्रत्यय लगता है।

उदा. **कर्मकरः** । **कर्मकरी** दासी । (=पगार से काम करनेवाली दासी)
अन्यथा–
कर्मकारः । (=पगार बिना काम करनेवाला) यहाँ **अ (अण्)** प्रत्यय लगता है।

39) **क्षेम, प्रिय, मद्र** और **भद्र**–इन शब्दों के कर्म के बाद रहे **कृ** धातु से **अ (ख)** और **अ (अण्)** ये दो प्रत्यय लगते है। (खित् प्रत्यय के साथ **म्** जुडता है।)

उदा. क्षेमं करोति **क्षेमंकरः** । **प्रियंकरः** । **मद्रङ्करः** । **भद्रङ्करः** । अ (ख)
क्षेमकारः । **प्रियकारः** । **मद्रकारः** । **भद्रकारः** । अ (अण्)

40) **मेघ, ऋति, भय** और **अभय** – इन शब्दों के कर्म के बाद रहे **कृ धातु** को **अ(ख)** प्रत्यय लगता है।

उदा. मेघान्करोति **मेघंकरः** । **ऋतिंकरः** । (ऋतिः गति सत्यता वा)
भयङ्करः । **भयङ्करं** श्मशानम् । **अभयंकरः** ।

41) **प्रिय** और **वश** कर्म के बाद रहे **वद्** धातु को **अ(ख)** प्रत्यय लगता है।

उदा. प्रियं वदति **प्रियंवदः** । **वशंवदः** ।

42) **कूल, अभ्र** और **करीष** कर्म के बाद रहे **कष्** धातु को **अ(ख)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **कूलंकषा** नदी । **अभ्रंकषो** गिरिः । **करीषंकषा** वात्या ।

43) '**सर्व**' कर्म के बाद रहे **सह्** और **कष्** धातु को **अ (ख)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. सर्वं सहते **सर्वंसहो** मुनिः । **सर्वंकषः** खलः ।

44) कर्म के बाद रहे **मन्** धातु को **इ (णिन्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. पण्डितं मन्यते बन्धुम् **पण्डितमानी** बन्धोः ।

45) कर्ता-कर्म के बाद रहे **मन्** धातु को **अ (खश्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. पण्डितमात्मानं मन्यते **पण्डितंमन्यः** । (प्रत्यय शित् होने से **य (श्य)** लगा है ।

पट्वीमात्मानं मन्यते **पट्वीम्मन्या** । (नि. 31 की टिप्पणी से ह्रस्व ।)

पट्वीमात्मानं मन्यते **पटुमानी** । **पटुमानिनी** । (नि. 8 की टिप्पणी 4 देखे ।)

46) **शुनी, स्तन, मुञ्ज, कूल, आस्य** और **पुष्प**–इन शब्दों के कर्म होने पर **धे (ट्धे)** धातु से **अ(खश्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. शुनीं धयति **शुनिंधयः** । (नि. 31. की टिप्पणी से ह्रस्व)
प्रत्यय शित् होने से अ(शव्), **स्तनंधयः** । **मुञ्जंधयः** ।
कूलंधयः । **आस्यंधयः** । **पुष्पंधयः** ।

47) **वह** और **अभ्र** कर्म के बाद रहे **लिह्** धातु को **अ(खश्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. वहं लेढि **वहंलिहो** गौः । **अभ्रंलिहः** प्रासादः ।

48) **बहु, विधु, अरुस्** और **तिल**–इन शब्दों के कर्म होने पर बाद में रहे **तुद्** धातु को **अ (खश्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. बहुं तुदति **बहुंतुदं** युगम् । **विधुंतदो** राहुः ।
अरुन्तुदः पीडाकरः । (द्वि.पा. 13.नि. 12.), **तिलंतुदः** काकः ।

49) **ललाट, वात** और **शर्ध**–इन शब्दों के कर्म होने पर क्रमशः **तप्, अज्** और **हा** (=त्याग करना) धातु को **अ (खश्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. ललाटं तपति **ललाटंतपः** सूर्यः । वातमजन्ति **वातमजा** मृगाः ।
शर्धंजहा माषाः । (उडद अधो–वायु करता है ।)

50) **असूर्य** और **उग्र** कर्म के बाद रहे **दृश्** धातु को **अ(खश्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. सूर्यमपि न पश्यन्ति **असूर्यंपश्या** राजदाराः । **उग्रंपश्यः** ।
(अ(खश्) प्रत्यय शित् होने से दृश् धातु का आदेश पश्य् हुआ है ।)

51) **च्वि प्रत्यय** के अर्थ में रहे **नग्न आदि** शब्द के कर्म होने पर **कृ धातु** करण में (कर्मणि प्रयोग में) **अन(खनट्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. अनग्नो नग्नः क्रियतेऽनेन **नग्नंकरणं** द्यूतम् ।
पलितंकरणं तैलम् । **प्रियंकरणं** शीलम् । **अन्धंकरणः** शोकः ।
स्थूलंकरणं दधि । **सुभगंकरणं** रूपम् । **आढ्यंकरणं** वित्तम् ।

52) नाम के बाद रहे **गम् धातु** को **अ(खड्), अ(ड)** और **अ(ख)** प्रत्यय लगते है और **विहायस्** का **विह** आदेश होता है ।
उदा. तुरो गच्छति **तुरंगः** ।
भुजेन भुज इव वा गच्छति **भुजंगः** । (भुजः कौटिल्यं हस्तश्च ।)
प्लवेन गच्छति **प्लवंगः** । विहायसा गच्छति **विहंगः** । (अ (खड्)
तुरगः । भुजगः । प्लवगः । विहगः । सर्वगः । पारगः ।
खे गच्छति **खगः** पक्षी । न गच्छति **अगो** वृक्षाः पर्वतश्चः । एवं **नगः** ।
उरसा गच्छति **उरगः** । (डित् प्रत्यय होने से अन्त्य स्वर एवं बाद के व्यंजन का लोप हुआ है । यहाँ स् का लोप है ।)
आशु गच्छति **आशुगः** शरः । **निम्नगाः** । **समुद्रगा** । [अ(ड)]
तुरंगमोऽश्वः । **भुजंगमः** सर्पः । **प्लवंगमो** भेकः ।
विहंगमः पक्षी । [अ (ख)]

53) **आधार नाम** के बाद रहे **शी** धातु को **अ** प्रत्यय लगता है ।
उदा. खे शेते **खशयः** । गुहायां शेते **गुहाशयः** । **बिलेशयः**। (अलुप् स)

54) **आधार नाम** के बाद रहे **चर्** धातु को **अ(ट)** प्रत्यय होता है ।
उदा. कुरुषु चरति **कुरुचरः** । **मद्रचरः । वनेचरः** । (अलुप् स)
निशाचरः । **निशाचरी ।**

55) नाम के बाद रहे **स्था, पा, स्ना** और **त्रा (त्रै)** – **धातु** को **अ (क)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. स्वर्गे तिष्ठति **स्वर्गस्थः** । पादैः पिबति **पादपः** । नॄन्पाति **नृपः**।
नद्यां स्नाति **नदीष्णः** । आतपात्त्रायते **आतपत्रम्** ।

56) **मूलविभुज** आदि शब्द ``**क**'' प्रत्ययान्त सिद्ध है ।

उदा. मूलानि विभुजति **मूलविभुजो** रथः । अपो बिभर्ति **अब्भ्रं** मेघः । आगमेन प्रजानाति **आगमप्रज्ञः** ।
कौ मोदते **कुमुदं** कैरवम् । सरसि रोहति **सरसिरुहम्, सरोरुहम्** पद्मम् ।–(विकल्प से अलुप्)

57) नाम के बाद रहे **भज्** धातु को ०(क्विप्) प्रत्यय लगता है ।

उदा. सुखं भजते **सुखभाक्** । **अर्धभाक् ।**

58) नाम के बाद रहे धातु को **मन्, वन्, वन् (क्वनिप्)** और **०(विच्)** प्रत्यय क्वचित् लगते है ।

उदा. इन्द्रं शृणाति **इन्द्रशर्मा** । **घृतपावा** । **सुधीवा** । **कीलालपा** ।
केवल धातु को भी लगता है । **शर्म** । **धीवा (क्वनिप्), जागः (विच्)** ।

59) नाम के बाद रहे धातु को **०(क्विप्)** प्रत्यय क्वचित् लगता है ।

उदा. शकान् ह्वयति **शकहूः** । अक्षैः दीव्यति **अक्षद्यूः** ।
दिवि सीदति **दीविषत् द्युसत्** । वीरं सूते **वीरसूः** ।
तमः छिनत्ति **तमश्छिद्** । शत्रुं जयति **शत्रुजित्** ।
सेनां नयति **सेनानीः** । ग्रामं नयति **ग्रामणीः** ।

केवल धातु को भी ०(क्विप्) प्रत्यय लगता है । **लूः** । **पक्** ।

60) कर्मवाचि उपमानभूत **त्यद्**[1] आदि तथा **अन्य** और **समान** शब्द के बाद रहे **दृश** धातु को **कर्म में** (कर्मणि प्रयोग में) **अ(टक्), स(सक्)** और **०(क्विप्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. स्यः इव दृश्यते **त्यादृशः**[2] । **त्यादृक्षः** । **त्यादृक्** ।
सः इव दृश्यते–**तादृशः** । **तादृक्षः** । **तादृक्** ।

टिप्पणी 1. त्यद् (=वह), तद्, यद्, अदस्, इदम्, एतद्, एक, द्वि, युष्मद्, अस्मद्, भवत् (भवतु), किम् ।

वैसे ही **अन्यादृश:** । **अन्यादृक्ष[2]:** । **अन्यादृक्** ।
सदृश:[2] सदृशी । सदृक्ष: सदृक्षा: । सदृक् ।
(दृश्+स(सक्)–द्वि.पा.13. नि. 2. से दृष्+स–द्वि.पा. 10. नि.9. से दृक्+स–प्र.पा. 26. नि. 3. से दृक्ष) ।

61) **कर्तृवाचि उपमान भूत नाम** के बाद रहे धातु को **इन् (णिन्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. सिंह इव नर्दति–**सिंहनर्दी** । (रूप-शशिन् की तरह)
गज इव गच्छति **गजगामिनी** नारी ।

62) जाति सिवाय नाम के बाद रहे धातु से **शील अर्थ** में **इन् (णिन्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. उष्णं भुङ्क्ते इत्येवंशील **उष्णभोजी । शीतभोजी ।**
परेषामुपकरोति इत्येवंशील: **परोपकारी । वनवासी ।**
मधुपायी भ्रमर: । (द्वि. पा. 36 नि. 2(5) से पा + य)
प्रतिष्ठते इत्येवंशील: **प्रस्थायी । प्रयायी ।**

3) भूतकाल में

63) **ब्रह्म, भ्रूण** और **वृत्र**–ये शब्द कर्म होने पर बाद में रहे **हन्** धातु को 0 (क्विप्) प्रत्यय लगता है । (द्वि. पा. 21. नि. 6. से हन् धातु का स्वर प्र.ए.व. में दीर्घ हुआ है ।)
उदा. ब्रह्माणं हतवान् **ब्रह्महा । भ्रूणहा । वृत्रहा ।**

64) कर्म के बाद रहे **दृश् धातु** से **वन् (क्वनिप्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. मेरुं दृष्टवान् **मेरुदृश्वा । विश्वदृश्वा । विश्वदृश्वानौ ।**

टिप्पणी 2. दृश्, दृश और दृक्ष के बाद–
(i) समान का **स** होता है । सदृक् ।
(ii) अन्य और त्यदादि के अंत्य **अ** का **आ** होता है । अन्यादृक् । त्यादृक् ।
असाविव दृश्यते–अमूदृक् । अमूदृश: । अमूदृक्ष: । (यहाँ आ का ऊ हुआ है ।)
अहमिव दृश्यते–मादृश: । वयमिवदृश्यते अस्मादृश: ।
त्वमिवदृश्यते त्वादृश: । युयमिव दृश्यते–युष्मादृश: ।
(द्वि. पा. 33 नि. 17.1 की टिप्पणी देखे ।)
(iii) **इदम्** का **ई** और **किम्** का **की** होता है । इदृक् । कीदृक् ।

65) **सप्तम्यन्त** नाम के बाद रहे **जन्** धातु को **अ(ड)** प्रत्यय लगता है।
उदा. अप्सु जातम् **अप्सुजम् । अब्जम् ।**

66) जाति सिवाय **पंचम्यन्त नाम** के बाद रहे **जन्** धातु को **अ(ड)** प्रत्यय लगता है।
उदा. संतोषाज्जातम् **संतोषजम्** सुखम् । **बुद्धिजः** संस्कारः ।

67) अन्य भी कही पर **अ(ड)** प्रत्यय लगता है।
उदा. द्विर्जातः **द्विजः** । न जातः **अजः** । प्रजाताः **प्रजाः** ।
अनुजातः **अनुजः** । क्षत्रियात् जातम् **क्षत्रियजं** युद्धम् ।
स्त्रीजमनृतम् । पुंसानुजातः **पुंसानुजः** । मित्रं ह्वयति **मित्रह्वः।**
अटति अतति वा **अः** । कायति कामयते वा **कः** ।
भातीति भं—**नक्षत्रम्** । खन्यत इति **खम्** ।

4) त (क्त) और तवत् (क्तवतु) प्रत्ययान्त भूतकृदन्त

68) भूतकाल में रहे धातु को **त(क्त)** और **तवत् (क्तवतु)** प्रत्यय लगते है।

69) सकर्मक धातु को कर्म (कर्मणि प्रयोग) में और अकर्मक धातु को भाव (भावे प्रयोग) में **त(क्त)** प्रत्यय लगता है।
उदा. क्रियते स्म **कृतः** घटः । **कृतम्** ।

70) कर्ता (कर्त्तरि प्रयोग) में तवत् (क्तवतु) प्रत्यय होता है।
उदा. करोति स्म **कृतवान्** घटम् कुलालः ।

71) **श्लिष्, शी, स्था, आस्, वस्, जन्, रुह्, जॄ** और **भज्** धातु को विकल्प से कर्त्तरिप्रयोग में **त (क्त)** प्रत्यय लगता है।
उदा. **आश्लिष्टः** कान्तां कामुकः । **आश्लिष्टा** कान्ता कामुकेन ।
आश्लिष्टं कामुकेन । इत्यादि

72) **गति अर्थक** धातुओं को, **अकर्मक** धातुओं को, **पा (पिब)** और **भुज्** धातु को कर्त्तरि प्रयोग में विकल्प से **त (क्त)** प्रत्यय लगता है।
उदा. **गतो** मैत्रो ग्रामम् । **गतो** ग्रामः मैत्रेण । **गतं** मैत्रेण ।

◆त (क्त) और तवत् (क्तवतु) प्रत्यय के पहले, सेट् धातु को इ लगता है । जबकि अनिट् धातु को इ नहीं लगता ।
सेट्–याचितः । याचितवान् । पठितः । पठितवान् ।
अनिट्–पृष्टः । पृष्टवान् । भुक्तः । भुक्तवान् ।
(प्रच्छ्+त(क्त)–द्वि.पा. 19. नि. 17. से प्रश्–
द्वि.पा. 13. नि. 2. से प्रष्–द्वि.पा. 4. नि. 5. से पृष्+त–
प्र.पा. 32. नि. 2. से पृष्+ट=पृष्टः ।)
(भुज+त (क्त)–प्र.पा. 48. नि. 2. से भुग्+त–
प्र.पा. 25. नि. 2. से भुक्+त=भुक्तः ।)

अपवाद

73) एक स्वरवाले **ऋ वर्णान्त** धातुओं को एवं **श्रि** और **ऊर्णु** धातु को लगे हुए कित् प्रत्ययों के पहले **इ नहीं लगती** ।

उदा. वृ–**वृतः ।** **वृतवान् ।** **वृत्वा ।**
तॄ–**तीर्णः ।** **तीर्णवान् ।** **तीर्त्वा ।**
श्रि–**श्रितः ।** **श्रितवान् ।** **श्रित्वा ।**
ऊर्णु–**ऊर्णुतः ।** **ऊर्णुतवान् ।** **ऊर्णुत्वा ।**

74) एक स्वरी **उ वर्णान्त** धातु को लगे हुए कित् प्रत्यय के पहले **इ नहीं** लगती ।

उदा. यु–**युतः ।** **युतवान् ।** **युत्वा ।**
लू–**लूनः ।** **लूनवान् ।** **लूत्वा ।**

75) **डी (ग.4), श्वि.** और **लस्ज्, विज्, यत्, त्रस्, दीप्** आदि धातुओं के बाद रहे **त(क्त)** और **तवत् (क्तवतु)** के पहले **इ नहीं लगती** ।

उदा. डी (ग.4)–**डीनः । डीनवान्** । उड्डीनः । उड्डीनवान् ।
(डी (ग.1) डयितः । डयितवान् ।)
श्वि–**शूनः** । **शूनवान** । (श्वि का य्वृत्-शू), लस्ज्–**लग्नः** । **लग्नवान् ।**
उद्+विज्–**उद्विग्नः । उद्विग्नवान् ।,** यत्–**यत्तः । यत्तवान् ।**
त्रस्–**त्रस्तः । त्रस्तवान् ।,** दीप्–**दीप्तः । दीप्तवान् ।**

(लस्ज+त–द्वि.पा. 13. नि.12. से लज् + त–प्र.पा.48. नि. 2. से लग् + त – द्वि.पा. 14. नि. 19. (परिशिष्ट) से लग्=लग्नः ।)

76) **पत् सिवाय**, जहाँ विकल्प से **इट्** लगती हो ऐसे एकस्वरी धातु को त (क्त) और तवत् (क्तवत्) के पहले **इट् नहीं लगती ।**

उदा. रघ्–**रद्धः** । **रद्धवान्** । अञ्ज्–**अक्तः** । **अक्तवान् ।**

गुह्–**गूढः । गूढवान् ।**

शम्–**शान्तः । शान्तवान् ।** अस्–**अस्तः । अस्तवान् ।**

शान्त्वा । शमित्वा । अस्त्वा । असित्वा । (क्त्वा के पहले वेट् है ।)

सह्–**सोढः । सोढवान् ।**

सोढुम् । सहितुम् । सोढा । सहिता ।

(त् आदि के पहले वेट् है ।)

पत् धातु सन् में वेट् है । पित्सति । पिपतिषति ।–परंतु इसका त्याग किया होने से इट् होता है–पतितः । पतितवान् ।

(पत् धातु सेट् है, वेट् नहीं है । फिर भी यहाँ पत् का त्याग किया है । यहाँ सामान्य से वेट् धातु और सेट् हो ऐसे धातुओं ये से जिन धातुओं को किसी भी प्रत्यय में विकल्प से इट् नहीं होता हो वैसे वेट् धातु लेने है । अनिट् धातुओं क्त, क्तवतु में इट् होती ही नहीं है ।)

77) **डी** (ग.1), **शी** और **पू** (ग.1) धातु के बाद रहे **सेट् त (क्त)** और **तवत् (क्तवतु) कित् नहीं होते ।**

उदा. **डयितः । डयितवान् । शयितः । शयितवान् ।**

पवितः । पवितवान् । परंतु

डी (ग.4.) **डीनः । डीनवान् ।** पू. (ग.9.) **पूताः । पूतवान् ।**

78) **त कारादि कित् प्रत्यय के बाद–**

स्वरान्त उपसर्ग के बाद रहे **धा** सिवाय के **दा संज्ञक** धातु का **त(क्त)** आदेश होता है ।

उदा. आ+दा+त(क्त)–**आत्तः । आत्तवान् ।**

उपात्तः । उपात्तवान् । (द्वि.पा.15. नि. 14/7.)

परिशिष्ट नियम

1. **चर्** आदि धातुओं को **अच्** प्रत्यय लगने पर विकल्प से द्वित्व और पूर्व का स्वर दीर्घ होता है ।
   उदा. चरतीति **चराचरः** । **चरः** ।, चलतीति **चलाचलः** । **चलः** ।, पततीति **पतापतः** । **पतः** । वदतीति **वदावदः** । **वदः** ।
   हन्तीति **घनाघनः । हनः ।** यहाँ ह् का घ् होता है ।
   पाटयतीति **पाटूपटः । पाटः ।** यहाँ दीर्घ ऊ होता है और स्वर ह्रस्व होता है ।
2. यदि कुशलता का बोध होता हो तो **नि** और **नदी** शब्द के बाद रहे **स्ना** धातु के **स्** का **ष्** होता है ।
   उदा. **निष्णः निष्णातः** कटकरणे ।=चटाई बनाने में कुशल है ।
   नदीष्णः नदीष्णातः प्रतरणे ।=नदी की तैरने में कुशल है ।
3. **हन्** सिवाय **पंचमान्त** धातु का स्वर **क्विप्** और **घुडादि कित् ङित्** प्रत्यय लगने पर **दीर्घ** होता है ।
   उदा. प्रशाम्यति इति क्विप् **प्रशान् । शान्तः । शंशान्तः ।** यङ् लुप् (द्विवचन) वृत्रहणि । (सप्तमी एकवचन)
4. **म्कारान्त भ्वादि** के अन्त्य का पदान्त में **म** कार, **व** कार प्रत्यय को **न्** लगता है ।
   उदा. प्रशान् । **प्रशान्भ्याम् ।**
   जङ्गन्मि जङ्गन्वः जङ्गन्मः । **जङ्गन्वान् ।**
5. उपसर्ग रहित **चर्** धातु को **य प्रत्यय** लगता है, एवं **आ+चार्** धातु को गुरु सिवाय के अर्थ में **य** होता है ।
   उदा. **चर्यं भवता । चर्यो देशः । आचर्यं भवता । आचर्यो देशः ।**
   आचर्यते सेव्यते इति आचार्यो गुरुः । (घ्यण् प्रत्यय) ।
6. **वर्य, उपसर्या, अवद्य** और **पण्य** शब्द क्रमशः **उपेय** (आप्त-उत्तमता से पास में जाने योग्य) **ऋतुमती, गर्ह्य** और **विक्रेय** अर्थ में **य** प्रत्ययान्त निपात है ।
   उदा. वृ-वृणोति-**वर्यः** ।
   वर्यः उपेयः चेत्-शतेन वर्यः ।
   शतेन वर्या कन्या ।

उप + सृ – **उपसर्या ।**

उपसर्या ऋतुमती चेद् – उपसर्या गौः गर्भग्रहणे प्राप्तकाला ।

न + वद् – अवद्य । अवद्यं गर्ह्यम्-चेद् अवद्यं पापम् । अवद्या हिंसा ।

पण्–पण्य । पण्यं विक्रेयं चेत्–पण्यः कम्बलः ।

7. **स्वामि** और **वैश्य** अर्थ में **ऋ** धातु को **य** प्रत्यय लगता है ।

   उदा. **अर्यः** स्वामी । **अर्यो** वैश्यः ।

   इससे विपरित **आर्यः –** (घ्यण् प्रत्यय) ।

8. **आशिष्** (इष्ट की प्रार्थना) अर्थ जाना जाता हो तब धातु को **अकन्** प्रत्यय लगता है । उदा. नन्दताद् इति आशास्यमानः नन्दकः ।

9. **आशिष्** के विषय में संज्ञा हो तब धातु को **तिक्** प्रत्यय और **कृत्** प्रत्यय लगते है ।

   उदा. शम्यात् **शान्तिः** । नाम है । (परिशिष्ट नि. 16)

   रंसीष्ट (रमताम्) इति आशंसितः **रन्तिः** । (नाम है ।)

   वीरो भूयाद् इति **वीरभूः** । (नाम है ।) (क्विप् प्रत्यय) ।

धातु

अज् (ग.1. पर.)=जाना, फेंकना । – ***अजति । वातमजा मृगाः ।***

अत् (ग.1. पर.)=नित्य गमन करना । – ***अतति । आत्मा । अः ।***

ऋच् (ग.6. पर.)=स्तुति करना । – ***ऋचति । अर्च्यम् । ऋक् ।***

कत्थ् (ग.1. आ.)=प्रशंसा करना । – ***कत्थते । विकत्थनम् ।***

कल् (ग.1. आ.)=संख्या करना, जानना । – ***कलते ।***

कल (ग.10. पर.)=संख्या करना, जानना । – ***कलयति ।***

कै (ग.1. पर.)=बुलाना । – ***कायति । कः ।***

घट्ट् (ग.1. आ.) (ग.10. पर.)=चलाना, खोलना । – ***घट्टते । घट्टयति ।***

चत् (ग.1. उभय.)=याचना करना, मांगना । – ***चतते-चतति । चत्यम् । चातकः ।***

चृत् (ग.6. पर.)=हिंसा करना, गुंथना । – ***चृतति । चर्त्यम् ।***

जुष् (ग.6. आ.)=प्रीति करना, सेवा करना । – ***जुषते । जुष्यः ।***

डिप् (ग.6. पर.)=फेंकना । – ***डिपति । डेप्यम् ।***

तक् (ग.1. पर.)=हँसना, ताकना । – ***तकति । तक्यम् ।***

तृद् (ग.7. उभय.)=हिंसा करना, अनादर करना। – ***तृन्ते। तृणत्ति। प्रतर्दनः।***
दभ् (ग.1. पर.)=ठगना। – ***दभति। दाभ्यम्।***
प्लु (ग.1. आ.)=जाना, कुदना, तैरना। – ***प्लवते। आप्लाव्यश्चैत्रो नद्याम्।***
भुज् (ग.6. पर.)=टेडा मुडना। – ***भुजति। मूलविभुजो रथः।***
रप् (ग.1. पर.)=बोलना। – ***रपति। राप्यम्।***
रह् (ग.1/10. पर.)=त्याग करना। – ***रहति। रहयति। विरहितव्यम्।***
लप् (ग.1. पर.)=बोलना। – ***लपति। लाप्यम्। अभिलाप्यः।***
शृध् (ग.1. आ.)=अधोवायु छोडना। – ***शर्धते। शृध्यम्।***
शृध् (ग.1. उभय.)=भिगाना – ***शर्धति। शर्धते।***
शृध् (ग.10. पर.)=पराभव करना। – ***शर्धयत्यरिम्।***

शब्दार्थ

अग (पुं.)=वृक्ष, पर्वत।
अग (वि.)=नहीं जाने वाला।
अरुस् (नपुं.)=घाव, मर्मस्थल, व्रण।
अरुन्तुद:=पीडा करने वाला।
अर्भ (पुं.)=बच्चा।
अर्य (पुं.)=स्वामी, वैश्य।
अलीक (नपुं.)=झूठ, असत्य।
अवर्णवाद (पुं.)=निन्दा, अपवाद।
आढ्य (वि.)=संपन्न, युक्त।
धनाढ्य:=पैसेवाला।
आस्य (नपुं.)=मुकुट।
आस्यन्धय:=चुंबन करनेवाला।
उत्तंस (पुं.)=मुकुट।
उद्घट्टन (नपुं)=प्रकाशन, खोलना।
उपसर्या (स्त्री.)=ऋतुवाली स्त्री।

ऋति (स्त्री.)=गति
ऋतिंकर:=गति करनेवाला।
कञ्चुक (पुं.)=कंचुआ, पोलका। (स्त्री का ऊपरी वस्त्र)
कर्णधार (पुं)=नाविक, खलासी, कप्तान।
करीष (नपुं.)=बकरी की विष्टा। **करीषंकषा वात्या।**
कवच (नपुं.)=बख्तर। **कवचहरः।**
कश्मल (नपुं.)=पाप। **कश्मलजः।**
कीलाल (नपुं.)=पानी, मद्य। **कीलालपा।**
कु (स्त्री.)=पृथ्वी। कौ मोदते इति **कुमुदम्।**
कुरु (पुं.)=एक देश का नाम। **कुरुचरः।**

कोपन (वि.)=क्रोधी । **कोपनता (स्त्री)=**क्रोधीपना ।
खशय (पुं.)=खुल्ले में सोनेवाला ।
गुहाशय (पुं.)=सिंह, बाघ आदि ।
तीर्थ (नपुं.)=तीर्थ, शासन, संघ, ओवारा । **तीर्थंकरः ।**
दुर्ग (नपुं.)=कील्ला, कोट ।
द्विषन्तप (वि.)=शत्रु को संताप देनेवाला ।
नग (पुं.)=वृक्ष, पर्वत ।
निदान (नपुं.)=मूल, कारण ।
निम्न (वि.)=नींचा । **निम्नगा नदी ।**
नीवी (स्त्री.)=अधो वस्त्र की गांठ । **अधोवस्त्र ग्रन्थिः ।**
पण्य (नपुं.)=किराणा ।
पदकार (पुं.)=वैयाकरण, व्याकरण जाननेवाला ।
परिजन (पुं.)=सेवक, नोकर, चाकर ।
परिभव (पुं.)=अभिभव, पराभव ।
प्रणियन् (वि.)=प्रेमी ।
प्रेषण (नपुं.)=प्रेरणा, आज्ञा, भेजना, जाना । **प्रेषणकरः ।**
प्लव (पुं.)=फलांग । **प्लवंगः ।**
बिलेशय (पुं.)=सांप ।
ब्रह्मन् (पुं./नपुं.)=मोक्ष, ज्ञान, ब्रह्मचर्य, ब्राह्मण, ब्रह्मा । **ब्रह्मघ्नः ।**
भारवाह (वि.)=भार उठानेवाला, मजदूर ।
भास्करज (पुं.)=मनु, कर्ण ।
भुज (पुं.)=हाथ, कौटिल्य, कुटिलता । **भुजंगः ।**
मद्र (पुं.)=एक देश का नाम, कल्याण । **मद्रचरः । मद्रंकरः ।**
मन्त्रकार (पुं.)=मंत्री ।
माणवक (पुं.)=बच्चा, छोटी उम्र का मनुष्य । **गेयोमाणवकः साम्नाम् ।**
मुञ्ज (पुं.)=तृण की एक जाती ।
युग (पुं./नपुं.)=धुंसरी, युग, जोडा ।
रोदस् (नपुं.)=पृथ्वी और स्वर्ग **रोदसी** (द्वि.वचन) ।
वह (पुं.)=बैल की खांध ।
वहंलिहः=बैल ।
वातमज (पुं.)=मृग ।
वात्या (स्त्री.)=तुफान, भँवर ।
विधु (पुं.)=चन्द्र ।
विधुंतुदः (पुं.)=राहु ।
विहायस् (नपुं.)=आकाश । **विहंगम** (पुं.) पक्षी ।
शक्ति (स्त्री.)=शस्त्र का नाम **शक्तिधरः ।**
शर्ध (नपुं.)=अधोवायु । **शर्धजहा माषाः ।**
श्राद्ध (पुं./नपुं.)=श्राद्धकर्म, पिण्डदान । **श्राद्धकरः ।**
श्लथ (वि.)=शिथिल, ढीला ।
समस्या (स्त्री.)=अपूर्ण श्लोक ।
समुद्रगा (स्त्री.)=नदी ।

सात्म्य (नपुं.)=प्रकृति को अविरुद्ध आहारपानी ।
सामन् (नपुं.)=साम, प्रियवचन ।
सार (पुं.)=सार, बल ।
सूत्र (नपुं.)=सूत्र, व्यवस्था ।

सूत्रधार (पुं.)=व्यवस्था रखनेवाला ।
संहनन (नपुं.)=संघयण, शरीर की सघनता ।
क्षेम (नपुं.)=कल्याण । **क्षेमंकरः ।**

संस्कृत वाक्य

1. सेवनीया दयालुता, न विधेयः परपरिभवः, मोक्तव्या कोपनता, वर्जनीयो दुर्जनसंसर्गः, विरहितव्याऽलीकवादिता, अभ्यसनीयो गुणाऽनुरागः, न कार्या चौरबुद्धिः, त्यजनीयो मिथ्याभिमानः, वारणीयः परदाराभिलाषः, परिहर्तव्यो धनादिगर्वः, विधेया दुःखितदुःखत्राणेच्छा, पूजनीया गुरवः, वन्दनीया देवसङ्घाः, सन्माननीयः परिजनः, पूरणीयः प्रणयिलोकः, अनुवर्तनीयो मित्रवर्गः, न भाषणीयः पराऽवर्णवादः, ग्रहीतव्याः परगुणाः, लज्जनीयं निजगुणविकत्थनेन, स्मर्त्तव्यमणीयोऽपि सुकृतम्, यतितव्यं परार्थे, सम्भाषणीयः प्रथमं विशिष्टलोकः, अनुमोदनीयो धार्मिकजनः, न विधेयं परमर्मोद्घट्टनम्, भवितव्यं सुवेषाचारैः, ततो भविष्यति भवतां सर्वज्ञोपज्ञसद्धर्माऽनुष्टान–योग्यता ।
2. वैद्येन ह्यातुरं निरूपयता रोगनिदानमेवमुपलब्धव्यम् । आदित एवातुरस्य समुपलक्षणीया प्रकृतिः, पर्यालोच्यं शरीरसारम्, विचार्यं संहननम्, विज्ञातव्यं प्रमाणम्, लक्षयितव्यं सात्म्यम्, वेदितव्यं सत्त्वम्, मन्तव्याहारशक्तिः, बोद्धव्यं व्यायामसौष्ठवम्, परिकलनीयं वयःप्रमाणमिति ।
3. **यज्ज्ञात–परमार्थोऽपि बुद्ध्वा संतोषजं सुखम् ।**
   इन्द्रियै र्बाध्यते जन्तु र्महामोहोऽत्र कारणम् ॥
4. अधीत्य सर्वशास्त्राणि नराः पण्डितमानिनः ।
   विषयेषु रताः सोऽयं महामोहो विजृम्भते ॥
5. **जैनेन्द्र–मत–तत्त्वज्ञाः कषाय–वशवर्तिनः ।**
   जायन्ते यन्नरा लोके तन्महामोहशासनम् ॥
6. विश्रब्धं निजभर्त्तारं परित्यज्य कुलस्त्रियः ।
   परेषु यत्प्रवर्तन्ते महामोहस्य तत्फलम् ॥

7. नाहं पुद्गलभावानां कर्ता कारयिताऽपि च ।
नानुमन्ताऽपि चेत्यात्म-ज्ञानवान् लिप्यते कथम् ? ॥

**8. यः स्नात्वा समताकुण्डे हित्वा कश्मलजं मलम् ।
पुन र्न याति मालिन्यं सोऽन्तरात्मा परः शुचिः ॥**

9. न गोप्यं क्वापि नारोप्यं हेयं देयं च न क्वचित् ।
क्व भयेन मुनेः[1] स्थेयं ज्ञेयं ज्ञानेन पश्यतः ।

**10. कर्म जीवं च संश्लिष्टं सर्वदा क्षीर-नीरवत् ।
विभिन्नीकुरुते योऽसौ मुनिहंसो विवेकवान् ॥**

11. स्वस्वकर्मकृतावेशाः स्वस्वकर्मभुजो नराः ।
न रागं नाऽपि च द्वेषं मध्यस्थस्तेषु गच्छति ॥

**12. पुरः पुरः स्फुरत्तृष्णा मृगतृष्णाऽनुकारिषु ।
इन्द्रियार्थेषु धावन्ति त्यक्त्वा ज्ञानामृतं जडाः ॥**

द्व्याश्रय–महाकाव्ये एकादशः सर्गः ।

13. रौप्यभुक्तोज्ज्वलमुखी गर्भं देवी ततो दधौ ।
विदित्वाऽयतत त्रातुं ध्यायं ध्यायं स भीमजः ॥3॥

**14. मन्दं गद्यं श्लथं यम्या नीवीं मद्यं न च त्वया ।
गति र्नियम्या नायाम्यौ चरणावप्रमाद्यया ॥13॥**

15. न निगाद्यं न वा चर्यं मद्यपाचर्यभूमिषु ।
नोपसर्यान्तिके चैतां वर्याचार्यस्त्रियोऽशिषन् ॥14॥

**16. नीत्वानवद्या सा मासान्पुण्यपण्यपदं नव ।
ब्रह्मक्षत्रार्यशूद्राणामर्यं प्रासूत नन्दनम् ॥15॥**

टिप्पणी 1. कृत्य कृदन्त के कर्ता को विकल्प से षष्ठी विभक्ति होती है ।

3. **रौप्य** (वि.) रूप्यस्य विकारो रौप्यम् । **भुक्त** (नः) भुज्यतेऽस्मिन् इति भुक्तम्-पात्रम् ।
ध्यायं ध्यायम्–ध्यात्वा ध्यात्वा । **भीमजः** कर्णः, गर्भं विदित्वा ध्यायं ध्यायं त्रातुमयतत ।

13. **श्लथम्**–शिथिलम् । **नीवी** (स्त्री) अधोवस्त्रग्रन्थिः । **यम्या** – बन्ध्या ।
न आयाम्यौ न प्रसार्यौ । **अप्रमाद्यया** अप्रमादया सत्या ।

14. **मद्यपाचर्यभूमिषु** मद्यपसेव्यभूमिषु । **उपसर्यान्तिके** ऋतुमतीसमीपे ।
आचार्यः राजगुरुः । **एतां** देवीम् ।

15. **पुण्यपण्यपदम्** धर्मक्रयाणकस्थानम् । **अर्यः** स्वामी वैश्यो वा ।

17. गायन्त्यो वीरभू–रन्तिवदसौ नन्दकोऽस्त्विति ।
नाम वृद्धाः कुमारस्य जयसिंहेत्यथ व्यधुः ॥39॥

18. शिरोलाववदाकम्पकारं तन्नाम शुश्रुवुः ।
दुर्गाण्यमण्डयंश्चारिभूमिपाला भयद्रुताः ॥40॥

19. स भूप-पुत्रो ववृधे वीरह्वायः पराभवन् ।
तन्तुवायधान्यमायार्भानिवोर्वीश-दारकान् ॥43॥

20. रोदः कुक्षिंभरिः कीर्त्या दानै र्दीनोदरंभरिः ।
अनात्मंभरितां भेजे पूजार्हां कर्णनन्दनः ॥49॥

21. अमलग्रहिचेताः स गुरुपादरजोग्रहिः ।
सेवनीयः सतां जज्ञे फलेग्रहिरिव द्रुमः ॥56॥

22. निशाकरकुलोत्तंसः सोऽतिभास्करजः सदा ।
प्रभाकरोदये तातं दिवाकरमिवानमत् ॥60॥

23. कर्णः क्षमा[1]–दिवसकरस्तं नेत्ररजनीकरम् ।
अन्येद्युराजुहावाथ भक्त्यनन्तकरं सुतम् ॥65॥

24. आज्ञाकरो हर्षकरः कुमारोऽपि पितुस्ततः ।
भेजे सेवाकरः पादान् समस्या–श्लोककारवत् ॥66॥

25. सूत्रकारावैरकारैर्मन्त्रकारैः स संवदन् ।
स्माहाकलहकारं तं राजेति पदकारवाक् ॥67॥

26. प्रयते मुक्तये चेत्त्वं प्रियंवद ! वशंवदः ।
द्विषन्तपमिदं राज्यं तद् गृहाण परंतपः ॥72॥

टिप्पणी

39. **वीरभूः रन्तिः** एवंनामानौ राजविशेषौ ।
40. **दुर्गाण्यमण्डयन्** कोट्टानरचयन् ।
43. **वीरह्वायः** वीरान् बालान् ह्वयति इति वीरह्वायः । **धान्यमायः** वणिक् । **अर्भः** बालकः ।
60. **अतिभास्करजः** भास्करजः मनुः कर्णो वा तौ अतिक्रान्तः ।
65. **भक्त्यनन्तकरम्** भक्तेरनन्तकरः तम् । 1. क्षमा = पृथ्वी ।
66. **समस्या** अपूर्णः श्लोकः । समस्या–पूर्तये यथा श्लोककारः श्लोकचतुर्थांशान् भजति तथा ।
67. **मन्त्रकारैः** मन्त्रिभिः सह **संवदन् । सूत्रकारावैरकारैः** नीतिसूत्र–कारिभिः सह अवैरकारैः ।
पदकारः वैयाकरणः । पदकारस्येव वाग् यस्य स पदकारवाक् ।
72. **वशंवदः** वशं वदसि-यदहं वच्मि तन्मन्यसे । **तद्** तदा ।

पाठ-8

कृदन्त

वर्तमान काल में–

1) वय आदि अर्थवाले कर्तृ सुचक कृदन्त

1) **वय, शक्ति** और **शील** अर्थ ज्ञात होता हो तब, धातु का **आन (शान)** प्रत्यय लगता है । यहाँ कर्म को द्वितीया विभक्ति होती है ।

उदा. (1) वय–(i) **कतीह शिखण्डं वहमानाः ।** (द्वि.पा.22. नि. 8.)
अर्थ–यहाँ (इनमें) चोटी रखनेवाले (बच्चे) कितने है ?
इस वाक्य से बाल्यावस्था (वय) ज्ञात होती है ।

(ii) कतीह स्त्रियं गच्छमानाः ।
अर्थ – यहाँ (इनमें) चलनेवाली स्त्रियाँ कितनी है ?
इस वाक्य से युवावस्था (वय) ज्ञात होती है ।

(2) शक्ति (i) **कतीह हस्तिनं निघ्नानाः ।**
अर्थ – यहाँ (इनमें) हाथी को मारने में समर्थ कितने है ?
(ii) **कतीह समश्नानाः ।**
अर्थ – यहाँ (इनमें) अच्छी तरह से खाने में समर्थ कितने है ?
इन दोनों वाक्य से शक्ति ज्ञात होती है ।

(3) शील-स्वभाव–(i) **कतीह परान् निन्दमानाः ।**
अर्थ : यहाँ (इनमें) दूसरों की निन्दा करनेवाले कितने है ?
(ii) **कतीहात्मानं वर्णयमानाः ।**
अर्थ : यहाँ (इनमें) अपनी प्रशंसा करने वाले कितने है ?
इन दोनों वाक्य से स्वभाव ज्ञात होता है ।

2) **अकृच्छ्र** (सुखसाध्य) अर्थ ज्ञात होता हो तब **धारि** और **इ(पढना)** धातु से **अत् (अतृश्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **धारयन् आचाराङ्गम् ।**
अर्थ–आचारांग सूत्र को सुखपूर्वक धारण करता हुआ ।

अधीयन् द्रुमपुष्पीयम् ।

अर्थ–द्रुमपुष्पीय अध्ययन सुखपूर्वक पढ़ता हुआ ।

3) **सत्री, शत्रु** और **स्तुत्य**–कर्ता हो तब क्रमशः **सु, द्विष्** और **अर्ह्** धातु को **अत् (अतृश्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. 1. सर्वे **सुन्वन्तः** यज्ञस्वामिन इत्यर्थ ।

2. चौरं **द्विषन्** शत्रुरित्यर्थः । 3. पूजा**मर्हन्** प्रशस्य इत्यर्थः ।

2. शीलाद्यर्थक–कतृसूचक कृदन्त

4) **शील, धर्म** और **साधु** अर्थ ज्ञात होता हो तो धातु को **तृ (तृन्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. 1. करोति इत्येवंशीलः **कर्त्ता** । कर्त्ता कटम् ।

वदति इत्येवंशीलः **वदिता** । वदिता जनापवादान् ।

2. धर्म-कुलादि का आचार–**वधूमूढां मुण्डयितारः श्राविष्ठायनाः।**

3. साधु–`**गन्ता खेलः ।**– साधु गच्छति इति गन्ता ।

5) **भ्राज, अलं+कृ, निराकृ, भू, सह्, रुच्, वृत्, वृध्, चर्, प्र+जन्** और **अप+त्रप्** धातुओं को **इष्णु** प्रत्यय लगता है ।

उदा. भ्राजनशीलः भ्राजनधर्मा साधुभ्राजते वा **भ्राजिष्णुः ।**

अलंकरिष्णुः । निराकरिष्णुः । भविष्णुः । सहिष्णुः । रोचिष्णुः ।

वर्तिष्णुः । वर्धिष्णुः । चरिष्णुः । प्रजनिष्णुः । अपत्रपिष्णुः ।

6) **भू** और **जि** धातु को **ष्णु (ष्णुक्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **भूष्णु । जिष्णुः ।**

7) **स्था, ग्ला, क्ला, पच्, परिमृज्** और **क्षि** धातुओं को **स्नु** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **स्थास्नुः । ग्लास्नुः । म्लास्नुः । पक्ष्णुः । परिमार्क्ष्णुः । क्षेष्णुः ।**

8) **त्रस, गृध, धृष्** और **क्षिप्** धातुओं को **नु (क्नु)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **त्रस्नुः । गृध्नुः । धृष्णुः । क्षिप्नुः ।**

(क्षिप्णुः । प्रयोग भी देखा जाता है ।)

9) **शॄ** और **वन्द्** धातु को **आरु** प्रत्यय लगता है ।
उदा. शृणातीत्येवंशील: **शरारु:** । विशीर्यते–**विशरारु:** ।
वन्दते–**वन्दारु:** ।

10) **शी, श्रद्धा, निद्रा, तन्द्रा, दय्, पत, गृहि** और **स्पृहि** धातुओं को **आलु** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **शयालु: । श्रद्धालु: । निद्रालु: । तन्द्रालु: । दयालु: । पतयालु: । गृहयालु: । स्पृहयालु: ।**

11) **शॄ, कम्, गम्, हन्, वृष्, भू** और **स्था** धातुओं को **उक(उकण्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. शृणातीत्येवंशील: **शारुक:** । **प्रशारुक: शर:** ।
कामुक: । गामुक: । आगामुक: स्वगृहम् ।
घातुक: । आघातुको व्याध: ।
वर्षुक: । प्रवर्षुक: पर्जन्य: ।
भावुक: । प्रभावुक: क्षत्रिय: ।
स्थायुक: प्रमत्त: । **उपस्थायुक:** गुरुम् । (=गुरु के पास रहनेवाला)
गुणानधिष्ठायुक: । (=गुणों में रहनेवाला ।)

12) **लष्, पत्** और **पद्** धातुओं को **उक (उकण्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **अभिलाषुक:** । **उत्पातुकं** ज्योति: । **प्रपातुका** गर्भा: ।
उपपादुका देवा: ।

13) **भूषा** अर्थवाले, **क्रोध** अर्थवाले, **जु, सृ, गृध्, ज्वल्** और **शुच्** धातुओं को और **लष्, पत्** और **पद्** धातुओं को **अन** प्रत्यय लगता है ।
उदा. भूषयतीत्येवंशीलो **भूषण:** कुलस्य । **मण्डना** गगनस्य भा: ।
प्रसाधन: । क्रोध अर्थ: **क्रोधन: । रोषण: ।**
जु-**जवन:** । सृ-**सरण:** । गृध्-**गर्धन:** । ज्वल्-**ज्वलन:** । शुच्-**शोचन:** ।
लष्-**अभिलषण:** । पत्-**पतन:** ।
पद्-**पदन:** । अर्थस्य **पदन: ।** (=अर्थ जाननेवाला)

14) यङन्त **यज्, जप्, दश्** और **वद्** धातुओं को **ऊक** प्रत्यय लगता है ।
उदा. भृशं पुन: पुनर्वा यजतीत्येवंशीलो **यायजूक: ।**
(=बारबार यज्ञ करने वाला)

जप्–जंजपूकः । (=बार बार जाप करनेवाला ।)
दश्–**दन्दशूकः ।** (बारबार दंश देने वाला ।)
वद्–**वावदूकः ।** (बार बार बोलने वाला ।)
(यायज्य+ऊक–(द्वि.पा. 35. नि.2 की टिप्पणी से अ का लोप –यायज्य्+ ऊक – पा.4. नि. 17. से य् लोप–यायज्+ऊक=**यायजूकः**)

15) **जागृ** धातु को **उक** प्रत्यय होता है ।
उदा. जागर्तीत्येवंशीलो **जागरुकः** ।

16) **शम्** आदि आठ धातुओं को **इन् (घिनण्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. शाम्यतीत्येवंशीलः **शमी । तमी । श्रमी । भ्रमी । क्षमी । प्रमादी । उन्मादी । क्लमी ।** (शम्+घिनण्–वृद्धिनिषेध ।)

17) **युज्, भुज्, भज्, त्यज्, रञ्, द्विष्, दुष्, द्रह्** और **अभ्या+हन्** धातुओं को **इन्(घिनण्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **योगी । भोगी । भागी । त्यागी । रागी । द्वेषी । दोषी । द्रोही । अभ्याघाती ।**

18) **सृ, घस्** और **अद्** धातुओं को **मर (मरक्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. सरतीत्येवंशीलः **सृमरः । घस्मरः । अद्मरः ।**

19) **भञ्, भास्** और **मिद्** धातुओं को **उर (घुर)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. भज्यते स्वयमेव इत्येवंशीलं **भङ्गुरं** काष्ठम् ।
भासते **भासुरं** वपुः । मेद्यति मेदते वा **मेदुरः ।**

20) **सृ, जि, इ**(जाना) और **नश्** धातुओं को **वर (ट्वरप्-कित्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. सृ–**सृत्वरः** । जि–**जित्वरः** । **जित्वरी** (स्त्री) । इ–**इत्वरः** ।
(द्वि.पा. 20. नि. 2. से त् जुडा है ।) नश्-**नश्वरः** ।

21) **स्मि, अ+जस्, हिंस्, दीप्, कम्प्, कम्** और **नम्** धातुओं को **'र'** प्रत्यय लगता है ।
उदा. स्मि–स्मयते इत्येवंशीलं **स्मेरं** मुखम् ।
अ+जस्–न जस्यति **अजस्त्रम् ।** अजस्त्रं पचति । (=निरंतर पकाता है ।)
हिंस्–**हिंस्त्रो** व्याधः । दीप्–**दीप्रो** दीपः ।
कम्प्–**कम्प्रः** । कम्–**कम्रः** । नम्–**नम्रः** ।

22) **स्था, ईश्, भास्, पिस्** और **कस्** धातुओं को **वर** प्रत्यय लगता है ।
उदा. स्था–तिष्ठति इत्यवंशील: **स्थावर:** । ईश्–**ईश्वर:** ।
भास्–**भास्वर:** । भास्–**भास्वर:** । पिस्–**पेस्वर:** । कस्–**विकस्वर:** ।
प्रमाद्यति **प्रमद्वर:** । (=प्रमादी) ।

23) **दिद्युत्** आदि और **भ्राज** आदि क्विबन्त शब्द सिद्ध है ।
उदा. 1) द्योतते इत्येवंशीलो **दिद्युत्** । दिद्युतौ । दुणातीति-**ददृत्** ।
गच्छतीति–**जगत्** । जुहोतीति **जुहू:** । वक्तीति **वाक्** । (=सरस्वती) ।
पृच्छतीति **प्राट्** । **प्राशौ** । **शब्दप्राट्** । **तत्त्वप्राट्** ।
दधाति ध्यायति वा **धी:** । श्रयतीति **श्री:** । शतं द्रवतीति **शतद्रू:** ।
स्त्रवतीति **स्त्रू:** । जवतीति **जू:** । आयतं स्तौति इति **आयतस्तू:** ।
कटं प्रवते **कटप्रू:** (कट (पुं.) नड नाम का घास, सुगंधि–खस आदि घास ।
कटप्रू:=नदीतीर:–घास को प्राप्त करानेवाला नदी का किनारा ।
परिव्रजतीति **परिव्राट् । परिव्राजौ ।**
2) विभ्राजते इति **विभ्राट् । विभ्राजौ ।** भासते इति **भा: । भासौ ।**
पिपर्तीति **पू: । पुरौ ।** धूर्वतीति **धू: । धुरौ ।** विद्योतते इति **विद्युत् ।**
ऊर्जयतीति **ऊर्क् ।** ग्रावाणं स्तौतीति **ग्रावस्तुत् ।** पचतीति **पक् ।**
भिनत्तीति **भिद् ।** वेत्तीति **विद् । शोकच्छिद् ।**
भू:–पृथिवी । **शंभू:**–शिव: । **आत्मभू:**–काम: । **मनोभू:**–काम: ।
स्वयंभू:–ब्रह्मा । **स्वभू:**–विष्णु:। **मित्रभू:**–नाम कश्चित् ।
प्रतिभू:–उत्तमर्णाधर्मणयोरन्तरस्थ: ।
दृन्भू:–व्यसनसहाय: । **कारभू:**–पण्यमूल्यादिनिर्णेता ।
वर्षाभू–दर्दुर औषधिश्च । **पुनर्भू:**–पुनारूढा औषधिश्च ।

परिशिष्ट नियम

1) **पूङ्** और **यज्** धातुओं को **आन (शान)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. पवते **पवमान:** । मलयं **पवमान:** । यजति यजते वा **यजमान:** ।

2) **सासहि, वावहि, चाचलि** और **पापति** शब्द, यङन्त **सह्, वह्, चल्** और **पत्** धातु को **ङि** प्रत्यय लगकर बनते है ।

3) **शम्, सम्, स्वयम्, वि** और **प्र** के बाद **भू धातु** को **उ(डु)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. शम्-सुखम् तत्र भवति **शंभुः** शंकरः । **संभुः** जनिता ।
स्वयंभुः ब्रह्मा । **विभुः** व्यापकः । **प्रभुः** स्वामी ।

4) **पू** धातु को देवता कर्ता में **इत्र** प्रत्यय लगता है ।
उदा. पुनाति पवते वा **पवित्रो**ऽर्हन्, स मां पुनातु ।

5) **नी, दा** (ग.2) **शस्, यु, युज्, स्तु, तुद्, सि, सिच्, मिह्, पत्, पा** और **नह्** धातु को करण अर्थ में **त्र(त्रट्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. नयति अनेन **नेत्रम्** । दान्ति अनेन **दात्रम् ।**
शस्त्रम् । योत्रम् । योक्त्रम् । स्तोत्रम् । तोत्त्रम् । सेत्रम् । सेक्त्रम् ।
मेढ्रम् । पत्त्रम् । पात्रम्–पात्री । नद्ध्रम्–नद्ध्री ।

6) **तृ(तृन्), उदन्त, अव्यय, क्वसु, आन, अतृश्, शतृ, ङि, णकच्** और **खलर्थ** कृदन्त के कर्म और कर्ता को षष्ठी विभक्ति नहीं होती ।
उदा. **तृन्–**वदिता जनापवादान् ।
उदन्त–कन्यामलंकरिष्णुः । श्रद्धालुस्तत्त्वम् ।
अव्यय–कटंकृत्वा । ओदनं भोक्तुं व्रजति ।
क्वसु–ओदनं पेचिवान् ।
आन–कटं चक्राणः (कान) । मलयं पवमानः (शान) ।
कतीह शिखण्डं वहमानाः। ओदन पचमानः (आनश्) ।
अतृश्ः–अधीयंस्तत्त्वार्थम् ।
शतृ–कटं कुर्वन् ।
ङि–परिषहान् सासहिः ।
णकच्–कटं कारको व्रजति ।
खलर्थ–ईषत्करः कटो भवता (खल्–पा.9. नि. 41.)
सुज्ञानं तत्त्वं त्वया । (अन–पा.9. नि. 42)

धातु

ऊर्ज् (ग.10. पर.)=बल देना, जीना ।	***ऊर्जयति । ऊर्ज् ।***
गृध् (ग.4. पर.)=आसक्त होना ।	***गृध्यति । गृध्नुः ।***
गृह् (ग.10. आ.)=ग्रहण करना ।	***गृहयते । गृहयालुः ।***
जस् (ग.4. पर.)=छोडना, फैंकना ।	***जस्यति । अजस्रम् ।***
त्रप् (ग.1. आ.)=लज्जा पाना ।	***त्रपते । अपत्रपिष्णुः ।***
पत (ग.10. पर.)=गिरना ।	***पतयति । पतयालुः ।***
पिस् (ग.1. पर.)=जाना ।	***पेसति । पेस्वरः ।***

भास् (ग.1.आ.)=चमकना, प्रकाशित होना। ***भासते। भासुरः। भास्वरः।***
स्रु (ग.1.पर.)=जाना, वहन करना। ***स्रवति। स्रूः।***

शब्द

अदभ्र (वि.)=खूब ज्यादा। **न दभ्रम्।**
अनवरत (वि.)=निरंतर, बिना रुके। **न अवरतं यत्र।**
अनलम् (अ.)=असमर्थ। **न अलम्।**
आयत (वि.)=लंबा, नियमित। **आयतस्तुः।**
आलोक (पुं.)=प्रकाश, देखना।
उद्‌धमत् (वि.)=जोर से श्वास लेना।
उन्नीत (वि.)=निर्णीत।
ऊर्ज (पुं.)=बल, जीवन, अन्न, पानी, उत्साह, धैर्य।
कपोत (पुं.)=कबूतर।
कृपाण (पुं.)=तलवार।
खेचर (पुं.)=पक्षी, विद्याधर।
खेल (पुं.)=खेल करनेवाला। **खेलति इति अच्।**
गृध्र (पुं.)=गिद्ध पक्षी।
ग्रावन् (पुं.)=पत्थर, कठीन, मजबूत, दृढ।
ग्रावस्तुत् (पुं.)=यज्ञ करनेवाला, याज्ञिक।
चटक (पुं.)=चिडिया (चकली)।
चराचर (नपुं.)=जगत्।
च्यवन (नपुं.)=मरण।
जव (पुं.)=वेग।
तित्तिरि (पुं.)=तितर पक्षी।
त्वरा (स्त्री.)=त्वरा, जल्दी।
निधान (नपुं.)=निधि, भण्डार।
प्रकाम (वि.)=अत्यंत।
प्रगल्भ (वि.)=शक्तिशाली, शूरवीर, प्रौढ, प्रतिभाशाली।
प्राय (वि.)=तुल्य, समान।
फलक (नपुं.)=ढाल, पट्‌टी।
बभ्रु (पुं.)=पीला रंग, नेवला।
यातुधान (पुं.)=राक्षस।
यायावर (वि.)=जाने के स्वभाववाला।
लोलुभ (वि.)=लुब्ध, खूब लोभी।
विजृम्भित (नपुं.)=प्रकट किया हुआ।
वैद्युत (वि.)=बिजली संबंधी। **(विद्युत अयं वैद्युतः।)**
वैधुर्य (नपुं.)=दु:खीमय।
वैमानिक (वि.)=विमान में होनेवाला, देवता।
शतद्रू (स्त्री.)=उस नाम की नदी।
शुक (पुं.)=पोपट पक्षी।
श्येन (पुं.)=बाज पक्षी।
शकलित (वि.)=टूकडा हुआ।
शिश्वान (पुं.)=एक पक्षी।
सत्रशाला (स्त्री.)=दानशाला, यज्ञशाला।
स्वयंभूरमण (पुं.)=मध्य लोक का अंतिम समुद्र।

संस्कृत वाक्य

1. यत् पुन ब्रूथ यूयं यथा-सुखेन वयं तिष्ठामो यतो भक्षयामो मांसमित्यादि, तदपि मुग्धताविजृम्भितमेव भवताम्, हास्यप्रायं विवेकिनाम्, यतः सन्निहिताशेषापाये कायेऽवलगत्सु विविधरोगेषु, त्वरागामिन्यां जरायां, मनःशरीरसन्तापकारिषु राज्याद्युपद्रवेषु, यायावरे यौवने, सर्वव्यसन-कारिणीषु संपत्सु, मनोदाहिनीष्टवियोगे, चित्तवैधुर्यकारिणि विप्रियस-म्प्रयोगे, सततमागामुके मरणे, सर्वथा शुचिनिधाने शरीरे पुद्गल परिणाम मात्र विषयेषु, असंख्यदुःखलक्षपूरिते जगति वर्तमाना-नामसुमतां कीदृशं नाम सुखम् ।

2. **स्वयंभूरमण-स्पर्द्धिवर्धिष्णु-समतारसः ।**
   मुनिर्येनोपमीयेत कोपि नासौ चराचरे ॥

3. तरङ्गतरलालक्ष्मीरायुर्वायुवदस्थिरम् ।
   अदभ्रधीरनुध्यायेदभ्रवद् भङ्गुरं वपुः ॥

4. **अविद्यातिमिरध्वंसे दृशा विद्याञ्जनस्पृशा ।**
   पश्यन्ति परमात्मान-मात्मन्येव हि योगिनः ॥

5. खेचरास्तित्तिरि-शुक-कपोत-चटकादयः ।
   श्येन-शिश्चान-गृध्राद्यै गृह्यन्ते मांसगृध्नुभिः ॥

6. **प्रविशन्नेव च (स राजा) तस्य (सिद्धायतनस्य) द्वारदेशे जवागमनखे-दादनवरतमुद्धमन्तमेकं वैमानिकमपश्यत्,**

आलोकमात्रेणैव तं प्रति, उपजातदिव्यतानिश्चयस्य चक्षुर्निमेषादि-लिङ्गदर्शनोन्नीत-स्वर्गच्यवनसमयस्य रूपसंपन्निरूपणादात्मनि श्लथीभूत-चारुताभिमानग्रन्थेः पार्थिवस्याभूद् मनसि `अहो प्रभावः सुरलोकभूमीनाम् ? यत्र खलु संभूतानि पुण्यभागिनां शरीराण्यप्येवं-विधानि भवन्ति यानि चरमास्वपि दशासु तावदास्तामुपसर्पितुं द्रष्टुमप्यनलमनलमिव वैद्युतं पुमांसः, तथाहि-अस्य वपुषि प्रकामसौम्येऽपि स कोपि स्वभावभास्वरः स्फुरति प्रतापो यस्मिन्नसौ प्रकृतिप्रगल्भाऽपि भीतेव लज्जितेवोत्कुपितेव मे न चिरमा बध्नाति लक्ष्यमीक्षणद्वयी, चित्रं यदस्यात्र शकलितमनः–शिलागर्भ-बभ्रुण्य तनुबले तनुप्रभाजाले निरन्तर–निमग्नाः स्वतेजस्तिरस्कार-लज्जिता इव मनागपि

दर्शयन्ति नात्मानमायतनप्रदीपाः, इमेऽपि सर्वतः प्रधाविताः प्रनष्टदीपान्वेषणायेव भ्रमन्ति दहनालोकलोलुभाः शलभसंघाः, सर्वथा कृतार्थोऽहम्, यस्य मे मर्त्यभावेऽपि प्रकटित दिव्यवपुषा दर्शनमनेन दत्तम्, इति विचिन्त्य मुक्त्वा च स–फलकं प्रभूताभिमानेन सार्धं कृपाणमाबद्धाञ्जलिः स्तोकमुपेत्य स्वागतमकरोत् ।

द्व्याश्रय-महाकाव्ये द्वादशः सर्गः ।

7. ऋषयोऽन्यदाभ्येत्य तमित्यवोचन्नगमाम या यासु पयांस्यपाम ।
निरभुक्ष्महि ह्योऽद्य च यातुधाना उपदुद्रुवुस्तास्तव सत्रशालाः ॥3॥

8. अवसच्च दुर्वासऋषिः स यस्मिन्स पुरा न्यवात्सीदथ मण्डुसुनुः ।
अवसन्पुराऽन्येप्यृषयो वनं तद्दलितं तदा कश्चन न ह्यरक्षीत् ॥9॥

9. यदधीयतेऽसूनपि धारयन्ति बत कृच्छ्रतोऽमी नृप सुन्वदर्हन् ।
अनयं द्विषंस्ताननयं विधातॄन्मनुजानशितॄन्भव तन्निहन्ता ॥5॥

10. प्रजनिष्णुरोचिष्णुरदप्रभाभिः खमलंकरिष्णुः क्षितिपोऽसहिष्णुः ।
प्रचरिष्णुरक्षांसि निराकरिष्णु र्निजगाद भ्राजिष्णुरपत्रपिष्णुः ॥6॥

11. परिमाक्ष्णुभिः स्थास्नुमनोभिरग्लास्नुभिरात्मना पक्ष्णुतया भवद्भिः ।
स्थितमापदि म्लास्नुभिरद्य यावद् धिगधृष्णुकं क्षेष्णुबलं ततो माम् ॥18॥

12. न न कोपनः क्रोधन एव तेषु न न गर्धनः संलषणो जयस्य ।
सरणोऽस्मि तस्मिञवनै र्हयैरित्यभिधाय सोतिज्वलनोभ्युदस्थात् ॥24॥

टिप्पणी :– 3. **तम्** जयसिंहम् । **या:** शाला: । **च** वा ।

15. **सुन्वदर्हन्** सुन्वत्सु-यजमानेष्वर्हन्-पूजार्हः । **अमी** अस्मल्लक्षणा जनाः ।

16. **प्रजनिष्णुरोचिष्णुरदप्रभाभि:** उद्भविष्णुदीप्रदन्तकान्तिभिः ।

18. **परिमाक्ष्णुभि:** तीर्थजलेषु स्नानेनात्मनो विशोधकैः । **आत्मना पक्ष्णुतया** स्वयं पाकितया । **अग्लास्नुभिरात्मना पक्ष्णुतया** धर्मार्थित्वेन हर्षात्स्वयं पाकिभिरित्यर्थः । **म्लास्नुभि:** धर्मानुष्ठानविघ्नात्परिम्लानमुखैः । **अधुष्णुकम्** कुत्सिताप्रगल्भमप्रचण्डमित्यर्थः । **क्षेष्णुबलम्** क्षयणशीलपराक्रमम् ।

24. **तेषु** राक्षसेषु । **संलषण:** लिप्सुः । **सरण:** साधु गन्ता ।
तस्मिन् राक्षसेशविषये ।

पाठ-9

कृदन्त

भविष्यकाल में

1) **इन्** आदि प्रत्ययान्त **गमिन्** आदि शब्द भविष्यकाल में होते है ।
उदा. **गमिष्यतीति गमी ग्रामम्**[1] । (इन् प्रत्यय) (=गांव में जाएगा-ग्रामगमी) **आगामी । भावी । प्रतिरोधी ।** आदि (णिन् प्रत्यय) ।

2) हेतु की सिद्धि हो तब, धातु को भविष्यकाल में **त(क्त)** प्रत्यय विकल्प से लगता है ।
उदा. **मेघश्चेद्वृष्टस्तर्हि संपन्नाः सम्पत्स्यन्ते वा शालयः ।)**
(=यदि चावल की उत्पत्ति में हेतु रूप बारिश हुई है तो चावल होनेवाले ही है ।)

3) जिन धातुओं को **तुम्** आदि लगाने हो, उन धातु की क्रिया जिस क्रिया का प्रयोजन हो, वह क्रिया (क्रिया के प्रयोजन वाली क्रिया) उपपद हो तो, धातु को भविष्यकाल में **तुम्, अक (णकच्)** और **भविष्यन्ती** के प्रत्यय लगते है ।
उदा. **कर्तुं व्रजति ।** (=करने के लिए जाता है ।)
कारको व्रजति । (=करनेवाला जाता है ।)
करिष्यामीति व्रजति । (=करूंगा इस हेतु से जाता है ।)
—यहाँ व्रजति `जाने की क्रिया उपपद है और जाने का प्रयोजन कुछ भी क्रिया करना है ।
अर्थात्—करने के लिए जाता है ।
(इसलिए यह हेत्वर्थ कृदन्त कहलाता है ।)
वैसे ही— **भोक्तुं व्रजति ।** (=खाने के लिए जाता है ।)
भोजको व्रजति । (=खानेवाला जाता है ।),
भोक्ष्ये इति व्रजति । (=खाउंगा, इसलिए जाता है ।)
इन सभी का अर्थ—``खाने के लिए जाता है ।'' ऐसा होता है ।

टिप्पणी 1. यहाँ द्वितीया होती है ।

4) क्रिया के **प्रयोजनवाली क्रिया उपपद हो तो**, कर्म के बाद रहे धातु को भविष्यकाल में **अ (अण्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **कुम्भकारो याति** ।=कुंभ करनेवाला जाता है ।

काण्डलावो व्रजति ।=वृक्ष की शाखा को कांटनेवाला जाता है ।

5) क्रिया के प्रयोजन वाली क्रिया उपपद हो तो धातु को भविष्यकाल में, भावे प्रयोग में **घञ्, क्ति** आदि आगे आनेवाले प्रत्यय लगते है ।

उदा. **पाकाय[1] व्रजति** । (=रसोई करने के लिए जाता है ।)

पक्तये व्रजति । (=रसोई करने के लिए जाता है ।)

पचनाय व्रजति । (=रसोई करने के लिए जाता है ।)

वन्दनायै व्रजति । (=वंदना करने के लिए जाता है ।)

भाव और कर्ता सिवाय–कारक सूचक कृदन्त

पुंल्लिंग

भाव में–और कर्ता सिवाय के कारक में–

6) धातु को **अ(घञ्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **पचनम् पाकः** । **रागः** । **त्यागः** । –(भाव प्रयोग में)

प्रकुर्वन्ति तमिति प्राकारः[2] । (**प्रक्रियते यः स प्राकारः** ।)

वैसे ही–**प्रास्यन्ति तम् इति प्रासः** । (भाला) (प्रास्यते यः स प्रासः)

प्रसीव्यन्ति तम् इति प्रसेवः । (=गूंथी हुई थैली आदि)

कुर्वन्ति तम् इति कारः । (कर्मणि प्रयोग में)

दाशन्तेऽस्मै इति दाशः । (सम्प्रदान में),

आहरन्त्यस्मदिति आहारः । (अपदान में)

करण में और **आधार में** अनट् (नि. 38. में) और अनट् का अपवाद व्यंजनांत धातु को घञ् प्रत्यय नि. 40 में बताऐंगे ।

7) **सम्, नि, वि** और **उप उपसर्ग** के बाद में रहे **यम् धातु** को **अ(अल्)** प्रत्यय विकल्प से लगता है ।

उदा. **संयमः** । **संयामः** । **नियमः** । **नियामः** ।

वियमः । **वियामः** । (विशिष्ट यम ।)

उपयमः । **उपयामः** । (पाणिग्रहण) ।

टिप्पणी 1. यहाँ चतुर्थी होती है ।

2. घञन्त शब्द के बाद उपसर्ग का स्वर ज्यादातर दीर्घ होता है । उदा. प्राकारः ।

8) **नि उपसर्ग** के बाद रहे **नद्, गद्, पठ्, स्वन्,** और **क्वण् धातुओं** को **अ(अल्)** प्रत्यय विकल्प से लगता है ।

उदा. **निनदः । निनादः । निगदः । निगादः । निपठः । निपाठः ।**
निस्वनः । निस्वानः । निक्वणः । निक्वाणः ।

9) **इ वर्णान्त, उ वर्णान्त, वृ, दृ, वश्, रण्, गम्, (दीर्घ) ॠकारान्त** और **ग्रह्** धातुओं को **अ (अल्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **चयः । निश्चयः । जयः । क्षयः । क्रयः ।** आदि
यवः । रवः । नवः । स्तवः । लवः । पवः । आदि
वरः । प्रवरः । दरः । आदरः । वशः । रणः । गमः । अवगमः ।
करः । गरः । तरः । दरः । शरः । आदि, **ग्रहः ।**
अ(घञ्) और अ(अल्) प्रत्ययांत शब्द पुंल्लिंग है ।

10) **स्था** आदि धातुओं को **अ(क)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **आखूनामुत्थानम् आखूत्थो वर्तते । शलभोत्थो वर्तते ।**
प्रतिष्ठन्ते आस्मिन्निति प्रस्थः सानुः ।
संतिष्ठन्तेऽस्यामिति संस्था । व्यवतिष्ठन्तेऽनयेति व्यवस्था ।
प्रपिबन्त्यस्यामिति प्रपा । विध्यतेऽनेनेति विधः ।
विहन्यतेऽनेनास्मिन्वा विघ्नः । आयुध्यन्तेऽनेनेति आयुधम् ।
आध्यायन्ति तमिति आढ्यः । (यहाँ ध् का ढ् होता है ।)

11) **वेप् आदि (टु इतवाले)** धातुओं को **अथु** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **वेपथुः । वमथुः । श्वयथुः । भ्रासथुः । नन्दथुः ।**

12) **पच् आदि (डु इतवाले)** धातुओं को तत्कृत अर्थ में **त्रिम (त्रिमक्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **पाकेन निर्वृत्तम् पक्त्रिमम् ।** (पका हुआ)
वैसे ही–**कृत्रिमम् । लब्ध्रिमम् । याचित्रिमम् ।**(मतांतर से याचथुः)

13) **यज्, स्वप्, रक्ष्, यत्** और **प्रच्छ्** धातुओं को **न** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **यज्ञः । स्वप्नः । रक्ष्णः । यत्नः । प्रश्नः ।**

14) **उपसर्ग के** बाद रहे **दा संज्ञावाले धातुओं** को **इ(कि)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **आदिः । आधिः । निधिः । संधिः । समाधिः ।**

15) **कर्म के** बाद रहे **दा संज्ञावाले** धातुओं को आधार में **इ(कि)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **जलं धीयतेऽस्मिन्निति जलधिः । शरधिः । इषुधिः । वालधिः ।**
शेवं–स्थाप्य धनं धीयतेऽस्मिन् **शेवधि ।** (=भंडार)

स्त्रीलिंग

16) स्त्रीलिंग में धातुओं को **ति(क्ति)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **कृतिः । हृतिः । चितिः । नीतिः । नुतिः । भूतिः ।**

17) **श्रु** आदि धातुओं को **ति (क्ति)** प्रत्यय भी लगता है ।

उदा. **श्रुतिः** । प्रतिश्रुत् – क्विप् ।
संपत्तिः । संपत्–क्विप् ।
अर्त्तिः । अर्दिका–णक ।
प्रशस्तिः । **प्रशंसा**–अ ।
कण्डूतिः[1] । **कण्डूः–**क्विप् । **कण्डूया–**अ ।
पक्तिः । पचा–अङ् ।

18) **आस्, अट्, वत्** और **यज्** धातुओं को **य (क्यप्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **आस्या । अट्या । व्रज्या । इज्या ।** स्त्रीलिंग में आ(आप्) प्रत्यय लगता है ।

19) **कृ धातु** को **अ(श)** और **क्यप्** प्रत्यय विकल्प से लगते है ।

उदा. **क्रिया । कृत्या । कृतिः ।** (द्वि. पा. 4. नि. 3. देखे ।)

20) **परि** के बाद **सृ** और **चर्** धातुओं को **य** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **परिसर्या । परिचर्या ।**

21) **अटाट्य** (यङन्त-अट्) **धातु** को **य** प्रत्यय विकल्प से लगता है ।

उदा. **अटाट्या । अटाटा ।** (नि. 23. से अ । द्वि.पा. 35. नि. 2. की सुचना एवं पा. 4. नि 17. देखे ।)

22) **जागृ** धातु को **अ** और **य** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **जागरा । जागर्या ।**

23) **शंस्** धातु को और **आय आदि प्रत्ययान्त धातुओं** को **अ** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **प्रशंसा । गोपाया** (=रक्षण) । **मीमांसा । कण्डूया** (=खुजली) ।

टिप्पणी 1. प् (पु) और यकार रहित व्यंजनादि प्रत्यय के बाद य् और व् का लोप होता है । (द्वि.पा.35 नि.2 की सुचना से)

लोलूया (=अतिशय अथवा बार-बार कांटना) ।
चिकीर्षा । पुत्रकाम्या । (=पुत्र की इच्छा ।)

24) **त(क्त)** के पहले जिस धातु को **इ (इट्)** आती हो ऐसे गुरु स्वरवाले व्यंजनांत धातुओं को **अ प्रत्यय** लगता है ।
उदा. **ईहा । ईक्षा । उक्षा । हुण्डा । शिक्षा । भिक्षा ।**

25) **पच्** आदि (ष् इत वाले) धातु को **अ(अङ्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **पचा । क्षमा । घटा । त्वरा । प्रथा । व्यथा । जरा ।**

26) **भिदा** आदि शब्द किसी अर्थ विशेष में **अङ्** प्रत्ययान्त बनते है ।
उदा. **भिदा–विदारणम् । छिदा–द्वैधीकरणम् । विदा–विचारणा ।**
मृजा–शरीरसंस्कारः । क्षिपा–प्रेरणम् । दया–अनुकम्पा ।
रुजा–रोगः । चुरः–चौर्यम् । पृच्छा–प्रश्नः ।

27) **ण्यन्त धातु, विद्, आस्, श्रन्थ, घट्ट** और **वन्द्** धातुओं को **अन** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **कारणा । हारणा । कामना । लक्षणा । भावना ।**
वेदना । आसना । उपासना । श्रन्थना । घट्टना । वन्दना ।

28) **इच्छा अर्थ सिवाय इष्** (ग.4. पर. =जाना) धातु को **अन प्रत्यय** लगता है ।
उदा. **अन्वेषणा । एषणा । पिण्डैषणा ।**
इच्छा अर्थ में भी क्वचित् लगता है–**प्राणैषणा । वितैषणा । परलोकैषणा ।**

29) **क्रुध्** आदि धातुओं को और **सम्+पद्** आदि धातुओं को **०(क्विप्)** प्रत्यय लगता है । (द्वि.पा. 20. नि. 3. देखें)
(1) **क्रुध्, क्रुत् । युध्, युत् । क्षुध्, क्षुत् । तृष्, तृट् । त्विष्, त्विट् । रुष्, रुट् । रुज्, रुक् । रुच्, रुक् । शुच्, शुक् । मुद्, मुत् । मृद्, मृत् । गॄ, गीः । त्रै, त्राः । दिश्, दिक् । सृज्, स्रक् ।**
द्वि.पा. 19. नि. 15 (i)
(2) पद्–**संपद् । विपद् । आपद् । व्यापद् । प्रतिपद् ।**
सद्–**संसत् । परिषत् । उपसत् । उपनिषद् ।**

विद्–**निवित् ।** शास्–**आशीः** । श्रु–**प्रतिश्रुत् । उपश्रुत् ।**
स्रु–**परिस्रुत् ।** नह्–**उपानत् ।** वृष्–**प्रावृट्** । प्रुष्-**विप्रुट् ।**
वृत्–**निवृत्** । **उपावृत्** । यत्–**संयत्** ।
इ–**समित्** (द्वि.पा. 20. नि. 2. से `त्')
भृ–**उपभृत** । इन्ध्–**समित् ।**

30) **भी** आदि धातु से **०(क्विप्)** प्रत्यय विकल्प से लगता है ।
उदा. भीः–**भीतिः** । ह्रीः–**ह्रीतिः** । लूः–**लूनिः** । भूः–**भूतिः** ।
कण्डूः–**कण्डूया** । कृत्–**कृत्तिः** । भित्–**भित्तिः** । छित्–**छित्तिः** ।
तुत्–**तुत्तिः** । दृक्–**दृष्टिः** । (द्वि.पा. 21. नि. 9. से क् का श् एवं पा. 13. नि. 2. से श् का ष् इत्यादि ।)

31) **श्राप** (आक्रोश) जाना जाता हो तो **न(नञ्)** के बाद रहे धातु को **अनि** प्रत्यय लगता है ।
उदा. अजननिस्ति **वृषल ! भूयात् ।**
(=हे नीच ! तुम्हारा जन्म निरर्थक हो ।)
वैसे ही–**अजीवनिः । अकरणिः । अप्रयाणिः । अगमनिः ।**

32) **ग्ला, हा** और **ज्या** धातुओं को **अनि** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **ग्लानिः । हानिः । ज्यानिः** । मतान्तर से **म्लानिः ।**

33) धातुओं को **भावे प्रयोग** में **अक (णक)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **आसिका । शायिका । जीविका । कारिका ।**

नपुंसक लिंग

34) नपुंसकलिंग में भावे प्रयोग में धातुओं को **त (क्त)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **हसितम्** छात्रस्य । **नृतम्** मयूरस्य । (द्वि.पा. 1. नि. 10. देखे)
व्याहृतं कोकिलस्य । **गतं** मतङ्गजस्य ।

35) नपुंसकलिंग में भावे प्रयोग में धातुओं को **अन (अनट्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. गम्यते इति-**गमनम्** । वैसे ही-**भोजनम् । वचनम् ।**
हसनम् छात्रस्य ।

36) **रम्** आदि धातुओं को कर्त्तरि प्रयोग में **अन (अनट्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. रमते इति **रमणी** । वैसे ही **कमनी । नन्दनी । ह्लादनी ।**
इध्मं वृश्चति **इध्मं व्रश्चनः** (=लकडा कांटने वाला)
पलाशं शातयति **पलाशशातनः ।** (=पलाश को कांटनेवाला)

37) **भुज्** आदि धातुओं को कर्मणि प्रयोग में और **पत्** आदि धातुओं को अपादान में **अन (अनट्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. भुज्यते इति **भोजनम्** । निरदन्ति तदिति **निरदनम्** । (=खाना)

आच्छादनम् । अवस्त्रावणम् । अवसेचनम् । असनम् । वसनम् । आभरणम् ।

प्रपतत्यस्मात् **प्रपतनः । प्रस्कन्दनः । प्रश्च्योतनः । प्रस्त्रवणः । निर्झरणः** । उद्धरन्ति अस्मात् **उद्धरणः,** शङ्ख्यानामुद्धरणः **शङ्खोद्धरणः ।** (=जहाँ से शंख लाये वह प्रदेश ।)

आपदीयतेऽस्माद्–**अपादानम् ।** (=जहाँ से अलग अलग होते है वह ।)

करण में और आधार में–

38) करण में और आधार में धातुओं को **अन(अनट्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. करण में–**एषणी । लेखनी । विचयनी । इध्मव्रश्चनः । पलाशशातनः । श्मश्रुकर्तनः ।**

आधार में– **गोदोहनी । सक्तुधानी । तिलपीडनी । शयनम् । आसनम् । अधिकरणम् । आस्थानम् ।**

पुंल्लिंग–संज्ञावाचक नाम

39) पुंल्लिंगनाम में, करण और आधार में धातुओं को **अ(घ)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. करण में–**प्रच्छदः । उरच्छदः । दन्तच्छदः । प्लवः । प्रणवः । करः । प्रत्ययः । शरः ।**

आधार में–एत्य कुर्वन्त्यास्मिन्निति **आकरः । आलवः । आरवः । आपवः । भवः । लयः । विषयः । भरः । प्रसरः । अवसरः । परिसरः । विसरः । प्रतिसरः ।**

40) पुंल्लिंग नाम में करण और आधार में व्यंजनांत धातुओं को **अ(घञ्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. विदन्ति विन्दन्ति विन्दते वाऽनेनेति **वेदः** ।

चेष्टतेऽनेन **चेष्टो** बलम् ।

एत्य पचन्ति अस्मिन्निति **आपाकः । आरामः । लेखः । बन्धः ।**

नेगः । वेगः । रजति अनेन इति–**रागः** । (करण में)**रङ्गः । क्रमः । [1]प्रासादः । अपामार्ग । नीमार्गः ।**

खलर्थ प्रत्यय

41) **कृच्छ्र (दुःख)** अर्थवाले **दुर्** से तथा **अकृच्छ् (सुख)** अर्थवाले **सु** और **ईषत्** के बाद रहे धातुओं को भावे प्रयोग में और कर्मणि प्रयोग में **अ(खल्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. दुःखेन शय्यते इति **दुःशयम्** भवता ।
सुखेन शय्यते इति **सुशयम् । ईषच्छयं** भवता ।
दुःखेन क्रियते इति **दुष्करः** । सुखेन क्रियते इति **सुकरः** ।
ईषत्करः कटो भवता । **दुष्करम् । सुकरम् । ईषत्करं** भवता ।
वैसे ही–**दुर्लभम् । सुलभम् । ईषल्लभम् ।** इत्यादि

42) **कृच्छ्र (दुःख)** अर्थवाले **दुर्** के एवं **अकृच्छ्र (सुख)** अर्थवाले **सु** और **ईषद्** के बाद रहे **च्वि** के अर्थ में रहे **कर्तृ** और **कर्म** शब्द के बाद क्रमशः **भू** और **कृ** धातुओं को **अ (खल्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. दुःखेनानाढ्येन आढ्येन भूयते **दुराढ्यंभवं** भवता ।
सुखेनानाढ्येन आढ्येन भूयते **स्वाढ्यंभवं** भवता ।
ईषदाढ्यंभवं भवता ।
दुःखेनानाढ्य आढ्यः क्रियते **दुराढ्यंकरो** मैत्रो भवता ।
सुखेनानाढ्य आढ्यः क्रियते **स्वाढ्यंकर**श्चैत्रो भवता ।
इषदाढ्यंकरश्चैत्रो भवता ।
सुखेनाकटः कटः क्रियन्ते **सुकटंकराणि** वीरणानि ।

43) **शास्, युध्, दृश्, धृष्, मृष्** और **आकारान्त धातुओं** को **अन** प्रत्यय लगता है ।

उदा. दुःखेन शिष्यते **दुःशासनः** । सुखेन शिष्यते **सुशासनः ।**
ईषच्छासनः ।
वैसे ही–**दुर्योधनः । दुर्दर्शनः । दुर्धर्षणः । दुर्मर्षणः ।**
आदन्त–**दुरुत्थानम् भवता । सूत्थानम् । ईषदुत्थानम् ।**
दुष्पानं पयो भवता । **सुपानम् । ईषत्पानम् ।**

टिप्पणी 1. घञन्त शब्द के बाद उपसर्ग का स्वर ज्यादातर दीर्घ होता है । उदा. प्राकारः ।

परिशिष्ट नियम

1) **अवश्य भाव** और **दातार-भाव** (देनदारपना) ज्ञात होता हो तब धातु को कर्ता में **इन् (णिन्) प्रत्यय** और **कृत्य** प्रत्यय लगते है ।
उदा. अवश्यंकारी । अवश्यंगेयो गीतस्य । शतं दायी । गेयो गाथानाम् ।

2) भविष्यकाल में और **ऋण** अर्थ में विहित किये **इन् प्रत्ययान्त** कृदन्त के **कर्म को षष्ठी विभक्ति नहीं** होती ।
उदा. **ग्रामं** गमी आगामी वा ।
शतं दायी ।=सो रुपये देनेवाला ।

3) तुम् (हेत्वर्थ-कृदन्त) के अर्थ में हुए **घञ्** आदि प्रत्ययान्त नाम को स्वार्थ में **चतुर्थी** विभक्ति होती है ।
उदा. **पाकाय** व्रजति इत्यादि ।

धातु

इष् (ग.4. पर.)= जाना । ***इष्यति । अन्वेषणा ।***
उक्ष् (ग.1. पर.)= सिंचन करना, छांटना । ***उक्षति । उक्षा ।***
कुत्स् (ग.10. आ.)= निंदा करना । ***कुत्सयते।कुत्सा।कुत्सना ।***
दाश् (ग.1. उभय.)= देना । ***दाशति /दाशते । दाशन्ते अस्मै दाशः ।***
प्रुष् (ग.9. पर.)= सिंचन करना, छांटना । ***प्रुष्णाति । विप्रुट् ।***
भर्त्स (ग.10. आ.)= तिरस्कार करना । ***भर्त्सयते । भर्त्सना ।***
वि+तृ (ग.1. पर.)= देना । ***वितरति । वितरिष्यति ।***

शब्द

अगाध (वि.)= गहरा, अतिगंभीर ।
अनुपालम्भ (वि.)= दुर्वचन का अभाव । ***न विद्यते उपालम्भो यत्र तत् अनुपालम्भम् ।***
अपामार्ग (पुं.)= एक वनस्पति का नाम ।
अद्वैत (नपुं.)= अकेलापन ।
न द्वेतम् अद्वैतम् । द्विता एव द्वैतम् ।
अर्ति (स्त्री.)= पीडा ।
अर्द् + ति = अर्त्तिः ।
आगम (पुं.)= आगम, तीर्थंकर–गणधरादि से प्राप्त हुए शास्त्र ।
आताम्र (वि.)= लाल, थोडा लाल ।
इतरथा (अ.)= अन्यथा, नहीं तो ।
इध्म (नपुं.)= लकडा ।
इध्मव्रश्चनः ।

उपालम्भ (पुं.)= ठपका, दुर्वचन, कठोर वचन ।

उरच्छद (पुं.)= कवच, बख्तर ।

कपिल (पुं.)= सांख्य दर्शन को बताने वाले प्रथम गुरु ।

कर्कर (पुं.)= कंकड ।

कल्प (पुं.)= आचार ।

काण्ड (पुं./नपुं.)= दंड, बाण, पर्व, वर्ग, वृक्ष की शाखा, अवसर ।

ग्राम (पुं.)= समूह ।

घट्टना (स्त्री.)= चलन, टकराव, छुना, कदर्थना ।

घूक (पुं.)= उल्लु ।

चरट (पुं.)= लुंटनेवाला ।

ज्यानि (स्त्री.)= जीर्णता, क्षय ।

ज्या+अनि= ज्यानिः ।

तुच्छ (वि.)= हलका, झूठा ।

दक्षिण (वि.)= अनुकूल ।

दन्तच्छद (पुं.)= होंठ ।

धिषण (वि.)= बुद्धिशाली, वाचाल ।

धिषणा (स्त्री.)= बुद्धि, वाणी ।

निष्ठुर (वि.)= प्रतिकूल, कठोर वचन बोलनेवाला ।

प्रतिश्रुत् (स्त्री.)= अंगीकार, स्वीकार ।

प्रतिपत्ति (स्त्री.)= भक्ति ।

प्रच्छद (पुं.)= पछेडी, कंबल ।

प्रणव (पुं.)= ॐकार शब्द ।

प्रास (पुं.)= भाला ।

वाणिज (पुं.)= व्यापारी ।

वणिगेव वाणिजः ।

वालधि (पुं.)= पूंछ ।

विदग्ध (वि.)= होशियार, चतुर, पंडित ।

विरल (वि.)= थोडा ।

विरलविरलाः= थोडा-थोडा ।

वृषल (पुं.)= शुद्र ।

शङ्ख (पुं.)= कान और भाल के बीच का स्थान, मस्तक और कनपट्टी की हड्डी ।

शेवधि (पुं.)= निधि, भंडार ।

सरित् (स्त्री.)= नदी ।

संग्राह (पुं.)= मुट्ठी ।

अन्नसंग्राहः = अनाज की मुट्ठी ।

हुण्डा (स्त्री.) **=** खराब, भयंकर ।

संस्कृत वाक्य

1. सरित्सहस्त्रदुष्पुरसमुद्रोदर-सोदरः ।
   तृप्तिमान्नेन्द्रियग्रामो भव तृप्तोऽन्तरात्मना ॥
2. **देहात्माद्यविवेकोऽयं सर्वदा सुलभो भवे ।**
   भवकोट्याऽपि तद्भेदविवेकस्त्वतिदुर्लभः ॥

3. **स्थीयतामनुपालम्भं मध्यस्थेनान्तरात्मना ।**
कुतर्ककर्करक्षेपैस्त्यज्यतां बालचापलम् ।।

4. मनोवत्सो युक्तिगवीं मध्यस्थस्यानुधावति ।
तामाकर्षति पुच्छेन तुच्छग्रहमन:कपि: ।।

5. **स्वागमं रागमात्रेण द्वेषमात्रात्परागमम् ।**
न श्रयामस्त्यजामो वा किन्तु मध्यस्थया दृशा ।।

6. पक्षपातो न मे वीरे न च द्वेष: कपिलादिषु ।
युक्तिमद्वचनं यस्य तस्य कार्य: परिग्रह: ।।

7. **न श्रद्धयैव त्वयि पक्षपातो न द्वेषमात्रादरुचि: परेषु ।**
यथावदाप्तत्वपरीक्षया तु त्वामेव वीरप्रभुमाश्रिता: स्म: ।।

8. यस्य नास्ति परापेक्षा स्वभावाद्वैतगामिन: ।
तस्य किं न भवभ्रान्तिक्लान्तिसन्तानतानवम् ।।

9. **हंससारसनादानुकारिण: सुस्वरा नरा: ।**
भवन्ति सुखिन: काकखरनादास्तु दु:खिता: ।।

10. वत्स ! सुखलालितस्त्वमसि सरल: प्रकृत्या, दवीयो देशान्तरम् । विषमा मार्गा:, कुटिलहृदया लोका:, वञ्चनप्रवणा: कामिन्य:, भूयांसो दुर्जना:, विरलविरला: सज्जना:, प्रयोगचतुरा धूर्ता:, मायाविनो वाणिजका:, दुष्परिपालं भाण्डजातम्, विकारकारि नवयौवनम्, दुरधिगमा: कार्यगतय:, अनर्थरुचि: कृतान्त:, अनपराधकुद्धाश्चौरचर-टादय:, तत्सर्वथा भवता क्वचिन्निष्ठुरेण, क्वचिद्दयालुना, क्वचिन्नि-ष्कृपेण, क्वचित्सुभटेन, क्वचित्कातरेण, क्वचित्त्यागिना, क्वचित्कृपणेन, क्वचिद्बकवृत्तिना, क्वचिद्विदग्धेन, सर्वथा परैरलब्धमध्यागाध-दुग्धनी-रधिधीरगम्भीरधिषणेन भवितव्यम् ।

11) महर्षिस्सप्रहर्षी नृपमुवाच–
राजन् भुक्तभूयिष्ठमधुना वर्तते तवापत्यसन्ततिप्रतिबन्धकमदृष्टम्, अतो मनसि धृतिमाधेहि, मा विधा: स्वल्पमपि विषादम्, मा समुत्पादय चित्तखेदमस्या: सदा सुखोचिताया निजप्रणयिन्या: प्रतिकुलाचरणेन, मुञ्चारण्यगमनस्पृहाम्, गृहावस्थित एव कुरु देवताराधनम्, अर्पय

समस्तस्यापि वनवासोचितस्य क्लेशस्याङ्गम्, अङ्गीकुरु मुनिव्रतक्रियाम्। किं ते दूरवर्तिनीभिरपराभिर्देवताभिः इमामेव प्रकृतिसौम्यां सततसन्निहितामुपासस्व सकलक्षितिपालकुलदेवतां राजलक्ष्मीम्, इयं हीक्ष्वाकुभरतभगीरथादिभूपालपराक्रमक्रीता त्वदन्वयनिसर्गपक्षपातिनी, त्वया सकलभुवन **प्रतीक्ष्येण** सुधिना धार्मिकेण निगृहीतेन्द्रियवृत्तिना दृढभक्तिनात्युदाराशयेन प्रमादपरिहारिणा कालोचितज्ञेन **प्रक्रम**प्रकटित**क्षात्र**तेजसा **विधिवदा**राध्यमाना, नियमात् प्रसादं गमिष्यति, अभिमतार्थविषयं च वरमचिरेण वितरिष्यति,

राजपुत्रि ! **निवर्तित**स्तावदरण्यगमनादेष ते प्रणयिजनः नियोजितश्चातिदुष्करे देवताराधनकर्मणि, [1]मा स्म कुप्यश्चेतसि यदस्माभिरकृत्वा प्रश्नमश्रुत्वा प्रतिवचनमगृहीत्वानुमतिं महाभागायाः, कृतास्य चेतसो नियन्त्रणा निवारणा च विषयोपभोगसुखानाम्, अत्र च भवत्कल्याणसम्पादनसत्वरा चित्तवृत्तिरेवापराध्यति न बुद्धिः। **कल्पश्चायं यतोऽस्य कतिचिद् दिनानि दुरस्थितयैव कल्याणभागिन्या भवत्या सर्वापि कर्तव्या भर्तृजनोचिता प्रतिपत्तिः।**

टिप्पणी **अङ्गम्** शरीरम्। **प्रतीक्ष्येण** पूज्येन। **प्रक्रम** क्रम। **क्षात्र** क्षत्रस्येदम् क्षात्रम्–क्षत्रिय-सम्बन्धि। **विधिवद्** विधिनेव-यर्थाविधि। **निवर्तित**: निवारितः।

1. स्म युक्त मा (माङ्) उपपद हो तब, ह्यस्तनी और अद्यतनी होती है।

द्व्याश्रयमहाकाव्ये द्वादशः सर्गः ।

12) समरं गमी त्वं प्रतिरोध्यथो चेद्विशिखैश्च वृष्टो विजयश्च जातः ।
प्रजनिष्यते कीर्तिरितीरितोऽसौ मुनिभिः सकष्टैरथमारुरोह ।।50।।

13) अभियोद्धुमाघातक एष जेष्यन् व्रजति प्रभुर्वो रिपुशान्तिकारः ।
शुभमापको धर्ममथोद्धरिष्य इति दोर्युगं पश्यति कीर्तये च ।।56।।

14) वियमी वियामे नियमी नियामेऽथ यथा च संयाम्युरुसंयमे वा ।
नृप उद्यतः कीर्त्युपयाम एवं विजयश्रियश्चोपयमे बभासे ।।61।।

15) धनुषां निनादै र्निनदैरिषूणां निगदै र्नृणां क्रव्यभुजां निगादैः ।
रथनिस्वनैस्तत्प्रतिनिक्वणैश्च जगदेकनिक्वाणमयं तदाभूत् ।।62।।

त्रयोदशः सर्गः ।

16) अनिच्छुरन्नसंग्राहेप्यविघ्नं पत्तिसंस्थया ।
स नन्दथुकृते भूपमकृत्रिममसेवत ।।2।।

17) यज्ञरक्षणे सयत्नोऽभूत् स्वप्नेऽप्यप्रश्नयाचथुः ।
राक्षसो यत्प्रसादं राट् तेनाऽयाचित्रिमं व्यधात् ।।3।।

टिप्पणी 50. **गमी** गमिष्यसि । **अथो** तथा । **प्रतिरोधी** शत्रून् रोत्स्यसि ।
वृष्टः वर्षिष्यसि । **जातः** जनिष्यते । **ईरितः** उक्तः । **असौ** जयसिंह ।

56. **अभियोद्धुम्** शत्रुभिः सहाभियोत्स्य **इति** । **आघातकः** अरीन्हनिष्यामीति । **एष** प्रत्यक्षः । **जेष्यन्** अरीन्जेष्यामीति । **रिपुशान्तिकारः** जित्वा रिपूणां शान्ति करिष्य इति । **शुभम्** शत्रुजयोत्थं कल्याणम् । **आपकः** आप्स्यामिति । **अथ** तथा । **कीर्तये** कीर्तयिष्ये-स्वस्य कीर्तिमुत्पादयिष्य इति **च** ।

61. **वियमी** विशिष्टा यमाः वियमाः तद्वान् । **वियामे** विशिष्टयमेषु । **अथ** अथवा । **कीर्त्युपयामे** विजयोत्थकीर्तिवध्वाः पाणिग्रहणे । **एवम्** उक्तरीत्या ।

62. **तत्प्रतिनिक्वणैः** तेषां धनुर्निनादादीनां व्योमादिषु प्रतिशब्दैः ।

2. **अन्नसंग्राहेऽपि** धान्यमुष्टावपि । **अनिच्छुः** भोजनमात्रमप्यवाञ्छन्नित्यर्थः । **अविघ्नम्** सदेत्यर्थः । **पत्तिसंस्थया** पदातिव्यवस्थया । **स** बर्बरो राक्षसः । **नन्दथुकृते** राज्ञ आह्लादनाय । **अकृत्रिमम्** सद्भावेनेत्यर्थः ।

3. **यज्ञरक्षणे** यागरक्षायाम् । **स्वप्नेऽपि** चित्तेऽपि । **अप्रश्नयाचथुः** न विद्यते प्रश्नस्य (किं यज्ञरक्षां करोमि न वेति । कथं वा करोमीत्यादि पृच्छायाः) याचथुः (याञ्चा) यस्य स स्वयमेवेत्यर्थः । **राक्षसो** बर्बरः । **यत्** यस्मात् । **राट्** जयसिंहः । **तेन** तेन हेतुना । **अयाचित्रिमम्** अयाञ्चया निर्वृत्तं स्वाभाविकम् ।

18) नीतिप्रतिश्रुता श्रोतुं राजैकाकी जनश्रुती: ।
सार्तीनां चार्दिका हर्तुं कदाचिन्निरगान्निशि ॥5॥

19) क्रुधा काकयुदुद्घूके कुञ्जेऽथाभी: स भीतिदे ।
समसंपद्विपद्भूप इति दीनं वचोऽश्रुणोत् ॥17॥

20) एकान्तानुरक्तां स्वप्रेयसीं मामजानन्निव हे नाथ !
अह्रीस्त्वं ह्रीतिं त्यक्त्वा मां किमित्युज्झसि ?
अद्यैवाजीवनिर्मेऽस्तु यावद्वीक्षे वराक्यहम् ।
ग्लानिहानी न ते नाथ ! म्लानिज्यानी कुलस्य च ॥19॥

टिप्पणी 5. **नीतिप्रतिश्रुता** राजनीतेरङ्गीकारेण हेतुना । **जनश्रुती:** लोकवार्ता: **श्रोतुम् ।** **सार्तीनाम्** रोगपराभवादिना पीडितानाम् । **अर्दिकाम्** पीडां **हर्तुं च ।**

17. **क्रधा** क्रुधा हेतुना । **काकयुदुद्धके काकयुधि**–काकै: सह रणे, उद्-उद्यता घूका यत्र तस्मिन् ।

19. **अजीवनि:** मृत्यु: । **ते ग्लानिहानी** तव हर्षक्षयाङ्गक्षयौ । कुलस्य **च** तव वंशस्य च **म्लानिज्यानी** त्वन्मृत्युना मालिन्यं क्षयं च **न वीक्षे ।**

पाठ-10

कृदन्त

संबंधक भूत कृदन्त

क्त्वा प्रत्यय

पर (भविष्य) काल के धातु अर्थ के साथ जिसका कर्ता एक हो ऐसे प्राग् (भूत) काल के अर्थ में रहे धातु को धातु के संबंध में–

1) **त्वा (क्त्वा)** प्रत्यय विकल्प से लगता है ।

उदा. i) **आसित्वा भुङ्क्ते** (=बैठकर खाता है ।)

अर्थात् पहले बैठता है, फिर खाता है । यहाँ बैठना प्राक्काल है और खाना परकाल है और दोनों धातुओं का कर्ता तुल्य है । अर्थात् पूर्व धातु और पर धातु का संबंध होने से इसे संबंधक भूत कृदन्त कहते है ।

ii) **भुक्त्वा व्रजति ।** (=खाकर जाता है ।)

iii) **भुक्त्वा पुन भुंक्ते ।** (=खाकर पुनः खाता है ।)

iv) **स्नात्वा भुक्त्वा पीत्वा व्रजति ।** (=नहाकर, खा-पीकर जाता है ।)

आसित्वा भुङ्क्ते । का विकल्प से **आस्यते भोक्तुम् ।** ऐसा भी होता है । खाने के लिए बैठा जाता है–इस प्रकार भी प्रयोग होता है ।

त्वा (क्त्वा) प्रत्यय के पहले सेट् धातु को इ जुडता है, जबकी अनिट् धातु को नहीं जुडता है एवं वेट् धातु को विकल्प से जुडता है ।

जैसे–सेट् धातु–**याचित्वा । पठित्वा ।** आदि

अनिट् धातु–**पृष्ट्वा । भुक्त्वा ।** आदि

वेट धातु–**रद्ध्वा–रधित्वा । अक्त्वा–अञ्जित्वा** । आदि

2) **जॄ (ग.9)** और **व्रश्च्** धातुओं को **त्वा(क्त्वा)** प्रत्यय के पहले **इ (इट्)** जुडता है ।

उदा. **जरित्वा । व्रश्चित्वा** । कित् न होने से गुण हुआ है ।

द्वि.पा.4. नि.5. नहीं लगने से व्रश्च् के र् का ऋ नहीं हुआ ।

(पा.7. नि.73. से जॄ धातु को इट् नहीं लगती, जीर्त्वा । परंतु इस

नियम से जॄ (गण 9.) को इट् लगता है–**जरित्वा** ।

व्रश्च् धातु सामान्य से वेट् होने पर विकल्प से इट् लगता है, परंतु इस नियम से व्रश्च् धातु को इट् नित्य लगता है । **व्रश्चित्वा** ।)

3) दम् आदि (ऊदित्) धातुओं को त्वा(क्त्वा) प्रत्यय के पहले विकल्प से **इ(इट्)** लगता है । (द्वि.पा.19. नि.17. से दिव्, सिव् धातु के `व्' का ऊट् होता है, धूत्वा ।)

उदा. **दान्त्वा–दमित्वा । शान्त्वा–शमित्वा । तान्त्वा–तमित्वा । द्यूत्वा–देवित्वा । स्यूत्वा–सेवित्वा । अस्त्वा–असित्वा ।**

4) धातु के बाद रहे सेट् **त्वा (क्त्वा) कित् नहीं** होता (अर्थात् इ+त्वा कित् नहीं होता है । (कित् नहीं होने से द्वि.पा. 1 नि. 7. लगेगा और द्वि.पा. 3. नि. 8. नहीं लगेगा और य्वृत् नहीं होगा ।)

उदा. **देवित्वा । सेवित्वा । वर्तित्वा । भ्रंशित्वा । ध्वंसित्वा । व्रश्चित्वा ।**

5) **ज कारान्त** धातु को, **नश्** धातु को, नकार उपान्त्य होने पर **'त'** कारादि **त्वा (क्त्वा) विकल्प से कित्** जैसा होता है ।

उदा. **रक्त्वा–रङ्क्त्वा । भक्त्वा–भङ्क्त्वा । मक्त्वा–मङ्क्त्वा । नष्ट्वा–नंष्ट्वा ।**

(मस्ज् और नश् धातुओं को द्वि.पा. 19. नि. 13-14. से `न्' जुडता है–**मङ्क्त्वा ।)**

6) **ऋत्, तृष्, मृष्, कृष्, वञ्च्, लुञ्च्** तथा **न उपान्त्य में हो ऐसे थ् और फ् अंतवाले धातुओं** को सेट् क्त्वा विकल्प से कित् जैसा होता है ।

उदा. **ऋतित्वा-अर्तित्वा । तृषित्वा-तर्षित्वा । मृषित्वा-मर्षित्वा-मृष्ट्वा । कृशित्वा-कर्शित्वा । वचित्वा-वञ्चित्वा-वक्त्वा । लुचित्वा-लुञ्चित्वा । श्रथित्वा-श्रन्थित्वा** इत्यादि । **गुफित्वा-गुम्फित्वा** इत्यादि ।

मृष् और वञ्च् ऊदित् होने से त्वा (क्त्वा) से पहले वेट् है । (नि.3. देखे)

7) **उ कार** अथवा **इ कार उपान्त्य** हो और **व्यंजन आदि में** हो ऐसे **'व्' अंत** सिवाय के धातु के बाद **सेट् क्त्वा** और **सन्** विकल्प से **कित्** जैसा होता है ।

उदा. **द्युतित्वा–द्योतित्वा । दिद्युतिषते–दिद्योतिषते ।**

मुदित्वा–मोदित्वा । मुमुदिषते–मुमोदिषते ।
लिखित्वा–लेखित्वा । लिलिखिषति–लिलेखिषति ।
परंतु **देवित्वा–दिदेविषति ।**–(दिव् में `व्' अन्त में है ।)

खणम् प्रत्यय

8) **आभीक्ष्ण्य**[1]–पुन: पुन: अर्थ में, **अम्**[2] **(खणम्)** और **त्वा(क्त्वा)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **भोजं भोजं याति** । (=बार-बार खाकर जाता है)
–भुक्त्वा भुक्त्वा याति ।
पायं पायं व्रजति । (द्वि.पा.19. नि.19. देखे)–पीत्वा पीत्वा व्रजति ।
नामं नामं गच्छति । (द्वि.पा.5. नि.2. देखे)–नत्वा नत्वा गच्छति ।

9) **पूर्व, अग्रे** और **प्रथम** उपपद हो तब **अम् (खणम्)** विकल्प से होता । विकल्प से **त्वा (क्त्वा)** लगता है ।
उदा. **पूर्वं भोजं याति** (=पहले खाकर जाता है ।) **अथवा** अपनी दूसरी क्रिया करके पहले खाना खाकर जाता है । यहाँ **'पूर्वं'** भुज्यते ततो व्रजति ।' ऐसा प्रयोग भी हो सकता है । **पूर्वं भुक्त्वा याति ।**
अग्रे भोजं याति । अग्रे भुक्त्वा याति ।
प्रथमं भोजं याति । प्रथमं भुक्त्वा याति ।

10) **अन्यथा, एवम्, कथम्** और **इत्थम्** के बाद रहे अनर्थक (समान अर्थ में) **कृ** धातु को **अम् (खणम्)** प्रत्यय विकल्प से लगता है ।
उदा. **अन्यथाकारं भुङ्क्ते ।** अन्यथा भुङ्क्ते इत्यर्थ: ।
(=दूसरी तरह से खाता है ।) विकल्प से
अन्यथा कृत्वा भुङ्क्ते । (=दूसरी तरह से करके खाता है ।)
(इन दोनों अर्थ में कोई भेद नहीं पडता है, इसलिए कृ धातु अनर्थक है ।)

11) **मन में ईर्ष्या के साथ उत्तर देता हो** तब, **यथा** और **तथा** शब्द के बाद से **अनर्थक कृ** धातु को **अम् (खणम्)** प्रत्यय विकल्प से लगता है ।
उदा. कथं भवान् भोक्ष्यत इति पृष्टोऽसूयया तं प्रति आह–

टिप्पणी 1. आभीक्ष्ण्य अर्थ में द्विरुक्ति होती है । उदा. भोजं भोजं याति ।
2. त्वा (क्त्वा), तुम् और अम् (णम्-खणम्) प्रत्ययान्त शब्द अव्यय है ।
उदा. कृत्वा । कर्तुम् । यावज्जीवमदात् । स्वादुंकारं भुङ्क्ते ।

यथाकारमहं भोक्ष्ये तथाकारमहं भोक्ष्ये कि तवानेन ?
(=आप किस तरह खाओगे ? इस प्रकार पूछाया गया (मैत्र) ईर्ष्या से उस (चैत्र) को जवाब देता है–जिस तरह से करके खाऊंगा, उस तरह खाऊंगा तुम्हे उससे क्या ?)
विकल्प से–यथा कृत्वाऽहं भोक्ष्ये तथा कृत्वाऽहं भोक्ष्ये ।

12) **आक्रोश दिखता** हो तब कर्म के बाद **कृ धातु** को विकल्प से **अम् (ख्णम्)** प्रत्यय लगता है । विकल्प से त्वा(क्त्वा) लगता है ।
उदा. **चौरंकारमाक्रोशति** । `चोर !' कहकर आक्रोश करता है ।
यहाँ **चौरंकारम् ।** यह उपपद तत्पुरुष समास है ।
ख्णम् प्रत्यय खित् होने से म् जुड़ा है ।
(तृ.पा.7 नि.31. की टिप्पणी देखें)
विकल्प से ``चौरं कृत्वाक्रोशति'' ।

13) **स्वादु अर्थवाला** और दीर्घ न हो ऐसे कर्म के बाद **कृ धातु को अम् (ख्णम्)** और **त्वा (क्त्वा)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **स्वादुंकारं भुङ्क्ते** अथवा–स्वादुं कृत्वा भुङ्क्ते ।
(=स्वादिष्ट करके खाता है ।)
मृष्टङ्कारं भुङ्क्ते । (=मीठा करके खाता है ।)
लवणंकारं भुङ्क्ते । (=नमक डालकर खाता है ।)
दीर्घ हो ऐसे कर्म के बाद कृ धातु–
स्वाद्वीं कृत्वा यवागूं भुङक्ते ।

14) **`सभी को'** अर्थवाले कर्म के बाद रहे **विद्** और **दृश्** धातु को **अम् (णम्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. (i) **अतिथिवेदं भोजयति ।** यं यमतिथिं जानाति तं तं सर्वम् भोजयति । अर्थात् जिसे जिसे अतिथि स्वरुप में देखता है, उसे उसे सभी को खिलाता है ।
1) **विद्** (ग.2. प.)=जानना । वेत्ति-जानाति ।
2) **विद्** (ग.6.उभ.) =पाना । विदन्ति-ते, लभन्ते ।
3) **विद्** (ग.7.आ.)=विचार करना । विन्ते-विचारयति ।
4) **विद्** (ग.4.आ.)=विद्यमान होना । विद्यते-अस्ति ।
चौथे गण का विद् धातु अकर्मक है इसलिए उसे छोड़कर तीनों

`विद्' यहाँ लेने है ।)

ii) **कन्यादर्शं वरयति ।** यां यां कन्यां पश्यति तां तां सर्वाम् वरयति । अर्थात् जिसे जिसे कन्या स्वरुप में देखता है, उसे उसे सभी को पाने की इच्छा करता है ।

(वर् (ग.10. प.) पाने की इच्छा ।)

15) **`सभी को'** अर्थवाले **यावत् कर्म** के बाद रहे **विन्द्** और **जीव्** धातुओं को **अम् (णम्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **यावद्वेदं भुङ्क्ते** (=जितना प्राप्त करता है, उतना सब खाता है ।)

यावज्जीवमधीते । (=जब तक जीवन जीता है, तब तक पढ़ता है ।)

जीव् धातु का पूर्वकाल असंभवित है इसलिए अपूर्व काल में ही विधि है । **``पहले जीता है, फिर पढ़ता है ।''** यह असंभवित है ।

16) **चर्म** और **उदर** कर्म के बाद रहे **पूरि (पूर्+णि)** धातु को विकल्प से **अम् (णम्)** प्रत्यय लगता है । (पूर् (ग.10.प)=भरना । पूरयति ।)

उदा. **चर्मपूरमास्ते–चर्मपूरयित्वास्ते** । (=चमडे को भरकर बैठता है ।)

उदरपूर शेते–उदरं पूरयित्वा शेते । (=पेट भरकर सोता है ।)

(द्वि.पा.36 नि.8. से णि का लोप हुआ है ।)

17) **वर्षा का माप ज्ञात होता हो तब** कर्म के बाद रहे **पूरि** धातु को विकल्प से **अम् (णम्)** प्रत्यय लगता है । एवं धातु के ऊ का विकल्प से लोप होता है ।

उदा. **गोष्पदप्रं वृष्टो मेघः । गोष्पदपूरं वृष्टो मेघः ।**

मूषक-बिलपूरं वृष्टो मेघः ।

यावता गोष्पदादिपूरणा भवति तावद् वृष्टः ।

(=जितनी बारिश से गाय का पद छाप भरा जाय, उतना बरसा ।) यहाँ तावद् क्रिया–विशेषण है ।) **पुरणा** (स्त्री.)=भरना ।

गोष्पदम्–गोः पदम् गोष्पदम्–षष्ठी अलुप्, र् का ष् निपात होता है ।

18) **चेल (=कपडा) जिसका अर्थ है** ऐसे कर्म के बाद रहे **क्नोपि (क्नूय+णि)**

धातु को **अम् (णम्)** प्रत्यय विकल्प से लगता है ।

उदा. **चेलक्नोपं वृष्टो मेघः** । यावता चेलं क्नूयते—आर्द्रीभवति तावद् मेघः वृष्टो । (=कपडा भीगे उतना मेघ बरसा ।)

कम्बलक्नोपं वृष्टो मेघः । (=कम्बल भीगे उतना मेघ बरसा ।)

19) **गात्र** और **पुरुष** कर्म के बाद रहे **स्ना धातु** को विकल्प से **अम् (णम्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **गात्रस्नायं वृष्टो मेघः । पुरुष स्नायं वृष्टो मेघः ।**

यावता गात्रं पुरुषश्च स्नाप्यते तावद् वृष्टो मेघः ।

20) **शुष्क, चूर्ण और रूक्ष** कर्म के बाद रहे **पिष्** धातु को उसी धातु के संबंध में **अम् (णम्)** लगता है ।

उदा. **शुष्कपेषं पिनष्टि । शुष्कं पिनष्टीत्यर्थः ।** (सूखे को पिसता है)

चूर्णपेषं पिनष्टि (=चूर्ण को पिसता है ।)

रूक्षपेषं पिनष्टि । (=रूक्ष को पिसता है ।)

21) **अकृत** और **जीव कर्म** के बाद क्रमशः **कृ** और **जीव्** धातु को उसी धातु के संबंध में **अम् (णम्)** प्रत्यय विकल्प से लगता है ।

उदा. **अकृतकारं करोति । अकृतं करोति ।**

(=जो नहीं किया वह करता है ।)

जीवग्राहं गृह्णाति । जीवन्तं गृह्णाति (=जीते हुए ग्रहण करता है ।)

22) करण के बाद रहे **हन्** धातु को, उसी धातु के संबंध में **अम्(णम्)** प्रत्यय विकल्प से लगता है ।

उदा. **पाणिघातं कुड्यमाहन्ति ।** पाणिना हन्तीत्यर्थः ।

(द्वि.पा.36. नि.4. देखे ।)

पादघातं शिलां हन्ति । पादेन हन्तीत्यर्थः ।

अस्युपघातमरीन्हन्ति । (=तलवार के द्वारा शत्रु को मारता है ।)

शरोपघातं मृगान् हन्ति (=बाण के द्वारा हिरणों को मारता है ।)

23) आधार के बाद रहे **बन्ध्** धातु को उसी धातु के संबंध में **अम् (णम्)** प्रत्यय विकल्प से लगता है ।

(**चक्र** (नपुं.)=पैया । **चारक** (पुं.)=बंधीगृह, कारागृह ।)

उदा. **चक्रबन्धं (जनः) बद्धः । चारकबन्धं बद्धः । गुप्तिबन्धं बद्धः ।**

(=चक्र/जेल/गुप्ति में बंध करके मनुष्य को मेरे द्वारा बांधा गया ।)

24) **जीव** और **पुरुष** कर्ता के बाद रहे क्रमशः **नश्** और **वह्** धातु को उसी धातु के संबंध में **अम् (णम्)** प्रत्यय विकल्प से लगता है ।

उदा. **जीवनाशं नश्यति ।** जीवन्नश्यतीत्यर्थः

(=जीता मनुष्य नाश पाता है ।)

पुरुषवाहं वहति । पुरुषः–प्रेष्यो भूत्वा वहतीत्यर्थः ।

(=पुरुष, दास बनकर वहन करता है ।)

25) **ऊर्ध्व** कर्ता के बाद रहे **पूर्** और **शुष्** धातुओं को उसी धातु के संबंध में **अम् (णम्)** प्रत्यय विकल्प से लगता है ।

उदा. **ऊर्ध्वपूरं पूर्यते ।** ऊर्ध्वः पूर्यते इत्यर्थः । (=ऊर्ध्व बढता है ।)

ऊर्ध्वशोषं शुष्यति । ऊर्ध्वः शुष्यति इत्यर्थः । (ऊर्ध्व सुखता है ।)

26) **उपमा अर्थवाले कर्म और कर्ता के बाद रहे धातु को,** उसी धातु के संबंध में **अम् (णम्)** प्रत्यय विकल्प से लगता है ।

उदा. **कर्म–सुवर्णनिधायं निहितः** । सुवर्णमिव निहित इत्यर्थः ।

वैसे ही-**शाकक्लेश क्लिष्टः** । शाक इव क्लिष्ट इत्यर्थः ।

ओदनपाचं पक्वः । ओदन इव पक्व इत्यर्थः ।

कर्त्ता–काकनाशं नष्टः । काक इव नष्टः इत्यर्थः ।

वैसे ही–**अभ्रविलायं विलीनः ।** अभ्रमिव विलीनः इत्यर्थः ।

27) **'साथ में'** अर्थ वाले तृतीयान्त नाम के योग में **दंश् धातु** को विकल्प से **अम् (णम्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **मूलकेनोपदंश**–[1]मूलकोपदंशं भुङ्क्ते ।

विकल्प से–मूलकेनोपदश्य भुङ्क्ते ।

(=मुली के साथ कचुंबर बनाकर खाता है ।)

टिप्पणी 1. तृतीयांत नाम कृदन्त के साथ विकल्प से उपपद समास होता है ।

28) **'साथ में'** अर्थ वाले तृतीयान्त नाम के योग में, संबंधी धातु के साथ, **एक कर्मवाले, हिंसा अर्थ**वाले धातु को **अम्(णम्)** प्रत्यय विकल्प से लगता है।

उदा. दण्डेनोपघातं–**दण्डोपघातं गाः सादयति ।**

(=दण्डे के द्वारा मारकर गाय को दु:खी करता है।)

खड्गेन प्रहारं–**खड्गप्रहारं शत्रून् विजयते ।**

विकल्प से–दण्डेनोपहत्य इत्यादि ।

29) तृतीयान्त और सप्तम्यन्त नाम के योग में **उप+पीड्, रुध्** और **कर्ष्** (कृष्–गण.1.) धातु को **अम्(णम्)**प्रत्यय विकल्प से लगता है।

तृतीयान्त–पार्श्वाभ्यामुपपीडं शेते–**पार्श्वोपपीडं शेते ।**

(=करवट के द्वारा दबाकर सोता है।)

सप्तम्यन्त–पार्श्वयोरुपपीडं शेते–**पार्श्वोपपीडं शेते ।** (=करवट में दबाकर सोता है।) विकल्प से–पार्श्वाभ्यामुपपीड्य शेते इत्यादि ।

तृतीयान्त–व्रजेनोपरोधं–**व्रजोपरोधं गाः स्थापयति ।**

(=वाडे के द्वारा गाय को भरकर रखता है।)

सप्तम्यन्त–वज्रे उपरोध–**व्रजोपरोधं गाः स्थापयति ।**

(=वाडे में गाय को भरकर रखता है।)

तृतीयान्त–पाणिनोपकर्षं–**पाण्युपकर्षं धानाः पिनष्टि ।**

(=हाथ के द्वारा मसलकर धाना पिसता है।)

सप्तम्यन्त–पाणावुपकर्षं–**पाणावुपकर्षं धानाः पिनाष्टि ।**

(=हाथ में मसलकर धाना पिसता है।)

30) **त्वरा** (=जल्दी) **जानी जाती हो तब, पंचम्यन्त नाम** के साथ धातु को **अम् (णम्)** प्रत्यय विकल्प से लगता है।

उदा. शय्याया उत्थायं–**शय्योत्थायं धावति ।** (=गद्दी में से उठकर दौडता है।) विकल्प से–शय्याया उत्थाय धावति ।

31) **त्वरा** (=जल्दी) **जानी जाती हो तब, द्वितीयान्त नाम** के साथ धातु को **अम् (णम्)** प्रत्यय विकल्प से लगता है।

उदा. लोष्टान्ग्राहं–**लोष्टग्राहं युद्धते ।** (=पत्थर लेकर लडता है।)

दण्डमुद्यामं–**दण्डोद्यामं धावति ।** (=लकडी उठाकर दौडता है।)

विकल्प से – लोष्टान्गृहीत्वा युध्यन्ते । इत्यादि ।

32) **वीप्सा** (=शब्द दोहराना) और **आभीक्ष्ण्य** (=बार-बार) अर्थ जाना जाता हो तब, द्वितीयान्त नाम के साथ **विश्, पत्, पद्** और **स्कन्द्** धातुओं को **अम् (णम्)** प्रत्यय विकल्प से लगता है ।

उदा. 1) गेहं गेहमनुप्रवेशम्–**गेहानुप्रवेशमास्ते** । (=घरघर प्रवेश कर बैठता है ।) विकल्प से–गेहं गेहमनुप्रविश्यास्ते ।

2) गेहं अनुप्रवेशम् अनुप्रवेशं–**गेहानुप्रवेशमास्ते** । (=घर में प्रवेश कर कर के बैठता है ।) विकल्प से गेहमनुप्रविश्यानुप्रविश्यास्ते । इत्यादि ।

तुम् प्रत्यय

33) **शक्, धृष्, ज्ञा, रभ्, लभ्, सह्, अर्ह्, ग्ला, घट् और अस्** धातु तथा इसी अर्थ वाले धातु, एवं समर्थ नाम तथा उसी अर्थवाले नाम तथा धातु और इच्छा अर्थवाले धातु उपपद हो तो, **कर्मभूत धातु** को **तुम्** प्रत्यय लगता है । ये तुम् प्रत्ययान्त कृदन्त है, हेत्वर्थ कृदन्त नहीं है । (ग्ला, घट्, अस् तथा समर्थ–ये उपपद हो तब कर्म नहीं बनता क्योंकि ये सभी अकर्मक है ।)

उदा. **शक्नोति पारयति वा भोक्तुम् ।** (=खाना पूरा करता है–अर्थात् पूरा करने के लिए समर्थ है ।)

धृष्णोति अध्यवस्यति वा भोक्तुम् । (=खाने को विचार करता है ।)

जानाति वेत्ति वा भोक्तुम् । (=खाने को जानता है ।)

आरभते प्रक्रमते वा भोक्तुम् । (=खाने को शुरु करता है ।)

लभते विन्दते वा भोक्तुम् । (=खाने को प्राप्त करता है ।)

सहते क्षमते वा भोक्तुम् । (=खाने को सहन करता है ।)

अर्हति प्राप्नोति वा भोक्तुम् । (=खाने को प्राप्त करता है ।)

ग्लायति म्लायति वा भोक्तुम् । (=खाने को म्लान होता है ।)

घटते युज्यते वा भोक्तुम् । (=खाने को योग्य होता है ।)

अस्ति विद्यते वा भोक्तुम् । (=खाने को विद्यमान है ।)

समर्थोऽलं प्रभवति ईष्टे वालंभोक्तुम् ।
(=खाने को समर्थ है ।)

इच्छति वाञ्छति वष्टि अभिलषति वा भोक्तुम् ।
(=खाने को इच्छा करता है ।)

परिशिष्ट नियम

1. **'बंध के नाम'**–संज्ञा के विषय वाले करणवाचि शब्द के बाद रहे **'बन्ध्'** धातु को उसी धातु के संबंध में विकल्प से **अम् (णम्)** प्रत्यय लगता है ।
   उदा. **क्रौञ्चबन्धंबद्धः । मर्कटबन्धंबद्धः ।**
   क्रौञ्च आदि बंध के नाम–संज्ञा है ।
   क्रौञ्चाद्याकारो बन्धः क्रौञ्चादिरुच्यते । क्रौञ्चाद्याकारेण बन्धेन बद्ध इत्यर्थः ।

2. **ऋ** (ग.3/1.), **री, ब्ली, ह्री, क्नूयि, क्ष्माय्** और **आकारान्त** धातुओं को **णि** प्रत्यय लगने पर **प् (पु)** आगम होता (जुडता) है ।
   उदा. **अर्पयति । रेपयति । ब्लेपयति । ह्रेपयति । क्नोपयति । क्ष्मापयति । दापयति । धापयति । क्रापयति । जापयति । अध्यापयति । नाम्नोऽपि– सत्यापयति । अर्थापयति । वेदापयति ।**
   (पा.6. नि. 25, 27)
   प्रिय–**प्रापयति** । स्थिर-**स्थापयति** । स्फिर–**स्फापयति** ।
   (पा.6. नि. 25, तथा पा. 18. नि. 8 (i))

3. **वृग्, वृङ्** और **दीर्घ ॠ कारान्त** धातुओं के बाद रहे हुए **इ(इट्)** का विकल्प से दीर्घ होता है । परोक्षा में, आशीः में और परस्मैपद विषयक **'सिच्'** में दीर्घ नहीं होता है ।
   उदा. प्रावरीता । प्रावरिता ।
   वरीता । वारिता । ॠकारान्त–तरीता । तरिता । तरीतुम् । तरितुम् ।

4. नपुंसकलिंग में रहे **क्त प्रत्यय** के कर्ता को षष्ठी विभक्ति विकल्प से नहीं होती है ।
   उदा. **मयूरस्य मयूरेण** वा नृत्तम् । **त्वया तव** वा युक्तम् ।

धातु

क्नूय् (ग.1. आ.)=गीला होना, भीगना । *क्नूयते । क्नोपयति ।*[1]

घूर्ण् (ग.1. आ.) (ग.6. पर.)=इधर-उधर घूमना । *घूर्णते । घूर्णति ।*

द्रगद्रगाय (नामधातु–उभयपदी)=व्याकुल होना । *द्रगद्रगायते । ति ।*

धमधमाय (नामधातु–उभयपदी)=क्रोधित होना । *धमधमायते । ति ।*

पूर् (ग.10. पर)=पूरना, भरना । *पूरयति ।*

वञ्च् (ग.1. पर.)=जाना । *वञ्चति ।*

लुट् (ग.1. पर.)=भूमि पर लोठना । *लोठति ।*

लुञ्च् (ग.1. पर.)=लोंच करना । *लुञ्चति ।*

व्ली (ग.9.पर.)=वरण करना, अपनाना । *व्लिनाति* ।

वृग् (ग.5 उभय)=वरण करना, **(ग. 10. युजादि उभय.)**=आवरण करना ।

वृङ् (ग.9 आ.)=वरण करना, भजना ।

क्ष्माय् (ग.1. आ.)=हिलाना । *क्ष्मायते* ।

शब्द

अचल (पुं.)=पर्वत ।

अपवरक (पुं.)=कमरा ।

अर्वाक् (अ.)=आगे ।

उद्दाम् (वि.)=स्वतंत्र, निरंकुश ।

उत्क्रान्तं दामायाः उद्दामम् ।

कर्कर् (पुं.)=कंकड ।

चक्र (नपुं.)=समूह ।

दक्षिणपूर्व (पुं.)=अग्निकोना । दक्षिणश्चासौपूर्वश्च ।

दामा (स्त्री.)=डोरी, बंधन, माला ।

नक्र (पुं.)=मगरमच्छ ।

नन्दीश्वर (पुं.)=उस नाम का द्वीप ।

मेदिनी (स्त्री.)=पृथ्वी ।

नलिनी (स्त्री.)=कमलिनी ।

नाल (पुं.)=कमल का दंड ।

पथिक (पुं.)=मुसाफिर, यात्रिक ।

परिचर्या (स्त्री.)=सेवा ।

परितः (अ.)=चारो ओर ।

प्रच्छन्न (वि.)=बंध, गुप्त ।

भीष्म (वि.)=भयंकर ।

रेवन्त (पुं.)=सूर्यपुत्र ।

वशा (स्त्री.)=हाथिनी ।

वाह (पुं.)=छोडा ।

वाह्याली (स्त्री.)=घोडा घूमाने की जगह ।

समीरण (पुं.)=पवन ।

सरस् (नपुं.)=सरोवर ।

स्तनयित्नु (पुं.)=बादल ।

निवातम् (अव्ययीभाव समास)=वायु का अभाव ।

वातस्याभावः निवातम् ।

टिप्पणी 1. क्नूय् का प्रेरक क्नोपयति होता है । (तृ.पा. 9. नि. 17. की टिप्पणी देखे) ।

संस्कृत वाक्य

1. रौप्यभुक्तोज्ज्वलमुखी गर्भं देवी ततो दधौ ।
विदित्वाऽयतत त्रातुं ध्यायं ध्यायं स भीमजः ॥

2. सरसां सरितां चापस्तनूकुर्वन्निशा इव ।
उद्दामः समभूत् पान्थ-भीष्मो ग्रीष्मऋतुस्तदा ॥

3. तत्सार्थपतिकास्तस्थुरनुपातं तरुं तरुम् ।
प्रपां प्रपां प्रवेशं च पायं पायं पयोऽलुठन् ॥

4. प्रविश्य मार्गसरितः परितः सार्थयोषितः ।
उन्मूल्य नलिनीनालान्, गलनालेषु चिक्षिपुः ॥

5. वाहयन्तो मुहुर्वाहान् वाह्याल्यां ते महौजसः ।
बिभरांचक्रिरेऽनेकरूप-रेवन्तविभ्रमम् ।

6. कलाभ्यासे कलाचार्योऽभूत् तेषां साक्षिमात्रकः ।
प्रादुर्भवन्ति महतां स्वयमेव यतो गुणाः ॥

7. शैलानपि शिलातोलं तेषां तोलयतां भुजैः ।
अपूर्यत बलक्रीडा न केनाऽपि मनागपि ॥

8. उपभूमि प्रसर्पद्भि र्मन्दं मन्दं समीरणैः ।
रजोऽपनिन्ये मेदिन्याः परिचर्या-करैरिव ॥

9. चेलक्नोपं च गन्धाम्बु ववृषे स्तनयित्नुभिः ।
सिक्तबीजवदुच्छ्वासमासस्साद च मेदिनी ॥

10. अन्तरिक्षे महावृक्षांस्तृणोत्क्षेपं समुत्क्षिपन् ।
विक्षिपन् पांशुविक्षेपं दिक्षु च ग्रावकर्करान् ॥

11. सर्वतो रोदसीगर्भं भस्त्रापूरं च पूरयन् ।
उत्पाट्योत्पाट्य [1]वातोऽसौ भगवन्तमपातयत् ॥

12. द्वीपाम्भोधीनसंख्यातान् वेगेनोल्लङ्घ्य वायुवत् ।
अधिनन्दीश्वरद्वीपं तद् विमानं समापतत् ॥

टिप्पणी 1. संगमदेवजनीतः खरवातः ।

13. तत्र दक्षिणपूर्वस्मिन् गत्वा रतिकराचले ।
सञ्चिक्षेप विमानं तदिन्द्रो ग्रन्थं सुधीरिव ।।

14. समुल्लङ्घ्य समुल्लङ्घ्य ततोऽर्वाग् द्वीपसागरान् ।
ततोऽपि संक्षिपंस्तच्च विमानं क्रमयोगत: ।।

15. जम्बूद्वीपाऽभिधे द्वीपे भरतार्धे तु दक्षिणे ।
आदितीर्थकृतो जन्मभवनं प्राप वासव: ।।

16. वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र ! शशाङ्ककान्तान्
कस्ते क्षम: सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्ध्या ।
कल्पान्तकालपवनोद्धतनक्रचक्रं
को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम् ।।

17. स चक्रे पञ्चधात्मानं पञ्च शक्रास्ततोऽभवन् ।
तस्यार्हा स्वामिनो भक्ति नैकाङ्गै:[1] कर्तुमीश्यते ।।

18. केचिदोदनसम्पूर्णाश्छात्रा इव विचक्रिरे ।
तादृक् स्वाम्याप्तिजानन्द: शक्यते केन गोपितुम् ? ।।

19. नाऽस्मि वक्तुमलं नाथ ! सद्भूतानपि ते गुणान् ।
स्वयंभूरमणाम्भोधे र्मातुम्भांसि क: क्षम: ।।

20. देव ! न युक्तं तव भोक्तुम् । प्रबलज्वरं ते शरीरं वर्तते । यतोऽत्यन्तातुरा घूर्णते दृष्टि: । आताम्रस्निग्धं वदनकमलम् । द्रगद्रगायेते शङ्खौ । धमधमायन्ते सन्धि-स्थानानि । ज्वलतीव बहिस्त्वग् । दहतीव हस्तम् । ततो निवर्तस्व भोजनात् । गच्छ प्रच्छन्नापवरके । भजस्व निवातम् । कुरुष्व लङ्घनानि । पिब क्वथितमुदकम् । समाचर विधिनाऽस्य सर्वां प्रतिक्रियामितरथा सन्निपातस्ते भविष्यति ।

टिप्पणी 1. नैकाङ्गै:–न एकानि–नैकानि । यहाँ न का अन् नहीं होगा ।
नैकानि च तानि अङ्गानि च नैकाङ्गानि तै:–

द्व्याश्रयमहाकाव्ये चतुर्दशः सर्गः ।

21. इत्याटमाटं निशि कर्म कृत्वा कृत्वाद्भुतं वेश्मनि पूर्वमायम् ।
स रात्रितुर्ये प्रथमं प्रबोधमानर्च देवान् गुरुमग्र आसम् ॥1॥

22. गजं प्रभाते प्रथमं प्रपद्य पूर्वं सामरुह्य हयं कदाचित् ।
अग्रेऽधिरुह्याथ वशामटन्स नाऽज्ञाय्युषासंचरितो जनेन ॥2॥

23. वेत्त्यन्यथाकारमशेषमेवंकारं कथंकारमिदं रहो नः ।
तत्कोऽपि विद्याधर एष इत्थंकारं जनै रात्रिविहार्यतर्कि ॥3॥

24. जनोऽन्यथाकृत्व[1] ऋजूक्तिरेवंकृत्वा कथंकृत्वा[1] ऋतं सुखीस्यात् ।
छलोन्मुखं शाकिनिकाद्यपीत्थंकृत्वा नृपो मन्त्रकृदन्वशात् सः ॥4॥

25. योगिन्यवन्त्या अपरेद्युरेका योगिन्यशङ्कं तमवोचदेवम् ।
वयं यथाकारमहो तथाकारमप्यटामस्तव किं त्वनेन ॥5॥

टिप्पणी 1. **पूर्वम्** लोकजागरणात्प्रथमम् । **आयम्** आगत्य । **सः** नृपः ।
रात्रितुर्ये रात्रेश्चतुर्थे यामे । **प्रथमम्** लोकप्रबोधात्प्रथमम् ।
प्रबोधम् जागरित्वा । **अग्र आसम्** देवानां गुरोश्च पुरः स्थित्वा ।

2. **प्रपद्य** आरुह्य । **प्रथमम्** अन्यक्रियाभ्यः पूर्वम् । **अटन्** राजपाटिकया भ्राम्यन् ।
उषासंचरितः रात्रौ चर्यया भ्रान्तः ।

3. **अन्यथाकारम्** अन्यथा–यदि विद्याधरो न स्यात्तदा । **इदम्** अशेषम् । **रहः** प्रच्छन्नवृत्तम् । **नः** अस्माकम् । **तत्** तस्मात् । **कोऽपि** अज्ञातः **विद्याधरः** । **एष** जयसिंहः । **रात्रिविहारी** प्रच्छन्नं रात्रौ चरन्सन् । **अतर्कि** शङ्कितः ।

4. **कथंकृत्वा** कथं **सुखीस्यात्** । **ऋतं** सत्यं यथास्यादेवम् । **शाकिनिकादि अपि** कुत्सितशाकिनीभूतादि अपि, आस्ताम् अन्यायिजनादि इति अप्यर्थः । **इत्थंकृत्वा** अनेन रात्रौ चर्यारूपेण प्रकारेण । **मन्त्रकृद्** मन्त्रान् कृतवान्-साधितवान् । **अन्वशात्** मन्त्रैरशिक्षयत् । **सः नृपः** ।

5. **अवन्त्या एका** मालवदेशसम्बन्धिनी एका ।
योगिन्यशङ्कं योगिनीषु विषयेऽशङ्कं निर्भयं सन्तम् ।

टिप्पणी 1. ऋ और लृ के पहले समान स्वर विकल्प से ह्रस्व होता है ।

26. किं शाकिनिंकारमु नः शपेः स्वादुंकारमत्तासि न भोज्यमत्र ।
न भोक्ष्यसे भोगमथेह मृष्टंकारं मुधाऽऽयस्यसि चर्चया नः ॥6॥

27. विलासिनीनां पिबसीह मृष्टां कृत्वा न किं गीतसुधां हताश ।
किं योगिनीदर्शमिह व्यराध्यस्त्वं वैरिणीवेदमिवातिमूढ ॥7॥

28. यदीच्छसि स्वस्य सुखानि यावज्जीवं चिरायोदरपूरमाशु ।
तच्चर्मपूरं ननु देहि यावद्वेदं बलिं नः परिखादिनीभ्यः ॥8॥

29. रुष्टासु चास्मास्वभिवर्षिताब्दो न सिन्धुपूरं न च गोष्पदप्रम् ।
न कम्बलक्नोपमहो न चेलक्नोपं च देशे तव राजजाल्म ॥9॥

30. मेघे च गात्रात्पुरुषात्परस्थस्नायं ह्यवृष्टे स्वदनाय पिंषन् ।
कः शुष्कपेषं क उ रूक्षपेषं कश्चूर्णपेषं च भवेन्न गर्ह्यः ॥10॥

टिप्पणी 6. **शाकिनिंकारं शपे** : शाकिनीशब्दमुच्चार्य–शाकिन्यो यूयमित्याक्रोशसि । **उ** हे नृप । **नः** अस्मान् । **अत्र** पृथिव्याम् । **अत्तासि** भोक्ष्यसे । **अथ** तथा । **इह** जगति ।

7. **योगिनीदर्शम्** यां यां योगिनीमपश्यस्तां तां **व्यराध्यः** अभ्यभवः । **वैरिणीवेदमिव** वैरिणी ज्ञात्वेव लब्ध्वेव विचार्येव वा ।

8. **यावज्जीवं** यावज्जीवसि तावत् । **चिराय** (अ) चिरकालम् । **तत्** तदा । **यावद्वेदं** यावद् लभामहे तावत् ।

10. **गात्रात्पुरुषात्परस्थस्नायं** गात्रस्नायं पुरुषस्नायं च **अवृष्टे** । **स्वदनाय** भोजनाय । **शुष्कपेषं** शुष्कं बदरीफलादि **रूक्षपेषं** रूक्षं कण्टकादि । चूर्णपेषं तुषबुसादि **पिंषन्** सन् । **कः** नरः । **उ** हे राजन् ।

◆ **परस्थ**=शरीर या पुरुष को भीगाता है, उससे **पर**=ज्यादा भीगाता है वैसा ।

चौथा–तद्धित प्रकरण

भूमिका (संज्ञा विधि)

1) **अ (अण्) आदि प्रत्यय तद्धित कहलाते है** । उदा. **औपगवः ।**

तद्धित यानी–

तस्यै प्रकृतये हितः–तद्धितः ।

तस्मै शब्दाय हितः–तद्धितः ।

जो प्रकृति (शब्द) को प्रत्यय लगते है, वे प्रकृति (शब्द) के लिए हितकारी होते है, अर्थात् वे प्रकृति (शब्द) के अनेक अर्थ पैदा करने में हितकारी–सहायक बनते है इसलिए वे प्रत्यय तद्धित कहलाते है ।

तद्धित प्रत्यय, प्रकृति (शब्द) के अनेक अर्थ करके बताते है, इसलिए तद्धित प्रत्यय भाषा में खूब उपयोगी तत्त्व है । भाषा को संक्षिप्त करके भाषा के अनेक भावों को पैदा करने में तद्धित प्रत्यय वक्ता को, शास्त्रकारों को, कविओं को मददगार बनते है । इसलिए इन प्रत्ययों को तद्धित कहते है ।

तद्धित प्रकरण में अधिक उपयोगी–दुसंज्ञा है, इसलिए दुसंज्ञा यहाँ पांच प्रकार के है, जो नियम 2 से 6 में बतलाए गए है ।

2) **सम्यग् व्यवहार के लिए जो नाम(संज्ञा) रखा जाता है, वह नाम विकल्प से 'दु' कहलाता है ।**

उदा. **दैवदत्तीयाः दैवदत्ताः । सिद्धसेनीयाः सैद्धसेनाः ।** (पा.13, नि.17)

3) **त्यद्, तद् आदि सर्वनाम 'दु' कहलाते है ।**

उदा. **त्यदीयम् । तदीयम् । यदीयम् । इदमीयम् । अदसीयम् । एतदीयम् । एकीयम् । द्वीयम् । युष्मदीयम् । अस्मदीयम् । किमीयम् ।** (पा.13. नि.17)

4) **जिस शब्द के स्वरो में आदि स्वर वृद्धि संज्ञक हो, वह शब्द 'दु' कहलाते है ।**

उदा. **आम्रमयम् । शालमयम् ।** पा.12 नि.21 (4)

5) **देश में ही रहे जिन शब्द के स्वरों में आदि स्वर एकार या ओकार हो, वे शब्द ईय आदि प्रत्यय लगने पर 'दु' कहलाते है ।**

उदा. **सेपुरे भवा सैपुरिका । सैपुरिकी ।** पा.13 नि. 20

स्कोनगरे भवा स्कौनगरिका । स्कौनगरिकी ।

6) **प्राग् देश में रहे जिन शब्दों के स्वरो में प्रथम स्वर एकार या ओकार हो, वे शब्द ईय आदि प्रत्यय लगने पर 'दु' कहलाते है ।**

उदा. **एणीपचने भवः एणीपचनीयः । गोनर्दीयः ।**

(सामान्य प्रत्यय विधि)

यहाँ **अपत्य आदि** अर्थों में समान रूप से जो तद्धित प्रत्यय लगते है वे **सामान्य तद्धित** प्रत्यय है । ``अपत्य आदि'' में आदि शब्द से पा.11, 12 और 13 में बताए सभी अर्थ वहाँ भी समझे । यहाँ सामान्य प्रत्यय है वहां विशेष प्रत्यय बताएंगें ।

7) [1]**अपत्य आदि** अर्थों में **अ(अण्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **उपगोरपत्यम् औपगवः** (पा.18 नि.1 एवं नि.17),

मञ्जिष्ठया रक्तं वस्त्रम् माञ्जिष्ठम् । (पा.18 नि.17)

भिक्षाणां समुहो भैक्षम् । अश्मनो विकारः आश्मः । (पा.18 नि.11)

8) (अ) **अपत्य** आदि अर्थों में और

(ब) **इदम् अर्थ सिवाय अपत्य आदि अर्थों** में होनेवाले **अ(अण्)** के **अपवाद** में–

(1) **दिति, अदिति, आदित्य, यम** और **पति** उत्तरपद[2] में हो ऐसे शब्दों को **य (ञ्य)** प्रत्यय लगता है ।

(अ) **दितेरपत्यम् दैत्यः । अदितेः आदित्यः ।**

दितिरदितिरादित्यो देवताऽस्य–दैत्यम् । आदित्यम् । आदित्य्यम् ।

यम– **याम्यम् । बृहस्पतेरपत्यम् बार्हस्पत्यः । प्रजापतेः प्राजापत्यः ।**

बृहस्पतिर्देवताऽस्य बार्हस्पत्यम् । एवं प्राजापत्यम् ।

टिप्पणी (1) जित (पा. 14 नि. 1 में कहे अर्थ) के पहले के (पा.11, 12 और 13 में कहे) अपत्य आदि अर्थों में ये नियम समझना ।

(2) धनादि पूर्वपदवाले **पति** उत्तरपद शब्द को **अ(अण्)** प्रत्यय लगता है ।

धनपते : अपत्यम्, तत्र भव, तत आगतो वा **धानपतः** । राष्ट्रपतेः इदम् **राष्ट्रपतम्** ।

धान्यपतेः= इदम् **धान्यपतम्** ।

(ब) **आदित्यस्यापत्यम् आदित्य्यः । यमस्य याम्यः ।**
वनस्पतीनां समूहो वानस्पत्यम् ।
इदम्[1] अर्थ में–**आदित्यस्येदम् आदितीयं मण्डलम् ।**

(2) बहिस् शब्द से ईक (टीकण्) और **य (ञ्य)** होता है ।
उदा. **बहिर्जातः बाहीकः । बाह्यः ।**
स्त्री. **बाह्या । बाहीकी**[2] । पा.18 नि. 15

(3) **कलि** और **अग्नि** शब्दो को **एय (एयण्)** प्रत्यय लगता है ।
कलि र्देवतास्य कालेयम् एवम् **आग्नेयम् ।**
कलौ भवान् कालेयम् एवम् **आग्नेयम् ।**
कलेरिदम् कालेयम् एवम् **आग्नेयम् ।**
कालेरागतम् कालेयम् आग्नेयम् ।

(4) **पृथिवी** शब्द को **अ (ञ और अञ्)** प्रत्यय लगता है ।
(अ) **पृथिव्या भवः पार्थिवः** । स्त्री. **पार्थिवा । पार्थिवी** ।
(ब) **पृथिव्या अपत्यम् पार्थिवः । पार्थिवा । पार्थिवी ।**

(5) **उत्स** आदि शब्दों को **अ (अञ्)** प्रत्यय लगता है ।
(अ) **उत्सस्येदम् औत्सम् । औदपानम् ।**
(ब) **उत्सस्यापत्यम् औत्सः । औदपानः ।** तरुण्या **अपत्यम् तारुणः । पश्चालेषु भवः पाश्चालः ।**
कुरोः अयम् (अपत्यं पुमान्) **कौरवः** ।
अपत्यार्थ भी विवक्षा से इदमर्थ कहलाता है ।

(6) **देव** शब्द को **य (यञ्)** और **अ(अञ्)** प्रत्यय लगता है ।
देवस्येदं देवादागतं वा दैव्यम् । दैवम् । दैवी[3] वाक् ।)
(यहाँ नियम 7 और 8 में बताए प्रत्यय है, वे सामान्य प्रत्यय है ।)

टिप्पणी 1. **इदम्** अर्थ में **अ(अण्)** का अपवाद **ईय** होगा । (पा.13 नि. 17 देखें ।)
2. **अण्, अञ्, एय, इकण्, नञ्, स्नञ्** और **टित्** (ट् इतवाले) प्रत्यय के **अ** जिसके अंत में हो, ऐसे अकारान्त नाम को स्त्रीलिंग में **इ(ङी)** प्रत्यय लगता है । **औपगवी** । इत्यादि ।
3. इ (ङी) प्रत्यय के बाद, 1. पूर्व के अ का लोप होता है । 2. व्यंजन के बाद रहे तद्धित के य का लोप होता है । दैव्य + ई – दैवी । दैव + ई = दैवी ।

9) **अपत्य** अर्थ सिवाय के अर्थ में हुए द्विगु समास के बाद रहे यकारादि और स्वरादि प्रत्यय का (एकबार) लोप होता है ।

उदा. **द्वयो रथयोः** (द्विरथ्या वा) **वोढा द्विरथः** । य लोप

पञ्चेन्द्राण्यः (पञ्चेन्द्राणि वा) **देवताऽस्य पञ्चेन्द्रः ।** अण् लोप

चतुरोऽनुयोगान् (चतुरनुयोगी वा) **अधीते चतुरनुयोगः ।** अण् लोप, वैसे ही **त्रिवेदः** । अण् लोप

पञ्चसु कपालेषु (पञ्चकपाल्यां वा) **संस्कृतः पञ्चकपालः ।** अण् लोप ।

10) [1]**वत् प्रत्यय** के पहले रहे अपत्य आदि अर्थों में – स्त्री और पुंस् शब्दों को क्रमशः **न(नञ्)** और **स्न (स्नञ्)** प्रत्यय लगते है ।

उदा. **स्त्रिया अपत्यम् स्त्रैणः । पौंस्नः ।**

प्र.पा.40 नि.6 एवं पा.34 नि. 1

स्त्रीषु भवम् स्त्रैणम् । पौंस्नम् ।

स्त्रीणामियम् स्त्रैणी । पौंस्नी ।

स्त्रीभ्यो हितम् स्त्रैणम् । पौंस्नम् ।

11) **त्व** प्रत्यय के विषय में–

स्त्री और पुंस् शब्दों को क्रमशः **न(नञ्)** और **स्न (स्नञ्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **स्त्रिया भावः स्त्रैणम् । स्त्रीत्वम् । स्त्रीता ।**

पुंसो भाव **पौंस्नम् पुंस्त्वम् । पुंस्ता ।** (नियम 10 और 11 विशेष रुप से स्त्री और पुंस् शब्दों के लिए ही है ।)

12) स्वरादि तद्धित में **गो** शब्द को **य** प्रत्यय लगता है । (यह नियम गो शब्द के लिए ही है ।)

उदा. **गोरिदम् गव्यम् । गोरपत्यं गव्यम् । गवि भवम् गव्यम् ।**

गौर्देवतास्य गव्यः । गवा चरति गव्यः । पा.6 नि.11

टिप्पणी 1. देखे पा. 15 नि. 29

पाठ-11

विशेष प्रत्यय विधि

'अपत्य' अर्थ

1) षष्ठी विभक्ति वाले नाम से अपत्य अर्थ में पहले कहे अनुसार **अ(अण्)** आदि प्रत्यय लगते है ।

उदा. **उपगोरपत्यम् औपगवः–औपगवौ–औपगवाः ।**–प्रथमा विभक्ति स्त्री.–**औपगवी । यदोः अपत्यम्-यादवः । दैत्यः । स्त्रैणः । पौंस्नः ।**

2) अकारान्त नाम को **इ (इञ्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **दक्षस्यापत्यम् दाक्षिः** । **अस्यापत्यम् इः** ।

3) द्रोण शब्द को **आयन (आयनण्)** प्रत्यय विकल्प से लगता है ।

उदा. **द्रौणायनः । दौणिः** ।

4) **शिव** आदि शब्दों को **अ(अण्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **शिवस्यापत्यं शैवः । पाण्डोः पाण्डवः ।**

5) **ऋषि, वृष्णि, अन्धक** और **कुरु** वाचक शब्दों को **अ(अण्)** प्रत्यय लगता है । (वृष्णि, अन्धक और कुरुयों–ये क्षत्रियों के भेद है ।)

उदा. ऋषि वाचक–**वासिष्ठः । वैश्वामित्रः । गौतमः ।**

वृष्णि वाचक–**वासुदेवः ।**

अन्धक वाचक–**श्वाफल्कः ।**

कुरु वाचक–**नाकुलः । दौर्योधनः ।**

6) **कन्या** और **त्रिवेणी** शब्द को **अ(अण्)** प्रत्यय लगता है एवं क्रमशः **कनीन** और **त्रिवण** आदेश होता है ।

उदा. **कन्यायाः अपत्यं कानीनः कर्णः । त्रिवेण्या अपत्यं त्रैवणः ।**

7) **शुङ्ग** और **शुङ्गा** शब्द को **भारद्वाज (अपत्य)** में **अ(अण्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **शुङ्गस्य शुङ्गाया वाऽपत्यं शौङ्गो–भारद्वाजः ।**

8) **विकर्ण** और **छगल** शब्दों को क्रमशः **वात्स्य** और **आत्रेय** (अपत्य अर्थ) में **अ(अण्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **वैकर्णो वात्स्यः । छागल आत्रेयः ।**

9) **विश्रवस्** शब्द को **अ(अण्)** प्रत्यय लगता है और **अंत्य** को **अ(ण्)** प्रत्यय लगता है एवं **विश्** का विकल्प से लोप होता है ।
उदा. **विश्रवसोऽपत्यम् वैश्रवणः । विकल्प से रावणः ।**

10) **संख्यावाचि** शब्द के, **सम्** शब्द के और **भद्र** शब्द के बाद रहे **मातृ** शब्द को **अ(अण्)** प्रत्यय लगता है । **मातृ** का **मातुर्** आदेश होता है ।
उदा. **द्वयोर्मात्रोः अपत्यम्–द्वैमातुरः** (=गणेश),
षाण्मातुरः । (=कार्तिकेय),
शतस्य माता शतमाता, तस्या अपत्यम् शातमातुरः । (=भरत),
संगता माता संमाता, तस्या अपत्यम् सांमातुरः ।
भद्रा भद्रस्य वा माता भद्रमाता, तस्या अपत्यम् भाद्रमातुरः ।

11) जिन शब्दों की 'दु' संज्ञा न हो, ऐसे **नदी नाम** और **मानुषी नाम** को **अ(अण्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **यमुनाया यामुनः प्रणेताः ।** (व्यक्ति विशेष)
नर्मदाया नार्मदो नीलः । देवदत्तायाः दैवदत्तः ।
सुतरायाः सौतारः ।
दु– **चन्द्रभागाया (नद्याः) चान्द्रभागेयः ।**
वासवदत्ताया (मानुष्याः) वासवदत्तेयः ।
(सम्यग् व्यवहार के लिए जो नाम रखे जाते है वे नाम विकल्प से दुसंज्ञा है । अर्थात् ऐसे नाम अदुसंज्ञक भी है । यमुना और देवदत्ता आदि नाम अदुसंज्ञक भी है ।)

12) **पीला, साल्वा** और **मण्डूक** शब्दों को **अ(अण्)** प्रत्यय विकल्प से लगता है । उदा. **पैलः। पैलेयः। साल्वः। साल्वेयः। माण्डूकः। माण्डूकिः।**

13) **दिति** और **मण्डूक** शब्दों को **एय (एयण्)** प्रत्यय विकल्प से लगता है ।
उदा. **दैतेयः । दैत्यः । माण्डूकेयः । माण्डूकिः ।**

14) **ई(ङी)** अन्तवाले, **आ(आप्)** अन्तवाले, **ति** अन्तवाले और **ऊङ्** अन्तवाले शब्दों को **एय (एयण्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **सुपर्ण्याः अपत्यम् सौपर्णेयः । विनताया वैनतेयः** (=गरुड)
युवत्या यौवतेयः । कमण्डल्वाः कामण्डलेयः । (पा.18 नि.15)

15) नदी सिवाय के द्विस्वरवाले, **ङी, आप्, ति** और **ऊङ्** अंतवाले शब्दों को **एय (एयण्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **दात्तेयः** । गुप्ताया **गौप्तेयः** (नि. 11 का अपवाद नियम है ।)

16) **इञ्** प्रत्यय सिवाय के इकारान्त **द्विस्वर नाम** को **एय (एयण्)** प्रत्यय लगता है । उदा.**नाभेरपत्यम् नाभेयः । अत्रेः आत्रेयः । अहेः आहेयः।**

17) **अंग हीन हो** अथवा **जिसका पति** (पुरुष) **अनियत हो ऐसी स्त्री** को **'क्षुद्रा'** कहते है । **'क्षुद्रा'** वाचि स्त्रीलिंग शब्दों को **एर (एरण्)** प्रत्यय विकल्प से लगता है ।

उदा. **काणाया अपत्यं काणेरः । काणेयः ।**

दास्या अपत्यं दासेरः । दासेयः ।

नट्याः अपत्यं नाटेरः । नाटेयः ।

18) **भ्रातृ** शब्द को **व्य** प्रत्यय लगता है । उदा. **भ्रातुरपत्यम् भ्रातृव्यः ।**

19) **चतुष्पाद् वाची** शब्दों को **एय(एयञ्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **कमण्डत्वा अपत्यम् कामण्डलेयः । जम्ब्वा जाम्बेयः ।**

बहुलाया बाहुलेयः । शबलायाः शाबलेयः ।

सुरभेः सौरभेयः । (=गाय का बछडा ।)

20) **भ्रातृ** और **स्वसृ** शब्द को **ईय** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **भ्रात्रीयः । स्वस्रीयः ।**

21) **श्वशुर** शब्द को **य** प्रत्यय लगता है । उदा. **श्वसुरस्यापत्यम् श्वशुर्यः।**

22) **जाति गम्य** हो तो–(i) **राजन्** शब्द को **य** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **राज्ञोऽपत्यम् राजन्यः** क्षत्रियजातिश्चेत् ।

(ii) **क्षत्र** शब्द की **इय** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **क्षत्रस्यापत्यम् क्षत्रियः** जातिश्चेत् ।

(iii) **मनु** शब्द को **य** और **अण्** प्रत्यय लगता है और **ष्** जुडता है ।

उदा. **मनोरपत्यानि मनुष्याः** । **मनुषी (स्त्री)** । **मानुषाः मानुषी (स्त्री) ।**

जाति न हो तो [1]**मानवः । मानवौ । मानवाः ।** (प्रथमा विभक्ति)

मानवी-स्त्री । अण् प्रत्यय ।

23) **कुल** शब्द को **ईन** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **कुलस्यापत्यं कुलीनः । आढ्यकुलीनः ।**

टिप्पणी 1. मूढ (मुर्ख) हो तो माणवः । न का ण होता है ।

24) समास बिना के **कुल** शब्द को **य** और **एयकञ्** प्रत्यय विकल्प से लगता है ।

उदा. **कुल्यः । कौलेयकः । कुलीनः ।**

25) व्यक्ति के [1]**क्षत्रिय के साथ सरूप** (समान) **राष्ट्र नाम को राजा अर्थ** में और **राष्ट्र के साथ सरूप** (समान) **क्षत्रिय नाम को** अपत्य अर्थ में **द्रि अञ्** प्रत्यय लगता है ।

उदा. विदेहानां (राष्ट्रस्य) राजा–**वैदेहः वैदेहौ विदेहाः ।**[2] (प्र.वि.)
विदेहस्य (राज्ञः) अपत्यम्–**वैदेहः वैदेहौ विदेहाः** । (प्र. वि.)
इक्ष्वाकोः अपत्यम्–**ऐक्ष्वाकः ऐक्ष्वाकौ इक्ष्वाकवः ।** (प्र.वि.)
पञ्चालस्य अपत्यम्–**पाञ्चालः पाञ्चालौ पञ्चालाः ।** (प्र.वि.)

शब्द

अ (पुं.)=विष्णु ।
अत्रि (पुं.)=एक ऋषि मुनि ।
अदिति (स्त्री.)=देवों की माता, द्वादश आदित्यों की माता ।
अश्मन् (पुं.)=पत्थर, पाषाण ।
आदित्य (पुं.)=सूर्यदेव ।
अदितेरपत्यम् ।
इक्ष्वाकु (पुं.)=एकदेश या क्षत्रिय राजा का नाम ।
उत्स (पुं.)=देश या राजा का नाम ।
उपगु (पुं.)=पुरुष या गोत्र का नाम ।
औपगवः ।
कमण्डलू (स्त्री)=देवी या पशुजाति गाय ।
काद्रवेय (पुं.)=नाग ।
कद्रवा अपत्यम् ।
गाधि (पुं.)=चंद्रवंशी राजा, विश्वमित्र के पिता ।
गाधिसुत (पुं.)=विश्वामित्र ऋषि ।
जम्बू (स्त्री.)=जामुनी रंग की गाय ।
जाह्नवेय (पुं.)=गांगेय, भीष्मपितामह ।
तरस् (नपुं.)=बल, वेग ।
दक्ष (पुं.)=दक्ष प्रजापति ।
दिति (स्त्री.)=दैत्यों की माता ।
द्वैमातुर (पुं.)=गणेश, जरासंध ।
द्रोण (पुं.)=द्रोणाचार्य ।
नाभि (पुं.)=ऋषभदेव भगवान के पिता ।
पञ्चाल (पुं.)=देश या राजा का नाम ।

टिप्पणी 1. यहाँ क्षत्रिय का अर्थ राजा है ।
2. बहुवचन में द्रि संज्ञक प्रत्यय का लोप होता है । **विदेहाः** आदि ।
स्त्रीलिंग में लोप नहीं होता है । **वैदेही–वैदेह्यौ–वैदेह्यः** । (प्र.वि.)

पाण्डु (पुं.)=पांडुराजा ।
प्रजापति (पुं.)=ब्रह्मा, राजा ।
बहुला (स्त्री.)=गाय ।
भद्रमातृ (स्त्री.)=भद्रा भद्रस्य वा माता ।
मञ्जिष्ठा (स्त्री.)=मजीठ का रंग ।
मनु (पुं.)=एक प्रजापति, धर्मशास्त्र के कर्ता ।
यम (पुं.)=यमराज ।
विदेह (पुं.)=देश या राजा का नाम ।
विनता (स्त्री.)=गरुड की माता ।
वैश्रवण (पुं.)=धनद, कुबेर ।
शक्रजित् (पुं.)=इन्द्रजित, रावण का पुत्र ।
शबला (स्त्री.)=विचित्र रंग की गाय ।
शाकुन्तल (पुं.)=दुष्यन्त की पत्नी, शकुन्तला का पुत्र-भरत चक्री ।
शातमातुर (पु.)=भरत ।
शिव (पुं.)=महादेव ।
षाण्मातुर (पुं.)=कार्तिकेय ।
सुपर्णा (स्त्री.)=गुरुड की माता ।
सुपर्णी (स्त्री.)=गुरुड का माता ।
सुरभि (स्त्री.)=गाय ।
स्त्रुघ्न (नपुं.)=एक गाव का नाम ।
सौपर्णेय (पुं.)=गरुड ।
क्षत्र (पुं.)=क्षत्रिय ।

संस्कृत वाक्य

द्वाश्रय महाकाव्ये चतुर्दशः सर्गः

1. जैवन्तिवद्द्रौणिवदद्य तिष्ठ तिष्ठेति वक्त्र्याऽऽविरनेकरूपा ।
चौलुक्य राजंस्तरसाऽतिशैवद्रौणायनं सा पिदधेऽस्त्रवर्षैः ॥61॥

2. **काकुत्स्थवच्छक्रजिता क्षणं राड् वासिष्ठवद् गाधिसुतेन चोच्चैः ।
भैमेन कानीन इवावधूतः श्वाफल्कदाशार्हसमस्तयाऽस्त्रैः ॥62॥**

टिप्पणी

61. **जैवन्तिवद्** जीवन्तापत्यराजवद् । **द्रौणिवद्** अश्वत्थामनृपवद् । तिष्ठ तिष्ठ मा नेश इत्यर्थः । **अतिशैवद्रौणायनम्** शौर्यादिगुणैः कार्तिकेयाश्वत्थामावतिक्रान्तम् । **सा** काली ।

62. **काकुत्स्थवत्** यथा काकुत्स्थः– ककुत्स्थस्यापत्यं काकुत्स्थः रामः लक्ष्मणो वा । **राड्** जयसिंहः । **वासिष्ठवद्** यथा वासिष्ठः–कामधेनुप्रत्याहरणव्यतिकरे वसिष्ठर्षिणोत्पादितत्वाद् वसिष्ठस्यापत्यं परमारादिपुरुषः (पराशरादि ?) ।
कानीन इव यथा कानीनः–कन्यायाः अपत्यं कर्णः । **भैमेन** भीमस्य पाण्डोः अपत्येन–घटोत्कचेन । **अवधूतः** क्षिप्तः । **श्वाफल्कदाशार्हसमः** श्वफल्कस्यापत्यं श्वाफल्कोऽन्धकक्षत्रियभेदः, दशार्हाणामपत्यं दाशार्हो विष्णुः ताभ्यां समः । **तया** काल्या ।

3. यत्त्रैवणच्छगलशौङ्गवैकर्णाद्यैः स्वयं वैश्रवणेन चापि ।
सुदुर्लभं रावणजित्समौजा मायाध्नमस्त्रं स्मरति स्म तत्सः ॥63॥

4. द्वैमातुरारातिसमोऽपि कोपात्सांमातुरत्वेन दयां दधानः ।
सोऽस्त्रेण तेनाऽपहृतान्यरूपामेकाकिनीमित्यवदत्स्मितास्यः ॥64॥

5. त्वं भाद्रमातुर्यबलाऽसि तत्किं कुर्यां त्रपानार्मदमग्न एषः ।
पूर्वांश्च शाकुन्तलजाह्नवेयादीन् स्त्रीवधात्किं बत लज्जयामि ॥65॥

6. ऊचे च सा स्मेरमुखीति जाम्बवतेयपित्रंश यथा हि गीतः ।
पैलेय-पैलीपति-साल्वमित्र-साल्वेय-माण्डुकमुखैस्तथासि ॥66॥

7. ध्यायन्ति माण्डुकिमुखाश्च माण्डुकेयोपमा यं मुनयोऽपरेऽपि ।
तस्यासि दैतेयभिदे ससौपर्णेयस्य दैत्यद्विषतोऽवतारः ॥67॥

8. धैर्येण सत्त्वेन च तेऽस्मि हृष्टा न यौवतेयः सदृशस्तवास्ति ।
त्वं काद्रवेयानिव वैनतेयो दात्तेय-सैप्रादि-नृपान्प्रजीयाः ॥68॥
(तद्वैनतेयोपम सैप्र-कामण्डलेय-दात्तेय-नृपाञ्जयत्वम्)[1]

टिप्पणी

63. **त्रैवणच्छागलशौङ्गवैकर्णाद्यैः** मुनिभेदैः । **रावणजित्समौजा** रामचन्द्रतुल्यबलः । **स** जयसिंहः । **मायाध्नम्** अनेकरूपकरणादिच्छद्मापहारि ।
64. **द्वैमातुरारातिसमोऽपि** जरासंधस्यारि विष्णुस्तस्य समोऽपि अतिकोप्यपीत्यर्थः । **सांमातुरत्वेन** सर्वैः दयालुत्वादिभि र्मातृगुणैः संगता माता संमाता मयणल्ला, तदपत्यत्वेन ।
65. भाद्रमातुरि ! भद्रा-प्रशस्या, भद्रस्य वा या माता, तस्याः पुत्रि ! । **त्रपानार्मदमग्नः** त्रपैवाऽ-गाधत्वान्नार्मदः—नर्मदाया नद्या अपत्यं नीलाख्यो ह्रदः, तत्र निमग्नः । **एषः** अहं जयसिंहः।
66. **जाम्बवतेयपित्रंश** । जम्बवत्या अपत्यं जाम्बवतेयः—साम्बकुमारः तस्य पिता विष्णुः तस्यांश-जयसिंह ! **पैलेय-मुखैः** मुनिभिः ।
67. **ससौपर्णेयस्य**—गरुडासनत्वाद् गरुडान्वितस्य । **दैत्यद्विषतः**—विष्णोः **दैतेयभिदे**—दानवविनाशाय । **अवतारः**—मूर्तिः ।
68. **धैर्येण**—चित्तावष्टम्भेन । **सत्त्वेन**—साहसेन । **यौवतेयः**—युवतेरपत्यम् ।
दात्तेय—सैप्रादिनृपान् दात्तेयो दत्ताख्यायाः कस्याश्चिद्राज्ञ्या अपत्यम्, सिप्राया नद्या अपत्यं सैप्रो यशोवर्मनृपः, सिप्रा हि, तस्य जलैः कृत्वा पोषण—वपुःक्षालनाद्युपचारेण मातृतुल्या, तत्प्रभृतीन् नृपान् । (कमण्डल्वा अपत्यं कामण्डलेयो नृपः)

टिप्पणी 1. पाठान्तर है ।

पाठ-12

रक्तादि संस्कृत भक्ष्य पर्यन्त अर्थ

'रक्त' अर्थ

1) **तृतीयान्त 'राग'** (जिससे वस्त्रादि रंगीन किया जाता है) नाम से **रक्त अर्थ** में पहले कहे अनुसार **अ(अण्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **कुसुम्भेन रक्तम् कौसुम्भम् वासः ।**
कषायेण रक्तम् काषायम् । मञ्जिष्ठया रक्तम् माञ्जिष्ठम् ।

2) **लाक्षा** और **रोचना** शब्दों को **इक (इकण्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **लाक्षाया रोचनया व रक्तम् लाक्षिकम् । रौचनिकम् ।**

'समूह' अर्थ

3) **षष्ठ्यन्त** नाम को **समुह अर्थ** में पहले कहे अनुसार **अ(अण्)** आदि प्रत्यय लगते है ।
उदा. **चाषाणां समूहः चाषम्** । वैसे ही **काकम् । बाकम् । शौकम्** । **भैक्षुकम् । वाडवम् । वनस्पतीनां समूहो वानस्पत्यम् । स्त्रैणम् । पौंस्नम्** । समुह अर्थ में नपुंसक लिंग होता है ।

4) **भिक्षादि** शब्दों को पहले कहे अनुसार **अ(अण्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **भिक्षाणां समूहो भैक्षम् । गार्भिणम् । यौवतम् । यौवनम्** । आदि

5) **गोत्र** शब्दों को एवं **उक्षन्, वत्स, उष्ट्र, वृद्ध, अज, उरभ्र, मनुष्य, राजन्, राजन्य** और **राजपुत्र** को **अक (अकञ्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. [1]**औपगवानां समूहः औपगवकम् ।**
उक्षाणाम् समूह औक्षकम् । वात्सकम् । औष्ट्रकम् । वार्द्धकम् । आजकम् ।औरभ्रकम् । मानुष्यकम् । राजकम् । राजन्यकम् । राजपुत्रकम् ।

6) **केदार** शब्द को **य(ण्य)** और **अक(अकञ्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **कैदार्यम् । कैदारकम् ।**

टिप्पणी 1. **औपगव**–गोत्र का नाम है, इस गोत्र के सभी मनुष्यों को सामान्य से औपगव कहकर बुलाया जाता है । इस प्रकार अनेक नामवाले अनेक गोत्र है ।

7) **कवचिन्, हस्तिन्, अचित्त** (जड वस्तु) और **केदार** शब्दों को **इक (इकण्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **कावचिकम् । हास्तिकाम् ।** पा.18. नि. 10 देखें ।
अचित्त–**अपूपानां समुह आपूपिकम् । कैदारिकम् ।**

8) नञ् के बाद **न** हो ऐसे **धेनु** शब्द को **इक (इकण्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **धैनुकम् । अधेनूनां समूह आधैनवम् ।**
उत्सादि होने से अ(अञ्) पा. 10. नि. 8(5) ।

9) **गणिका** शब्द को **य (ण्य)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **गाणिक्यम् ।**

10) **केश** शब्द को विकल्प से **य(ण्य)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **कैश्यम् । कैशिकम् ।**

11) **अश्व** शब्द को विकल्प से **ईय** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **अश्वीयम् । आश्वम् ।**

12) **गो, रथ** और **वात** शब्दों को क्रमशः **त्र(त्रल्), कट्य (कट्यल्)** और **ऊल** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **गवां समुहो गोत्रा ।** ल इत् होने से स्त्रीलिंग है ।
रथानां समुहो रथकट्या । वातानां समुहो वातूलः ।

13) **पाशादि** शब्दों को और **गो, रथ** और **वात** शब्दों को **य (ल्य)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **पाश्या । तृण्या । खल्या । गव्या । रथ्या । वात्या ।**
(ल इत् होने से स्त्रीलिंग)

14) **श्वन्** आदि शब्दों को **अ(अञ्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **शूनां समुहः शौवम् । अह्नां समुहः आह्नम् ।**
दण्डिनां समुह दाण्डम् । चक्रिणां समूहः चाक्रम् । आदि

15) **खल** आदि शब्दों को **इन् (लिन्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **खलानां समूहः खलिनी, खल्या ।** पाशादि को ल्य प्रत्यय ।
ऊकानां समूहः ऊकिनी । कुटुम्बानां समूहः कुटुम्बिनी ।

16) **ग्राम, जन, बन्धु, गज** और **सहाय** शब्दों को **ता (तल)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **ग्रामाणां समूहो ग्रामता । जनता । बन्धुता । गजता । सहायता ।**

17) **पुरुष**[1] शब्द को **एयञ्** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **पुरुषाणां समूह पौरुषेयम् ।**

'विकार' अर्थ

18) षष्ठ्यन्त नाम को **विकार अर्थ** में पहले कहे अनुसार **अ(अण्)** प्रत्यय लगता है । (द्रव्य की विकृत अवस्था को विकार कहते है ।)

उदा. **अश्मनो विकारः आश्मनः । आश्मः** (पा.18. नि.14)

भश्मनो विकारः भाश्मनः । मृत्तिकाया विकारः मार्त्तिकः ।

'अवयव और विकार' अर्थ

19) **प्राणिन्, औषधि** और **वृक्ष** वाचि षष्ठ्यन्त नामों को विकार और अव्यव अर्थ में पहले कहे अनुसार **अ(अण्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. प्राणि–**कापोतं सक्थि । कापोतं मांसम् ।**

मायूरं सक्थि । मायूरं मांसम् ।

औषधि–**दौर्वं काण्डम् । दौर्वं भस्म ।** (दुर्वा=धर)

वृक्ष – **कारीरं काण्डम् । कारीरं भस्म ।**

(यहाँ से आगे–प्राणि, औषधि और वृक्षवाचि शब्दों को विकार और अवयव ये दो अर्थों में और अन्य शब्दों को सिर्फ विकार अर्थ में ही प्रत्यय लगता है, ऐसा समझना ।)

20) **त्रपु** और **जतु** शब्दों को **अ(अण्)** प्रत्यय लगता है और **ष्** जुडता है ।

उदा. **त्रपुणो विकारः त्रापुषम् । जतुनो विकारः जातुषम् ।**

21) **भक्ष्य** और **आच्छादन** शब्दों को छोडकर–

i) **नाम को मय(मयट्)** प्रत्यय विकल्प से लगता है ।

उदा. **भस्मनो विकारः भस्ममयम् । भास्मनम् ।**

अश्मनः विकारः अश्ममयम् । आश्मनम् । आश्मम् ।

टिप्पणी 1. पुरुष शब्द को कृत आदि 4 अर्थों में एयञ् प्रत्यय लगता है ।
उदा. पुरुषेण कृतः पौरुषेयो ग्रन्थः । पुरुषाय हितम् पौरुषेयमार्हतशासनम् ।
पुरुषस्य वधः पौरुषेयो वधः । पुरुषस्य विकारः पौरुषेयो विकारः हस्ताद्यवयवच्छेदः ।

प्राणि–**कपोतस्य विकारोऽवयवो वा कापोतमयम् । कापोतम् ।**
औषधि–**दूर्वाया: विकारोऽवयवो वा दूर्वामयम् । दौर्वम् ।**
वृक्ष– **शिरीषस्य विकारोऽवयवो वा शिरीषमयम् । शैरीषम् ।**
करीरस्य विकारोऽवयवो वा करीरमयम् । कारीरम् ।

भक्ष्य और **आच्छादन** में **मय(मयट्)** प्रत्यय नहीं लगता है ।
उदा. **मौद्ग: सूप: । कार्पास: पट: ।** अ(अण्) प्रत्यय ।

ii) **एक स्वर वाले** नाम को नित्य **मय (मयट्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. वाचां विकार: **वाङ्मयम् । मृन्मयम् ।**

iii) **द्रु** शब्द को **मान** अर्थ में **वय** प्रत्यय लगता है ।
द्रु (पुं.)=पेड, शाखा, लकडी । **द्रु** (नपुं.)=लकडा ।
उदा. **द्रो–र्दारुणो विकारो द्रुवयं मानम् ।**

iv) **प्राणि सिवाय दु संज्ञक शब्दों को मय (मयट्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **आम्रमयम् । शालमयम् । शाकमयम् । काशमयम् । तन्मयम् । यन्मयम् ।**

v) **गो** शब्द को **पुरीष** अर्थ में **मय (मयट्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **गो: पुरीषम् गोमयम् ।** गव्यम् पय: सक्थि वा ।

'भ्रातृ' अर्थ

22) षष्ठ्यन्त **पितृ** और **मातृ** शब्दों को **भ्रातृ** अर्थ में **व्य** और **उल(डुल)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **पितु: भ्राता पितृव्य: ।** (=काका), **मातु: भ्राता मातुल:** (=मामा) ।

पिता और माता अर्थ

23) **षष्ठ्यन्त पितृ** और **मातृ** शब्दों को **पितृ** और **मातृ** अर्थ में **आमह (डामहट्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **पितु: पिता–पितामह:** । (=दादा),
पितु: माता–पितामही । (=दादी)
मातु: पिता–मातामह: । (=नाना),
मातु: माता–मातामही । (=नानी)

'निवास और अदूरभव' अर्थ

24) षष्ठ्यन्त नाम को **निवास** और **अदूरभव** अर्थ में **अ(अण्)** प्रत्यय लगता है और वह देश का रूढ नाम होता है । देश यानी जनपद, गांव, नगर, पर्वत, नदी, समुद्र आदि ।

उदा. **शिबीनां निवास शैवः । विदिशाया नगर्या अदूरभवं वैदिशं पुरम् ।**

'वह इसमें है' अर्थ

25) प्रथमान्त नाम को **'वह इसमें है'** अर्थों में **अ(अण्)** प्रत्यय लगता है और वह देश का रूढ नाम होता है ।

उदा. **उदुम्बराः सन्ति अस्मिन् औदुम्बरं पुरम् ।**

'निर्वृत्त' अर्थ

26) तृतीयान्त नाम को **निवृत्त अर्थ** में **अ(अण्)** प्रत्यय लगकर देश का रूढ नाम बनता है ।

उदा. **कुशाम्बेन निवृत्ता कौशाम्बी नगरी । सगरैः निर्वृत्तः सागरः ।**

27) यथायोग ऊपर के चार अर्थों में, **मतु** प्रत्यय लगता है और वह नदी का रूढ नाम बनता है ।

उदा. **उदुम्बराः सन्ति अस्याम् उदुम्बरावती नदी । वीरणावती । शरावती ।**

परंतु, भगीरथेन निवृत्ता भागीरथी । जह्नुना निवृत्ता जाह्नवी । आदि में मतु प्रत्यय नहीं लगता सिर्फ अ(अण्) प्रत्यय लगता है ।

28) **मधु** आदि शब्दों में **मतु** प्रत्यय लगता है और वह देश का रूढ नाम बनता हैं ।

उदा. **मधुमान् । बिसमान् ।**

29) **नड, कुमुदु, वेतस** और **महीष** शब्दों को **डित् मतु** प्रत्यय लगता है । और वह देश का नाम बनता है ।

उदा. **नड्वान् । कुमुद्वान् । वेतस्वान् । महीष्मान् ।**

30) **नड** और **शाद** शब्दों को **डित् वल** प्रत्यय लगता है और देश का नाम बनता है ।

उदा. **नड्वलम् । शाद्वलम् ।**

'उसका देव' अर्थ

31) प्रथमान्त नाम को **'उसका देव'** अर्थ में **अ(अण्)** आदि प्रत्यय लगते है ।

उदा. **जिनो देवतास्य जैनः । शैवः ।**

अग्नि र्देवतास्य आग्नेयः । आदित्यः ।

'वेत्ति अधीते' अर्थ

32) **द्वितीयान्त नाम** को **वेत्ति** और **अधीते** अर्थ में **अ(अण्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **मुहूर्तं वेत्ति मौहूर्तः । छन्दोऽधीते छान्दसः ।**

व्याकरणं वेत्ति अधीते वा वैयाकरणः । पा. 18. नि.2.

33) **न्याय** आदि शब्दों को **इक (इकण्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **न्यायं वेत्ति अधीते वा नैयायिकः ।** नैयासिकः ।

'संस्कृत भक्ष्य' अर्थ

34) **सप्तम्यन्त नाम** को **संस्कृत भक्ष्य** अर्थ में **अ(अण्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **भ्राष्ट्रे संस्कृता भ्राष्ट्रा अपूपाः । पात्राः ।**

35) **क्षीर** शब्द को **एयण्** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **क्षीरे संस्कृता क्षैरेयी यवागूः ।**

'अन्य' अर्थ

36) **अपत्य** आदि अर्थ के अतिरिक्त अन्य अर्थ में क्वचित् **अ(अण्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **चक्षुषा गृह्यते चाक्षुषं रूपम् । श्रावणः शब्दः ।**

अश्वैरुह्यते आश्वो रथः । सम्प्रति युज्यते साम्प्रतम् ।

परिशिष्ट नियम :

1) **पयस्** और **द्रु** शब्द को विकार अर्थ में **य** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **पयसो विकारः पयस्यम् । द्रो र्दारुणो विकारः द्रव्यम् ।**

(यह नियम नियम 21 (ii) का अपवाद नियम है ।)

शब्द

अङ्ग (नपुं.)=शरीर ।
अश्वत्थ (पुं.)=पीपल का पेड ।
आभियोगिक (पुं.)=सेवक ।
उक्षन् (पुं.)=बैल ।
उद्वाह (पुं.)=विवाह ।
एरण्ड (पुं.)=अरण्डिया ।
अंहस् (नपुं.)=पाप ।
कपित्थ (पुं.)=कोठे का पेड ।
कपित्थ (नपुं.)=कोठे का फल ।
कोठा ।
करीर (पुं.)=करीर वृक्ष ।
काश (पुं.)=एक घास ।
काशिल (नपुं.)=एक नगर ।
काषायी (स्त्री.)=भगवे रंग की चादर ।
(कषायेण रक्ता काषायी ।)
गोमय (नपुं.)=गोबर ।
(गोः पुरीषं गोमयम् ।)
चित्रक (पुं.)=एक औषधि ।
छाग (पुं.)=बकरा ।
जतु (नपुं.)=लाख ।
जम्बू (स्त्री.)=जामुन वृक्ष, जामुन ।
जात्य (वि.)=जातीमान ।
(जातौ भवम् जात्यम् ।)
जाम्बूनद (नपुं.)=सोना ।
तृणसा (स्त्री.)=एक नदी ।
त्रपु (नपुं.)=एक धातु ।
द्युति (स्त्री.)=तेज, प्रकाश, वर्ण ।
द्रु (नपुं.)=लकडा ।
द्रुवय (नपुं.)=लकडे का बना माप ।
धन्वन् (नपुं.)=धनुष ।
नड (पुं.)=एक तृण ।
नडसा (स्त्री.)=एक नदी ।
नेमि (पुं.)=बाईसवें तीर्थंकर ।
प्रियङ्गु (स्त्री.)=कांग धान्य ।
प्रेक्षिन् (पुं.)=एक देश ।
फलकिन् (पुं.)=एक देश ।
युग्मधर्मिन् (वि.)=युगलिक ।
रैवतक (पुं.)=गिरनार पर्वत ।
विश्वक् (अ.)=चारों ओर ।
वेतस (पुं.)=नेतर का पेड ।
शाद (पुं.)=हरा घास, कीचड ।
शाल (पुं.)=झाड–कील्ला ।

संस्कृत वाक्य

1. औक्षकेणौष्ट्रकेणाऽऽश्वेनोद्धूतः पांशुरानशे ।
तथा दिवं यथा विश्वक् सूचीभेद्यं तमोऽभवत् ।।

2. **असत्यं सर्वथा त्याज्यमसत्यवचनेन यत् ।**
चिरं भ्रमति संसारे जन्तुस्तृण्येव वात्यया ।।

3. युग्मधर्मी स शुशुभे जात्यजाम्बूनदद्युतिः ।
प्रियङ्गुवर्णया पत्न्या सुमेरुरिव मेघ्यया ॥

4. **सौवर्णान्राजतान्रत्नमयान्काञ्चनराजतान् ।**
स्वर्णरत्नमयान्स्वर्णरूप्यरत्नमयानपि ॥

5. रूप्यरत्नमयान्भौमान्कलशान्पूजिताननान् ।
रम्यान्प्रत्येकमष्टाग्रसहस्रं ते [1]विचक्रिरे ।

6. **दिव्यया गन्धकाषाय्याऽऽरणाच्युतविभुर्विभोः ।**
अङ्गमुन्मार्जयामास स्वयं मार्जितमान्यथ ॥

द्व्याश्रयमहाकाव्ये पञ्चदशः सर्गः

7. सहायतापौरुषेयगजतायुग्दिनेऽपरे ।
पौरुषेयोऽपौरुषेयं प्राप रैवतकं नृपः ॥61॥

8. **असावाश्मोऽपि वन्द्योऽद्रि र्नेमिस्तेपे तपोऽत्र यत् ।**
छागेभ्यः सक्थिमांसेभ्य इवोद्वाहाज्जुगुप्सितः ॥63॥

9. रजोऽप्यस्य गिरेः पुंसामंहच्छेदाय जायते ।
कारीरं चैत्रकं काण्डं भस्म वाऽसृक्छिदे यथा ॥64॥

10. **धन्वाऽत्राऽऽकर्षतां तालं व्याधानां तीर्थतेजसा ।**
हिंस्रा गलन्त्यभिप्राया जातुषत्रापुषा इव ॥65॥

टिप्पणी

61. **सहायतापौरुषेयगजतायुक्** सहायपुरुषगजौघैर्युतः । **पौरुषेयः** पुरुषेभ्यो हितः । **अपौरुषेयम्** स्वभावसंसिद्धत्वा-द्देवनिर्मितत्वाद्वा न पुरुषैः कृतम् । **नृपः** जयसिंहः ।

63. **आश्मो**ऽश्मविकारः । **नेमि** द्वाविंशो जिनः । **तपः** सर्वसावद्य-विरतिरूपम् । **छागेभ्यः** छागानामवयवविकारेभ्यः । **जुगुप्सितः** जुगुप्सित्वा निवृत्त इत्यर्थः ।

64. **काण्डं** करीरस्य चित्रकौषधेश्च काण्डं (काष्ठखण्डः) हि जलादिना घर्षित्वा व्रणादौ दत्तम् **असृक्छिदे** रुधिरच्छेदाय स्याद् । **भस्म वा** अस्त्रप्रहारादौ दत्तं रक्तनिवृत्तये स्याद् ।

65. **तालं** तालवृक्षविकारम् **धन्व । व्याधानाम्** आखेटिकानामपि । हिंस्रा हिंसनस्वभावाः । **जातुषत्रापुषा इव** जतुनो लाक्षायास्त्रपुणो वाऽवयवा इव विकारा इव वा, ते ह्यग्निसङ्गेन **गलन्ति** विलीयन्ते ।

टिप्पणी 1. आभियोगिकत्रिदशाः ।

11. अथ सोऽस्तौदिति स्वामिन् यः शमिच्छेत्त्वदन्यतः ।
विहाय बदरीं मूलै र्धन्वैरण्डैः करोति सः ।।80।।

12. त्वां जम्बूश्याम ! पश्यन्तं करामलकवज्जगत् ।
निन्दतां धिग्व्रतं प्लाक्षाऽऽश्वत्थजाम्बवभोजिनाम् ।।81।।

13. त्वदाकृष्याऽन्यतश्चेतो नयेद्यः स कुधीः क्षिपेत् ।
कापित्थं द्रौवयात्पात्राद्रसं भस्मनि गौमये ।।83।।

14. पितृव्या मातुला वृद्धा मातामहपितामहाः ।
हेतवो बन्धनस्यैव त्वं तु मोक्षस्य कारणम् ।।84।।

15. इति नेमिं स्तुत्वा पार्थिवैः समं सोऽद्रेरवातरत् । अवतीर्य च धर्मज्ञै
नृपैः सह धर्मकथां कुर्वन् शत्रुञ्जयं ययौ । तं गिरिमध्यास्त च ।

16. नड्वत्कुमुद्वद्वेतस्वच्छाद्वलिन्यद्रिमूर्धनि ।
नाभेयचैत्यं सोऽपश्यदतिमाहिष्मतीपतिः ।।91।।

17. फलकिप्रेक्षितृणसानदसाकाशिलाधिपैः ।
समं जिनेन्द्रमर्चित्वा चौलुक्योऽद्रेरवातरत् ।।95।।

टिप्पणी

80. **बदरीम्** बदरस्य विकारं वृक्षम् । **ऐरण्डैः** एरण्डविकारैः **मूलैः** । **करामलकवत्** करस्थामलकीफलमिव ।

81. **प्लाक्षाऽऽश्वत्थजाम्बवभोजिनाम्** प्लक्षपिप्पलजम्बूवृक्षफलभोजिनाम् ।

83. **कापित्थम्** कपित्थस्य विकारः फलं कपित्थम् अण् [1]लुप् तस्य विकारं रसम् । **द्रौवयात्** द्रोर्दारुणो विकारो द्रुवयं मानं तस्यापि विकारात्तद्भङ्क्त्वा कृतात् **पात्रात्** । **गौमये** गोमयविकारे **भस्मनि** ।

91. **नड्वत्कुमुद्वद्वेतस्वच्छाद्वलिनि** नड्वन्तः कुमुद्वन्तः वेतस्वन्तः शाद्वलाश्च प्रदेशा अत्र सन्ति तस्मिन् । **अतिमाहिष्मतीपतिः** महिष्मान् देशः तस्याऽदूरभवा पुरी माहिष्मती तस्याः पतिः सहस्रार्जुनः तं बलादिनाऽतिक्रान्तः ।

टिप्पणी 1. विकार, फल हो तब प्रत्यय का लोप होता है ।

पाठ-13

शेष अर्थों में प्रत्यय

(सामान्य और विशेष से भिन्न अर्थों को यहाँ बताऐंगे ।)

1) **'अपत्य'** से लेकर **'संस्कृत भक्ष्य'** तक (पाठ 11 और 12 में कहे) अर्थ के अलावा अन्य–शेष अर्थों में अर्थात् **कृत** अर्थ से लेकर **जित** अर्थ के पहले (पा.13में) जो अर्थ कहे जाऐंगे, उन सभी अर्थों में अब प्रत्यय कहे जाऐंगे ।

2) **नदी** आदि शब्दों को **एय (एयण्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **नद्यां जातो भवो वा नादेयः । मह्यां माहेयः । वने वानेयः ।**

3) **राष्ट्र** को **इय** प्रत्यय लगता है । उदा. **राष्ट्रे जातो भवो वा राष्ट्रिय ।**

4) **दूर** को **एत्य** प्रत्यय लगता है । उदा. **दूरे भवो दूरेत्यः ।**

5) **उत्तर** को **आहञ्** प्रत्यय लगता है ।उदा. **औत्तराहः ।**

6) **पारावार** तथा **पार, अवार** और **अवारपार** को **ईन** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **अवारस्य समुद्रस्य पारम् पारावारः तत्र भवो जातो वा पारावारीणः।**
पारीणः । अवारीणः । अवारपारीणः ।

7) **दिव्** तथा **प्राच्, अपाच्, उदच्** और **प्रत्यच्** को **य** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **दिवि भवं दिव्यम् । प्राचि प्राग्वा भवं प्राच्यम् ।**
अपाच्यम् । उदीच्यम् । प्रतीच्यम् । (द्वि.पा.21 नि.3)

8) **ग्राम** को **ईन (ईनञ्), य** और **एयक (एयकञ्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **ग्रामे भवः ग्रामीणः । ग्राम्यः । ग्रामेयकः ।**

9) **कुल, कुक्षि** और **ग्रीवा** शब्दों को क्रमशः **श्वन्, असि** और **अलंकार** अर्थ में **एयक (एयकञ्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **कुले भवः कौलेयकः श्वा ।** (=कुत्ता), **कौक्षेयकोऽसिः ।**
ग्रैवेयकोऽलङ्कारः ।

10) **दक्षिणा, पश्चात्** और **पुरस्** शब्दों को **त्यण्** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **दक्षिणस्यां दिशि भवः दाक्षिणात्यः । पाश्चात्यः । पौरस्त्यः ।**

11) **क्व, इह, अमा** और **त्र** तथा **तस् प्रत्ययान्त शब्दों** को **त्य (त्यच्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **क्वत्यः । इहत्यः । अमात्यः । तत्रत्यः । कुतस्त्यः ।**

12) **निस्** शब्द को **गत अर्थ** में **त्य (त्यच्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **निर्गतो वर्णाश्रमेभ्यो निष्ट्यः चण्डालः ।**

13) **ऐषमस्, ह्यस्** और **श्वस्** को **त्य (त्यच्)** प्रत्यय विकल्प से लगता है ।

उदा. **ऐषमो भवम् ऐषमस्त्यम् । ऐषमस्तनम् ।,**

ह्यस्त्यम् । ह्यस्तनम् । श्वस्त्यम् । श्वस्तनम् । (नि. 34 देखें) ।

14) **अरण्य** शब्द को **अ(ण)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **आरण्याः सुमनसः । आरण्याः पशवः ।**

15) **भवत् (भवतु)** शब्द को **इक (इकण्)** और **ईय (ईयस्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **भवतः भवत्या वा इदम् भावत्कम्** । स्त्री.– **भावत्की ।**

भवतः भवत्या वा इदम् भवदीयम्[1] । स्त्री. **भवदीया ।**

16) **पर, जन** और **राजन्** को **अकीय** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **परकीयः । जनकीयः । राजकीयः ।**

17) **दु** संज्ञावाले नामों को **ईय** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **देवदत्तीयः । तदीयः । शालीयः । गोनर्दीयः ।**

18) **उष्ण** आदि पूर्वपद हो ऐसे **काल** शब्द को **ईय** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **उष्णकालीयः ।**

19) **वि** आदि पूर्वपद हो ऐसे **काल** शब्द को तथा **काशि** आदि शब्दों को **णिक** और **इक (इकण्)** प्रत्यय लगता है । (काशि आदि शब्द दु संज्ञक समझे ।)

उदा. **वैकालिकः** । स्त्री. **वैकालिका वैकालिकी ।**

तात्कालिका । तात्कालिकी । काशिका काशिकी । चैदिका चैदिकी ।

20) **वाहीक** देश में रहे **ग्राम वाचि शब्दों** को **इक (णिक)** और **इक (इकण्)** प्रत्यय लगते है ।

(वाहिक ग्राम वाचि शब्द दुसंज्ञक समझे ।)

उदा. **सैपुरिका । सैपुरिकी ।, स्कौनगरिका । स्कौनगरिकी ।**

टिप्पणी 1. स् इत्वाले प्रत्यय लगने पर, पूर्व का नाम पद होता है । भवत: इदम्–भवत्+ईयस् =भवदीयम् । पद संज्ञा होने से त् का द् हुआ है । (प्र.पा. 25 नि.1)

21) देशवाचि **वृजि** और **मद्र** शब्दों को **क** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **वृजिकः । मद्रकः ।**

22) **प्रस्थ, पुर** और **वह अंतवाले, य उपान्त्यवाले** और **धन्वन् (मरुदेश)** अर्थवाले शब्दों को **अक (अकञ्)** प्रत्यय लगता है । (ये शब्द देशवाचि और दु संज्ञक समझे ।)

उदा. **मालाप्रस्थकः । नान्दीपुरकः । पैलुवहकः । सांकाश्यकः ।**

धन्वन्–**पोरधन्वकः । ऐरावतकः ।**

23) **राष्ट्र, बहुवचनान्त राष्ट्र** और **धूमादि** शब्दों को **अक (अकञ्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **आभिसारे भवः आभिसारकः । अङ्गेषु जातः आङ्गकः ।**

धूमे भवः धौमकः ।

(यहाँ राष्ट्र शब्द, देशवाचि तथा दूसंज्ञक शब्द लेने है ।)

24) **युष्मद्, अस्मद्** से अ **(अञ्)** और ईन **(ईनम्)** प्रत्यय विकल्प से लगते है और **युष्माक** और **अस्माक** आदेश होते है । एकवचन में तवक और ममक आदेश होते है ।

उदा. **युष्माकमयं युवयोर्वा यौष्माकः । यौष्माकीणः ।** विकल्प से **युष्मदीयः ।**

अस्माकमयमावयोर्वा आस्माकः । आस्माकीनः । विकल्प से **अस्मदीयः ।**

एकवचन में तवायं–**तावकः । तावकीनः । त्वदीयः ।**

मामकः । मामकीनः । मदीयः । (सर्वत्र ईय नि.17. से)

25) **अन्त, अवस्** और **अधस्** शब्दों को **अम** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **अन्तमः । अवमः । अधमः ।** (पा. 18. नि.15)

26) **पश्चात्, आदि, अन्त** और **अग्र** शब्दों को **इम** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **पश्चिमः । आदिमः । अन्तिमः । अग्रिमः ।**

27) **मध्य** को **म प्रत्यय** लगता है । उदा. **मध्यमः ।**

28) **अध्यात्म** आदि शब्दों को **इक (इकण्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **अध्यात्मं भवम् आध्यात्मिकम् । अकस्माद् भवम् आकस्मिकम् ।**

आमुष्मिकम् । ऐहिकम् ।

29) **समान** पूर्वपद हो ऐसे शब्दों को एवं **लोक** उत्तरपद हो ऐसे शब्दों को **इक (इकण्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **समानग्रामे कृतो भवो वा सामानग्रामिकः । सामानदेशिकः ।**
इह लोके कृतो भवो वा ऐहलौकिकः । पारलौकिकः ।
सार्वलौकिकः । (पा.18. नि. 6.)

30) **वर्षा** शब्द को एवं **काल** विशेषवाचि शब्दों को **इक (इकण्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **वर्षासु भवः वार्षिकः । मासिकः । सांवत्सरिकः । दैवसिकः ।**

31) **चिर, परुत्** और **परारि** शब्द को **त्न** प्रत्यय विकल्प से लगता है ।

उदा. **चिरत्नम् । परुत्नम् । परारित्नम् ।**
विकल्प से **चिरंतनम्** इत्यादि ।

32) **पुरा** को **न** विकल्प से लगता है ।

उदा. **पुरा भवं पुराणम् । पुरातनम् ।**

33) **पूर्वाह्ण** और **अपराह्ण** को **तन (तनट्)** विकल्प से लगता है ।

उदा. **पूर्वाह्णे जातो भवो वा पूर्वाह्णेतनः । पूर्वाह्णतनः ।**
अपराह्णेतनः । अपराह्णतनः । सप्तमी का विकल्प से लोप होता है ।

विकल्प से पौर्वाह्णिकः । अपराह्णिकः ।

34) **सायम्, चिरम्, प्राह्णे, प्रगे** और **कालवाचि अव्यय शब्दों** को **तन (तनट्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **सायम् भवः सायन्तनम् । चिरन्तनम् । प्राह्णेतनम् । प्रगेतनम् ।**
अव्यय–दिवातनम् । प्रातस्तनम् । प्राक्तनम् ।
स्त्रीलिंग में **सायन्तनी ।**

35) **कालवाचि नक्षत्र** शब्द, **ऋतुवाचि** शब्द और **सन्ध्यादि** शब्दों को **अ (अण्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **पुष्ये भवः पौषः । आश्विनः । रौहिणः । सौवातः ।**
(पा.18. नि.3)
ग्रीष्मे भवः ग्रैष्मः । शैशिरः । वासन्तः ।
सन्धायां भवः सान्ध्यः। आमावास्यः ।

36) **संवत्सर** शब्द को **फल** और **पर्व** अर्थ में **अ(अण्)** प्रत्यय लगता है।
उदा. **सांवत्सरम् फलम् पर्व वा ।**

37) **हेमन्त** शब्द को **अ(अण्)** प्रत्यय विकल्प से लगता है और **त** का विकल्प से लोप होता है।

उदा. **हैमनम् । हैमन्तम् । हैमान्तिकम् ।** (नि.30 देखे)।

38) **प्रावृष्** शब्द को **एण्य** प्रत्यय लगता है। उदा. **प्रावृषि भवः प्रावृषेण्यः ।**

शेष अर्थ

'कृत, लब्ध, क्रीत और संभूत' अर्थ में

1) सप्तम्यन्त नाम को पूर्वानुसार **अ(अण्)** आदि और **एय (एयण्)** आदि प्रत्यय लगते है।
उदा. **स्रुघ्ने कृतः स्रौघ्नः । नद्यां कृतः नादेयः ।** एवं **लब्धं ।** इत्यादि।

कुशल अर्थ में

2) सप्तम्यन्त नाम को **अ(अण्)** आदि और **एय (एयण्)** आदि प्रत्यय लगते है।
उदा. **स्रुघ्ने कुशलः स्रौघ्नः । नद्यां कुशलः नादेय ।**

3) **अश्मन्** आदि शब्दों को **क** प्रत्यय लगता है।
उदा. **अश्मनि कुशलः अश्मकः ।** (=पत्थर कारीगरी में कुशल)
त्सरुकः । (त्सरु=तलवार की मूँठ । उसे पकडने में कुशल=त्सरुकः ।)

'जाती' अर्थ में

4) सप्तम्यन्त नाम को यथाविहित **अ(अण्)** आदि और **एय (एयण्)** आदि प्रत्यय लगते है।
उदा. **स्रुघ्ने जातः स्रौघ्नः । माथुरः । बाह्यः, बाहीकः । कालेयः । आग्नेयः । स्त्रैणः । पौंस्नः । नादेयः । राष्ट्रियः । पारावारीणः । ग्राम्यः । ग्रामीणः ।**

5) **प्रावृष्** शब्द को **इक** प्रत्यय लगता है।
उदा. **प्रावृषि जातः प्रावृषिकः ।** (पूर्वविभाग नि. 38 का अपवाद)

'साधु, पुष्यत् और पच्यमान' अर्थ में

6) **सप्तम्यन्त कालविशेष वाचि नाम** को यथाविहित प्रत्यय होते है ।
उदा. **हेमन्ते साधु हैमनम् अनुलेपनम् । हैमन्तम् । हैमन्तिकम् ।**
वसन्ते पुष्यन्ति वासन्त्यः कुन्दलताः ग्रैष्म्यः पाटलाः ।
शरदि पच्यन्ते शारदाः शालयः । शैशिराः मुद्गाः ।

'उप्त' अर्थ में

7) **सप्तम्यन्त कालविशेषवाचि नाम** को यथाविहित प्रत्यय लगते है ।
उदा. **शरदि उप्ताः शारदा यवाः ।**

'भव' अर्थ में

8) सप्तम्यन्त नाम को पूर्वानुसार **अ(अण्)** आदि और **एय (एयण्)** आदि प्रत्यय लगते है । भव यानी सत्ता–होना । और जात यानी जन्मा हुआ ।
उदा. **स्रुघ्ने भवः स्रौघ्नः । माथुरः । बाह्यः ।**
नादेयः । राष्ट्रियः । ग्राम्यः । ग्रामीणः ।

9) **दिश्** आदि शब्दों को और **देह** के अंशवाचक शब्दों को **य** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **दिशि भवो दिश्यः । वर्ग्यः । रहस्यम् । आद्यः । अन्त्यः ।**
वंश्य । देश्यः । काल्यः ।
देह के अंश–**मूर्धन्यः । दन्त्यः । कण्र्यः । औष्ठ्यः । तालव्यः ।**
पाण्यः । पद्यः । मुख्यः । जघन्यः ।

10) **जिह्वामूल, अङ्गुलि** और **मध्य** शब्दों **ईय** प्रत्यय लगता है ।
उदा. जिह्वमूले भवो **जिह्वामूलीयः । अङ्गुलीयः । मध्यीयः ।**

11) **वर्ग अंत में** हो ऐसे शब्दों को **ईय** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **कवर्गीयः । पवर्गीयो वर्णः ।**

12) **मध्य** शब्द को **दिनण्, अ (ण)** और **ईय** प्रत्यय लगता है और पहले **'म्'** जुडता है ।
उदा. **मध्ये भवो माध्यंदिनः । माध्यमः । मध्यमीयः ।**

13) **परि** और **अनु** को बाद में रहा **ग्राम** शब्द अंत में हो ऐसे अव्ययीभाव समास को **इक (इकण्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **ग्रामात्परि परिग्रामम् तस्मिन्भव: पारिग्रामिक: ।**
ग्रामस्य समीपम् अनुग्रामम् तस्मिन्भव: आनुग्रामिक: ।

14) **उप** के बाद रहे **जानु** और **नीवि** को **कर्ण** शब्द अंत में हो ऐसे अव्ययी भाव समास को **'प्रायेण भव' अर्थ** में **इक (इकण्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **औपजानिक: सेवक: । औपनीविकं ग्रीवादाम ।**
औपकर्णिक: सूचक: ।

'आगत' अर्थ में

15) पंचम्यन्त नाम को **अ(अण्)** आदि एवं **एय (एयण्)** आदि प्रत्यय लगते है ।
उदा. **स्रुघ्नात् आगत: सौघ्न: । माथुर: । गव्य: । स्त्रैण: । नादेय: ।**
राष्ट्रिय: । ग्रामीण: । ग्राम्य: ।

16) **विद्या** और **योनि** का संबंध जिन शब्दों को हो उन्हें **अक(अकम्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **आचार्यादागतम् आचार्यकम् । पैतामहकम् ।**

17) **पितृ** शब्द को **य** विकल्प से लगता है ।
उदा. **पितृरागतम् पित्र्यम्**[1] । विकल्प से **पैतृकम् ।** पा.18. नि.20

18) **ऋ** कारान्त नाम को **इक (इकण्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **हौतृकम् । मातृकम् । मातृकी विद्या । जामातृकम् ।**

19) **आय स्थान** (स्वामि–ग्राह्य–भाग–आय, वह जहाँ उत्पन्न होती है वह आय स्थान) वाचि शब्दों को **इक (इकण्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **आतर:–नदीतीर्थम् तत: आगतम् आतरिकम् ।**
शौल्कशालिकम् । आपणिकम् । दौवारिकम् । पा.18. नि.3.

20) **नृ** वाचि शब्दों को और **हेतुवाचि शब्दों** को **रूप्य** और **मय (मयट्)** प्रत्यय विकल्प से लगते है ।
उदा. **देवदत्तादागतम् देवदत्तरूप्यम् । देवदत्तमयम् ।** विकल्प से–
दैवदत्तम् । अण् ।,
पापादागतम् पापरूप्यम्, पापमयम् । विकल्पे **पापीयम् ।** ईय ।

टिप्पणी 1. ऋकार का य कारादि तद्धित के बाद र् होता है । उदा. पित्र्यम् ।

‘प्रभवति’ अर्थ में

21) **पंचम्यन्त नाम** को यथाविहित प्रत्यय लगते है ।
उदा. **हिमवतो प्रभवति हैमवती गङ्गा ।**

22) **त्यदादि** शब्दों को **मय (मयट्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **तस्मात् प्रभवति तन्मयम् । मन्मयी । भवन्मयम् ।**

‘इदम्’ अर्थ में

23) षष्ठ्यन्त नाम को **अ(अण्)** आदि और **एय (एयण्)** आदि प्रत्यय लगते है ।
उदा. **स्त्रुघ्नस्येदम् स्त्रौघ्नम् । माथुरम् । पौंस्नम् । गव्यम् । नादेयम् । राष्ट्रियम् । भानवीयः ।**

24) **देवासुरादि** द्वन्द्व सिवाय अन्य द्वन्द्व समास को **वैर** अर्थ में **अक (अकल्)** प्रत्यय लगता है । (ल इत् से स्त्रीलिंग होता है ।)
उदा. **काकोलूकस्येदम् वैरम् काकोलूकिका । अश्ववराहिका ।**

25) षष्ठ्यन्त **रथ** शब्द को एवं पूर्वपद सहित रथ शब्द को **वोढा** और **अङ्ग** ये दो अर्थ में ही **य** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **रथस्यायं वोढा रथ्योऽश्वः । रथस्येदं रथ्यं चक्रम् ।**
द्वयो रथयो र्वोढा द्विरथः । (पाठ 10. तद्धित प्रकरण नि.9)

‘प्रोक्त (व्याख्यात)’ अर्थ में

26) **तृतीयान्त नाम** को यथाविहित प्रत्यय लगते है ।
उदा. **भद्रबाहुना प्रोक्तानि भाद्रबाहवानि उत्तराध्ययनानि ।**

उपज्ञात (प्रथमतः ज्ञातं कृतं वा) अर्थ में

27) **तृतीयान्त नाम** को पूर्वानुसार प्रत्यय लगते है ।
उदा. **पाणिनिना पाणिनेन वा उपज्ञातम् पाणिनीयम् अकालकं व्याकरणम् । न विद्यते कालाधिकारो यत्र तद् अकालकम् ।**
अर्थात् जिसमें काल का अधिकार (विषय) नहीं है ।
पाणिनीय व्याकरण में अद्यतन आदि काल की व्याख्याएँ नहीं दी है, इसलिए वह अकालकम् कहलाता है ।

'कृत' अर्थ में

28) **तृतीयान्त** नाम को पूर्वानुसार प्रत्यय लगते है ।
उदा. **शिवेन कृतः शैवो ग्रन्थः । सिद्धसेनीयः स्तवः ।**

29) **मक्षिका** आदि शब्दों को संज्ञा में यथाविहित प्रत्यय लगते है ।
उदा. **मक्षिकाभिः कृतम् माक्षिकं मधु । शारघं मधु ।**

30) **सर्वचर्म** शब्द को **ईन** और **ईन (ईनञ्)** प्रत्यय लगते है ।
उदा. **सर्वश्चर्मणा कृतः सर्वचर्मीणः सार्वचर्मीणो रथः ।**

31) **उरस्** शब्द को **य** और **अ (अण्)** प्रत्यय लगते है ।
उदा. **उरसा कृतः उरस्यः । औरसः ।**

'भजति' अर्थ में

32) **द्वितीयान्त** नाम को पूर्वानुसार प्रत्यय लगते है ।
उदा. **स्त्रुघ्न भजति स्त्रौघ्नः । नादेयः । राष्ट्रियः।**

'तुल्यदिशा' अर्थ में

33) **तृतीयान्त** नाम को पूर्वानुसार और **तस् (तसि)** प्रत्यय लगते है ।
उदा. **सुदाम्ना एकदिग् सौदामनी विद्युत् ।**
(=सुदामा पर्वत की दिशा में बिजली है ।)
इसलिए सुदामा के साथ तुल्यदिग् (एकदिक्) कहलाता है ।
त्रिककुदा एकदिक् **त्रैककुदी** लङ्का । **सुदामतः**[1]। **त्रैककुत्तः**। तसि प्रत्यय ।

34) **उरस्** शब्द को **य** और **तस् (तसि)** प्रत्यय लगते है ।
उदा. **उरसा एकदिग् उरस्यः । उरस्तः ।**

'उसका घर' अर्थ में

35) **प्रथमान्त** नाम को पूर्वानुसार प्रत्यय लगते है ।
उदा. **स्त्रुघ्नो निवासोऽस्य स्त्रौघ्नः । माथुरः । नादेयः । राष्ट्रियः ।**

टिप्पणी 1. वत्, तस् (तसि) और आम् प्रत्ययान्त शब्द अव्यय है ।
उदा. क्षत्रियवद् । उरस्तः । उच्चैस्तराम् ।

परिशिष्ट नियम

1. **र् उपान्त्य** वाले प्राग्देश वाचि दुसंज्ञक शब्दों को **अक (अकञ्)** प्रत्यय लगता है । उदा. **पाटलिपुत्रे भवः पाटलिपुत्रकः ।**

2. **क् उपान्त्यवाले** और **कच्छादि** देशवाचि शब्दों को **अ (अण्)** प्रत्यय लगता है । उदा. **इक्ष्वाकुषु जातः ऐक्ष्वाकः । काच्छः । सिन्धु- सैन्धवः ।**

शब्द

अङ्गुलीय (नपुं.)=मुद्रिका, अंगुठी । **अङ्गुलौभवम् ।**

अवस् (अ)=बाद में । **अवो जातः अवमः ।**

अवार (पुं.)=इस किनारे ।

अवारपार (पुं.)=समुद्र ।

आ (अ.)=खेद अर्थ में ।

आविष्टय (वि.)=प्रकट ।

उदक्या (स्त्री.)=रजस्वला स्त्री ।

उषा (स्त्री.)=रात्रि ।

ऐषमस् (अ.)=यह वर्ष ।

गोनर्द (न.)=एक नगर ।

गोविन्दपद्या (स्त्री.)=गंगा नदी । **गोविन्दस्य पादे भवा पद्या ।**

धूम (पुं.)=एक देश ।

निकृति (स्त्री.)=माया, कपट ।

निष्ट्य (वि.)=चंडाल ।

नु (अ.)=**इव** के अर्थ में उपयोग होता है ।

पत्ति (पुं.)=सेवक ।

पदाति (पुं.)=सेवक ।

प्रणिधि (पुं.)=गुप्तचर पुरुष ।

प्रभव (पुं.)=उत्पत्ति स्थान ।

पार (पुं.)=उस किनारे ।

पारावार (पुं.)=समुद्र ।

पार्ष्णि (पुं.)=पैर का पिछला तल भाग ।

वर्णासा (स्त्री.)=बनास नदी ।

विकाल (पुं.)=अकाल, संध्याकाल ।

विकृति (स्त्री.)=विकार ।

वृत्ति (स्त्री.)=पगार, व्यापार ।

शुण्डिक (वि.)=दारु बेचनेवाला, दारु की दुकान । **शुण्डोऽस्ति अस्य ।**

शुण्ड, शुण्डा (पुं.)(स्त्री.)=दारु, मदिरा ।

शेष (पुं.)=थोडा, अल्प ।

स्थगित (वि.)=ढका हुआ ।

स्वाति (स्त्री.)=स्वाति नक्षत्र । **स्वतौभवः सौवातः ।**

संस्कृत वाक्य

द्व्याश्रयमहाकाव्ये षोडशः सर्गः ।

1. नादेयपूराभ-बलः स कृत्यशेषेऽपि नाऽशेत यतस्ततोऽमुम् ।
माहेयराड्-राष्ट्रियराज-मुख्या भूपा अदूरेत्य-भुवोऽभजन्त ।।6।।

2. अथौत्तराहाऽ-खिला-शैवहारा-ऽवारीण-पारीण-नृपैः सहैव ।
आन्नो नृपोऽस्मिन् मदतोऽति-पारावारीणनागः सहसा व्यरुद्ध ।।7।।

3. प्राच्यं च बल्लालमयुङ्क्त पारातोऽवारपारीणनृपैरपाच्यैः ।
प्रचीत्यराट्-पार्ष्णिनिपीडनार्थमुदीच्यराण् नीत्यति–दीव्यमन्त्री ।।8।।

4. क्वत्यस्ततस्त्यो न्वसि नास्मि तत्रत्यः किंत्वहं नित्यमिहत्य एवम् ।
तदीयनिष्ट्यानभिवञ्च्य कश्चिदाविष्ट्य आगात्प्रणिधिश्चुलुक्यम् ।।12।।

टिप्पणी

6. **नादेयपूराभबलः** नदीभवप्रवाहतुल्यबलः । **स** राजा (कुमारपालः) । **माहेयराड्राष्ट्रिय-राजमुख्याः** मह्यां भवा माहेय महियडा इति प्रसिद्धाः क्षत्रियभेदास्तेषां राड् गोद्रहदेशाधिपस्तथा राष्ट्रे भवा राष्ट्रियाः क्षत्रियभेदास्तेषां राजा राष्ट्रियराजः–द्वन्द्वे तदादयो **भूपाः** । **अदूरेत्यभुवः** समीपभवा भुवो येषां ते तथा, निकटस्था इत्यर्थः ।

7. **औत्तराहा** उत्तरस्यां दिशि भवाः । **शैवहाराः** शिवहारानदीसम्बन्धिनः । **अवारीणाः** अवारे-नद्या अर्वाक्तटे भवाः । **पारीणाः** पार-परतटे भवाः । **आन्नो नृपः** सपादलक्षदेशाधिपः **अतिपारावारीणनागः** पारावारेऽब्धौ भवं जातं वा नागमैरावणमतिक्रान्तः ।

8. **प्राच्यम्** अवन्तिदेशाधिपम् **बल्लालम्** बल्लालदेवाख्यं नृपम् **पारातः** पारानद्याः सकाशादयुङ्क्त **च** । **अपाच्यैः** दाक्षिणात्यैः । **अवारपारीणनृपैः** अवारपारे–ऽब्धौ भवैर्नृपैः । सह ।
प्रतीच्यराट्पार्ष्णिनिपीडनार्थम् प्रतीच्यानां–गुर्जरत्रादिपश्चिमदेशभवानां नृणां राट्-कुमारपालस्तस्य यः पार्ष्णि-पश्चाद्भागदेशस्तस्य निपीडनार्थमुपद्रवणार्थम् ।
उदीच्यराड् । उदीच्यानां-सपादलक्षादिदेशनृणां राड् आन्नः ।
नीत्यतिदीव्यमन्त्री नीतौ–राजनीतिविषये दिव्यमन्त्रिणम्-बृहस्पतिमप्यतिक्रान्तः ।

12. **ततस्त्यः** ततः आगतः **तदीयमिष्ट्यन्** आन्नसम्बन्धिनश्चण्डालान् । **आविः**–प्राकाश्ये भवः **आविष्ट्यः** प्रकटः सन् **चुलुक्यं** कुमारपालम् **आगात्** ।

5. ऊचे स नत्वेति तवैषमस्त्योऽप्यनैषमस्तन्य इवाऽरिरान्नः ।
दिनेऽचलद् ह्यस्तन एष्यति श्वस्तने च नूनं तव देशसीमाम् ।।13।।

6. अराजकीयोऽजनि सोऽपि गोनर्दीयोऽस्य बुद्ध्या परकीयवृत्तिः ।
तदुष्णकालीय इवातपस्ते तं गच्छतो धक्ष्यति पार्ष्णिभागम् ।।17।।

7. वैकालिकीमप्यथ तामवैकालिकां नु तद्वृत्तिमवेत्य भूपः ।
बुद्ध्येति तात्कालिकया लुलोचे तात्कालिकी क्रुद्विकृतिं विजित्य ।।18।।

8. स कासिकीं तर्हि कलां विदन्नप्या वञ्चितः काशिकया निकृत्या ।
तां चैदिकीं दर्शयताऽऽशु भक्तिमचैदिकामद्य च तेन तातः ।।19।।

9. स्वयं स ऐरावतका-ऽऽभिसासरक-दार्वकैः स्थालक–धौमकैर्युङ् ।
त्रैगर्तकै राजभिराऽऽभिसाराद्यगर्तकैश्चारिमभि प्रतस्थे ।।24।।

10. अथ स कुमारपालो राजा भूपै-र्भृत्यै-र्योधैः शबरादिभिश्च सहार्बुर्दं गिरिमाससाद ।

11. अथ शोभमानां तां पार्वतीं क्ष्मामविता कुमारपालनृपतेः स्वकीयः पत्तिः विक्रमसिंहनामा पदातियुगित्यूचे, प्रशस्योऽयं गिरिराष्माकवंश-प्रभवोऽपि यौष्माकीण-प्रसादादस्मदीयः ।

टिप्पणी

13. **स** प्रणिधिः । **ऐषमस्त्योऽपि** अस्मिन्संवत्सरे भवोऽपि, नास्ति ऐषमस्तन्यम्-इदंसंवत्सरभवता अस्य **सोऽनैषमस्तन्य इव**–अतिप्ररूढवैरेण चिरकालीन इव **अरिः आन्नः** ।

17. **अराजकीयः** न राजकीयः । **गोनर्दीयः** गोनर्दे पत्तने भवः बल्लालः, **अपि, अस्य** अन्नस्य **बुद्ध्या परकीयवृत्तिः** परकीया-शत्रोः संबन्धिनी वृत्ति र्जीविका यस्य सः ।

18. **वैकालिकीमपि** असमयोत्पन्नामपि । **अथ** चरोक्त्यनन्तरम् । **नु** इव । **तद्वृत्तिम्** तस्यान्नस्य व्यापारम् ।

19. **स** प्रसिद्धः **आः** खेदे **तेन** आन्नेन **तातः** जयसिंहः **वञ्चितः** । **तर्हि** तस्मिन्काले तां **चैदिकीं भक्तिं दर्शयिता** अद्य अधुना **च** आशु अचैदिकां भक्तिं दर्शयिता ।
काशिदेशे हि माया बहु विजृम्भते । चेदिदेशलोको हि प्रायो विनीतः ।

24. **स** कुमारपालः **अरिम्** आन्नम् **अभि** लक्ष्यीकृत्य **स्वयं प्रतस्थे** । ऐरावत आभिसारे दर्वेषु स्थल्यां धूमे त्रिगर्तेष्वाभिसारगर्ते च देशेषु भवैर्जातैर्वा **राजभि र्युङ्** युक्तः ।

12. **यौष्माकवंशे नु शरण्य आस्माकीनादिमानामिह किंपुरुष्यः ।**
अयुष्मदीया अपि तावकीना इवाभिगायन्ति यशस्त्वदीयम् ॥36॥

13. अर्यम्णि पौर्वाह्णिक आपराह्णिके चोच्चवृक्षैः स्थगिते मुनीन्द्राः ।
विदन्ति पूर्वाह्णतनीमथापराह्णेतनीं नाडिकयेह सन्ध्याम् ॥47॥

14. **प्राह्णेतनैरेव चिरन्तनस्य पूजा प्रगेतन्यचलेश्वरस्य ।**
दोषातनी च क्रियतेऽत्र सायन्तनै र्विनिद्रै र्विविधप्रसूनैः ॥48॥

15. सांवत्सरार्चाफलवाञ्छयेह सांवत्सरे पर्वणि नाभिसूनोः ।
हैमन्तिकोषागुरुभक्तयः के नायान्ति हैमन्त-दिनाल्पिताघाः ॥50॥

16. **गोविन्दपद्येव पुरोऽस्ति वर्णासैषाऽनुदक्येव सरिन्निषेव्या ।**
माध्यन्दिना सानुमतोऽस्य मध्यन्दिनाम्बुजा माध्यमकैरवा च ॥65॥

17. द्राग्मध्यमीयाऽश्मचये स्खलन्त्योङ्गुलीयवत्क्वापि विभान्ति विच्यः ।
क्वचिट्टवर्गीयवदत्र जिह्वामूलीयवत्क्वापि च वारिवर्ग्याः ॥66॥

18. **अथाऽवसत्तत्र चमूः सधान्यानुग्रामिक-क्षेत्रभुवोऽभिरक्षन् ।**
दृशौपकर्णिक्य ऋजूल्लसन्त्यौपजानुकोद्दामभुजो नरेन्द्रः ॥71॥

टिप्पणी

36. **आस्माकीनादिमानाम्** अस्माक**मादिमानामादौ** भवानां पूर्वजानां **शरण्ये** महादुर्गत्वाद्रक्षाहेतौ **यौष्माकवंशे** । नु यथा । **इह** अर्बुदे ।

47. **नाडिकया** उच्छ्वासेन निःश्वासेन च **विदन्ति** ।

50. **हैमन्तदिनाल्पिताघाः** । हैमन्तदिनवदल्पितं–लघूकृतमघं-पापं यैस्ते ।

66. **अत्र** वर्णासानद्याम् । **वारिवर्ग्याः** वारिवर्ग-जलौघे भवा **वीच्यः** ।

71. **अथ तत्र** वर्णासातटे **सधान्या** सस्याढ्या **आनुग्रामिकी** ग्रामसमीपे भवा या **क्षेत्रभूस्तस्याः** सकाशात् **चमूरभिरक्षन् दृशा औपकर्णिक्या** अतिविस्तीर्णत्वेन कर्णसमीपे प्रायेण भवया **ऋजुल्लसन्त्या । औपजानुकौ** प्रलम्बत्वाज् जान्वोः समीपे प्रायेण भवावुद्दामौ भुजौ यस्य सः ।

वसन्त ऋतुः

19. वणिग्नु पित्र्यापणिकै र्हिरण्यैर्मन्त्रै र्द्विजः पैतृकहौतृकै र्नु ।
अभादशोकः कुसुमैरनृत्यत्तैर्थानिलैः शौण्डिकवच्च सद्यः ॥76॥

20. पापीयवत्पापमयान्यपापरूप्याण्यजानन्नु फलान्यनङ्गः ।
बिभेद यूनां हृदयान्यशङ्कः शक्रद्विपो हैमवतीतटी र्वा ॥78॥

शरद् ऋतुः

21. अभूष्यताब्जै र्जलमत्र वाररुचैः सुवाक्यैरिव पाणिनीयम् ।
सन्माक्षिकं नु प्रियसारघाणां पेयं नृणां मानसवारितुल्यम् ॥92॥

टिप्पणी

76. **पित्र्यापणिकैः** पितुरागतैः पित्र्यैः आपणादागतैरापणिकैः–स्वयमुपार्जितैश्च । पैतृकहौतृकैः पितुर्होतुश्चागतैः । **तैर्थानिलैः** तीर्थाद्-नद्यावतारादागतै र्वातैः कृत्वा **अनृत्यच्च ।**

शौण्डिकवत् शुण्डिकादागतः शौण्डिकः–मद्यपः तद्वत् ।

78. **पापीयवत्** पापाद्धेतुभूतादागतः पापीयः–पापिष्ठः तद्वत् ।

पापमयानि पापाद्धेतोरागतानि । **अपापरूप्याणि** धर्मादागतानि अशुभशुभरूपाणि **फलानि ।** **नु** इव । **हैमवतीतटी** हिमवतः प्रभवति हैमवतीगङ्गा तस्याः **तटीः** तटानि । **वा** इव ।

92. **वाररुचैः** वररुचिना कृतैः । **पाणिनीयम्** पाणिनेन पाणिनिना वोपज्ञातं व्याकरणम् । **सत्** शोभनम् **माक्षिकम्** मक्षिकाभिः कृतं मधु । **प्रियसारघाणाम्** प्रियं सरघाभिः–मधुमक्षिकाभिः कृतं सारघं-मधु येषां तेषाम् । मनसाकृतं मानसं सरस्तस्य यद्वारि तत्तुल्यम् ।

पाठ-14

इकण् प्रत्यय

1) यहाँ से आगे (पाठ 14 में) बताए अर्थों में अपवाद के सिवाय **इक (इकण्)** प्रत्यय लगता है ।

2) तृतीयान्त नाम को–**जित, जयत्, दीव्यत्** और **खनत्** अर्थ में **इक (इकण्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **अक्षैर्जितम् आक्षिकम् । शालाकिकम् । अक्षैर्जयति आक्षिकः । शालाकिकः । अक्षैर्दीव्यति आक्षिकः ।, अभ्रया खनति आभ्रिकः । कौद्दालिकः ।** अभ्री-काष्ठमयी तीक्ष्णाग्रा ।

3) तृतीयान्त नाम को **'संस्कृत'** अर्थ में और **'संसृष्ट'** अर्थ में **इक (इकण्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **दध्ना संस्कृतं दाधिकम् । विद्यया संस्कृत वैद्यिकः । दध्ना संसृष्टं दाधिकम् । विषेण संसृष्टं वैषिकम् ।**

4) तृतीयान्त नाम को **'तरति'** अर्थ में **इक (इकण्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. 1) **उडुपेन तरति औडुपिकः ।**

2) **नौ** शब्द और **द्वि** स्वर शब्दों को **इक** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **नावा तरति नाविका । बाहुभ्याम् तरति बाहुकः । बाहुका: ।**

5) तृतीयान्त नाम को **चरति** अर्थ में **इक (इकण्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **हस्तिना चरति हास्तिकः । शाकटिकः । दध्ना चरति-भक्षयति दाधिकः । पादाभ्यां चरति पदिकः ।** इकट् प्रत्यय, तथा पाद का पद् होता है ।

6) तृतीयान्त नाम को **जीवति** अर्थ में वेतन आदि शब्दों को **इक (इकण्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **वेतनेन जीवति वैतनिकः । वाहेन जीवति वाहिकः ।** आदि ।

7) निर्वृत्त अर्थ में (i) **अक्षद्यूतादि** शब्दों को **इक (इकण्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **अक्षद्यूतेन निर्वृत्तम् आक्षद्यूतिकम् वैरम् ।**

(ii) भाववाचि शब्दों को **इम** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **पाकेन निर्वृत्तं पाकिकम् । कुट्टिमम् । संमूर्च्छिमम् ।**

(iii) **याचित** और **अपमित्य** शब्दों को **क (कण्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **याचितेन निर्वृत्तं याचितकम् ।**

अपमित्य (प्रतिदानेन) निर्वृत्तमापमित्यकम् ।

8) तृतीयान्त नाम को **वर्तते** अर्थ में **ओजस्, सहस्** और **अम्भस्** शब्दों को **इक (इकण्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **ओजसा (बलेन) वर्तते औजसिकः ।**

सहसा प्रसहनेन पराभिभवेन वा वर्त्तते साहसिकः ।

अम्भसा-जलेन वर्तते आम्भसिकः ।

9) द्वितीयान्त नाम को **वर्तते** अर्थ में (i) **प्रतिलोम, अनुलोम, प्रतीप, अन्वीप, प्रतिकूल** और **अनुकूल** शब्दों को **इक (इकण्)** प्रत्यय लगता है । (प्रतिलोम/प्रतीप=प्रतिकूल । अनुलोम/अन्वीप-अनुकूल)

उदा. **प्रतिलोम वर्तते प्रातिलोमिकः । आनुलोमिकः ।**

प्रतीपं वर्तते प्रातिपिकः । आन्वीपिकः ।

प्रतिकूलं वर्तते प्रातिकूलिकः । आनुकूलिकः ।

(ii) **परिमुख** और **परिपार्श्व** शब्दों को **इक (इकण्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **परिमुखं वर्तते पारिमुखिकः । पारिपार्श्विकः सेवकः ।**

मुखात् परि परिमुखम् ।=मुख को छोडकर । अथवा,

परितः सर्वतो मुखं परिमुखम् । =मुख के चारों ओर, जिस ओर मुख हो उस ओर । सूत्र 6/3/136 से यह अव्ययीभाव समास हुआ है ।

10) द्वितीयान्त नाम को **रक्षत्** और **उच्छत्** अर्थ में **इक (इकण्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **समाजं रक्षति सामाजिकः । सामावायिकः । नागरिकः ।**

बदराणि उच्छति बादरिकः । श्यामाकिकः । नैवारिकः ।

11) द्वितीयान्त नाम को **घ्नत्** अर्थ में, **पक्षि, मत्स्य** और **मृग** अर्थवाले शब्दों को **इक (इकण्)** प्रत्यय लगता है ।

(पक्षि अर्थ में-पाक्षिन्, शकुन, शकुनि । मत्स्य अर्थ में-मत्स्य, मीन, शफर । मृग अर्थ में मृग, हरिण, सूकर ।)

उदा. **पक्षिणो हन्ति पाक्षिकः । वैसे ही–मात्स्यिकः । मार्गिकः । शाकुनिकः । मैनिकः । हारिणिकः । मायूरिकः । शाफरिकः । सौकरिकः ।**

12) द्वितीयान्त नाम को **गच्छति** अर्थ में–(i) परदार आदि शब्दों को **इक (इकण्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **परदारान् गच्छति पारदारिकः । गौरुदारिकः । गौरुतल्पिकः । सभर्तुकां (सपत्नीं) गच्छति साभर्तृकिकः । आदि ।**

(ii) **प्रतिपथ** शब्द को **इक** और **इक (इकण्)** प्रत्यय लगते है ।

उदा. **पन्थानं पन्थानं प्रति पथोऽभिमुखम् वा प्रतिपथम् । प्रतिपथं गच्छति प्रतिपथिकः ।** (इक), **प्रातिपथिकः** (इकण्) ।

13) द्वितीयान्त नाम को **पृच्छति** अर्थ में **सुस्नात** आदि शब्दों को **इक (इकण्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **सुस्नात पृच्छति सौस्नातिकः । सौखरात्रिकः । सौखशायनिकः ।** इत्यादि ।

14) द्वितीयान्त नाम को **ब्रुवत्** अर्थ में **प्रभूत** आदि शब्दों को **इक (इकण्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **प्रभूतं ब्रूते प्राभूतिकः । पर्याप्तं ब्रूते पार्याप्तिकः ।** आदि

15) द्वितीयान्त नाम को **समवेत** (तादात्म्यातदेकदेशीभूत) अर्थ में–

(i) **समूहवाचि** शब्दों को **इक (इकण्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **समुहं समवैति सामूहिकः । सामाजिकः । सांसदिकः । सामवायिकः । गौष्ठिकः ।**

(ii) **पर्षद्** शब्द को **य (ण्य)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **पर्षदं समवैति पार्षद्यः ।**

(iii) **सेना** शब्द को **य (ण्य)** और **इक (इकण्)** प्रत्यय लगते है ।

उदा. **सैन्यः । सैनिकः ।**

16) द्वितीयान्त नाम को **चरति** अर्थ में **धर्म** और **अधर्म** शब्दों को **इक (इकण्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **धर्मं चरति धार्मिकः । आधर्मिकः ।**

17) प्रथमान्त नाम को **'अस्य पण्यम्'** अर्थ में **इक (इकण्)** प्रत्यय लगता है ।

(i) उदा. **अपूपा: पण्यम् अस्य आपूपिक: ।**

शाष्कुलिक: । मौदकिक: । लावणिक: । गान्धिक: ।

(ii) **किशरादि** शब्दों को **इक (इकट्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **किशरं पण्यमस्य किशरिक: । किशरिकी । तगरिक: । तगरिकी ।**

18) प्रथमान्त नाम को **'अस्य शिल्पम्'** अर्थ में **इक (इकण्)** प्रत्यय लगता है । (शिल्प यानी होशियारी से होने वाली क्रिया-विशेष)

उदा. **नृत्तं शिल्पमस्य नार्त्तिक: । गैतिक: । वादनिक: ।**

मृदङ्ग: (मृदङ्गवादनम्) **शिल्पमस्य मार्दङ्गिक: ।**

पाणविक: । मौरजिक: । वैणिक: ।

19) प्रथमान्त नाम को **'अस्य शीलम्'** अर्थ में **इक (इकण्)** प्रत्यय लगता है । (शीलम् प्राणिनां स्वभाव:)

(i) **अपूपा** (अपूप भक्षणम्) **शीलमस्य आपूपिक: ।**

मौदकिक: । ताम्बुलिक: । आदि

परुषवचनं शीलमस्य पारुषिक: । आक्रोशिक: ।

(ii) **अङ्** प्रत्ययान्त **स्था** धातु को एवं **छत्रादि** शब्दों को **अ (अञ्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **आस्था** [1]**शीलमस्य आस्थ: । व्यवस्था शीलमस्य वैयवस्थ: ।**

निष्ठा शीलमस्य नैष्ठ: । आदि

छत्रं (छादनक्रिया शीलमस्य) **छात्र: । छात्री ।**

चुरा शीलमस्य चौर: । चौरी ।

तप: शीलमस्य तापस: । तापसी । आदि

20) प्रथमान्त नाम को **अस्य प्रहरणम्** अर्थ में–

(i) **असि** आदि शब्दों को इक **(इकण्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **असि: प्रहरणमस्य आसिक: । प्रासिक: । चाक्रिक: । मौष्टिक: ।**

धानुष्क: । (पा. 18. नि.20.) **मौद्गरिक: । मौशलिक: ।**

टिप्पणी 1. उपसर्ग के बाद आकारान्त धातु को स्त्रीलिंग में अङ् कृत प्रत्यय लगता है ।
उदा. उपदा । प्रमा । आस्था । (पाठ 9 नि. 26)

(ii) **परश्वध** शब्द को **अ(अण्)** प्रत्यय विकल्प से लगता है ।

उदा. **परश्वधः** (पर्शुः) **प्रहरणमस्य पारश्वधः । पारश्वधिकः ।**

(iii) **शक्ति** और **यष्टि** को **ईक (टीकण्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **शक्तिः प्रहरणमस्य शाक्तीकः । शाक्तीकी ।**

याष्टीकः । याष्टीकी ।

(iv) **इष्टि** आदि शब्दों को **ईक (टीकण्)** प्रत्यय विकल्प से लगता है ।

उदा. **इष्टिः प्रहरणमस्य ऐष्टीकः । ऐष्टीकी । ऐष्टिकः ।**

इषा प्रहरणमस्य ऐषीकः । ऐषीकी । ऐषिकः ।

दाण्डीकः । दाण्डिकः । आदि

21) सप्तम्यन्त नाम को **नियुक्त** अर्थ में (i) **द्वार** आदि शब्दों को **इक (इकण्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **द्वारे नियुक्तः दौवारिकः । आपणिकः ।** (पा.18. नि.3.)

भाण्डशालिकः । आतरे नियुक्तः आतरिकः । आदि

(ii) **अगार अन्त वाले** शब्दों को **इक** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **भाण्डागारे नियुक्तः भाण्डागारिकः । भाण्डागारिका ।**

22) सप्तम्यान्त नाम को **वसति** अर्थ में (i) **निकट** आदि शब्दों को **इक (इकण्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **निकटे वसति नैकटिकः । वृक्षमूले वसति वार्क्षमूलिकः ।**

श्माशानिकः । आवसथिकः । आदि

(ii) **समानतीर्थ** शब्द को **य** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **समानतीर्थे वसति सतीर्थ्यः । तीर्थमिहगुरुः ।** समानस्य सः ।

23) पंचम्यन्त नाम को **अभिगमार्ह** अर्थ में **क्रोशशत, योजनशत** और **योजन** शब्दों को **इक (इकण्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. क्रोशशतादभिगम-मर्हति **क्रौशशतिकः । यौजनशतिकः ।**

यौजनिको मुनिः ।

24) द्वितीयान्त नाम को **याति** अर्थ में (i) **क्रोशशत, योजनशत** और **योजन** शब्दों को **इक (इकण्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **क्रोशशतं याति–गच्छति क्रौशशतिकः । यौजनशतिकः ।**

यौजनिको दूतः ।

(ii) **पथिन्** शब्द को **इकण्** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **पन्थानं याति पथिकः । पथिकी । पन्थानं नित्यं याति पान्थः ।**

पान्था (स्त्री.)–यहाँ ण प्रत्यय और पथिन् का पन्थ होता है ।

25) तृतीयान्त नाम को **शोभमान** अर्थ में **इक (इकण्)** प्रत्यय लगता है ।

(i) उदा. कर्णवेष्टकाभ्यां शोभते **कार्णवेष्टकिकं सुखम् ।**

वास्त्रयुगिक शरीरम् । औपानहिकौ पादौ ।

(ii) **कर्मन्** और **वेष** शब्दों को **य** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **कर्मणा शोभते कर्मण्यं शौर्यम् । वेषेण शोभते वेष्यो नटः ।**

26) कालवाचि तृतीयान्त नाम को **निर्वृत्त** अर्थ में इक **(इकण्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **अह्ना निर्वृत्तम् आह्निकम् । मासिकम् । सांवत्सरिकम्** । इत्यादि ।

27) द्वितीयान्त नाम को **भविष्य** और **भूतकाल** के अर्थ में **इक (इकण्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **मासं भावी मासिकः उत्सवः ।** (=महीने तक चलने वाला उत्सव ।)

मासं भूतः मासिकः व्याधिः । (=महीने से चल रही व्याधि ।)

28) द्वितीयान्त नाम को **भूत** अर्थ में

(i) (वय गम्य हो या न हो, दोनों में) **'वर्ष'** शब्द जिसके अंत में हो ऐसे द्विगु समास को प्राणी अर्थ में **'अ'** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **द्वे वर्षे भूतो द्विवर्षो दारकः । त्रिवर्षो वत्सः । द्विवर्षो नायकः ।**

(ii) **मास** शब्द जिसके अंत में हो ऐसे द्विगु समास को वय गम्य हो तो **'य'** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **द्वौ मासौ भूतः द्विमास्यः । त्रिमास्यो दारकः ।**

(iii) **मास** शब्द को वय गम्य हो तब **ईन (ईनञ्)** और **य** प्रत्यय लगते है ।

उदा. **मासं भूतो मासीनो मास्यो दारकः ।**

(iv) **षण्मास** शब्द को वय गम्य हो तब **य, यण्** और **इक (इकण्)** प्रत्यय लगते है ।

उदा. **षण्मासान्भूतः षण्मास्यः । षाण्मास्यः । षाण्मासिकः ।**

29) प्रथमान्त नाम को **अस्य प्रयोजनम्** 'अर्थ में' **इक (इकण्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **जिनमहः प्रयोजनमस्य जैनमहिकम् । दैपोत्सविकम् ।**

30) प्रथमान्त नाम को **अस्य प्रयोजनम्** अर्थ में

(i) **समय** शब्द को **इक (इकण्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **समयः प्राप्तोऽस्य सामायिकं कार्यम् ।**

(ii) **ऋतु** आदि शब्दों को **अ(अण्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **ऋतुः प्राप्तोऽस्य आर्तव पुष्पफलम् ।**

उपवस्ता प्राप्तोऽस्य औपवस्त्रम् । प्राशिता प्राप्तोऽस्य प्राशित्रम् ।

(iii) **काल** शब्द को **य** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **कालः प्राप्तोऽस्य काल्यस्तापसः । काल्या मेघाः ।**

31) प्रथमान्त नाम को **अस्य दीर्घः** अर्थ में काल शब्द को **इक (इकण्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **दीर्घः कालोऽस्य कालिकं ऋणम्, वैरम् । कालिकी संपत् ।**

32) प्रथमान्त नाम को आगे कहे जाने वाले **क्रीत** से लेकर **अर्हत्** तक के अर्थों में–

(i) **त्रिंशद्** और **विंशति** शब्दों को **अक (डक)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **त्रिंशता क्रीतम् त्रिंशकम् । विंशत्या क्रीतम् विंशकम् ।**

त्रिंशतर्महति त्रिंशकः । विंशकः ।

प्रत्यायान्त शब्द, कोई संज्ञा न हो तो (कापवादः)

(ii) **शत्, ति** और **ष्टि** अंतवाले संख्यावाचक शब्दों के सिवाय **शेष संख्यावाचक शब्दों** को, **इति** प्रत्ययान्त शब्दों को तथा **त्रिंशत्** और **विंशति** शब्दों को **क** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **द्वाभ्यां क्रीतम् द्विकम् । त्रिकम् । पञ्चकम् ।**

कतिभिः क्रीतम् कतिकम् । त्रिंशत्कम् । विंशतिकम् ।

(iii) केवल **शत** शब्द को **य** और **इक** प्रत्यय लगता है । प्रकृति से अतद्=भिन्न हो तो ।

उदा. **शतेन क्रीतम् शत्यम् । शतिकम् । शतर्महति शत्यः । शतिकः ।**

शत वर्षाणि मानमस्य शत्यः । शतिकः पुरुषः ।

33) **मूल्यवाचि** तृतीयान्त नाम को **क्रीत** अर्थ में यथाविहित **इक (इकण्)** आदि प्रत्यय लगते है ।

(i) **प्रस्थेन क्रीतम् प्रास्थिकम् । सप्तत्या क्रीतम् साप्ततिकम् । आशीतिकम् ।** इकण् प्रत्यय ।

निष्केण क्रीतम् नैष्किकम् । पादिकम् ।

(ii) **त्रिंशता क्रीतम् त्रिंशकम् । विंशकम् ।** डक प्रत्यय ।

(iii) **द्वाभ्याम् क्रीतम् द्विकम् । त्रिकम् ।** क प्रत्यय ।

(iv) **शतेन क्रीतम् शत्यम् ।** य प्रत्यय ।

(v) **शतिकम् ।** इक प्रत्यय ।

34) षष्ठ्यन्त नाम को **संयोगहेतु** और **उत्पात** (प्राणियों के शुभाशुभ सूचक महाभूत परिणाम) **हेतु** अर्थ में–

(i) यथाविहित प्रत्यय लगते है ।

(1) **शतस्य हेतु ईश्वरसंयोगः शत्यः शतिकः इश्वरसंयोगः ।** (य, इक प्रत्यय)

(2) **सोमग्रहणस्य हेतुः उत्पातः सौमग्रहणिको भूमिकम्पः ।** (इकण् प्रत्यय)

(3) **संग्रामस्य हेतुः उत्पातः सांग्रामिकम् इन्द्रधनुः ।**

(4) **सुभिक्षस्य हेतुः उत्पातः सौभिक्षिकः परिवेषः ।**

(5) **शतस्य हेतुः उत्पातः शत्यं शतिकं दक्षिणाक्षिस्पन्दनम् ।**

(ii) पृथिवी और सर्वभूमि शब्दों को **अञ्** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **पृथिव्या हेतुः संयोग उत्पातो वा पार्थिवः ।**
सर्वभूमेः संयोगः उत्पातो वा सार्वभौमः । (पा.18. नि.6.)

35) षष्ठ्यन्त नाम को **ईश** और **ज्ञात** अर्थ, में **पृथिवी** और **सर्वभूमि** शब्दों को **अञ्** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **पृथिव्या ईशः ज्ञातो वा पार्थिवः ।**
सर्वभूमेः ईशः ज्ञातो वा सार्वभौमः ।

36) षष्ठ्यन्त नाम को **ज्ञात** अर्थ में **लोक और सर्वलोक** शब्दों को यथाविहित **इक (इकण्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **लोकस्य ज्ञातः लौकिकः । सार्वलौकिकः ।** (पा.18. नि.6.)

37) प्रथमान्त नाम को **``उसका उतना प्रमाण''** अर्थ में यथाविहित प्रत्यय लगते है ।

(i) **प्रस्थो मानमस्य प्रास्थिको राशिः । द्रौणिकः ।**

(ii) **वर्षशतम् मानमस्य वार्षशतिको देवदत्तः । वार्षसहस्त्रिकः ।**

(iii) **पञ्चद्, दशद्**–इन दो शब्दों को, वर्ग अभिधेय हो तब **डत्** प्रत्ययान्त विकल्प से निपात होता है । विकल्प से **क** प्रत्यय होता है ।

उदा. **पञ्च मानमस्य वर्गस्य पञ्चद् वर्गः । पञ्चको वर्गः ।**

दश मानमस्य वर्गस्य दशद् वर्गः । दशको वर्गः ।

(iv) यदि संघ, सूत्र और पाठ का मान हो तो, संख्यावाचि शब्दों को यथाविहित प्रत्यय लगते है ।

उदा. **पञ्च गावः मानमस्य पञ्चकः संघः । सप्तकः ।**

अष्टा अध्याया मानमस्य अष्टकं पाणिनीयं सूत्रम् ।

शतकं निदानम् । (निदान-मूलकारण, निदान ग्रन्थ ।)

अष्टौ रूपाणि-वारा मानमस्य अष्टकः पाठोऽधीतः ।

(v) संख्या वाचि शब्दों को **स्तोम** (ऋगादीनां समूहः स्तोमः) अभिधेय हो तब, **अ (डट्)** प्रत्यय लगता है ।

(ऋज्यते स्तूयते अनया इति ऋक्) (स्त्री.)=जिसके द्वारा स्तुति की जाय, श्लोक)

उदा. **पञ्चदशः मानमस्य पञ्चदशस्तोमः ।**

विंशतिः मानमस्य विशः । पञ्चविंश । त्रिंशः ।

38) द्वितीयान्त नाम को **अर्हत्** अर्थ में–

(i) यथाविहित प्रत्यय लगते है ।

उदा. **श्वेतच्छत्रमर्हति श्वैतच्छत्रिकः । वैषिकः । वास्त्रिकः । वास्त्रयुगिकः । अभिषेचनमर्हति आभिषेचनिकः । बालीवर्दिकः । चामरिकः । शत्यः । शतिकः ।**

(ii) **दण्डादि** शब्दों को **य** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **दण्डमर्हति दण्ड्यः । मुशल्यः ।**

(iii) **यज्ञ** को **इय** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **यज्ञमर्हति यज्ञियो देशः ।** यजमानः । (यज्ञ करनेवाला)

(iv) **पात्र** को **य** और **इय**–दो प्रत्यय लगते है ।

उदा. **पात्रमर्हति पात्र्यः । पात्रियः ।**

यै भुक्ते पात्रं संस्कारेण शुध्यति ते पात्रमर्हन्तीति **पात्र्याः ।** (=जिनके द्वारा (पात्र में) भोजन करने पर भी पात्र संस्कार के द्वारा (अग्नी से) शुद्ध किया जाता है, उन मनुष्यों को पात्र्य कहते है ।

(v) छेदादि को नित्यमर्हति अर्थ में यथाविहित प्रत्यय लगते है ।

उदा. **छेदम् नित्यमर्हति छैदिकः । भैदिकः ।**

शब्द

अपमित्य (सं.भू.कृ.)=वापस देने के लिए ।
अपूप (पुं.)=पुडला ।
अभ्री (स्त्री.)=लकडी का कोदाला ।
आतर (पुं.)=नदी आदि का आरा
ईश (पुं.)=पति, स्वामी, राजा ।
इष्टे इति ।
उच्चतः (अ.)=ऊपर से ।
उत्क (वि.)=उत्कंठित ऊंचा मान वाला ।
उपवस्तृ (वि.)=उपवासी ।
ऊर्मि (स्त्री.)=कल्लोल ।
किशर (नपुं.)=एक सुगंधि द्रव्य ।
तगर (नपुं.)=एक सुगंधि द्रव्य ।
तल्प (नपुं.)=शय्या, गद्दी ।
द्रोण (पुं./नपुं.)=बत्तीस शेर का वजन, एक खारी का सौलवां भाग ।
परश्वध (पुं.)=परशु, फरसी, कुल्हाडा ।
प्रस्थ (पुं.)=एक शेर का माप ।
प्राशितृ (वि.)=भक्षक, खानेवाला ।
मीन (पुं.)=मछली।
रोधस् (नपुं.)=कीनारा, तट ।
वाह (पुं.)=वहन करना, उठाना ।
वेष (पुं.)=नेपथ्य, पहनावा ।
मतांतर से वेश, वेश्या, नर्तकी ।
वैरङ्गिक (वि.)=राग रहित, वैरागी ।
शष्कुलि (स्त्री.)=जलेबी ।
श्लथ (वि.)=ढीला, थका हुआ ।
सभर्तृका (स्त्री.)=शोक्या, सपत्नी ।
सौदामनी (स्त्री.)=बिजली ।

संस्कृत वाक्य

द्व्याश्रयमहाकाव्ये सप्तदशः सर्गः ।

1. सैन्यात्सौदामनीलोला वर्णासातो वनेष्वयुः ।
नार्योऽथ पुष्पाण्युच्चेतुमुरस्तः कृत्य वल्लभान् ॥1॥

2. **आक्षिकीवाक्षिकादाक्षिकं लिप्सुः पुष्पमुच्चतः ।
काप्युत्क्षिपन्ती दोर्मूलं कौतुकादीक्षिताऽऽभ्रिकैः ॥4॥**

टिप्पणी : 1. **सौदामनीलोला** सौदामनी-विद्युत् तद्वद् लोलाः ।
वर्णासातः वर्णासया एकदिक्केषु **वनेषु** ।

4. **आक्षिकी** अक्षैः–पाशकैर्जयन्ती स्त्री । **इव** यथा **आक्षिकाद्** अक्षै र्दीव्यतः ।
आक्षिकम् अक्षै र्जितं पणं **लिप्सुः** लब्धुमिच्छुः स्यात् ।
कापि कामिनी **दोर्मूलमुत्क्षिपन्ती** ऊर्ध्वं नयन्ती ।
कौतुकादीक्षिता । आभ्रीकैः अभ्र्या कुद्दालिकया खनद्भिः ।

3. कस्यांचित् प्रेयसो जातपुष्पोच्चयश्रमाम्भसि ।
अनाविकाऽनौडुपिक्यघटिकेव ममज्ज दृक् ।।7।।

4. आम्भसिकानौजसिको मरुदप्रातिलोमिकः ।
अमूः साहसिको भूत्वा समस्प्राक्षीच्छ्रमश्लथाः ।।16।।

5. पत्या नागरिकेणाऽन्याऽन्वीयते स्म वने ह्यसौ ।
मा भैषीद् भीषणेऽस्मिन् पाक्षिक–मात्स्यिक–मार्गिकैः ।।19।।

6. पारदारिक ! साभर्तृकिकाऽलं ते स्त्रजाऽनया ।
भूषय प्रतिपथिकां तामितीट् चिक्षिपेऽन्यया ।।24।।

7. सौखशय्यिक्यभूत् पत्युः शय्यां निर्माय पल्लवैः ।
प्राभूतिक-वैचित्रिक-सौवस्तिकस्य काचन ।।27।।

8. ताः पारश्वध-याष्टीकाऽस्त–रोधः–कण्टकां नदीम् ।
पारश्वधिक-शाक्तिक-कृतरक्षास्ततोऽविशन् ।।37।।

9. क्ष्मां नावयज्ञिकीं पाक्यज्ञिकीं च द्विजा यथा ।
अहतेच्छा आतरिकैर्नार्योऽगाहन्त निम्नगाम् ।।43।।

टिप्पणी

7. **कास्यांचित्** प्रेयस्याम् **जातपुष्पोच्चयश्रमाम्भसि** जातं पुष्पोच्चयश्रमाम्भः यस्यां तस्याम् । **प्रेयसः दृक् ममज्ज** । **इव** यथा । **अनाविका अनौडुपिकी अघटिका** स्त्री मज्जति तथा ।

16. अम्भसा वर्तत **आम्भसिकः** सजलकणः स चासौ न ओजसाबलेन वर्तत **अनौजसिकश्च** मृदुः स, **मरुद्** वातः । न प्रतिलोमं वर्ततेऽप्रातिलोमिकः–अनुकूलः । **अमूः** कामिनीः, **श्रमश्लथाः** पुष्पोच्चयखेदेन निःसहाः ।

19. **नागरिकेण** नगरं रक्षता-तलारेण **पत्या** । **पाक्षिकमात्स्यिक–मार्गिकैः** पक्षिणो मत्स्यान्मृगांश्च घ्नद्भि-र्लुब्धक–धीवरैः कृत्वा **भीषणे** ।

24. **अनया ते स्त्रजा** मम **अलम्**-सृतम्, किन्तु **अनया स्त्रजा** कृत्वा **प्रतिपथिकां**–कुलटाम् तां स्वप्रियाम् **भूषय** ।

27. **पत्युः सौखशय्यिकी** हे भर्तः ! सुखकारिणी शय्या इति पप्रच्छ । **प्राभूतिकवैचित्रिक-सौवस्तिकस्य** प्रभूतं विचित्रं स्वस्ति च-शुभं च ब्रुवाणस्य ।

37. **ताः** नार्यः **नदीम् अविशन्** । **पारश्वधयाष्टीकाऽस्त-रोधः कण्टकाम्** पारश्वधिकैः याष्टीकैश्चौत्क्षिप्ततटकण्टकाम् ।

43. आतरिकैः आतरे नद्यादितीर्थे नियुक्तैः नरैः **अहतेच्छाः** ।

10. नदी यौजनिकी क्रौशाद् यौजनाच्च शतिक्यसौ ।
आत्मतुल्ययेवोत्का सैन्यान्सस्वञ्च ऊर्मिभिः ।।51।।

11. एका वेष्यं पतिं स्त्रानस्पष्टवेश्यानखव्रणम् ।
अकर्मण्येति जल्पन्ती कर्मण्या कमलैरहन् ।।60।।

12. मीनान्मासीनषण्मास्यानभि षाण्मासिके बके ।
छन्नस्थे त्वद्वदेषोस्तीत्येकयोचे शठः पतिः ।।68।।

13. ततस्ता नार्यः स्वधाम अगमन् । अथ रविः प्रतीचीमगमत् ।
द्यौः सामयिकरागेण लतेवाऽऽर्तवपल्लवैः ।
प्राशित्री तिमिरैः काल्यैरभवत्षट्पदैरिव ।।74।।

14. त्रिंशत्कं विंशतिकं वा बहुकं कतिकं न्विति ।
मुग्धाभिस्तर्कितं सांध्यभा–कौसुम्भं प्रतीच्यधात् ।।76।।

15. पञ्चका नु शकुनयः क्वाप्युड्डीय तमांस्ययुः ।
इन्दौ निदधति व्योम्नि विंशतिं त्रिंशतं करान् ।।102।।

16. छैदिको भैदिकः शीर्षछेद्यः किं न विधुंतुदः ।
इति वैरङ्गिकोप्यूचे विधोरानन्दितः करैः ।।108।।

टिप्पणी

51. **यौजनिकी** तीर्थत्वाद् योजनादभिमुखगमनमर्हन्ती तथा क्रौशशतिकी यौजनशतिकी च **असौ नदी । आत्मतुल्यतया** स्वसादृश्येन **उत्केव** उत्कण्ठिता इव । नद्या सह तुल्यता च सैन्यानामस्ति-सैन्या अपि दिग्विजयाद्यर्थं योजनं क्रोशशतं योजनशतं च यान्ति इति यौजनिकाः क्रौशशतिका यौजनशतिकाश्च शब्दसाम्येन सन्ति ।

60. **वेष्यं** वेषेण–नेपथ्येन शोभमानम् । **अकर्मण्य ? दुराचार ? इति जल्पन्ती, कर्मण्या** कर्मणा शोभमाना **एका स्त्री पतिं कमलैरहन् ।**

68. **अभि** लक्ष्यीकृत्य । **षाण्मासिके बके छन्नस्थे** छन्नं तिष्ठति सति ।

74. **द्यौः व्योमसामायिकरागेण–**सन्ध्यारागेण (उपलक्षिता) **अभवत् । आर्तवपल्लवैर्लता इव** । तथा **काल्यैः तिमिरैः द्यौः प्राशीत्री** किचिद्व्याप्ता **अभवत् । काल्यैः षट्पदैर्लता इव ।**

76. त्रिंशता विंशत्या बहुभिः कतिभिर्वा रूपकादिभिः क्रीतमेतदिति **मुग्धाभिस्तर्कितम् । सान्ध्यभा** सन्ध्याराग एव **कौसुम्भं** वस्त्रं **प्रतीचीम् अधात् ।**

102. **पञ्चका नु** इव **शकुनयः क्वापि उड्डीय यान्ति** तथा ।

पाठ-15

वहति आदि अर्थ

1) यहाँ से आगे आनेवाले अर्थों में—**इय** प्रत्यय के पहले अपवाद सिवाय **य** प्रत्यय लगता है। (पा. 15. नि. 18.1 देखे)

2) द्वितीयान्त **रथ, युग** और **प्रासङ्ग** शब्दों को **य** प्रत्यय लगता है।
उदा. **रथं वहति रथ्यः। द्वौ रथौ वहति द्विरथ्यः। युगं वहति युग्यः।**
प्रसज्यते इति प्रासङ्गः। यत्काष्ठं वत्सानां दमनकाले स्कन्ध आसज्यते तत्। **प्रासङ्गं वहति प्रासङ्ग्यः।**

3) **धुर्** शब्द को **य** और **एय (एयण्)** प्रत्यय लगते है।
उदा. **धुरं वहति धुर्यः। धौरेयः।** (अन्य मत से धुरीणः।)

4) **हल** और **सीर** शब्दों को **इक (इकण्)** प्रत्यय लगता है।
उदा. **हलं वहति हालिकः। सीरं वहति सैरिकः।**

5) **शकट** शब्द को **अण्** प्रत्यय लगता है।
उदा. **शकटं वहति शाकटो गौः।**

विध्यति अनन्येन (आत्मना) अर्थ में

6) द्वितीयान्त नाम को **य** प्रत्यय लगता है।
उदा. **पादौ विध्यन्ति पद्याः शर्कराः।**
उरू विध्यन्ति उरव्याः कण्टकाः। (पा.18. नि. 19)
उरो विध्यन्ति उरस्या वाताः।
शर्करादयस्तु न अन्येन करणेन विध्यन्ति अपितु आत्मना।

'लब्धरि' अर्थ में

7) द्वितीयान्त **धन** और **गण** शब्दों को **य** प्रत्यय लगता है।
उदा. **धनं लब्धा धन्यः। गणं लब्धा गण्यः।**

अर्थ विशेष में

8) **हृद्य** आदि शब्द इस प्रकार से सिद्ध होते है।
हृदयस्य प्रियं हृद्यमौषधम्। हृद्यो देशः।
हृदयस्य बन्धनः हृद्यो वशीकरणमन्त्रः।
पदमस्मिन्दृश्यम् **पद्यः** कर्दमः।
तुलया संमितं **तुल्यं** भाण्डम्। तुल्यः सदृशः।

मूलमेषामुत्पाट्यं **मूल्या** मुद्गाः । मूलेन (उत्पत्तिकारणेन) आनाम्यं प्राप्यम् **मूल्यम् ।** (=कीमत) ।

मूलेन उपादानेन समः **मूल्य** पटः । उपादानेन समानफलः ।

वशं गतः **वश्यो** गौः । पथोऽनपेतं **पथ्यम्** ओदनादि ।

वयसा तुल्यो **वयस्यः** सखा ।

धेनुरेव **धेनुष्या** । (आऋण प्रदानात् दोहार्थं धेनुर्दीयते सा ।)

गृहपतिना संयुक्त **गार्हपत्यः** । (एवं नामाकश्चिदग्निः)

जनीं (वधूम्) वहन्ति **जन्याः** । (जायातुः वरास्या उच्यन्ते ।)

धर्मेण प्राप्यम् **धर्म्यम्** सुखम् ।

धर्मादनपेतं **धर्म्यम्** । (यद् धर्ममनुवर्तते ।)

'तार्य और वध्य' अर्थ में

9) तृतीयान्त **नौ** और **विष** शब्दों को **तार्य** और **वध्य** अर्थ में क्रमशः **य** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **नावा तार्यम् नाव्यमुदकम् । नाव्या नदी ।**

विषेण वध्यो (वधार्हो) **विष्यः ।**

'अनपेत (युक्त)' अर्थ में

10) पंचम्यन्त **न्याय** और **अर्थ** शब्दों को अनपेत अर्थ में **य** प्रत्यय लगता है । (अनपेत (वि.)=साथ रहा हुआ, अनुसरण करनेवाला ।)

उदा. न्यायादनपेतम् **न्याय्यम्** । (=न्यायानुसारी)

अर्थादनपेतम् **अर्थ्यम्** ।

साधु (साधुः प्रवीणो योग्य उपकारको वा) अर्थ में

11) सप्तम्यन्त नाम को **य** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **कर्मणि साधुः कर्मण्यः । सभायां सभ्यः ।**

शरणे साधुः (योग्यः) **शरण्यः ।**

12) **पथिन्, अतिथि, वसति** और **स्वपति** शब्दों को **एय (एयण्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **पथि साधु पाथेयम् । आतिथेयम् । वासतेयम् । स्वापतेयम् ।**

13) **भक्त** शब्द को **य (ण्य)** और **अ (ण)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. भक्ते साधुः **भाक्तः** शालिः । **भक्तास्तण्डुलाः ।**

(**भक्त** (नपुं.)=ओदन, चावल, भात, भोजन, अशन ।

शालि (पुं.)=चावल ।)

14) **पर्षद** शब्द को (अन्य मत से परिषद् शब्द को) **य (ण्य)** और **अ (ण)** प्रत्यय लगते है ।

उदा. **पर्षदि साधुः पार्षद्यः । पार्षदः । पारिषद्यः । पारिषदः ।**

15) **सर्वजन** शब्द को **य (ण्य)** और **ईन (ईनञ्)** प्रत्यय लगते है ।

उदा. **सार्वजन्यः । सार्वजनीनः ।**

16) **प्रतिजन** आदि शब्दों को **इन (इनञ्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. प्रतिजने साधुः **प्रातिजनीनः । आनुजनीनः ।**

इदंयुगे साधुः **ऐदंयुगीनः ।**

17) **कथा** आदि शब्दों को **इक (इकण्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **कथायां साधुः काथिकः । वैकथिकः ।**

18) (i) **नियम 28 तक यहाँ से** आगे आने वाले अर्थों में अपवाद सिवाय **ईय** प्रत्यय लगता है ।

(ii) **हविर्भेद, अन्नभेद** और **अपूपादि** शब्दों को विकल्प से **य** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **हविर्भेद्यः । अन्नभेद्यः । अपूप्यः ।**

(iii) **उ**वर्णान्त और **युग** आदि शब्दों को **य** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **भान्व्यः । धेन्व्यः । युग्यः ।**

'हित' अर्थ में (हित उपकारकः)

19) चतुर्थ्यन्त नाम को यथाविहित प्रत्यय लगते है ।

उदा. 1) **वत्सेभ्यो हितः वत्सीयः । करभीयः । पित्रीयः । मात्रीयः ।**

2) **आमिक्ष्यः आमिक्षीयः । ओदन्यः ओदनीयः ।**

अपूप्यः अपूपीयः ।

3) **युग्यः । हविष्यः । आदि**

(आमिक्षा (स्त्री.)=एक प्रकार की बलि । हविस् (नपुं.)=बलि ।)

20) **प्राण्यङ्ग, रथ, खल, तिल, यव, तृष, ब्रह्म, माष** को **य** प्रत्यय लगता है ।

उदा. प्राण्यङ्ग–दन्तेभ्यो हितम् **दन्त्यम् । कर्ण्यम् । चक्षुष्यम् । कण्ठ्यम् । औष्ठ्यम् । नाभ्यम् ।**

रथाय हिता **रथ्या** भूमिः । खलाय हितम् **खल्यम्** अग्निरक्षणम् ।

तिलेभ्यो हितः **तिल्यो** वायुः । यवेभ्यो हितः **यव्यस्तुषारः** ।

वृषाय हितम् **वृष्यम्** क्षीरपाणम् । ब्रह्मणे हितः **ब्रह्मण्यो** देशः ।
माषेभ्यो हितः **माष्यो** वातः ।

21) **अवि** और **अज** शब्दों को **थ्य (थ्यप्)** प्रत्यय लगता है ।
अवि (पुं.)=भेड । (स्त्री)=भेडी ।
उदा. अविभ्यो हितम् **अविथ्यम् ।** अजेभ्यो हितम् **अजथ्यम् ।**
पकारः पुंवद्भावार्थः– अजाभ्यो हिता **अजथ्या** यूतिः ।

22) भोग (पुं.) (=उपयोग में लेना) उत्तरपद हो ऐसे शब्दों की और **आत्मन्** शब्द को **ईन** प्रत्यय लगता है ।
उदा. मातृभोगाय हितः **मातृभोगीणः** । (=माता के उपयोग में आये ऐसा हितकारी पदार्थ) **पितृभोगीणः** । आत्मने हितः **आत्मनीनः** ।

23) कर्मधारय समास में **पञ्च, सर्व, विश्व** शब्दों के बाद रहे **जन** शब्द को **ईन** प्रत्यय लगता है ।
उदा. पञ्चजनेभ्य पञ्जनाय वा हितः **पञ्चजनीनः । सर्वजनीनः ।**
विश्वजनीनः । (पाञ्चजन (पुं.)=रथकार के साथ चार वर्ण) ।

24) **महत्** और **सर्व** के बाद रहे **जन** शब्द को **इक (इकण्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. महते जनाय हितः **माहाजनिकः ।**
सर्वस्मै जनाय हितः **सार्वजनिकः ।**

25) **सर्व** शब्द को विकल्प से **अ (ण)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. सर्वस्मै हितः **सार्वः ।** विकल्प से **सर्वीयः ।**

'तदर्थ' अर्थ में

26) चतुर्थ्यन्त नाम को **परिणामी–कारण द्रव्य,** अभिधेय हो तब यथाविहित प्रत्यय लगते है ।
उदा. अङ्गारेभ्य इमानि **अङ्गारीयाणि** काष्ठानि । अङ्गारार्थानीत्यर्थः।
ये लकडे अंगारे के लिए है इसलिए तदर्थ है । लकडे के अंगारे होते है इसलिए लकडे (काष्ठ) परिणामी है ।
शङ्कवे इदम् **शङ्कव्यं** दारु ।
आमिक्षायै इदम् **आमिक्ष्यम् । आमिक्षीयं** दधि ।
ओदन्या **ओदनीयास्तण्डुलाः** । अपूप्यम् **अपूपीयम्** पिष्टम् ।

27) चतुर्थ्यन्त नाम के परिणामि–कारण **द्रव्य, चर्म** अभिधेय हो तब, **अञ्** प्रत्यय लगता है ।
उदा. वर्ध्रायेदं **वार्ध्रं** चर्म ।

28) **ऋषभ** और **उपानह्** शब्दों को **य (ञ्य)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **आर्षभ्यो** वत्सः । **औपनह्यो** मुञ्जः ।

'क्रियारूप अर्ह' अर्थ में

29) षष्ठ्यन्त नाम को **वत्** प्रत्यय लगता है ।

उदा. राज्ञोऽर्ह **राजवद्** वृत्त राज्ञः ।

(राजा का आचरण राजा के योग्य है ।)

राजवद् अवर्तत भरतः । **कुलीनवत् । साधुवत् ।**

क्रियारूप इव (सादृश्य) अर्थ में

30) स्याद्यन्त नाम को **वत्** प्रत्यय लगता है ।

उदा. क्षत्रिया इव **क्षत्रियवद्युध्यन्ते** ब्राह्मणाः ।

अश्ववद्धावति चैत्रः । देवमिव **देववत्** पश्यन्ति मुनिम् ।

साधुनेव **साधुवदाचरितं** मैत्रेण ।

ब्राह्मणायेव **ब्राह्मणवद्दत्तं** क्षत्रियाय ।

'इव (सादृश्य)' अर्थ में

31) सप्तम्यन्त नाम को **वत्** प्रत्यय लगता है ।

उदा. मथुरायामिव **मथुरावत्** पाटलिपुत्रे प्रासादाः ।

31) षष्ठ्यन्त नाम को **वत्** प्रत्यय लगता है ।

उदा. चैत्रस्येव **चैत्रवद्** मैत्रस्य गावः ।

'भाव' अर्थ में

33) i) षष्ठ्यन्त नाम को **त्व** और **त (तल्)** प्रत्यय लगता है ।

त (तल्) प्रत्यय लित होने के कारण अ का आ होता है ।

भाव का सामान्य से 'पना' ऐसा अर्थ होता है ।

भवतोऽस्मात् अभिधान प्रत्ययौ इति भावः—शब्दस्य प्रवृत्ति निमित्तं द्रव्यसंसर्गी भेदको गुणः । अर्थात् द्रव्य का नाम रखने में कारणभूत और द्रव्य की पहिचान में 'कारणभूत द्रव्य में रहा जो विशेष गुण है वह भाव कहलाता है ।

उदा. गोः भावः **गोत्वम् । गोता । अश्वत्वम् । अश्वता ।**

शुक्लत्वम् । शुक्लता ।

स्त्रीत्वम् । स्त्रीता । स्त्रैणम् । पुंस्त्वम् । पुंस्ता । पौंस्नम् ।

ii) पृथु आदि शब्दों को **इमन्** तथा **त्व**, **तल** प्रत्यय विकल्प से लगते है ।

उदा. प्रथोर्भावः **प्रथिमा । पृथुत्वम् । पृथुता । पार्थवम्**-अण् ।
मृदोर्भावः **म्रदिमा । मृदुत्वम् । मृदुता । मार्दवम् ।** नियम 42
बहुलस्य भावः **बंहिमा । बहुलत्वम् । बहुलता । बाहुल्यम्** ।– ट्यण् प्रत्यय (नि. 33 iii)
वत्सस्य भावः **वत्सिमा । वत्सत्वम् । वत्सता । वात्सम् ।** अञ् प्रत्यय नि.40. इत्यादि ।

iii) वर्ण विशेषवाचि शब्दों को और **दृढ** आदि शब्दों को **य (ट्यण्), इम (इमन्)**, तथा **त्व, तल्**–प्रत्यय विकल्प से लगते है ।

उदा. शुक्लस्य भावः **शौक्ल्यम् । शुक्लिमा । शुक्लत्वम् । शुक्लता ।**
कृष्णस्य भावः **कार्ष्ण्यम् । कृष्णिमा । कृष्णत्वम् । कृष्णता ।**
शितेर्भावः **शैत्यम् । शितिमा । शितित्वम् । शितिता । शैतम् ।** अण् प्रत्यय–नि. 42 इत्यादि ।
दृढस्य भावः **दार्ढ्यम् । द्रढिमा । दृढत्वम् । दृढता ।**
विमतेर्भाव **वैमत्यम् । विमतिमा । विमतित्वम् । विमतिता । वैमतम् ।** अण् प्रत्यय इत्यादि ।

'भाव और कर्म (क्रिया)' अर्थ में

34) **पत्यन्त** शब्दों को, **राजान्त** शब्दों को, **गुणाङ्ग** (जिन शब्दों की प्रवृत्ति में गुण, अंग यानी हेतुभूत हो) शब्दों को और राजादि शब्दों को **य (ट्यण्)** तथा **त्व, तल** प्रत्यय लगता है ।

उदा. अधिपतेर्भावः कर्म वा **आधिपत्यम् । अधिपतित्वम् । अधिपतिता ।**
अधिराजस्य भावः कर्म वा **आधिराज्यम् । अधिराज्यत्वम् । अधिराजता । मौढ्यम् । मूढत्वम् । मूढता । मौखर्यम् । वैदुष्यम् । राज्यम् । राजत्वम् । राजता । काव्यम् । कवित्वम् । कविता ।** इत्यादि
अबुधस्य भावः कर्म वा **आबुध्यम् ।** अचतुरस्य **आचातुर्यम् ।**
(**अधिपति** (पुं.) अधिकः पतिः अधिपतिः ।
अधिराज (पुं.)=अधिको राजा अधिराजः ।)

35) **अर्हत्** शब्द को **य (ट्यण्)** प्रत्यय लगता है और **त्** का **न्त्** होता है, तथा **त्व, तल** प्रत्यय लगते है ।

उदा. अर्हतो भावः कर्म वा **आर्हन्त्यम्** ।

टित् होने से स्त्रीलिंग में इ(ङी) प्रत्यय लगता है । **आर्हन्ती ।**

अर्हत्त्वम् । अर्हत्ता ।

36) **सहाय** शब्द को **य (ट्यण्)** तथा **त्व, तल्** प्रत्यय विकल्प से लगते है ।

उदा. सहायस्य भावः कर्म वा **साहाय्यम्** । अकञ् प्रत्यय नि.43

सहायत्वम् । सहायता ।

37) **सखि, वणिज्** और **दूत** को **य** तथा **त्व, तल्** प्रत्यय लगते है ।

उदा. सख्युर्भावः कर्म वा **सख्यम् । सखित्वम् । सखिता ।**

वणिज्या । वणिज्यम् । वणिक्त्वम् । वणिक्ता ।

दूत्यम् । दूतत्वम् । दूतता ।

वाणिज्यम् । दौत्यम् । ट्यण् प्रत्यय नि. 34 ।

38) **स्तेन** शब्द को **य** प्रत्यय लगता है और **न** का लोप होता है । तथा **त्व तल्** प्रत्यय लगते है । स्तेनस्य भावः कर्म वा **स्तेयम् । स्तेनत्वम् । स्तेनता । स्तैन्यम् ।** ट्यण् प्रत्यय नि.34 ।

39) **कपि** और **ज्ञाति** को **एय (एयण्)** तथा **त्व, तल्** प्रत्यय लगते है ।

उदा. **कापेयम् । कपित्वम् । कपिता । ज्ञातेयम् । ज्ञातित्वम् । ज्ञातिता ।**

40) **प्राणी जाति** शब्दों को और **वयवाचि** शब्दों को **अ(अञ्)** तथा **त्व, तल्** प्रत्यय लगते है ।

उदा. **आश्वम् । अश्वत्वम् । अश्वता । गार्दभम् । माहिषम् ।**

हस्तिनो हास्तम् । पा. 18. नि. 13

कौमारम् । कुमारत्वम् । कुमारता । कैशोरम् । शावम् ।

41) **युवादि** शब्दों को **अ(अण्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. युनो युवतेर्वा भावः कर्म वा **यौवनम् । युवत्वम् । युवता ।**

यौवनिका । अकञ् प्रत्यय नि. 44.

स्थविरम् । स्थविरत्वम् । स्थविरता । इत्यादि

स्थविर्यम् । श्रामण्यम् । पैशुन्यम् । ट्यण् प्रत्यय नि. 34 ।

42) लघु स्वर आदि में हो ऐसे **इ** वर्णान्त, **उ** वर्णान्त और **ऋ**वर्णान्त शब्दों को अ **(अण्)** तथा **त्व**, **तल्** प्रत्यय लगते है ।

उदा. शुचेर्भावः कर्म वा **शौचम् । शुचित्वम् । शुचिता ।**

शकुनेः **शाकुनम्** । मुनेर्भावः कर्म वा **मौनम्** । हरितक्या **हारितकम्** ।

तितउन**स्तैतवम्** । पृथो: **पार्थवम्** । पटो: **पाटवम् । लाघवम् ।**
वध्वा **वाधवम्** । पितु: **पैत्रम् ।**

43) तीन या उससे अधिक स्वरवाले शब्दों में **य्** उपान्त्य हो और **य्** के पहले गुरु स्वर हो ऐसे शब्दों को **अक (अकञ्)** तथा **त्व**, **तल्** प्रत्यय लगते है ।
उदा. **रामणीयकम् । रमयीयत्वम् । रमणीयता ।**
दार्शनीयकम् । कामनीयकम् । औपाध्यायकम् । आचार्यकम् ।

44) **चौरादि** शब्दों को **अक (अकञ्)** तथा **त्व**, **तल्** प्रत्यय लगते है ।
उदा. चौरस्य भाव: कर्म वा **चौरिका** । (स्त्री), **चौरकम्** (नपुं.)
धौर्तिका (स्त्री) । **धौर्तकम्** (नपुं.) । **मानोज्ञकम्** (नपुं.) ।
प्रैयरूपकम् (नपुं.) **चौरत्वम्** । **चोरता । चौर्यम् । धौर्त्यम् ।**
ट्यण् प्रत्यय–नि 34 ।

'क्षेत्र' अर्थ में

45) i) षष्ठ्यन्त नाम को **शाकट** और **शाकिन** प्रत्यय लगते है ।
उदा. इक्षुणां क्षेत्रम्–**इक्षुशाकटम् । इक्षुशाकिनम् ।**
मूलकशाकटम् । मूलकशाकिनम् ।
ii) धान्य वाचि शब्दों को **इन (इनञ्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. कुलत्थानां क्षेत्रम्-**कौलत्थीनम् । मौद्गीनम् । प्रैयङ्गवीणम् ।**
नैवारीणम् । कौद्रवीणम् ।

'मूल' अर्थ में

46) i) **कर्णा**दि शब्दों को **जाह** प्रत्यय लगता है ।
उदा. कर्णस्य मूलम् **कर्णजाहम् । अक्षिजाहम् ।** इत्यादि ।
ii) **पक्ष** शब्द को **ति** प्रत्यय लगता है ।
उदा. पक्षस्य मूलम् **पक्षति: प्रतिपत्तिथि: ।**

'सह' अर्थ में

47) i) षष्ठ्यन्त **हिम** शब्दों को **एलु** प्रत्यय लगता है ।
उदा. हिमस्य सह:–हिमं सहमान: **हिमेलु: ।**
ii) **बल** और **वात** शब्दों को **ऊल** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **बलूल: । वातूल: ।**

'असह' अर्थ में

48) **शीत, उष्ण** और **तृप्र** शब्दों को **आलु** प्रत्यय लगता है ।

उदा. शीतस्य असहः–शीतमसहमानः **शीतालुः । उष्णालुः । तृप्रालुः ।**

'दृश्यतेऽस्मिन्' अर्थ में

49) प्रथमान्त **यथामुख** और **संमुख** शब्दों को **ईन** प्रत्यय लगता है ।

उदा. यथामुखं दृश्यतेऽस्मिन् **यथामुखीनः** । आदर्शादिः ।
(मुखस्य अनतिक्रमेण यथामुखम् ।)
संमुखं दृश्यते=ऽस्मिन् **संमुखीनः ।** आदर्शादिः ।
(संगतं मुखम् संमुखम् ।)

'व्याप्नोति' अर्थ में

50) (i) सर्व आदि में हो जिसके ऐसे द्वितीयान्त **पथिन्, अङ्ग, कर्म, पत्र, पात्र** और **शराव** शब्दों को **ईन** प्रत्यय लगता है ।

उदा. सर्वपथं व्याप्तोति **सर्वपथीनो रथः** ।
सर्वपथान् व्याप्नोति **सर्वपथीनमुदकम्** ।
सर्वाङ्गाणि व्याप्नोति **सर्वाङ्गीणस्तापः** ।
सर्वकर्माणि व्याप्नोति **सर्वकर्मीणः** पुरुषः ।
सर्वपत्राणि व्याप्नोति **सर्वपत्रीणः** सारथिः । पत्रम्-वाहनम् ।
सर्वपात्रम् व्याप्नोति **सर्वपात्रीणः** ओदनः । पात्रम्-भाजनम् ।
सर्वशरावाणि व्याप्नोति **सर्वशरावीणः**, ओदनः ।

ii) **आप्रपद** शब्द को **ईन** प्रत्यय लगता है ।

उदा. आप्रपदं व्याप्नोति **आप्रपदीनः** पटः । (=पैर के अग्रभाग तक लंबा कपडा ।) आ प्रपदात्–आप्रपदम् ।

'गामिन्' अर्थ में

51) i) द्वितीयान्त **यथाकाम, अनुकाम** और **अत्यन्त** शब्दों को **ईन** प्रत्यय लगता है ।

उदा. यथाकामं गामी **यथाकामीनः । अनुकामीनः ।** यथेच्छ गामीत्यर्थः ।
अत्यन्त गामी **अत्यन्तीनः** । भ्रशं गन्तेत्यर्थः ।

ii) **पारावर, पार, अवार** और **अवारपार** शब्दों को **ईन** प्रत्यय लगता है ।

उदा. पारावारं गामी **पारावारीणः** ।

पारं गामी **पारीणः । अवारीणः । अवारपारीणः ।**

'अलं गामिन्' अर्थ में

52) i) **अनुगु** शब्द को **ईन** प्रत्यय लगता है ।

उदा. अनुगु अलंगामी **अनुगवीनो** गोपालकः । गवामनुः **अनुगु ।**

अलम्–पर्याप्तम् (=पूरा)

ii) **अध्वन्** शब्द को **य** और **ईन** प्रत्यय लगता है ।

उदा. अध्वानमलंगामी **अध्वन्यः । अध्वनीनः ।** (पा.18 नि.9.)

iii) **अभ्यमित्र** शब्द को **ईय, य** और **ईन** प्रत्यय लगते है ।

उदा. अभ्यमित्रमलं गामी **अभ्यमित्रीयः ।**

अभ्यमित्र्यः । अभ्यमित्रीणः । अमित्राभिमुखं भृश गन्तेत्यर्थः ।

(अभ्यमित्र–अमित्रस्य अभिमुखम् ।)

53) **समांसमीन, अद्यश्वीन, अद्यप्रातीन, आगवीन** और **साप्तपदीन** शब्द **ईन** प्रत्ययान्त निपात से सिद्ध होते है ।

उदा. समां समां गर्भं धारयति **समांसमीना** गौः । समा=वर्षम् ।

अद्य श्वो वा विजनिष्यमाणा **अद्यश्वीना** गौः ।

अद्य श्वो वा भविष्यति **अद्यश्वीनो** लाभः । **अद्यश्वीनं** मरणम् ।

एवम् अद्यप्रातः शब्दात् **अद्यप्रातीना** गौः । **अद्यप्रातीनो** लाभः ।

अद्याप्रातीनं मरणम् ।

आ–गोप्रतिदानंकारी, **आगवीनः** कर्मकरः । प्रतिदानशब्दस्य लोप ।

सप्तभिः पदैः अवाप्यम् **साप्तपदीनं** सख्यम् ।

साप्तपदीनः सखा । यहाँ **ईनञ** प्रत्यय होने से वृद्धि हुई है ।

54) **अषडक्ष, आशितंयु, अलंकर्म** और **अलंपुरुष** शब्दों को स्वार्थ में **ईन** प्रत्यय लगता है ।

उदा. अविद्यमानानि षडक्षीणि अस्मिन् **अषडक्षीणो** मन्त्रः ।

अषडक्षीणा क्रीडा । द्वाभ्यां साध्यत इत्यर्थः ।

अषडक्षीणः कन्दुकः । येन द्वौ क्रीडतः ।

अदृश्यानि षडक्षीण्यस्य **अषडक्षीणः** चैत्रः । पितुः पितामहस्य पुत्रस्य चाद्रष्टेत्यर्थः ।

इन्द्रियपर्यायो वाक्षशब्दः– अविद्यमानानि षडक्षीणि अस्य **अषडक्षीणोऽमनस्कः ।** आशिता गावोऽस्मिन्निति **आशितंगु** ।
तत ईनः **आशितंगवीन-मरण्यम्** ।
अलं कर्मणे **अलंकर्मीणः ।** (=काम करने में समर्थ) ।
अलं पुरुषाय **अलंपुरुषीणः ।** (पुरुषार्थ करने के लिए समर्थ) ।

55) **अञ्च्** जिसके अंत में हो ऐसे नाम को स्वार्थ में **ईन** प्रत्यय विकल्प से लगता है । परंतु दिशावाचि स्त्रीलिंग नाम को नहीं लगता है ।
उदा. प्राक् **प्राचीनम्** । प्रत्यक् **प्रतिचीनम्** । उदक् **उदीचीनम्** ।
अवाक् **अवाचीनम्** । सम्यङ् **समीचीनः** । **प्राचीना** शाखा ।
प्राची दिक् । यहाँ ईन प्रत्यय नहीं लगेगा ।

'तुल्य' अर्थ में

56) i) **शाखा** आदि शब्दों को **'य'** प्रत्यय लगता है ।
उदा. शाखायाः तुल्यः **शाख्यः** । मुखस्य तुल्यः **मुख्यः । जघन्यः ।**
ii) **द्रु** शब्द को **य** प्रत्यय लगता है–**भव्य** हो तो ।
विशिष्टेष्ट–परिणामेन भवतीति **भव्यम्**–अभिप्रेतानामर्थानां पात्रम् ।
द्रुतुल्यः द्रव्यम् अयं माणवकः । कार्षापणम् ।
यथा द्रु अग्रन्थि अजिह्मं दारु उपकल्प्यमानं विशिष्टेष्टरूपं भवति, तथा माणवकोऽपि विनीयमानो विद्यालक्ष्म्यादिभाजनं भवतीति ।
(द्रु. (नपुं.)=गांठ रहित सीधा लकडा)
iii) **कुशाग्र** शब्द को **ईय** प्रत्यय लगता है ।
उदा. कुशाग्रस्य तुल्यं **कुशाग्रीयं** शास्त्रम् ।
कुशाग्रीया बुद्धिः । तीक्ष्णत्वात् ।
iv) **शर्करादि** को **अण्** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **शार्करं** दधि । मधुरत्वात् ।
v) **सपत्नी** शब्द को **अ** प्रत्यय लगता है ।
उदा. सपत्न्यास्तुल्यः **सपत्नः** शत्रुः ।

'विस्तृत' अर्थ में

57) **वि** शब्द को **शाल, शङ्कट** और **कट** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **विशालः । विशङ्कटः । विकटः ।**

'संकीर्ण, प्रकाश, अधिक और समीप' अर्थ में

58) क्रमशः **सम्, प्र, उद्** और **नि** शब्दों को **कट** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **सङ्कटः । प्रकटः । उत्कटः । निकटम् ।**

'घटते' अर्थ में

59) सप्तम्यन्त **कर्म** शब्द को **ठ** प्रत्यय लगता है ।
उदा. कर्मणि घटते **कर्मठः**– कर्मशूरः ।

'अस्य संजातम्' अर्थ में

60) प्रथमान्त तकारादि शब्दों को **इत** प्रत्यय लगता है ।
उदा. तारकाः संजाता अस्य **तारकितं** नभः ।
पुष्पाणि संजातान्यस्य **पुष्पितस्तरुः** ।
पण्डा (सदसद्विवेकिनी बुद्धिः) संजातास्य **पण्डितः ।** इत्यादि

'अस्य प्रमाणम्' अर्थ में

61) प्रमाणवाचि प्रथमान्त शब्द को **मात्रट** प्रत्यय लगता है ।
आयाममानं प्रमाणम् (=लंबाई का माप वह प्रमाण) प्रमाण दो प्रकार के है–उर्ध्वमान और तिर्यग्मान ।

i) उदा. जानुनी प्रमाणस्य **जानुमात्रमुदकम् । जानुमात्रा** खाता ।
ऊरुमात्रमुदकम् । उरुमात्री खाता । (=खाई), **रज्जुमात्री** भूमिः।

ii) **हस्ति** और **पुरुष** शब्दों को विकल्प से **अ (अण्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. हस्ति प्रमाणमस्य **हास्तिनम् । हस्तिमात्रम् ।**
हस्तिदघ्नम् । हस्तिद्वयसम उदकम् । (नि.iii)
हास्तिनी । हास्तिमात्री । हस्तिदघ्नी । हस्तिद्वयसी खाता ।
पौरुषम् । पुरुषमात्रम् । पुरुषदघ्नम् । पुरुषद्वयसमुदकम् ।
पौरुषी । पुरुषमात्री छाया ।

iii) ऊर्ध्व प्रमाणवाचि शब्द को **दघ्नट्** और **द्वयसट्** विकल्प से होता है ।
उदा. ऊरुः प्रमाणमस्य **ऊरुदघ्नम् । ऊरुद्वयसम्** । ऊरुमात्रमुदकम् ।

iv) **मानवाचि शन्** अंतवाले, **शद्** अंतवाले और **विंशति** शब्दों को **डिन्** प्रत्यय लगता है ।
उदा. पञ्चदश परिमाणमस्य **पञ्चदशी** अर्धमासः । **त्रिंशी मासः ।**
त्रयस्त्रिंशिनो देवविशेषाः । **विंशिनो** भवनेन्द्राः ।

'अस्यमानम्' अर्थ में

62) प्रथमान्त–**इदम्** और **किम्** शब्दों को **अत् (अतु)** प्रत्यय लगता है। तथा **इदम्** का **इय्** और **किम्** का **किय्** आदेश होता है।

चतुर्विधं मानम्–

i) प्रमाण–इदं मानमस्य **इयान् पटः** । किं मानमस्य **कियान् पटः** ।

ii) परिणाम–**इयद्धान्यम्** । **कियद्धान्यम्** ।

iii) उन्मान–**इयत्सुवर्णम्** । **कियत्सुवर्णम्** ।

iv) संख्य–**इयन्तो गुणिनः** । **कियन्तो गुणिनः** ।

63) **यद्, तद्** और **एतद्** को **आवत् (डावतु)** प्रत्यय लगता है।

उदा. **यावत्** । **तावत्** । **एतावत्** । **यावती** । **तावती** । **एतावती** ।

'संख्यामान' अर्थ में

64) **यत्, तद्** और **किम्** को **अति (डति)** प्रत्यय विकल्प से लगता है।

उदा. या संख्या मानमेषां **यति यावन्तः** । **तति तावन्तः** । **कति कियन्तः** ।

'उसके अवयव' अर्थ में

65) संख्यावाचि नाम को **तय (तयट्)** प्रत्यय लगता है।

उदा. चत्वारोऽवयवा अस्याः **चतुष्टयी** शब्दानां प्रवृत्तिः । **पञ्चतयो** यमः । **सप्ततयी** नयप्रवृत्तिः । **दशतयो** धर्मः । **द्वादशतयः** सिद्धान्तः ।

66) **द्वि** और **त्रि** शब्दों को **अय (अयट्)** प्रत्यय विकल्प से लगता है।

उदा. द्वौ अवयवावस्य द्वयं **द्वितयं** तपः । त्रयं **त्रितयं** जगत् । त्रयः **त्रितयो** मोक्षमार्गः । **द्वयी द्वितयी** । **त्रयी त्रितयी** रज्जुः ।

'संख्यापूरण' अर्थ में

67) षष्ठ्यन्त संख्यावाचि नाम को **अ(डट्)** प्रत्यय लगता है।

उदा. एकादशानां पूरणः **एकादशः** । एकादशसंख्यापूरण इत्यर्थः ।

68) **विंशति** आदि शब्दों को विकल्प से **तम (तमट्)** प्रत्यय लगता है।

उदा. विंशतेः पूरणः **विंशतितमः** विंशः । **विंशतितमी** विंशी । (स्त्री)

69) **शत** आदि तथा **मास, अर्धमास** और **संवत्सर** शब्दों को **तम (तमट्)** प्रत्यय लगता है।

उदा. शतस्य पूरणः **शततमः । शततमी । एकशततमः । एकशततमी । सहस्त्रतमः । लक्षतमः ।** मासस्य पूरणो **मासतमो** दिवसः । **अर्धमासतमः । संवत्सरतमः ।**

70) संख्या आदि में न हो ऐसे **षष्टि** आदि शब्दों को **तम (तमट्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. षष्टे पूरणः **षष्टितमः सप्ततितमः । अशीतितमः । नवतितमः ।** एक षष्टितमः **एकषष्टः** । (नि. 67)

71) संख्या आदि में न हो ऐसे **न् कारान्त शब्दों** को **म (मट्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. पञ्चानां पूरणः **पञ्चमः । पञ्चमी । सप्तमः । अष्टमः । नवमः । दशमः ।**

72) **षट्, कति** और **कतिपय** शब्दों को **थ (थट्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. षष्णां पूरणः **षष्ठः । षष्ठी ।**

कतीनां पूरणः **कतिथः । कतिथी । कतिपयथी ।**

73) **चतुर्** शब्द को **थट्** प्रत्यय लगता है ।

उदा. चतुर्णां पूरण **चतुर्थः ।** चतसृणां पूरणी **चतुर्थी ।**

74) **चतुर्** शब्द को **य** और **ईय** प्रत्यय लगते है और **च** का लोप होता है ।

उदा. **तुर्य, तुरीयः । तुर्या, तुरीया ।**

75) **द्वि** शब्द को **तीय** प्रत्यय लगता है । उदा. **द्वितीयः । द्वितया ।**

76) **त्रि** शब्द को **तीय** प्रत्यय लगता है और **तृ** आदेश होता है ।

उदा. **तृतीयः ।**

77) **बहु, गण, पूग** और **संघ** शब्दों को **तिथ (पित्तिथट्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **बहुतिथः । गणतिथः ।**

78) **अतु** अंतवाले शब्दों को **इथ (इथट्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **इयतिथः । कियतिथः ।**

'कर्ता को तृतीया के' अर्थ में

79) i) द्वितीयान्त केवल **पूर्व** शब्द को और आदि पद सहित **पूर्व** शब्द को **इ (इन्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. पूर्वमनेन कटः कृतः **पूर्वीकटम् । पूर्वीओदनम् । पूर्वीपयः ।**

कृतः कटः पूर्वमनेन **कृतपूर्वी** कटम् । **भुक्तपूर्वी** ओदनम् । इत्यादि

ii) प्रथमान्त **इष्टादि** शब्दों को **इन्** प्रत्यय लगता है ।

उदा. इष्टो यज्ञोऽनेन **इष्टी** यज्ञे[1] । **अधीती** व्याकरणे । इत्यादि

'वित्त' अर्थ में

80) तृतीयान्त नाम को **चञ्चु** और **चण** प्रत्यय लगते है ।

वित्तो ज्ञातः प्रकाशः इत्यर्थ : ।

उदा. विद्यया वित्तः **विद्याचञ्चुः । विद्याचणः । केशचञ्चुः । केशचणः ।**

परिशिष्ट नियम

1. समास के विषय में न हो ऐसे **पुरुष** और **हृदय** शब्दों को **अण्** और **त्व, तल्** प्रत्यय लगते है ।

   उदा. पुरुषस्य भावः कर्म वा **पौरुषम्, पुरुषत्वम्, पुरुषता ।**

   हृदयस्य भावः कर्म वा **हार्दम्, हृदयत्वम्, हृदयता ।**

   (परिशिष्ट नि. 22)

शब्द

आजि (स्त्री.)=युद्ध, लडाई, संग्राम ।

कृशानु (पुं.)=अग्नि ।

कृशानोर्भावः कर्म वा कार्शानवम् ।

द्राक् (अ.)=जल्दी से, शीघ्र ।

पूग (पुं.)=समूह ।

पूगस्य पूरणः पूगतिथः ।

बन्दिन् (पुं.)=स्तुति करनेवाला, मंगलपाठक ।

वर्ध्र (नपुं.)=चमडे की पट्टी ।

वध्रायेदं व्राध्रं चर्म ।

वृष (पुं.)=बैल, काम ।

वृषायं हितं वृष्यम् ।

शकुनि (पुं.)=पक्षी ।

शकुने र्भावः कर्म वा शाकुनम् ।

शङ्कु (पुं.)=खीला ।

शङ्कवे इदं शङ्कव्ये दारु ।

शिति (पुं./वि.)=श्यामवर्ण, काला ।

शितेर्भाव शैत्यम् ।

समित् (स्त्री.)=युद्ध ।

सीर (न.)=हल ।

सीरं वहति सैरिकः ।

हाला (स्त्री.)=मदिरा, ताडी का रस ।

हेषा (स्त्री.)=घोडे की आवाज ।

टिप्पणी 1. क्त प्रत्ययान्त शब्द को इन् प्रत्यय लगता है । इन् प्रत्ययान्त शब्द को कर्म में रहे नाम को सप्तमी विभक्ति लगती है ।

संस्कृत वाक्य

द्व्याश्रय-महाकाव्ये सप्तदशः सर्गः ।

1. भाक्तशालिभुवं हालां पीत्वा पारिषदैः प्रियै ।
नाऽपारिषद्यं पार्षद्याः पार्षदेषूचिरे स्त्रियः ॥119॥

2. **जीतोऽप्यास्यैः शशी सार्वजन्यः सार्वजनीनगुः ।**
अचिचेष्टन्मदाऽचेष्टाः सतां प्रातिजनीनता ॥120॥

3. आत्मनीनस्तदा यूनां स्त्रीभोगीणो निशा-मरुत् ।
जह्रे पञ्चजनीनः सर्वजनीनो रत-श्रमम् ॥130॥

4. **मरुद् विश्वजनीनोऽताय्यमाहाजनिकं स्मरम् ।**
हितः सार्वे न्वसर्वीये यः सार्वजनिकः स हि ॥131॥

5. अङ्गं विरहिणीनां दार्वङ्गारीयमिवाऽदहत् ।
वार्ध्रौपानह्यचर्मेवाऽदारयच्च मनः स्मरः ॥132॥

6. **आचरन् कामवत्कामः क्षत्रवत्प्रहरंस्तथा ।**
तृणवन्मानिनी र्धून्वन्भृत्यवत्सेवितो न कैः ॥135॥

टिप्पणी

119. **भाक्तशालिभुवं** भक्ते-ओदने साधुर्भाक्तो यः शालिः तस्माद् भूः–उत्पत्तिर्यस्यास्ताम् । हाला हि शालिपिष्टक्षेपेण संधीयते ।
पीत्वा अपि । **प्रियैः** सह । **अपारिषद्यं** सभायामनुचितम् । **पार्षद्या** विचक्षणाः **पार्षदेषु** पर्षदि-सभायां साधुषू-विचक्षणेषु प्रियेषु विषये ।

120. **सार्वजन्यः** सर्वजनेषु शत्रुष्वशत्रुषु चाह्लादकत्वात्साधुः ।
सार्वजनीनगुः सर्वजनेषु साधवो गावः–किरणा यस्य सः ।
मदाऽचेष्टाः अतिरिक्तमद्यपानोत्थक्षीबतया निश्चेतनीभूताः स्त्रीः
अचिचेष्टत् । **सतां प्रातिजनीनता** प्रत्यर्थिनो जनाः प्रतिजनाः शत्रवस्तेष्वपि साधुता स्यात् ।

130. **आत्मनीनः** आत्मने हितः **यूनाम्** । **स्त्रीभोगीणः** नारीसंभोगाय हितः । **रतश्रमं यूनां जह्रे** ।

131. अमाहाजनिकं महान्-पूज्यो जनो मुनिजनस्तस्मै हितो माहाजनिको न तथा तमपि । **सार्वे नु** सर्वस्मै हिते इव । **असर्वीये** अपि ।

135. **कामवत्** कामार्हं यथा स्यादेवम् **आचरन्** । **क्षत्रवत्** क्षत्रिय इव । **भृत्यवत्** भृत्यैरिव ।

7. प्रतीच्यै स्पृहयञ्श्रीवद् द्रुवत् खाच्छश्यवातरत् ।
द्रष्टुं ताः पूर्वदद्रौ स्त्रीः पूर्वदद्रेरुत श्रियम् ।।136।।

8. गोतावतो यथा गोत्वं शुक्लत्वं शुक्लतावतः ।
प्रबोधित्ववतो राज्ञस्तथाऽथाऽभूत प्रबोधिता ।।137।।

अष्टादशः सर्गः ।

9. कैरविण्यपटुताकृति पाथोजापटुत्वहृति तेजसि भूपः ।
सोऽथ धी-प्रथमितो जगदाबुध्याचतुर्यहरणो प्रचचाल ।।1।।

10. समिद्वणिज्यासु नवाग्रहदूत्या आकर्ण्य हेषा यमदूतताहीः ।
दूतत्वयोग्यं हि वणिक्त्वभाजामुक्त्वेत्यथाजावुदतिष्ठतान्नः ।।9।।

11. कपितावतामिव कपित्वमश्वताश्ववतां नु शावमिव शावतावताम् ।
युवतेव यौवनवतामहंकृति र्ददृशेऽस्य सौष्ठवयुवत्वशालिनः ।।11।।

टिप्पणी

136. **प्रतीच्यै** पश्चिमायै दिशे । **श्रीवद्** श्रिये इत । **द्रुवत्** वृक्षादिव ।**पूर्वद्** पुर्यामिव **अद्रौ** वर्तमानाः । **पूर्वद्** पुरस्येव । **उत** अथवा ।

137. **प्रबोधित्ववतः** प्रबोधो-जागरणं बुद्धिश्चास्यास्ति, प्रबुध्यत इत्येवंशीलो वा, प्रबोधी, तस्य भावः प्रबोधित्वं तद्वतो-जागरूकस्य धीमतश्च वा सतो **राज्ञः** कुमारपालस्य । **अथ** चन्द्राऽस्तानन्तरं **प्रबोधिता** जागरणं, प्रयाणकविषया बुद्धिश्च, **अभूत्** ।

1. **कैरविण्यपटुताकृति** कुमुदिनीनां संकोचकारके । **पाथोजापटुत्वहृति** पद्म-संकोचस्यापनेतरि **तेजसि** रवेरुद्द्योते ।
भूपः कुमारपालः । **धी-प्रथिमतः** बुद्धेर्विस्ताराद् हेतोः ।
जगदाबुध्याचतुर्यहरणः जगतो यदाबुध्येन-अबुधत्वेन-अज्ञानेन आचतुर्य-कृत्याकृत्य-विषयमकौशलं तस्य हरणोऽपनेता ।

9. **समिद्वणिज्यासु** समितः–संग्रामा एव जयश्रीलाभदेहतुत्वाद्वणिज्याः–क्रयविक्रयादीनि वणिक्कर्माणि तासु विषये **नवाग्रदूत्याः** नवमग्रदूत्यमग्रेगूत्वं यासां ताः । **यमदूतताहीः** यमस्य यद्दूतकर्म तस्य योग्याः । **दूतत्वयोग्यं** दूतत्वस्य-दूतक्रियाया योग्यम्-औचित्यं, **हि** स्फुटं **वणिक्त्वभाजाम्** वणिजामेव ।

11. **आश्ववताम्** अश्वत्वान्वितानामश्वानाम् । **शावमिव** बाल्यमिव । **अस्य** आन्नस्य । **सौष्ठवयुवत्वशालिनः** सौष्ठवेन-अतिशयेन यद्युवत्वं-तारुण्यं तेन शोभमानस्य ।

12. **आरात-कार्शानव-गौरवस्य पैत्रं दधत्पौरुषसौरभाढ्यः ।**
भेजे स भूपैः पुरुषत्वभाग्भि हार्दं दधानै हृैदयत्वधारी ।।13।।

अमात्यैरेष आन्नः प्रतिपेदे (आश्रितः)

13. अथ मुख्यो मन्त्री तमान्नमित्युवाच–
हिमेलुवातूलबलूलसैन्यः शीतालुरुष्णालुरमर्षतोऽसौ ।
स्वदेशतृप्रालुरिहार भैमि र्यथामुखीने त्वयि संमुखीनः ।।21।।

14. **स सर्वपत्रीणक-सर्वकर्मीण-पत्तिकः सर्वपथीननागः ।**
द्राक्सर्वपात्रीणधनोस्ति सर्वाङ्गीणप्रभः प्राग्भवदाज्यपेक्षी ।।22।।

15. हे राजन् बलावलेपेन त्वं निजानां पूर्वजानां पतनाय मा भूः,
निजाऽपि पटी आप्रपदीना सती पतनाय भवेत् ।
हे राजन् ते कोऽपि पूर्वजश्चुलुक्यैः सहारितां नाकृतेत्यहं जानामि ।

16. **यथाकामीनोर्जत्करिभिरनुकामीनतुरगैः**
सदात्यन्तीनोष्ट्रैर्धरणिधव संधाय चुलुकैः ।
नयाब्धेः पारीणाऽनयसरिदवारीण जगृहु-
र्यशः पारावारीणमिह गुरवस्तेऽरिविजयात् ।।25।।

17. अवारपारीणमुदन्वतस्तद्यशो निजानां द्युपथाध्वनीनम् ।
हारि त्वया माऽनुगवीनबुद्ध्या भैमिं नयाध्वन्यममुं विराध्य ।।26।।

टिप्पणी

13. **आरात-कार्शानव-गौरवस्य** अरातेर्भावः, कर्म वा आरातं-वैरं तदेव कार्शानरं-कृशानु-कर्म-ज्वलनं तस्य यद्गौरवं-महत्त्वं तस्य **पैत्रं** पितृत्वंजनकतां **दधत्** । **स** आन्नः । **हार्दम्** स्नेहम् **दधानैः** ।

21. **इह** त्वत्समीपे । **आर** आययौ । **भैमिः** कुमारपालः ।

22. **यथामुखीने** संमुखमत्रागते सति **त्वयि** । **संमुखीनः** संमुखः । **स** भैमिः **द्राक् प्राक्** पूर्वम् **भवदाज्यपेक्षी** हतव संग्राममपेक्षमाणोऽस्ति ।

25. **यथाकामीनोर्जत्करिभिः** यथाकामं गच्छन्तस्तथोर्जन्तो-बलिष्ठा ये करिणस्तैः कृत्वा **सदा संधाय चुलुकैः** सह । **गुरवः** पूर्वजाः । **ते** ।

26. **उदन्वतः** अब्धेः । **द्युपथाध्वनीनम्** स्वर्गमार्गे पथिकतुल्यम् ।

18. **तवाऽभ्यमित्रीण रणेऽभ्यमित्र्यो भाव्यभ्यमित्रीय इहाथवा कः ।**
एष्वागवीनेषु समांसमनाऽद्यश्वीनधेनुष्विव निःसहेषु ॥27॥

19. भैमौ ततः साप्तपदीनमद्यप्रातीनधेनुं नु पुषाण भूत्यै ।
मन्त्रेऽषडक्षीण इहाऽऽश्वलंकर्मीणो भवाऽलंपुरुषीणशक्ते ॥28॥

20. **आन्नोऽस्यामात्यस्य वचः आशितंगवीनेऽरण्ये रुदितमिव समीचीनं नाऽमंस्त ऊचे च हे दुराश मां भापयितुं चश्चामपि चुलुक्यं किं स्तवीषि । स आन्नो यावद् तं मन्त्रिणमुवाच तावद् गिरीणामुपत्यका-ऽधित्यकयोः प्रतिध्वनन् कुमारपालसैन्यकलकलोऽभूत् ।**

21. पौरुषीमिव विलङ्घ्य हास्तिनीं हस्तिमात्रदृषदं नदीमथ ।
आगतोऽस्य कथितश्चुलुक्यराड् बन्दिभिः पुरुषमात्रफालदैः ॥42॥

22. **दोष्णेभहस्तद्वयसेन तालदघ्नं दधद्धस्तफलं च कुन्तम् ।**
आन्नः पदन्यासविदीर्ण-हस्तमात्रावनि र्नागमथारुरोह ॥43॥

टिप्पणी

27. **अभ्यमित्रीण** हे अमित्राभिमुखमलंगामिन् । **अभ्यमित्रीय इह** इह-भैमौ अभ्यमित्रीये अमित्रस्य तवाभिमुखमलंगामिनि सति । **एषु** भटेषु । **आगवीनेषु** आगोप्रदानं कारिणः आगवीनाः कर्मकरभेदाः तत्तुल्येषु । **निःसहेषु** असमर्थेषु ।

28. **भैमौ** कुमारपाले **साप्तपदीनं** सख्यं । **नु** यथा ।
पुषाण पोषय । **भूत्यै** राज्यादिलक्ष्म्यर्थम् ।
अषडक्षीणे अविद्यमानानि पडक्षीण्यस्मिन् अषडक्षीणः तस्मिन् **मन्त्रे इह** कृतपूर्वे । **आशु** अविलम्बम् । हे **अलंपुरुषीणशक्ते ।**

42. **पौरुषीमिव** पुरुष ऊर्ध्वमानं यस्यास्तामिव–स्ताध्यामिव◆ **विलङ्घ्य** उल्लङ्घ्य । **हास्तिनीं** हस्त्यूर्ध्वमानं यस्यास्ताम् अस्ताध्यामपि । **हस्तिमात्रदृषदं** हस्तिमात्रा दृशदः-शिला यस्यां तां-दुर्लङ्घ्यामपि । **पुरुषमात्रफालदैः** पुरुषप्रमाणान् फालान्ददद्भिः ।

43. **दोष्णा इभहस्तद्वयसेन ।** [1]**हस्तफलं** हस्तप्रमाणाग्रभागकम् च ।

टिप्पणी

1. मानवाचि–हस्त–वितस्ति आदि शब्दों से मात्रट् आदि प्रत्ययों का लोप होता है ।
हस्तप्रमाणमस्य हस्तः । वितस्तिः ।

◆ उल्लंघन कर सके ऐसी ।

23. दश्याननो विंशिभुजो नु राक्षसो जेतुं त्रयस्त्रिंशिन उद्यतः सुरान् ।
आन्नोप्याधिज्यं रभसाद्धनुर्व्यधादियत्कियन्मेऽरिबलं ब्रुवन्निति ।।45।।

24. आस्यन्यावन्तोऽरिवीरा यतीषूंस्तावन्तोऽमी गूर्जरास्तत्यपि द्राक् ।
एतावन्तः कत्यहो सप्ततय्यामब्धीनां नः सैन्य इत्यालपन्तः ।।46।।

25. संवत्सरतम्यर्धमासतम्योस्तिथ्योरिव पर्वाहवं विजानन् ।
युयुधेऽशीतितमाब्दकोऽपि कश्चित्षष्टितमाब्दमहेभवन्महौजाः ।।51।।

26. एकषष्ट इव कोऽपि कौरवः कोपि पञ्चम इवाथ पाण्डवः ।
युन्मुदं बहुतिथाद्दिनादवापैकषष्टितमहायनोऽपि हि ।।52।।

टिप्पणी

45. **नु** यथा **राक्षसः** रावणः । **रभसाद्** युद्धातिरसेन ।

46. **अब्धीनां सप्ततय्याम्** सप्त अवयवा यस्याः–संहतेस्तस्याम् । असंख्यत्वेनाब्धिसप्तकतुल्ये **न** अस्माकं **सैन्ये** ।

51. **संवत्सरतमी** अक्षयतृतीयादिः । **अर्धमासतमी** अमावास्या पूर्णिमा वा । तयोः **तिथ्योः पर्व** । **अशीतितमाब्दकः** अशीतितमोऽब्द यस्य सः । **कश्चित्** भटः ।

52. **कोऽपि** भटः । **अथ** तथा । **बहुतिथाद्** बहूनां दिनानां पुरणाद् **दिनात्** चिरकालादित्यर्थः ।

पाठ-16

'वह उसका है' और 'वह उसमें है' अर्थ में

1) प्रथमान्त नाम को **मत् (मतु)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. गावोऽस्य सन्ति **गोमान् । यवमान् ।** (द्वि.पा.22 नि.12.)
वृक्षा अस्मिन् सन्ति **वृक्षवान् । प्लक्षवान्** पर्वतः ।
अस्ति-धनमस्यास्ति **अस्तिमान्-धनवान् ।**
स्वस्ति-आरोग्यमस्यास्ति **स्वस्तिमान्-आरोग्यवान् ।**
राजा अस्ति अस्य [1]**राजन्वान्** देशः । प्र.पा.47 नि.2)

2) य प्रत्यय (नियम 28) तक **मत् (मतु)** प्रत्यय लगता है ।

3) नौ आदि शब्दों को **इक** प्रत्यय लगता है ।
उदा. नौरस्यास्मिन्वास्तीति **नाविकः । नौमान् ।**
कुमारिकः । कुमारीमान् ।

4) **शिखी** आदि शब्दों को **इ (इन्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **शिखी** । शिखावान् । **माली** । मालावान् ।

5) **व्रीहि** आदि शब्दों को **इक** और **इ (इन्)** प्रत्यय लगते है ।
उदा. व्रीहयोऽस्यास्मिन्वा सन्ति **व्रीहिकः । व्रीही** । व्रीहिमान् ।
मायिकः । मायी । मायावान् । मायावी । (विन् प्रत्यय नियम 27)

6) अनेक स्वरवाले अकारान्त शब्दों को **इक** और इ **(इन्)** प्रत्यय लगते है ।
उदा. **दण्डिक । दण्डी । दण्डवान् । छत्त्रिकः । छत्त्री । छत्त्रवान् ।**

7) **व्रीहि वाचि** शब्दों को और **तुन्दादि** शब्दों को **इल** तथा **इक** और **इ (इन्)** प्रत्यय लगते है ।
उदा. कलमा अस्यास्मिन्वा सन्ति **कलमिलः । कलमिकः । कलमी ।**
कलमवान् ।
शालिलः । शालिकः । शाली । शालिमान् ।
(व्रीहि शब्द को नि. 5 से **इक** और **इन्** प्रत्यय लगता है ।)
तुन्दादि–**तुन्दिलः । तुन्दिकः । तुन्दी । तुन्दवान् ।**
उदरिलः । उदरिकः । उदरी । उदरवान् ।

टिप्पणी 1. ''अच्छा राजा है जिसका'' ऐसे अर्थ में मत् (मतु) प्रत्यय लगने पर राजन् शब्द के 'न्' का लोप नहीं होता है ।
उदा. शोभनो राजाऽस्य राजन्वान् देशः । राजन्वती पृथ्वी । (प्र.पा.46 नि.1)

8) **विवृद्ध स्वांगवाचि** शब्दों को **इल, इक** और **इ (इन्)** प्रत्यय लगते है ।

उदा. विवृद्धौ-महान्तौकर्णौ अस्य स्तः **कर्णिलः । कर्णिकः । कर्णी । कर्णवान् । ओष्ठिलः । ओष्ठिकः । ओष्ठी । ओष्ठवान् ।**

9) **वलि, वटि,** और **तुण्डि** शब्दों को **भ** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **वलिभः । वलिनः ।** नि. 20 से **वलिमान । वटिभः । वटिमान् । तुण्डिभः । तुण्डिलः ।** नि. 14 से **तुण्डिमान् ।**

प्रवृद्धा नाभिः **तुण्डिः ।**

10) **ऊर्णा, अहम्** और **शुभम्** शब्दों को **यु (युस्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **ऊर्णायुः** उरभ्रः । **अहंयुः** अहंकारी । **शुभंयुः** कल्याणबुद्धिः ।

11) **कम्** और **शम्** शब्दों को **युस्, ति, यस्, तु, त, व** और **भ** प्रत्यय लगते है ।

उदा. **कंयुः । शंयुः । कन्तिः । शन्तिः । कयंः । शंयः । कन्तुः । शन्तुः । कन्तः । शन्तः । कंवः । शंवः । कंभः । शंभः ।**

युस् और यस् प्रत्यय में स इत्-पद संज्ञा होने के लिए है ।

12) **बल, वात, दन्त** और **ललाट** शब्दों को **ऊल** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **बलूलः । वातूलः । दन्तूलः । ललाटूलः ।**

बलवान् । वातवान् । दन्तवान् । ललाटवान् ।

13) प्राणी के अंगवाचि **'अ'**कारान्त शब्दों को **ल** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **चूडालः । जङ्घालः । शिखालः ।**

चूडावान् । जङ्घावान् । शिखावान् ।

14) **सिध्म** आदि शब्दों को, **क्षुद्रजन्तुवाचि** शब्दों को और **रुग्वाचि** शब्दों को **ल** प्रत्यय लगता है ।

उदा. सिध्मान्यस्य सन्ति **सिध्मलः ।** सिध्मवान् । **गडुलः ।** गडुमानः । **तुण्डिलः ।**

क्षुद्रजन्तु–**युकालः ।** यूकावान् । रुग्–**मूर्च्छालः ।** मूर्च्छावान् ।

15) **वाच्** शब्द को निंदा में **आल** और **आट** प्रत्यय लगते है ।

उदा. **वाचालः । वाचाटः ।** यो बहु निःसारं भाषते स एवं क्षिप्यते ।

16) **वाच्** शब्द की **ग्मिन्** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **वाग्मी ।** वाग्वान् ।

ग्मिन् प्रत्यय में ग् करने का कारण वाच् + ग्मिन्, वाच् शब्द के

च् का प्र. पा. 48. नि. 2 से क् होता है, फिर प्र.पा. 25 नि. 1 से ग् होता है–वाग् । अब यहाँ मिन् प्रत्यय लगने पर प्र.पा. 50 नि. 10. से ग् का ङ् होता है, परंतु ङ् नहीं करना है, ग् रखना है । इसलिए ग्मिन् प्रत्यय ग् किया है । अर्थात् वाग्मिन् शब्द में एक ग् करना । वाग्ग्मिन्-दो ग् नहीं करना ।

17) **मधु** आदि शब्दों को **'र'** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **मधुरो** रसः । **मधुरं** मधु । **मधुरं** क्षीरम् ।

(यहाँ मधु शब्द गुणवाचि लेना है ।)

मधुमान् घटः । यहाँ द्रव्यवाचि लेना है ।

खं–महत्कण्ठविवरमस्यास्ति **खरः**–गर्दभः । खवानन्यः ।

मुखं सर्वस्मिन्वक्तव्ये यस्यास्ति **मुखर**-वाचालः । मुखवानन्यः ।

18) **कृषि** आदि शब्दों को **वल (वलच्[1])** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **कृषीवलः** कुटुम्बी । कृषीमत्क्षेत्रम् ।

आसुतीवलः कल्यपालः । आसुतिमान् ।

रजस्वला स्त्री । रजस्वान् ग्रामः ।

19) **लोम** आदि शब्दों को **'श'** और **पिच्छि** आदि शब्दों को **'इल'** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **लोमशः ।** लोमवान् । **पिच्छलः ।** पिच्छवान् ।

20) **अङ्ग** आदि शब्दों को **'न'** प्रत्यय लगता है ।

उदा. अङ्गानि अस्याः सन्ति **अङ्गना**–कल्याणाङ्गी ।

अङ्गवती अन्या ।

21) **प्रज्ञा, श्रद्धा, अर्चा** और **वृत्ति** शब्दों को **अ(ण)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **प्राज्ञः** । प्रज्ञावान् । **श्राद्धः** । श्रद्धावान् । **आर्चः** । अर्चावान् ।

वार्तः। वृत्तिमानः । स्त्रीलिंग में प्राज्ञा आदि ।

22) **ज्योत्सना** आदि शब्दों को **अ (अण्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. ज्योत्स्ना अस्मिन्नस्ति **ज्यौत्स्नः** पक्षः । **ज्यौत्स्नी** रात्रिः ।

ज्योत्स्नावान् ।

टिप्पणी 1. वलच् प्रत्यय के बाद पित्रादि सिवाय शब्दों का अन्त्य स्वर दीर्घ होता है ।
उदा. आसुतिः सुरा सास्यास्तीत्यासुतीवलः । पितृवलः ।

तमिस्त्रमस्त्यस्य **तामिस्त्रः** पक्षः । **तामिस्त्री** रात्रिः । तमिस्त्रावान् ।
तमिस्त्रं तमः समूहः ।
तपोऽस्यास्ति **तापसः ।** तपस्वान् ।

23) **सिकता** और **शर्करा** शब्दों को **अ(अण्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **सैकतः** । सिकतावान् देशः । **शार्करः** । शर्करावानोदनः ।

24) **कच्छू** शब्द को **उर (डुर)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **कच्छुरः ।** कच्छूवान् ।

25) **उन्नत दन्त** शब्द को **डुर** प्रत्यय लगता है ।
उदा. उन्नतादन्ता अस्य **दन्तुरः ।** अन्यो दन्तवान् । (मतु प्रत्यय)

26) **अभ्र** आदि शब्दों को **'अ'** प्रत्यय लगता है ।
उदा. अभ्राण्यस्मिन्सन्ति **अभ्रं** नभः ।
अर्शांस्यस्य सन्ति **अर्शसो** देवदत्तः । **उरसः ।** उरस्वान् ।

27) **अस्** अन्तवाले शब्दों को, **तपस्, माया, मेधा** और **स्त्रज्** शब्दों को **विन्** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **यशस्वी**[1] **।** यशस्वान् । **सरस्वी ।** सरस्वान् । सरस्वती ।
तेजस्वी । वर्चस्वी ।
तपस्वी । मायावी । मायावान् । **मेधावी ।** मेधावान् ।
स्त्रग्वी । स्त्रग्वान् ।
(यहाँ अस् अन्तवाले नामों में तपस् भी आ जाता है, परंतु नि.22 में ज्योत्सना आदि शब्दों में भी तपस् है, वहाँ अण् प्रत्यय लगा है, यहाँ विन् प्रत्यय भी लगेगा ।)

28) **गुण** आदि शब्दों को **य** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **गुण्यः** पुरुषः । गुणवान् । **हिम्यः** पर्वतः । हिमवान् ।

29) **प्रशस्त** और **आहत 'रूप'** शब्द को **य** प्रत्यय लगता है ।
उदा. प्रशस्त रूपमस्यास्ति **रूप्यो** गौः । **रूप्यः** पुरुषः ।
आहतं रूपमस्यास्ति **रूप्यः** कार्षापणः । (=रुपया)
(मत्वादि प्रत्यय विवक्षाधीन है, इसलिए आहत अर्थ में मतु

टिप्पणी 1. स् अन्तवाले और त् अंतवाले नाम मत्वर्थ प्रत्यय के बाद पद नहीं होते है ।
उदा. यशस्वी । तडित्वान् ।

प्रत्यय नहीं लगता है। परंतु 'प्रशस्तं' रूपम् अस्या अस्ति इति रूपवती कन्या ।

यहाँ मतु प्रत्यय हो सकता है ।

इसके बाद के अर्थों में मतु प्रत्यय नहीं लगता है ।

30) **पूर्णमास्** शब्द को **अ (अण्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. पूर्णो माश्चन्द्रमा अस्यामस्ति **पौर्णमासी ।**

31) **वात, अतिसार** और **पिशाच** शब्दों को **इ (इन्)** प्रत्यय लगता है और **क** जुडता है ।

उदा. **वातकी । अतिसारकी । पिशाचकी ।**

32) **पूरण** प्रत्ययान्त शब्दों को वय गम्य हो तब **इ ('इन्')** प्रत्यय ही लगता है।

उदा. पञ्चमो मास संवत्सरो वास्यास्ति **पञ्चमी** बालकः ।

'इसके प्रकार' अर्थ में

33) प्रथमान्त नाम को **जातिय (जातीयर्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. पटुः प्रकारोऽस्य **पटुजातीयः । मृदुजातीयः । यज्जातीयः । तज्जातीयः ।** नानाभूतः प्रकारोऽस्य **नानाजातीयः । एवंजातीयः।**

'भूतपूर्व' अर्थ में

34) **भूतपूर्व** अर्थ में रहे नाम को **चर (प्चरट्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. पूर्वं भूतः भूतपूर्व । भूतपूर्व आढ्य **आढ्यचरः । आढ्यचरी । दर्शनीयचरः । दर्शनीयचरी ।**

अव्यय

35) **षष्ठ्यन्त नाम** को **व्याश्रय** गम्य हो तब **तस् (तसु)** प्रत्यय लगता है ।

नानापक्षाश्रयो व्याश्रयः ।

उदा. देवा **अर्जुनतो**ऽभवन् । आदित्यः **कर्णतो**ऽभवत् ।

अर्जुन कर्णयो विंवदमानयोरर्जुनस्य पक्षे देवाः,

कर्णस्य पक्षे आदित्योऽभवदित्यर्थः । **त्वत्तो**ऽभवत् । **मत्तो**ऽभवत् ।

36) **सर्व** और **उभय** अर्थ में क्रमशः रहें **परि** और **अभि** को **तस् (तसु)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **परितः** सर्वत इत्यर्थ । **अभितः** उभयत इत्यर्थ ।

37) **'आदि'** आदि शब्दों को **तस् (तसु)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. आदौ आदेर्वा **आदितः** । एवं **मध्यतः** । **अन्ततः । अग्रतः । वक्षस्तः । पार्श्वतः । पृष्ठतः । मुखतः । सर्वतः । इतः ।**
प्रमाणेन प्रमाणाद्वा **प्रमाणतः ।** पृष्ठोन पृष्ठतोऽर्कं **सेवेत ।**

38) **अपादान** पंचमीवाले नाम को **तस् (तसु)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **ग्रामत** आगच्छति । **चौरतो** बिभेति । **त्वत्तः । मत्तः ।**

39) **पंचम्यन्त किम्** शब्द को तथा **द्वि, युष्मद्, अस्मद्** और **भवतु** सिवाय **सर्व** आदि शब्दों को और अवैपुल्यार्थ–अनेकार्थ **बहु** शब्द को **तस् (पित्तस्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **सर्वतः । यतः । ततः । बहुतः ।**

40) **तस् (तसु)** (नि.37) प्रत्यय के बाद **इदम्** का **इ, एतद्** का **अ** और **किम्** का **कु** आदेश होता है ।
उदा. **इतः । अतः । कुतः ।**

41) **ततोभवान्, तत्रभवान्** आदि शब्द **पूज्य** अर्थ में उपयोग होते है । वैसे ही **आयुष्मद्, दीर्घायुस्** और **देवानांप्रिय** के साथ भी **ततः** और **तत्र** जुडता है ।
उदा. स आयुष्मान्, **तत** आयुष्यमान् । आदि

42) **त्रप्** प्रत्यय के बाद **किम्** का **क्व** और **कुत्र, एतद्** का **अत्र** और **इदम्** का **इह** निपात होता है । (नि. 43 से त्रप्)
उदा. कस्मिन् इति **क्व, कुत्र** । एतस्मिन् इति **अत्र** । अस्मिन् **इह** ।
क्वभवान् । कुत्रभवान् । अत्रभवान् । इहभवान् ।

43) **सप्तम्यन्त किम्** शब्द को तथा **द्वि, युष्मद्, अस्मद्** और **भवतु** सिवाय **सर्व** आदि शब्दों को और अनेकार्थ **बहु** शब्द को **त्रप्** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **सर्वत्र । तत्र । बहुषु-बहुत्र ।**

44) सप्तम्यन्त **किम्, यत्, तद्, सर्व, एक और अन्य** शब्दों को काल-वाच्य हो तब **दा** प्रत्यय लगता है ।
उदा. कस्मिन् काले **कदा । यदा । तदा**[1] **। सर्वदा । एकदा । अन्यदा ।**

टिप्पणी 1. (i) तसादि प्रत्यय के बाद 'किम्' का 'क' होता है । कदा । कर्हि ।
(ii) द्वि पर्यन्त त्यदादि के अंत का अ होता है ।
ततः । तत्र । तथा । तर्हि । यतः । यत्र । यदा । यथा ।

45) **सदा, अधुना, इदानीम्, तदानीम्** और **एतर्हि** काल में निपात है।
उदा. **सर्वस्मिन् काले सदा।** अस्मिन्काले **अधुना, इदानीम्।** इत्यादि।

46) **सद्यस्, अद्य** और **परेद्यवि–अहन्** वाच्य में निपात है।
उदा. समानेऽह्नि **सद्यः।** अस्मिन् अह्नि **अद्य।** परस्मिन् **परेद्यवि।**

47) **पूर्व, अपर, अधर, उत्तर, अन्य, अन्यतर** और **इतर** शब्दों को **अहन्** वाच्य हो तब **'एद्युस्'** प्रत्यय लगता है।
उदा. पूर्वस्मिन् अहनि **पूर्वेद्युः।** **अपरेद्युः।** इत्यादि

48) **उभय** शब्द को **अहन्** वाच्य में **'द्युस्'** और **'एद्युस्'** प्रत्यय लगते है।
उदा. उभयस्मिन्नहनि **उभयद्युः।** **उभयेद्युः।**

49) **ऐषमस्, परुत्,** और **परारि**– वर्ष वाच्य में निपात है।
उदा. अस्मिन् वर्षे **ऐषमः।** पूर्वस्मिन् परस्मिन् वर्षे **परुत्।**
पूर्वतरस्मिन् परतरस्मिन् वर्षे **परारि।**

50) **अनद्यतन काल** में **'र्हि'** प्रत्यय लगता है।
उदा. कस्मिन्नद्यतने काले **कर्हि। यर्हि। तर्हि।**

'प्रकार' अर्थ में

51) **'प्रकार'** अर्थ में रहे **किम्** और **द्वयादि** सिवाय सर्वनाम को **'था'** प्रत्यय लगता है।
उदा. सर्वेण प्रकारेण **सर्वथा। यथा। तथा।** इत्यादि

52) **कथम्** और **इत्थम्** प्रकार में निपात है।

53) **प्रकार** में रहे **संख्या**वाचि नाम को **धा** प्रत्यय लगता है।
उदा. एकेन प्रकारेण **एकधा। द्विधा। बहुधा। कतिधा।**

54) **विचाल** गम्य हो तब संख्यावाचिनाम को **धा** प्रत्यय लगता है। **विचाल अर्थात् एक का अनेक होना और अनेक का एक होना।**
उदा. एको राशि द्वौ क्रियते **द्विधा** क्रियते। **त्रिधा** क्रियते।
अनेकः एक क्रियते **एकधा** क्रियते।

55) एक शब्द को **प्रकार** और **विचाल** अर्थ में **ध्यम् (ध्यमञ्)** प्रत्यय विकल्प से लगता है।
उदा. एकेन प्रकारेण **एकध्यम् एकधा** भुङ्क्ते।
अनेकमेकं करोति **एकध्यं** करोति, **एकधा** करोति।

56) **द्वि** और **त्रि** शब्दों को **प्रकार** और **विचाल** अर्थ में **धम् (धमञ्)** और **एधा** प्रत्यय विकल्प से लगते है ।

उदा. द्वाभ्यां प्रकाराभ्यां **द्वैधम्** । **त्रैधम्** । **द्वेधा** । **त्रेधा** । **द्विधा** । **त्रिधा** भुङ्क्ते । एकं राशिं द्वौ करोति **द्वैधम्** । **त्रैधम्** । **द्वेधा त्रिधा** । **द्विधा** । **त्रिधा** करोति ।

57) **द्वि** और **त्रि** शब्दों को **प्रकारवत्** और **विचालवत्** अर्थ में **धण्** प्रत्यय लगता है ।

उदा. द्वौ प्रकारौ विभागौ वा एषां **द्वैधानि** । **त्रैधानि** । ये अव्यय नहीं है ।

58) **'बार'** अर्थ संख्यावाचि नाम को **कृत्वस्** प्रत्यय लगता है ।

उदा. पञ्च वारा अस्य **पञ्चकृत्वो** भुङ्क्ते । **षट्कृत्वः** । **शतकृत्वः** । **बहुकृत्वः** । **कतिकृत्वः** ।

59) **एक, द्वि, त्रि** और **चतुर्** को **स् (सुच्)** प्रत्यय लगता है और **एक** का **सकृत्** होता है ।

उदा. **सकृत्** । **द्विः** । **त्रिः** । **चतुर्भुङ्क्ते** ।

60) **'आसन्न बार'** अर्थ में **बहु** शब्द को **धा** प्रत्यय लगता है ।

उदा. बहव आसन्ना वारा अस्य **बहुधा** भुङ्क्ते ।
(=ऊपर ऊपर बहुत बार खाता है ।)

61) **प्रथमा, पंचमी, सप्तम्यन्त, दिग्, देश** और **काल** में रहे **दिक्** शब्द को स्वार्थ में **धा** प्रत्यय लगता है ।

उदा. प्राची दिग् रमणीया **प्राग्**[1] रमणीयम् ।
प्राग् देशो रमणीयः **प्राग्** रमणीयम् । (अव्यय होने से नपुंसक)
प्राग् कालो रमणीयः **प्राग्** रमणीयम् ।
प्राच्या दिश आगत **प्राग**आगतः ।
प्राचः देशाद् आगतः **प्राग**आगतः ।
प्राचः कालाद् आगतः **प्राग**आगतः ।
प्राच्यां दिशि वसति **प्राग्** वसति ।

टिप्पणी 1. अञ्च् अंतवाले शब्दों के धा और एन (नि. 70) प्रत्यय का लोप होता है । लोप होने के बाद ङी आदि प्रत्यय भी लोप होते है ।

प्राचि देशे वसति **प्राग्** वसति ।

प्राचि काले वसति **प्राग्** वसति ।

62) **ऊर्ध्व** शब्द को **रि** और **रिष्टात्** प्रत्यय लगते है और **ऊर्ध्व** का **उप** आदेश होता है ।

उदा. उर्ध्वा दिग् देशः कालो व रमणीयः **उपरि** रमणीयम् । अथवा **उपरिष्टाद्** रमणीयम् । वैसे ही–**उपर्या**गतः । **उपरिष्टादा**गतः । **उपरि**वसति । **उपरिष्टाद्** वसति ।

63) **पूर्व, अवर** और **अधर** शब्दों को **अस्** और **अस्तात्** प्रत्यय लगते है और क्रमशः **पुर्, अव्** और **अध्** आदेश होते है ।

उदा. पुरो रमणीयम् **पुरस्ताद्** रमणीयम् ।

पुर आगतः **पुरस्ताद्** आगतः । पुरोवसति **पुरस्ताद्** वसति ।

वैसे ही–**अवः । अवस्ताद् । अधः । अधस्ताद् ।**

64) **पर** और **अवर** को **स्तात्** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **परस्ताद् । अवरस्ताद् ।**

65) **दक्षिण, उत्तर, पर** और **अवर** शब्दों को **अतस्** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **दक्षिणतः । उत्तरतः । परतः । अवरतः ।**

66) **अधर** और **अपर** को एवं **दक्षिण** और **उत्तर** को **आत्** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **अधरात् । पश्चात्**[1] **। दक्षिणात् । उत्तरात् ।**

67) प्रथमा और सप्तम्यन्त **दक्षिण** शब्द को **आ** प्रत्यय विकल्प से लगता है ।

उदा. **दक्षिणा** रमणीयम् । **दक्षिणा** आगतः ।

विकल्प से अतस् और आत् प्रत्यय ।

68) **दूर** रहे **दक्षिण** शब्दों को **आ** और **आहि** प्रत्यय लगते है । दक्षिण शब्द का उपयोग काल में नहीं होता ।

उदा. ग्रामाद् दूरा दक्षिणा दिग्देशो वा रमणीयः–

ग्रामाद् **दक्षिणा दक्षिणाहि** रमणीयम् ।

ग्रामाद् **दक्षिणा दक्षिणाहि** वसति ।

69) **उत्तर** शब्द को **आ** और **आहि** प्रत्यय विकल्प से लगते है ।

उदा. **उत्तरा । उत्तराहि ।** विकल्पे उत्तरतः, उत्तरात् (नि. 65/66)

टिप्पणी 1. अपर का पश्च आदेश होता है ।

70) **अदूर** (=पास) रहे **दिक्** शब्द को **एन** प्रत्यय लगता है ।

उदा. अदूरा पूर्वा दिग् रमणीया देश: कालो वा–

पूर्वेणास्य[1] रमणीयम् वसति ।

वैसे ही–**अपरेण । दक्षिणेन । उत्तरेण । अधरेण ।**

71) **कृ** एवं **भू** और **अस्** धातु के साथ में कर्म और कर्ता को **``पहले जो नहीं था वह होना''** जाना जाता हो तब **0(च्वि)** प्रत्यय लगता है । व्याप्ति हो तो **सात् (स्सात्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. प्राग् अशुक्लं शुक्लं करोति **शुक्लीकरोति** पटम् ।

प्राग् अशुक्लं शुक्लो भवति **शुक्लीभवति** पट: ।

प्राग् अशुक्ल: शुक्ल: स्यात् **शुक्लीस्यात्** पट: ।

सर्वं काष्टं प्राग् अनग्निमग्निं करोति **अग्निसात्करोति** काष्ठम् ।

अग्निसाद्भवति । अग्निसात्स्यात् ।

(प्रत्यय में दो `स्' होने से मूर्धन्य ष् नहीं होगा ।)

72) **अव्यक्त** शब्द के अनुकरण रूप अनेक स्वरवाले शब्दों को **कृ, भू** और **अस्** के साथ में **`इति'** बाद में न हो तो **आ (डाच्)** प्रत्यय लगता है और वह शब्द **द्वित्व** (डबल) होता है ।

उदा. पटत् करोति [2]**पटापटाकरोति / भवति / स्यात् ।**

दमत् करोति **दमदमाकरोति / भवति / स्यात् ।**

73) **``बहु''** अर्थ वाले और **`अल्प'** अर्थ वाले कारक वाचि नाम को क्रमश: **इष्ट** और **अनिष्ट** विषय में **शस् (प्शस्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. 1) ग्रामे बहवो ददति **बहुशो** ददति ।

बहु धनं ददाति **बहुशो** धनं ददाति ।

विवाहे बहुभिर्भुक्तमतिथिभि: **बहुशो** भुक्तमतिथिभि: ।

बहुभ्योऽतिथिभ्यो ददाति **बहुशोऽ**तिथिभ्यो ददाति ।

बहुभ्यो ग्रामेभ्य आगच्छति **बहुशो** ग्रामेभ्य आगच्छति ।

बहुषु ग्रामेषु वसति **बहुशो** ग्रामेषु वसति । वैसे ही–**भूरिश: । प्रभूतश: । गणश: ।**

2) अल्प आगच्छति **अल्पश** आगच्छति । इत्यादि

टिप्पणी 1. यहाँ द्वितया और षष्ठी होती है । 2. पूर्व के पटत् के त् का लोप होता है ।

74) **संख्यावाचि कारक नाम** को और **एकवचनार्थ कारक नाम** को **वीप्सा** में **शस्** प्रत्यय लगता है ।

उदा. (1) एकैकं ददाति **एकशो** ददाति । द्वौ द्वौ **द्विशः । त्रिशः ।**
एकैकेन दीयते **एकशो** दीयते । द्वाभ्यां द्वाभ्यां **द्विशः । त्रिशः ।**
(2) माषं माषं देहि **माषशो** देहि । **पादशः । अर्धशः ।**
वनशः प्रविशति । क्रमेण क्रमेण **क्रमशः ।**

'स्वार्थ में'

75) (1) स्वरूप में वर्ण और अव्यय को **कार** प्रत्यय लगता है ।

उदा. **अकारः । इकारः । ककारः । खकारः । ओंकारः । नमस्कारः ।**
चकारः । एवकारः । हुंकारः ।

(2) **'र'** के बाद **'एफ'** भी होता है । **रेफः । रकारः ।**

76) **नामन्, रूप** और **भाग** शब्दों को **धेय** प्रत्यय लगता है ।

उदा. नामैव **नामधेयम् । रूपधेयम् । भागधेयम् ।**

77) **मर्त** आदि शब्दों को **'य'** प्रत्यय लगता है ।

उदा. मर्त एव **मर्त्यः** । सूर एव **सूर्यः** । भाग एव **भाग्यम् ।**

78) **नव** शब्द को **ईन, तन, त्न** और **य** प्रत्यय लगते है और **नू** आदेश होता है ।

उदा. नवमेव **नवीनम् । नूतनम् । नूत्नम् । नव्यम् ।**

79) **पुराण** अर्थ में रहे **प्र** शब्द को **न, ईन, तन** और **त्न** प्रत्यय लगते है ।

उदा. **प्रणम् । प्रीणम् । प्रतनम् । प्रत्नम् ।** पुराणम् ।

80) **देव** शब्द को **ता (तल्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. देव एव **देवता ।**

81) **भेषज** आदि शब्दों को **य (ट्यण्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. भेषजमेव **भैषज्यम् ।**

अनन्त एव **आनन्त्यम् ।** चत्वार् एव वर्णाः **चातुर्वर्ण्यम् । त्रैलोक्यम् ।**

82) **प्रज्ञ** आदि शब्दों को **अ (अण्)** प्रत्यय लगता है ।

उदा. प्रज्ञ एव **प्राज्ञः । प्राज्ञी** कन्या । वणिगेव **वाणिजः ।** इत्यादि

83) **विनय** आदि शब्दों को **इक (इकण्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. विनय एव **वैनयिकम् ।** समय एव **सामयिकम् ।**
समाय एव **सामायिकम् ।** इत्यादि
उपाय एव **औपयिकम् ।** पा ह्रस्व हुआ है ।

84) **मृद्** को **तिक** प्रत्यय लगता है ।
उदा. मृदेव **मृत्तिका ।**

85) प्रशस्त अर्थ में **मृद्** को **स** और **स्न** प्रत्यय लगते है ।
उदा. प्रशस्ता मृद् **मृत्सा । मृत्स्ना ।**

परिशिष्ट नियम

1) **वृन्द** शब्द को **आरक** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **वृन्दारकः ।** वृन्दवान् (नि.2) वृन्दी (नि.4)

2) **शृङ्ग** शब्द को **आरक** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **शृङ्गारकः ।** शृङ्गवान् । शृङ्गीः ।

3) **फल, बर्ह** और **शृङ्ग** शब्दों को **इन्** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **फलिनः,** फलवान्, फली । **बर्हिणः,** बर्हवान्, बर्ही । **शृङ्गीणः ।**

4) अव्यक्तानुकरण अनेक स्वरी शब्दों के **अत्** का **इति** प्रत्यय लगने पर लोप होता है ।
उदा. पटत् + इति–**पटिति** । झटत् + इति = **झटिति ।**

5) द्वित्व होने पर लोप नहीं होता है । **पटत्पटदिति** । पा. 18. नि. 27.

6) दित्त्व में **त्** का विकल्प से लोप होता है । **पटत्पटेति ।**

शब्द

अतिसार (पुं.)=जुलाब, रोग । ***अतिसारकी ।***
अर्शस् (नपुं.)=हरस, मसा । ***अर्शसः ।***
अस्ति (अ.)=धन, है । ***अस्तिमान् ।***
अहम् (अ.)=अहंकार । ***अहंयुः ।***

आसुति (स्त्री.)=मदिरा । ***आसुतीवलः ।***
ऊर्णा (स्त्री.)=ऊन । ***उर्णायुः ।***
कच्छू (स्त्री.)=खुजली । ***कच्छुरः ।***
कम् (अ.)=दु:ख । ***कंयुः ।***
कृषि (स्त्री.)=खेती । ***कृषीवलः ।***
ख (नपुं.)=विवर, आकाश । ***खरः ।***

चूडा (स्त्री.)=चोटी, शिखा। *चूडाल:।*

तमिस्त्र (नपुं.)=अंधकार का समूह। *तमिस्त्र पक्ष: ।*

तुण्डि (स्त्री.)=बढी हुई नाभि। *तुण्डिभ: ।*

तुन्द (नपुं.)=फांद, बडा पेट। *तुन्दिल: । तुन्दिक: ।*

मधु (वि.)=मीठाश, मधुरता। *मधुर: ।*

मास् (पुं.)=चन्द्रमा। *पौर्णमासी ।*

यव (पुं.)=जव। *यवमान् ।*

वटि (स्त्री.)=वटी, गोली। *वटिभ: ।*

वलि (स्त्री.)=झुर्रिया। *वलिभ: ।*

शम् (अ.)=सुख। *शंयु: ।*

शिखा (स्त्री.)=शिखा, चोटी, कलगी। *शिखी ।*

शुभम् (अ.)=कल्याण। *शुभंयु: ।*

सिध्म (नपुं.)=चमडी का रोग *सिध्मल: ।*

संस्कृत वाक्य

द्व्याश्रय महाकाव्ये अष्टादश: सर्ग: ।

1. यथैव शृङ्गारकपागदिभि र्द्राग् मृगै र्मृगा: पादिकशृङ्गवन्त: ।
वृन्दारकैस्तद्वदवृन्दवन्तो भटै र्भटा युद्धकृतोऽत्र दृष्टा: ।।70।।

2. **अथेषुवर्षं विदधे च भैमिरान्नस्य भृत्या लुलुठुश्च भूमौ ।**
वातक्यतीसारकिण: पिशाचकिनो यथा पञ्चमिनश्च बाला: ।।90।।

3. कुमारपालोऽय:शरेणान्नमहन्। स घातरुजा भूमौ पपात। तत:
अस्त्वयमायुष्मानित्युपेक्षमाण: कुमारपालस्तं न न्यहन्। केवलं
तदीयां जग्राहेभघटां तुरङ्गमांश्च।

4. **अथ रिपवो 'भो: क्व नु गमिष्यसि, भो: कं यामीति वादिन' इतो द्राग् नेशु: ।**

द्व्याश्रय महाकाव्ये—एकोनविंश सर्ग: ।

5. ख्यातो बहुत्र सर्वत्रेहैव भैमिरथावसत्।
रणेऽत्र पतितान्कुत्राप्यरीन्स्वान्क्वाप्यशोधयत् ।।1।।

टिप्पणी

70. **शृङ्गारकपादिभि:** शृङ्गवद्भिर्विवृद्धपादवद्भिश्च। **तद्वद्** तथा **वृन्दारकै:** समूहवृद्धि:।

90. पञ्चमो मास: संवत्सरो वास्त्येषां **पञ्चमिनो** बाला:।

1. **बहुत्र** बहुषु स्थानेषु। **सर्वत्र** जगत्त्रयेऽपि।
इहैव रणभूनिकट **एव**।

6. **नैकदा नान्यदोत्सेको न कदाचिन्न सर्वदा ।**
ह्री: प्रत्युत तदा तस्य यदाऽऽसीज्जयकीर्तनम् ।।2।।

7. आन्नदूतोऽभ्यगादेतर्ह्यूचे चेति सदा पटु: ।
यत्तदानीं व्यधत्तान्नो न तत्सन्मन्यतेऽधुना ।।3।।

8. **द्वेधा त्रेधा न भाव्यान्नो द्वैधस्त्रैधश्च मास्म भू: ।**
सकृद्द्विस्त्रिश्चतु: पञ्चकृत्वो वाग: सहेन्महान् ।।11।।

9. उपरिष्टाद्गते सिद्धेऽधस्तादिन्द्रस्त्वमागम: ।
द्वयं युवाभ्यां भोक्तव्यमान्नस्तज्ज्ञातवान् न हि ।।14।।

10. **वसता दक्षिणा रम्यं येन तस्य मुने: समम् ।**
मात्रा सह गुरुं प्रैषीदान्नस्ते दातुमात्मजाम् ।।21।।

11. यै: ख्यातमुत्तरा जातै र्वर्धितैरुत्तराहि सत् ।
तानश्वान्प्राहिणोदान्नो दातुमुद्वाहमङ्गले ।।23।।

12. **तथा यै र्जातै र्विन्ध्याद्रे: पूर्वेण पश्चाच्च श्लाघ्यम् तान् गजान् त्वत्कृते प्राहिणोत् ।**

13. इत्युक्त्वा दूते स्थिते कुमारपालनृपोऽब्रवीत्–
यथार्को दृशदीभूतं कुर्यादुदकसाद्धिमम् ।
आन्नभक्तिर्दृशद्भूतमस्मदीयमनस्थता ।30।।

14. **आन्न आत्मजामश्वान्गजांश्च अणहिलपाटके प्रेषयतु ।**
गुरु र्माता चाणहिलपाटकं पश्यतु ।।

टिप्पणी

3. **एतर्हि** अस्मिन्प्रस्तावे ।

11. **द्वेधा** भक्तोऽभक्तश्च । **त्रेधा** भक्तोऽभक्तोमिश्रश्च । द्वौ विभागौ प्रकारौ वाऽस्य **द्वैध:** प्रसन्नोऽप्रसन्नश्चैवं **त्रैधश्च** ।

14. **द्वयम्** स्वर्गो मर्त्यलोकश्च ।

21. **वसता** तिष्ठता । **दक्षिणा** दणिणस्यां दिशि देशे वा । **येन** मुनिना कृत्वा **दक्षिणा रम्यम्** । **तस्य मुने:** अगस्त्यस्य प्रभावादिना **समम्** तुल्यम् **गुरुं** पुरोहितं **प्रैषीत्** ।

23. **उत्तरा** उत्तरस्यां दिशि देशे वा **जातै: उत्तरा ख्यातम्** । **सत्** शोभनम् ।

30. **उदकसात्कुर्यात्** सर्वमप्युदकीकरोति ।

15. पश्चात्तं दूतं विसृज्य कुमारपालः स्वदेशं प्रति निवृत्तः सन् पत्तनसमीपे ययौ पुरे चाविशत् ।

16. तूर्ये झणिति कुर्वाणे द्राग्झणज्झणदित्यपि ।
पटत्पटेति पटहेऽलंचकार स्वधाम सः ॥42॥

17. अस्तोकशो रिपूञ्जिष्णुं तं पौरा एकशोऽभ्ययुः ।
अश्वमश्वं ढौकयतस्तान्सोऽप्येकैकमालपत् ॥44॥

18. रकारो नु षकारो नु मूर्धन्यो वाग्मिनां गुरुः ।
नमस्काराई आन्नस्या-ऽनहंकारोऽन्यदाऽऽगमत् ॥49॥

19. कन्याऽऽगाद् रेफभुग्नभ्रूर्जल्हणा नामधेयतः ।
सुरूपधेया सद्भागधेया पितामहीसमम् ॥50॥

20. नूल्नाऽतिथीनामेतेषां सूर्यो मर्त्येषु नूतनः ।
नवीनमार्पयद् भूप आवासं नव्यमन्दुरम् ॥51॥

21. कुमारपालो नृप आन्नपुरोहितं विवाहकार्याणि पप्रच्छ । नृपः कुमारपालो विवाहाय उचितनेपथ्यविशेषेणाऽसज्जत् । पुरोहितस्तमाह्वत् । कुमारपाल आशु पुरोहितगृहमगात् ॥

टिप्पणी

44. **अस्तोकशः** बहून् । **एकशः** एकैकः । **एकैकम्** एकमेकम् ।

49. यथा रकारषकारौ मूर्धन्यौ तथा **वाग्मिनां मूर्धन्यः गुरुः ।**

50. **रेफभुग्नभ्रूः** रेफवद् भुग्ने-कुटिले भ्रुवौ यस्याः सा तथा । **सुरूपधेया** शोभनरूपा । **सद्भागधेया** शोभनभाग्या ।

51. **पितामहीसमम्** पितामह्या समं-सह ।
नव्यमन्दुरम् नवाश्वशालम् **आवासमार्पयत् ।**

पाठ-17

प्रकृत आदि अर्थ

1) **प्रकृत (प्रचुर अथवा प्रधान) अर्थ में** नाम को स्व अर्थ में **मय (मयट्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. अन्नं प्रकृतम् **अन्नमयम्** (=प्रचुर अथवा प्रधान अन्न ।), **घृतमयम् । दधिमयम् ।**

2) **प्रकृतम् अस्मिन् अर्थ में** नाम को **मय (मयट्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. अन्नं प्रकृतमस्मिन् **अन्नमयम्** भोजनम् **। अपूपमयं** पर्व **। वटकमयी** यात्रा ।

3) **प्रकृत और प्रकृतम् अस्मिन्–इन दो अर्थों में** बहुवचन में रहे नाम को **समूहवत्** और **मय (मयट्)** प्रत्यय लगते है ।
उदा. अपूपाः प्रकृताः **आपूपिकम् । अपूपमयम् ।**
मौदकिकम् । मोदकमयम् । शाष्कुलिकम् । शष्कुलीमयम् ।
धैनुकम् । धेनुमयम् । (पा.12 नि.7 एवं 8),
अपूपाः प्रकृता अस्मिन् **आपूपिकम् । अपूपमयं** पर्व ।
मौदकिकी । मोदकमयी पूजा ।
गणिकाः प्रकृता यस्यां यात्रायां **गाणिक्या गणिकामयी** यात्रा ।
अश्वीया अश्वमयी यात्रा । (पा. 12. नि.11)

4) **निन्द्य अर्थ में** नाम को स्वार्थ में **पाश (पाशप्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. निन्द्यो वैयाकरणः **वैयाकरणपाशः । छान्दसपाशः ।**

5) **प्रकृष्ट अर्थ में (प्रकर्षवत् अर्थ में)** नाम को **तम (तमप्)** प्रत्यय लगता है । प्रकर्ष–अतिशय ।
उदा. सर्वे इमे शुक्लाः अयमेषां प्रकृष्टः शुक्लः **शुक्लतमः** ।

6) **दो में प्रकृष्ट अर्थ में और विभाग करने योग्य प्रकृष्ट अर्थ में** नाम को **तर (तरप्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. द्वाविमौ पटु अयमनयोः प्रकृष्टः पटुः **पटुतरः ।**
सांकाश्यकेभ्यः पाटलिपुत्रका **आढ्यतराः ।**

7) **स्वार्थ में** क्वचित् **तर (तरप्)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. अभिन्नमेव **अभिन्नतरकम्** (स्वार्थ में **क** नि.13)
उच्चैरेव **उच्चैस्तराम् ।**

8) **किं** तथा **त्याद्यन्त**, **एकारान्त** और **अव्यय** शब्दों के बाद में रहें **तम (तमप्)** और **तर (तरप्)** प्रत्यय के अंत का **आम्** होता है। **तमप्** और **तरप्** सत्त्व द्रव्य में न हो तो।

उदा. इदमनयो: अतिशयेन किं पचति **किंतरां** पचति।
इदमेषामतिशयेन किं पचति **किंतमां** पचति।
त्याद्यन्त को भी तरप् तमप् प्रत्यय लगता है।
द्वाविमौ पचत: अयमनयोरतिशयेन पचति **पचतितराम्**।
सर्वे इमे पचन्ति अयमेषां प्रकृष्टं पचति **पचतितमाम्**।
पूर्वाह्णेतराम् भुङक्ते। **पूर्वाह्णेतमाम्** भुङक्ते।
नितराम्। नितमाम्। सुतराम्। सुतमाम्।

9) **तमप् और तरप् के अर्थ में** जिस शब्द का **प्रवृत्तिनिमित्त गुण** हो, ऐसे शब्द को विकल्प से **इष्ठ** और **ईयसु** प्रत्यय लगते है।

उदा. अयमेषामतिशयेन पटु: **पटिष्ठ:। पटुतम:।**
अयमनयोरतिशयेन पटु: **पटीयान्। पटुतर:।**

10) **प्रशस्त अर्थ में** त्याद्यन्त को और नाम को **रूप (रूपप्)** प्रत्यय लगता है।

उदा. प्रशस्तं पचति **पचतिरूपम्।**
प्रशस्तो वैयाकरणो **वैयाकरणरूप:। पण्डितरूप:।**

11) **ईषदसमाप्त (कुछ कम समाप्त) अर्थ में तम (तमप्)** आदि अंत में न हो ऐसे त्याद्यन्त को और नाम को **कल्प (कल्पप्), देश्य (देश्यप्)** और **देशीय (देशीयर्)** प्रत्यय लगते है। **प्** और **र्** इत् है।

उदा. ईषदसमाप्तं पचति **पचतिकल्पम्। पचतिदेश्यम्। पचतिदेशीयम्।**
ईषदसमाप्त: पटु: **पटुकल्प:। पटुदेश्य:। पटुदेशीय:।**

12) **ईषदसमाप्त अर्थ में** नाम के पहले **बहु** प्रत्यय विकल्प से लगता है।

उदा. ईषदसमाप्त: पटु: **बहुपटु:। बहुगुडो** द्राक्षा। **बहुचन्द्रो** मुखम्। **बहुभुक्तम्** अथवा पटुकल्प:। इत्यादि।

13) **स्वार्थ में यावादि** शब्दों को **क** प्रत्यय लगता है । याव=अलता ।
उदा. याव एव **यावकः । भिक्षुकः ।** इत्यादि

14) **असहाय अर्थ में एक** शब्द को **आकिन्** और **क** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **एकाकी । एककः ।** (=अकेला–दूसरा साथ में न हो ऐसा)

15) अब आगे कहे जाने वाले अर्थों में–
(i) **क (कप्)** प्रत्यय लगता है ।
(ii) **त्याद्यन्त** और **सर्वादि** के स्वरों में अन्त्य स्वर के पहले **अक्** प्रत्यय लगता है । (**कप्** का अपवाद)
(iii) **सकारादि, ओकारादि** और **भकारादि** को छोडकर स्याद्यन्त युष्मद्, अस्मद् के स्वरों में अन्त्य स्वर के पहले **अक्** प्रत्यय लगता है ।
(iv) अव्यय के स्वरों में अन्त्य स्वर के पहले **अक्** प्रत्यय लगता है और अव्यय के अन्त्य क् का द् होता है ।

16) **कुत्सित, अल्प और अज्ञात अर्थ में** ऊपर कहे अनुसार **कप्** आदि प्रत्यय लगते है ।
उदा. (i) कुत्सितोऽल्पोऽज्ञातो वाश्वः **अश्वकः । गर्दभकः ।**
(ii) कुत्सितमल्पमज्ञातं वा पचति **पचतकि । सर्वके । विश्वके । सर्वकस्मै । विश्वकस्मै ।**
(iii) **त्वयका । मयका । त्वयकि । मयकि । युष्मकासु । युवकयोः । आवकयोः । युवकाभ्याम् । अस्मकाभिः ।**
(iv) कुत्सतमल्पमज्ञातं वा उच्चैः **उच्चकैः । नीचकैः ।**
धिक्–**धकिद् ।** पृथक्–**पृथकद् ।**

17) **'दो में निर्धारण करना हो' ऐसे अर्थ में–**
(i) एक शब्द को विकल्प से **अतर (डतर)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **एकतरो** भवतोः पटुः । विकल्प से-एकको भवतोः पटुः। कप् प्रत्यय ।
(ii) **यत्, तत्, किम्** और **अन्य** शब्दों को **अतर (डतर)** प्रत्यय लगता है ।
उदा. **यतरो** भवतोः पटुः **ततर** आगच्छतु । इत्यादि

18) **बहुत में निर्धारण करना हो ऐसे अर्थ में–**

(i) **यत्, तत्** और **अन्य** शब्दों को **डतम** और **डतर** प्रत्यय विकल्प से लगते है ।

उदा. **यतमो यतरो** वा भवतां पटुः **ततमः ततरो** वा आगच्छतु । **कतमः कतरो वा** भवता पटुः ? **अन्यतमोऽन्यतरो** वा भवतां पटुः । विकल्प से कप्–यको भवतां पटुः सकः आगच्छतु । इत्यादि ।

(ii) **किम्** शब्द को प्रश्न के विषय में **डतम** और **डतर** प्रत्यय विकल्प से लगते है ।

उदा. **कतमः कतरो** वा भवतां देवदत्तः ? प्रश्न ।

किम्–निन्दा में भी लगता है । को भवतां देवदत्तः ।

(iii) **एक** शब्द को **डतम** प्रत्यय विकल्प से लगता है ।

उदा. **एकतमो** भवतां दण्डी । विकल्प से एककः । कप्–प्रत्यय नि. 15 (1)

परिशिष्ट नियम

1. **स्नात** शब्द को **'वेद की समाप्ति ज्ञात होती हो तब', क** प्रत्यय लगता है ।

   उदा. वेद समाप्य स्नातः– **स्नातकः** । वेद की समाप्ति करके स्नान किया हुआ–वेद को पार पाया हुआ ।

2. **तनु, पुत्र, अणु, बृहती** और **शून्य** शब्दों को क्रमशः **सूत्र, कृत्रिम, निपुण, आच्छादन** और **रिक्त** अर्थ में रहे हो तब स्व अर्थ में **'क'** प्रत्यय लगता है ।

   उदा. 1) तनु सूत्रं–**तनुकम् ।** (=सूत्र)

   2) पुत्रः कृत्रिमः– **पुत्रकः ।** (=कृत्रिम पुत्र)

   3) अणुः निपुणः **अणुक ।** (=निपुण)

   4) बृहती आच्छादनम् **बृहतिका ।** (=आच्छादन विशेष)

   5) शुन्यः रिक्तः– **शून्यकः ।** (=खाली)

3. **ह्रास अर्थ** में **कप्** प्रत्यय लगता है। नि. 15 ह्रसिता। वधूटी-वधूटिका। ह्रास अर्थात् शब्द के अर्थ में बदलाव होना। वधूटी अर्थात् तरुण वयवाली बहू। परंतु कप् प्रत्यय होने के बाद तरुण वय से आगे वाली वय में पहुँची ऐसी बहू।

शब्द

अणुक (वि.)=निपुण।
अलि (पुं.)=भ्रमर।
आयोगिन् (वि.)=अधिकारी।
कठ (पुं.)=कठ नाम के व्यक्ति ने बनाए वेद को पढनेवाला।
करीष (नपुं.)=बकरी की लींडी।
कालायस (नपुं.)=काला लोहा, श्रेष्ठ लोहा।
गणिका (स्त्री.)=वेश्या।
छन्दस् (नपुं.)=वेद।
(छन्दोऽधीते छान्दसः-श्रोत्रिय)
तनुक (नपु.)=सूत्र, सूतर।
त्रिककुद् (पुं.)=लंका के पास का पर्वत।
धवल (पुं.)=धवल, गीत।
नर्मन् (नपुं.)=हास्य, केलि।
निःश्रेयस् (नपुं.)=मोक्ष।
पुत्रक (पुं.)=गोद लिया हुआ पुत्र।
निस्त्रिंश (पुं.)=तलवार।
पुरीष (नपुं.)=विष्टा, मल।
पुरोहित (पुं.)=राजपुरोहित।
ब्रह्मसूत्र (नपुं.)=जनोइ।
मह (पुं.)=उत्सव।
मातृवेश्मन् (नपुं.)=माता का घर, मायका।
याव (पुं.)=अलता, लाख का रस। **(यावकः)**
वधूटिका (स्त्री)=बहु, छोटी बहु।
संपूट (पुं.)=इकट्ठे किये दो कोडिये।
सांकाश्य (नपुं.)=एक गाव का नाम।
स्नातक (वि.)=वेद को पढा हुआ।
सूना (स्त्री.)=वधस्थान।
सौनिक (पुं.)=कसाई। **(सूना प्रयोजनमस्य)**

संस्कृत वाक्य

द्व्याश्रयमहाकाव्ये एकोनविंशः सर्गः।

1. तिलकं मङ्गलमये राज्ञो दधिमयं व्यधुः।
अगाणिक्याः स्त्रियो द्वारि महेऽत्राऽगणिकामये ॥56॥

टिप्पणी :– 56. **मङ्गलमये द्वारि**। **दधिमयं** दधि प्रकृतम्–दधिस्वरूपम्।

2. **त्यक्त्वा ऽपूपमयं मौदकिकं च धवलान्दधुः ।**
तत्रा ऽगायनपाशाश्च स्त्रीतमा विलसत्तमाः ॥57॥

3. सूक्ष्मवस्त्रतमः श्रेष्ठतमश्चुलुकजन्मनाम् ।
ययौ गौरतमः सोऽन्तर्भित्त्वा लवणसंपुटम् ॥58॥

4. **अयं शुभतरः किं वा-ऽसौ शोभनतरा न्विति ।**
दृष्टो वधूसखीवर्गै र्मातृवेश्माऽविशन्नृपः ॥59॥

5. तत्र पूज्यतरैः सांकाश्यकेभ्यो नागरेयकैः ।
आगात्पुरोहितोऽग्रेऽपि प्रीतः प्रीततरस्तदा ॥60॥

6. **किं पाणी पाणिपादस्यां ह्री वा मृदुतराविति ।**
ज्ञातुं नूच्चैस्तरां सख्याऽत्रोत्क्षिप्याऽऽनायि कन्यका ॥61॥

7. अतिशेतेतरां न्वेषोऽतिशेते किंतरामियम् ।
पुरोधा इति विमृशंस्तयोः पाणी अयोजयत् ॥62॥

8. **स्म गायन्तितमां तत्र मन्त्रानग्रेतरां द्विजाः ।**
प्रगेतमामिवाऽब्जेषूच्चैस्तमां हर्षिणोऽलयः ॥63॥

9. वध्वा उत्तमसख्योऽथैवं नर्मधवलान्जगुः ।
पटिष्ठो वञ्चयतेऽसौ किंतमां नः पटीयसीः ॥64॥

10. **असौ हरतिरूपं नश्चौररूपः सखीमिमाम् ।**
पद्मकल्पे करे गृह्णन् वज्रदेश्येन पाणिना ॥65॥

टिप्पणी :– 57. **अपूपमयं मौदकिकं च त्यक्त्या** अपूपान्मोदकांश्च प्रकृतान्मुक्त्वा ।

58. **सूक्ष्मवस्त्रतमः** अतिशयेन सूक्ष्माणि वस्त्राण्यस्य ।
लवणसंपुटम् लवणाग्निगर्भं शरावसंपुटम् ।

60. **तत्र** मातृगृहे । **सांकाश्यकेभ्यः** सांकाश्ये पुरे भवेभ्यो द्विजेभ्यः सकाशात्**पूज्यतरैः नागरेयकैः** नगरे-स्थानविशेषे भवैर्द्विजैः सह **आगात्पुरोहितः ।**

61. **इति** इदम् । **उच्चेस्तराम्** अत्यन्तम् । **ज्ञातुं नु** वेत्तुमिव । **उत्क्षिप्य** उत्पाद्य । **सख्या कन्यका अत्र** मातृगृहे **आनायि ।**

63. **अग्रेतराम** अतिप्रथमम् । **प्रगेतराम्** अतिप्रभाते ।

64. **नर्मधवलान्** हासप्रधानानि गीतानि **जगुः । असौ** भैमिः–कुमारपालः । **पटीयसीः नः** अस्मान् **किंतमां** अतिशयितं यथा स्यादेवं कथं नाम **वञ्चयते ।**

65. **हरतिरूपम्** सर्वलोकसंमत्या हरणात्प्रशस्तं चोरयति ।
नः अस्माकं **सखीम् ।**

11. वरोऽसौ सीरिदेशीयो धत्तेदेश्यं च पाणिना ।
इयं च कम्पतेकल्पं ब्रूमोदेशीयमत्र किम् ?।।66।।

12. पुरोधाः स्नातकाऽग्र्योऽथ तनुक-ब्रह्मसूत्रभृत् ।
पुत्रको न्वणुकः स्त्रष्टुरग्निकार्यं प्रचक्रमे ।।72।।

13. स वधूटिकया भ्राम्यतकि स्माऽग्नेः प्रदक्षिणम् ।
जगुश्च सर्वकानन्दि मङ्गलं विश्विकाः स्त्रियः ।।75।।

14. स्वर्गभाजामन्यतमां वधूमन्यतरं च तम् ।
अकारयदथ प्रीतः पुरोधाः करमोचनम् ।।88।।

15. कतरो वः कठो विद्वान् कतमो वेति भाषयन् ।
नृपोऽप्रीणाद् धनै र्विप्रान्यतरांस्ततरान्नहि ।।89।।

16. अथ कालायसास्त्रभृद् भूपः सौन्दर्यामृतपूर्णां वधूं गृह्णन् वेश्माभि अचलत् । तया इन्दुमुख्या वध्वा सह स गृहमविशत् ।

17. गते संख्यातरात्रेऽर्वाग् वर्षारात्रान्महीपतिः ।
व्यसृजत्पुण्यरात्रार्धरात्रे श्वश्रूं गुरुं च तम् ।।133।।

18. सर्वरात्रजागरूकः स द्विषां क्ष्मां वशीचक्रे उच्चदेशाधिपाद्या नृपास्तं हयद्विपैरार्चन् ।

19. निःश्रेयसार्थिभिरपि स्तुतदोस्तथोर्वीं निस्त्रिंशपाणिरदशैः स जिगाय मासैः।
न द्व्यङ्गुलं[1] नयपथस्य विलङ्घते स्म
नाऽत्यङ्गुलो भवति जातु यथा स्म कोऽपि ।।137।।

टिप्पणी :– 66. **सीरिदेशीयः** हलधरतुल्यः सन् **असौ वरः पाणिना** हस्तेन **धत्तेदेश्यं च** ईषदपरिसमाप्तम् (अस्मत्सखीम्) धारयति ।

72. **स्नातकाग्र्यः** वेदं समाप्य स्नाताः–स्नातका-वेदपारदृश्वानः तेषु **अग्र्यः** मुख्यः । **तनुकब्रह्मसूत्रभृत्** तनु सूत्रं-तनुकं तस्य यद् ब्रह्मसूत्रं-यज्ञोपवीतं तद् बिभर्ति । **अणुकः निपुणः पुत्रको नु** कृत्रिमः पुत्र इव ।

75. **भ्राम्यतकि** अल्पं भ्राम्यति । **विश्विका**ः कस्येमा इत्यज्ञाता विश्वाः–सर्वाः **स्त्रियः** ।

133. **गते संख्यातरात्रे** जाती एकवचनम् कियतीष्वपि रात्रिष्वतिक्रान्तासु ।

137. **निःश्रेयसार्थिभिरपि** मोक्षेच्छुभि र्मुनिभिरपि **स्तुतदोः** वर्णितबाहुवीर्यः । **निस्त्रिंशपाणिः** खड्गव्यग्रकरः सन् **अदशैः** न दश अदशाः तै-र्न्यूनै र्दशभि **र्मासैः उर्वीं जिगाय । अत्यङ्गुलः** अङ्गुलिमप्यतिक्रान्तः ।

---

1. संख्या और अव्यय के बाद रहे अङ्गुलि शब्दान्त तत्पुरुष समास को अ(ड) प्रत्यय लगता है । द्वयोरङ्गुल्योः समाहारः द्व्यङ्गुलम् । अत्यङ्गुलः ।

20. अथ एकदाऽमुना कुमारपालेन भूपेन दीनान् त्रिचतुरपशून्पथि कर्षन्कोऽपि ग्राम्यनर ऐक्षि । असौ तमूचे, भो गतावसक्तानवीन् कुतो हेतोः कर्षसि । स प्रत्यवोचत् हे राजन्नतिदरिद्रोऽहम् । तस्मादमून् पशून् वसुभ्यः प्रतिदातुं सौनिकापणे नयामि । निन्द्यलोका एतदीयपिशितानि धनैरीप्सवः सन्ति ।

21. दुर्मेधसस्तस्य वचोऽल्पमेघसः श्रुत्वेति राज्ञा जगदे सुमेधसा ।
अमेधसो धिग्बत मन्दमेधसो हिंसन्ति जन्तून्निजजीविकाकृते ।।9।।

22. उद्गन्धि दुग्धं कलमान्सुगन्धींस्त्यक्त्वा पलं काङ्क्षति पूतिगन्धि ।
लोको यदुद्गन्धि[2] सुगन्धमत्तुं तच्छासितुस्तत्खलु दुर्विवेकः ।।12।।

23. न न्यायगन्धो[3]ऽस्मि न धर्मगन्धिः करीषगन्धस्य पुरीषगन्धिः ।
कृते शरीरस्य करं धिगेष गृह्णामि भूमे र्न तु रक्षणाय ।।14।।

24. स (कुमारपालः) तं पशुकर्षिणं नरमित्युक्त्वाऽऽयोगिनमित्यादिशत् । भवद्भि र्मृषाभिभाषी शिष्यः । मृषाभिभाषिणः सकाशात् पारदारिकः विशेषेण शिष्यः । अस्मादपि जगति जन्तुवधको विशेषेण शिष्यः। ते नियोगिनस्तद्वचःसममेव तरुणलोकैः कृत्वामार्या घोषणामात्रि-ककुद्दिरे व्यधुः ।

टिप्पणी

2. सु, पूति, उद् और सुरभि शब्द के बाद रहे आगन्तु (आहार्य) गुण में रहे गन्ध शब्दान्त बहुब्रीहि समास को इ (इत्) समासान्त विकल्प से लगता है । सुगन्धि सुगन्धम् । उद्गन्धि उद्गन्धम् पलम् ।
3. अल्प अर्थ में रहे गन्धशब्दान्त बहुव्रीहि समास को इत् समासान्त विकल्प से लगता है । सूपस्य गन्धो-मात्राऽस्मिन् सूपगन्धि सूपगन्धं भोजनम् ।
12. **पूतिगन्धि** स्वभावेन दुर्गन्धं, परं कर्पूरादिसुरभिद्रव्यक्षेपेण **उद्गन्धि** उल्लसद्गन्धं **सुगन्धं** च सत् **पलम् अत्तुं काङ्क्षति । तच्छासितुः** लोकं शिक्षयितुः–नृपस्य ।

पाठ-18

तद्धित विधि

1) **ञित्** और **णित्** तद्धित प्रत्यय के बाद शब्द के आदि **स्वर की वृद्धि** होती है ।
उदा. दक्षस्यापत्यम् **दाक्षिः ।** इञ् प्रत्यय
उपगोरपत्यम् **औपगवः ।** अण् प्रत्यय

2) **ञित्** और **णित्** तद्धित प्रत्यय के बाद पदान्त **य्** और **व्** के पहले **ऐ** और **औ** जुडता है ।
उदा. व्याकरणं वेत्ति अधीते वा **वैयाकरणः । नैयायिकः ।**
स्वागमं वेत्ति अधीते वा **सौवागमिकः ।**

3) **ञित्** और **णित्** तद्धित प्रत्यय के बाद **द्वार** आदि शब्दों के **य्** और **व्** के पहले **ऐ** और **औ** होता है । उदा. द्वारे नियुक्तः **दौवारिकः ।**

4) **जङ्गल, धेनु** और **वलज** उत्तरपद हो ऐसे शब्दों के पूर्वपद को नित्य और उत्तरपद की विकल्प से **वृद्धि** होती है ।
उदा. कुरुजङ्गलेषु भवः **कौरुजङ्गलः, कौरुजाङ्गलः ।**
वैश्वधेनवः, वैश्वधैनवः । सौवर्णवलजः, सौवर्णवालजः ।

5) **हृद्, भग,** और **सिन्धु** उत्तरपद हो ऐसे शब्दों के पूर्वपद और उत्तरपद की **वृद्धि** होती है ।
उदा. सुहृदः भावः **सौहार्दम् ।** (विकल्प से **सौहृदम्** होता है ।)
सुभगस्य भावः **सौभाग्यम् ।** सक्तुसिन्धुषु भवः **साक्तुसैन्धवः ।**

6) **अनुशतिक** आदि शब्दों को **ञित् णित्** प्रत्यय लगने पर पूर्वपद और उत्तरपद के स्वरों में आदि स्वर की **वृद्धि** होती है ।
उदा. अनुशतिकस्येदम् **आनुशातिकम् । आधैनवम् ।**
ऐहलौकिकः । पारलौकिकः । सार्वलौकिकः । सार्वभौमः । इत्यादि

7) **णि, इष्ठ** और **ईयसु** प्रत्यय लगने के बाद–
(i) **विन्** और **मतु** प्रत्यय का लोप होता है ।
उदा. स्त्रग्विणमाचष्टे **स्त्रजयति ।**
अयमेषां स्त्राग्विणामतिशयेन **स्त्रग्वी–स्त्रजिष्ठः ।**

अयमनयोः स्रग्विणोरतिशयेन **स्रग्वी–स्रजीयान् ।**
त्वग्वन्तमाचष्टे **त्वचयति । त्वचिष्ठः । त्वचीयान् ।**

(ii) **अल्प** और **युवन्** का विकल्प से **कन्** होता है ।
उदा. **कनयति । कनिष्ठः । कनीयान् ।**
विकल्प से अल्पयति । अल्पिष्ठः । अल्पीयान् ।
यवयति । यविष्ठः । यवीयान् । नि. 8 (5)

(iii) **प्रशस्य** का **श्र** होता है ।
उदा. **श्रयति । श्रेष्ठः । श्रेयान् ।**

(iv) **वृद्ध** और **प्रशस्य** का **ज्य** होता है ।
उदा. **ज्ययति । ज्येष्ठः ।**

(v) **ज्य** आदेश के **ईयसु** के **ई** का **आ** होता है ।
उदा. **ज्यायान् ।**

(vi) **बाढ** और **अन्तिक** का **साध** और **नेद** होता है ।
उदा. **साधयति । साधिष्ठः । साधीयान् ।**
नेदयति । नेदिष्ठः । नेदीयान् ।

8) **इमन्, णि, इष्ट** और **ईयसु** के बाद–

(i)

प्रिय का प्रा–	प्रेमा ।	प्रापयति ।	प्रेष्ठः ।	प्रयान् ।
स्थिर का स्था–	स्थेमा ।	स्थापयति ।	स्थेष्ठः ।	स्थेयान् ।
गुरु का गर्–	गरिमा ।	गरयति ।	गरिष्ठः ।	गरीयान् ।
स्फिर का स्फा–	x।	स्फापयति ।	स्फेष्ठः ।	स्फेयान् ।
उरु का वर्–	वरिमा ।	वरयति ।	वरिष्ठः ।	वरीयान् ।
बहुल का बंह्–	बंहिमा ।	बंहयति ।	बंहिष्ठ ।	बंहीयान् ।
तृप्र का त्रप्–	त्रपिमा ।	त्रपयति ।	त्रपिष्ठः ।	त्रपीयान् ।
दीर्घ का द्राघ्–	द्राघिमा ।	द्राघयति ।	द्राघिष्ठः ।	द्राघीयान् ।
वृद्ध का वर्ष्–	वर्षिमा ।	वर्षयति ।	वर्षिष्ठः ।	वर्षीयान् ।
वृन्दारक का वृन्द्–	वृन्दिमा ।	वृन्दयति ।	वृन्दिष्ठः ।	वृन्दीयान् ।

(ii) **पृथु** आदि शब्दों के **ऋ** का **र** होता है ।
पृथु, प्रथिमा । प्रथयति । प्रथिष्ठः । प्रथीयान् ।
कृश, क्रशिमा । क्रशयति । क्रशिष्ठः । क्रशीयान् ।
मृदु, म्रदिमा । म्रदयति । म्रदिष्ठः । म्रदीयान् ।

दृढ, द्रढिमा । द्रढयति । द्रढिष्ठः । द्रढीयान् ।
भृश्, भ्रशिमा । भ्रशयति । भ्रशिष्ठः । भ्रशीयान् ।
परिवृढ, परिव्रढिमा । परिव्रढयति । परिव्रढिष्ठः । परिव्रढीयान् ।

(iii) **णि** और **इष्ठ** के बाद **बहु** का **भूय्** होता है ।
उदा. **भूययति । भूयिष्ठः ।**

(iv) **ईयसु** और **इमन्** के बाद **बहु** का **भू** होता है और प्रत्यय के **इ** वर्ण का लोप होता है ।
उदा. **भूयान् । भूमा ।**

(v) **स्थूल** आदि शब्दों के अन्तस्था आदि **अवयव का लोप** और **नामि स्वर का गुण** होता है ।

उदा. **स्थूल**,	x ।	स्थवयति ।	स्थविष्ठः ।	स्थवीयान् ।
ह्रस्व,	ह्रसिमा ।	ह्रसयति ।	ह्रसिष्ठः ।	ह्रसीयान् ।
दूर,	x ।	दवयति ।	दविष्ठः ।	दवीयान् ।
क्षिप्र,	क्षेपिमा ।	क्षेपयति ।	क्षेपिष्ठः ।	क्षेपीयान् ।
युवन्,	x ।	यवयति ।	यविष्ठः ।	यवीयान् ।
क्षुद्र,	क्षोदिमा ।	क्षोदयति ।	क्षोदिष्ठ ।	क्षोदीयान् ।

(vi) **'तृ'** प्रत्यय का और अन्त्य **स्वरादि अवयव** का **लोप** होता है ।
उदा. कतृमन्तमाचष्टे करयति । कर्तारमाचष्टे करयति ।
पटु, पटिमा । पटयति । पटिष्ठः । पटियान् ।
लघु, लघिमा । लघयति । लघिष्ठः । लघीयान् ।
विमनस्, विमनिमा ।

(vii) **एक स्वर**वाले शब्दों के अन्त्य स्वरादि अवयवों का लोप नहीं होता है ।
उदा. स्त्रग्विणमाचष्टे **स्त्रजयति । स्त्रजिष्ठः । स्त्रजीयान् ।**
श्रेष्ठः। श्रेयान् ।

9) **अध्वन्** और **आत्मन्** शब्दों को **ईन** प्रत्यय के बाद **अन्त्य** स्वरादि का लोप नहीं होता है । (नि.13. का उपवद)
उदा. अध्वानमलंगामी **अध्वनीनः** । आत्मने हितः **आत्मनीनः ।**

10) **अन्** अंतवाले नाम के अन्त्य स्वरादि के **य (ट्य)** सिवाय **य** प्रत्यय लगने पर लोप नहीं होता है ।

उदा. मूर्धनि भवः **मूर्धन्य ।**

11) **अन्** अंतवाले नाम के अन्त्य स्वरादि को **अ (अण्)** प्रत्यय लगने पर **लोप नहीं** होता है ।

उदा. सुत्वनोऽपत्यम् **सौत्वनः ।** पर्वणि भवः **पार्वणः ।**

12) संयोग के बाद **इन्** हो, ऐसे इन् अन्तवाले नाम के अन्त्य स्वरादि का **अ (अण्)** प्रत्यय लगने पर लोप नहीं होता ।

उदा. शङ्खिनोऽपत्यम् **शाङ्खिनः ।**

13) **अपद न् कारान्त** नाम के अन्त्य स्वरादि का तद्धित के बाद लोप नहीं होता है ।

उदा. मेधाविनोऽपत्यम् **मैधावः । आग्निशर्मिः ।**

हस्तिनां समूहो **हास्तिकम् ।** द्वयोरह्नो समाहार **द्वयहः ।**

14) अपद **अश्मन्** शब्द के अन्त्य स्वरादि का **विकार अर्थ** में तद्धित प्रत्यय के बाद विकल्प से लोप होता है ।

उदा. अश्मनो विकार **आश्मः ।** आश्मनो वा ।

15) अपद **अव्यय नाम** के अन्त्य स्वर का तद्धित प्रत्यय के बाद प्रायः लोप होता है ।

उदा. बहिर्जात **बाह्यः । बाहीकः ।**

शश्वद् भव **शाश्वतिकः । शाश्वतः ।** यहाँ लोप नहीं हुआ है ।

(पा.13. नि.30, 35)

16) अपद **विंशति** शब्द का **ति** और **डित्** प्रत्यय लगने पर लोप होता है ।

उदा. विंशत्या क्रीतः **विंशकः ।** विंशते पूरणः **विंशः ।**

17) अपद **अ वर्णान्त** और **इ वर्णान्त** शब्दों के अ वर्ण का और इ वर्ण का तद्धित प्रत्यय लगने पर लोप होता है ।

उदा. दक्षस्यापत्यम् **दाक्षिः ।** नाभेरपत्यम् **नाभेयः ।**

18) **कद्रू** और **पाण्डू** सिवाय उ वर्णान्त शब्द के उ वर्ण का **एय** प्रत्यय लगने पर लोप होता है । उदा. कमण्डल्वा अपत्यम् **कामण्डलेयः ।**

19) **स्वयम्भू सिवाय** उपगु आदि उ वर्णान्त शब्दों के उ वर्ण का तद्धित प्रत्यय लगने पर अव् होता है ।

उदा. **उपगोर**पत्यं पुमान्–**औपगवः ।**

20) **ऋ वर्णान्त, उ वर्णान्त, दोस्, इसन्त** और **उसन्त** शब्दों को एवं **शश्वत्** और **अकस्मात् सिवाय तकारान्त** शब्दों के बाद रहे **इक** प्रत्यय के **इ** का लोप होता है ।

उदा. मातुरागतम् **मातृकम् । पैतृकम् ।**

निषादकर्ष्वां भव **नैषादकर्षुकः ।** (परिशिष्ट नि. 12 से ह्रस्व)

दोर्भ्याम् तरति **दौष्कः ।**

सर्पि पण्यमस्य **सार्पिष्कः ।** धनुः प्रहरणमस्य **धानुष्कः ।**

उदश्विता संस्कृतः ओदनः **औदश्वित्कः ।**

शकृता संसृष्टः पादः **शाकृत्कः ।**

शश्वद्भवं **शाश्वतिकम् ।** अकस्माद्भवम् **आकस्मिकम् ।**

21) **भय आदि के कारणों** से चित्त अशांत होने पर बोलने वाले व्यक्ति को जल्दी हो जाने के कारण बोलते समय व्यक्ति किसी पद या वाक्य को अनेकवार बोलता है ।

उदा. **गच्छ गच्छ । मा जल्प मा जल्प । अहिरहिरहिः ।**

22) **भृश, आभीक्ष्ण्य** और **अविच्छेद** ज्ञात होता हो तब पद या वाक्य दो बार बोला जाता है, परंतु अतिशय अर्थ में आये हुए **तमप्** आदि प्रत्यय के पहले ही द्वित्व होता है और बाद में तमप् आदि प्रत्यय लगते है ।

उदा. i) **भृश** = संपूर्ण रूप से या अतिशय से करना ।

लुनीहि[1] **लुनीही**त्येवायं लुनाति ।

ii) **आभीक्ष्ण्य** = पुनः पुनः बारम्बार करना ।

भोजं भोजं व्रजति ।

iii) **अविच्छेद** = सतत करना ।

पचति पचति । अधीते अधीते । कुरुते कुरुतेतमाम् ।

टिप्पणी :– 1. भृश और आभीक्ष्ण्य में सभी काल और अर्थ में यदि यथाविधि धातु का संबंध हो तो **हि** और **स्व** प्रत्यय लगते है ।

उदा. लुनीहि लुनीहीत्येवाऽयं लुनाति । (= अत्यंत कांटता है अथवा बारंबार कांटता है ।)

पहला द्वित्व करना फिर तमप् प्रत्यय लगाना ।

23) **नाना** (= अनेक) में से एक या दो आदि का अवधारण (= नक्की) करना हो तब दो बार बोला जाता है ।
उदा. अस्मात् कार्षापणाद् इह भवद्भ्यां **माषं माषं** देहि, **द्वौ द्वौ** देहि ।
(= इस एक तोले सोने में से दोनों आदरणीय पुरुषों को माषा-माषा (एक माप) जितना सोना दे दो । दो-दो माषा सोना दो ।)

24) **अधिकता** में और अनुक्रम में जो शब्द हो वह दो बार बोला जाता है ।
उदा. **नमो नमः** अधिकं नम इत्यर्थः ।
मूले मूले स्थूला अनुक्रमेण मूले स्थूलाः ।

25) **दूसरों से अतिशय** जाना जाता हो तब पूर्व और प्रथम दो बार बोला जाता है ।
उदा. [1]**पूर्वं पूर्वं** पुष्यन्ति (= पहले पहले खिलता है ।)
प्रथमं प्रथमं पच्यन्ते । (= पहला पहला पकता है ।)

26) **समीप अर्थ** में अधस्, अधि और उपरि दो बार बोला जाता है ।
उदा. **अधोऽधो अध्यधि उपर्युपरि** ग्रामं [2]ग्रामाः ।
(= गांव के नजदीक नजदीक गांव है ।)

27) **वीप्सा में** दो बार बोला जाता है । वीप्सा=क्रिया, गुण, द्रव्य या जाति के द्वारा सभी को आवर्जित करने की इच्छा ।
उदा. **वृक्षं वृक्षं** सिञ्चति । **ग्रामो ग्रामो** रमणीयः ।
गृहे गृहे अश्वाः । **योद्धा योद्धा** क्षत्रियः ।

28) वीप्सा में दो बार बोले हुए **'एक'** शब्द में प्रारंभ में रहे हुए **'एक'** शब्द के स्यादि प्रत्यय का लोप होता है और पुंवत् होता है ।
उदा. **एकैकः । एकैका एकैकस्याः । एक एका । एक एकस्याः ।**

टिप्पणी

1. स्वर के बाद रहे र् आर ह् के बाद आए हुए र्, ह् और स्वर सिवाय के वर्ण विकल्प से द्वित्व होते है । अर्क्कः अर्कः । ब्रह्म्म ब्रह्म
2. यहाँ द्वितीया विभक्ति होती है ।

29) वीप्सा में दो बार बोले हुए **'द्वि'** शब्द का विकल्प से **'द्वन्द्वम्'** बनता है ।

उदा. द्वन्द्वं तिष्ठतः, **द्वौ द्वौ** तिष्ठतः ।

द्वन्द्वं हीनानि, **द्वाभ्यां द्वाभ्यां** हीनानि ।

द्वन्द्वं युद्धम्, **द्वयोः द्वयोः** युद्धम् ।

द्वन्द्वं स्थितम्, **द्वयोः द्वयोः** स्थितम् ।

30) **बोलने वाले के मन में पीडा** (आबाधा) होती हो तब बोलने वाला दो बार बोलता है और पूर्वपद के स्यादि प्रत्यय का लोप होता है और पुंवत् होता है ।

उदा. **ऋक् ऋक् । पूः पूः । गतगतः । गतगता ।**

31) **गुण** शब्द **सदृश** अर्थ में विकल्प से द्वित्व (डबल) होता है और पूर्वपद के स्यादि का लोप होता है तथा पुंवत् होता है ।

उदा. **शुक्लशुक्लं** रुपम् । **शुक्लशुक्लः** पटः । **कालककालिक ।**

शुक्लादि सदृश–अपरिपूर्णगुणवाला-इस प्रकार से बोला जाता है । विकल्प से शुक्लजातीयम् (पा. 16 नि. 33)

32) **क्षिया**–आचारभ्रष्टता, **आशीः** – प्रार्थना विशेष और **प्रैष**–तिरस्कार पूर्वक प्रेरणा का ज्ञात होता हो तो वाक्य के अन्त्य स्वर, दूसरे वाक्य की आकांक्षावाले त्याद्यन्त पद संबंधी, विकल्प से प्लुत होता है ।

उदा. स्वयं रथेन **याति**$_3$ याति वा उपाध्यायं पदातिं गमयति ।

सिद्धान्त**मध्येषीष्ठाः**$_3$ अध्येषीष्ठा वा व्याकरणं च तात ।

कटं च **कुरु**$_3$ कुरु वा ग्रामं च गच्छ ।

33) **प्रत्यभिवाद में, गुरु के आशीर्वाद में, आमंत्र्य** (भोः गोत्र) और **नाम का** अन्त्य स्वर विकल्प से **प्लुत** होता है । परंतु स्त्री और शुद्र के विषय में नहीं होता ।

उदा. अभिवादये मैत्रोऽहं भोः, आयुष्मानेधि **भोः**$_3$ भो वा ।

अभिवादये गार्ग्योऽहं भोः, कुशल्यसि **गार्ग्य**$_3$ गार्ग्य वा ।

अभिवादये मैत्रोऽहं भोः, आयुष्मान्नेधि **मैत्र**$_3$ मैत्र वा ।

शब्द

अग (पुं.)=वृक्ष । ***न गच्छतीत्यगः ।***

अनुशतिक (पुं.)=चोर ।

अन्तिषद् (वि.)=पास रहा हुआ शिष्य । ***अन्तिके सीदति*** । (क लोप) ।

अन्तिकषद् (वि.)=पास रहा हुआ शिष्य ।

अन्तितस् (अ.)=नजदिक में ।

अन्तिकाद् इति । तस् का लोप. ।

अन्तिकतस् (अ.)=नजदीक में ।

अन्तिके इति ।

आकस्मिक (वि.)=अचानक हुआ । ***अकस्माद्-भवमाकस्मिकम् ।***

आय (पुं.)=कमाई ।

आर्हत (वि.)=जैन । ***(अर्हन्देवोऽस्यार्हतः ।)***

इहभवत् (वि.)=पूज्य ।

उखा (स्त्री.)=थाली, बर्तन ।

कुरुजङ्गल (पुं.)=एक देश का नाम ।

गुण्ठन (नपुं.)=संपूर्ण शरीर को ढकने वाला ।

गृह (पुं.बहुवचन)=घर । ***(गृहाः)***

द्वन्द्व (नपुं.)=रहस्य ।

निशीथ (पुं.)=मध्यरात्रि ।

परासु (वि.)=मृत, प्राण रहित ।

पाश (पुं.)=गले में बांधा हुआ वस्त्र, फांसी का फंदा ।

यद्वद् (अ.)=जैसे ।

विधुत (भूतकृदन्त)=पराभूत, हारा हुआ ।

विश्वधेनु (पुं.)=एक देश का नाम ।

सुवर्णवलज (नपुं.)=एक नगर का नाम ।

सौहार्द/सौहृद (नपुं.)=प्रेम । ***सुहृदः सुहृदयस्येदं भावः कर्म वा ।***

धातु

उद्+लम्ब् (=ग.1, आ.)=ऊपर लटकना । (उल्लम्बते)

निर्+दिश्=(ग.6 उभ.)=कहना, निर्देश करना ।

अभि+वद् (ग.1 पर., ग. 10 उभ.)=वंदन करना, अभिवादन करना ।

संस्कृत वाक्य

द्व्याश्रय–महाकाव्ये विंशः सर्गः ।

1. अन्यदा निशिताऽसिपार्श्वः कुमारपालो नृपो निशीथ आर्त्तस्वरमशृणोत् ।
2. **नृपोऽथ दध्याविति काऽपि शोकापूरान्मुमूर्षन्त्यभिरोदितीह ।**
   विदीर्यते द्वैकुलिजिक्युखा ह्यार्धकौडविक्यभ्यधिकान्नपूरात् ।।39।।

3. अथोऽल्पमूल्यं वस्त्र परिधायाऽऽत्त-गुण्ठन-नीलवासा राजा स्वपतः पदिकान् विहाय ततः स्थानाच्चचाल ।

4. किं कौरुजङ्गल्युत वैश्वधेनवी न कौरुजाङ्गल्युत वैश्वधैनवी ।
इयं हि सौवर्णवलज्यदोमृशंस्तरोरधः स्त्री रुदतीं ददर्श सः ।।44।।

5. अथेत्यवोचत्य पितेव वत्से सौवर्णवालज्यसि किं सदुःखा ।
सौभाग्यदर्पादपसौहृदेन सौहार्दिनी किं विधुताऽसि पत्या ।।45।।

6. अप्यन्तितोऽन्तिकत एत्य तदैवमुक्त्वा ।
भूपे स्थितेऽन्तिकतमे निजबान्धवे नु ।
साऽथाऽन्तिषन्न्यगददन्तिकसन्नृपांह्रि–
द्वन्द्वं स्त्रजिष्ठमिव दन्तरुचाऽऽदधाना ।।49।।

7. अब्धौ दौष्कोऽध्वन्यधानुष्कसार्पिष्को
यद्वद्वाऽऽकस्मिकं याति नाशम् ।
शाकृत्क्येषाऽशाश्वतिक्यङ्गयष्टि-
स्तद्वत्किं तां धारयिष्याम्यनाथा ।।76।।

8. अर्थं नृपोऽपुत्रमृतस्य गृह्णत्यर्थेऽपि नाऽऽस्थेत्ययि गच्छ गच्छ ।
मा जल्प मा जल्प तवेति जल्पन्त्यगे स्वमुल्लम्बयितुं प्रवृत्ता ।।77।।

टिप्पणी

44. **कौरुजङ्गली** कुरुजङ्गलेषु भवा । **वैश्वधेनवी** विश्वधेनौ भवा ।
सौवर्णवलजी सुवर्णवलजे पुरे भवा ।

45. **अपसौहृदेन** त्वयि अपगतस्नेहेन **पत्या विधुतासि** पराभूताऽसि ।

49. **अन्तिषन्नृपांऽह्रिद्वन्द्वं दन्तरुचा स्त्रजिष्ठमिव** अतिशयेन स्त्रग्वीव पुष्पमालान्वितमिव **आदधाना** ।

76. **दौष्कः** दोर्भ्यां तरन्नरः ।
अधानुष्कसार्पिष्कः न धनुः प्रहरणो यः सर्पिष्पण्यः सः ।
शाकृत्की शकृता विष्ठया संसृष्टा । **अशाश्वतिकी** अशाश्वती । **अनाथा** पतिपुत्ररहिता ।

77. **अपुत्रमृतस्य** अपुत्रः सन्मृतः तस्य । **नास्था** न मम आशा ।
अयि हे महापुरुष मद्धेतुका **तव** तवापि कापि आपद् मास्म भूदिति त्वं **गच्छ गच्छ** । तथा कोऽपि श्रोष्यतीति **मा जल्प मा जल्प** ।

9. आच्छिन्द्ध्याच्छिन्द्धीत्याच्छिदत्पाशमस्याः
शोचं शोचं तामित्यवोचच्च भूपः ।
राजाऽयं तेऽर्थं न ग्रहीता ग्रहीता
स्तोकं स्तोकं श्रद्धीयतां मद्वचोऽपि ॥78॥

10. कुरुते कुरुतेतमां दयां यन्नृपति र्मोक्ष्यति तत्परासुवित्तम् ।
स्थेयाः पतिपुत्रयोः प्रदातुं पयसः पुत्रि घटं घटं हि नित्यम् ॥79॥
अथ राजेमां स्त्रियमित्युच्चैरुब्दोध्य स्वगृहआगाम ।

11. पुरे पुरे स्वस्य हठाऽपहत्याऽसुतोऽसुतो दुःस्थ इति स्मरन् सः ।
अथ प्रजां नन्दयितैक एकाममात्यमेकैकमिति न्यदिक्षत् ॥84॥

12. द्वन्द्वं हीनाः सन्तु लक्षा मदाये द्वाभ्यां द्वाभ्यां कोटयो वाथ निम्नाः ।
ग्राह्यं वित्तं नत्वसूनोः परासोरेतद् द्वन्द्वं निर्दिशामो भवद्भ्यः ॥85॥

13. युष्मान् भो अभिवादये भव जयी भो३ एधि जैनश्च भो
युष्मानप्यभिवादये सुकृतवान्भूयाः कुमार३ भव ।
आयुष्मांश्च कुमारपाल चिरमित्याशंसितोऽत्राऽऽर्हतै–
श्चैत्यं स्फाटिकपार्श्वबिम्बमकृत स्वर्णेन्द्रनीलै र्नृपः ॥98॥

टिप्पणी

78. **आच्छिन्द्ध्याऽऽच्छिद्धीत्याच्छिदत्** भृशं–बलात्कारेणोद्दालितवान् । **पाशं** गलबन्धनवस्त्रम् ।
शोचं शोचम् अभीक्ष्णं स्वं निन्दित्वा ।
न ग्रहीता ग्रहीता अविच्छेदेन-सदा न ग्रहीष्यति ।

79. **कुरुते कुरुतेतमां दयां** भृशमभीक्ष्णमविच्छेदेन वाऽत्यन्तं कुरुते ।
यद् यस्मान् **नृपतिर**त्रत्यो राजा ।
पुत्रि ! हे पुत्रि परलोकगतयोः **पतिपुत्रयोः** तर्पणाय **पयसः** जलस्य **घटं घटं** प्रत्येकं एकैकं घटं **हि** स्फुटं **नित्यं प्रदातुं स्थेयाः** तिष्ठेत्यर्थः ।

84. **स्वस्त** द्रव्यस्य । **एक एकाम्** सर्वाम् **प्रजां नन्दयिता ।**

85. **द्वन्द्वं** द्वाभ्यां द्वाभ्यां **हीनाः सन्तु । निम्नाः** हीनाः ।

98. **भो** आर्हता-आचार्या अहं **युष्मान् अभिवादये** वन्दे ।
भो३ भूप त्वं **जयी भव** तथा **भो** भूप **जैनश्च** आर्हतश्च **एधि ।**
कुमार३ हे कुमारपाल त्वं **सुकृतवान्** धर्मलाभवान् **भूयाः** तथा **आयुष्मांश्च भव ।**
स्फाटिक–पार्श्वबिम्बं स्फटिकमयं पार्श्वबिम्बं यत्र तत् ।

प्रशस्ति—

आचार्य-हेमचन्द्रीय-साङ्ग-शब्दानुशासनात् ।
विदुषा शिवलालेन, रचितेयं प्रवेशिका ॥
बाणवेदनभोहस्त-मिते वैक्रम-वत्सरे ।
अणहिलपुरे नाम, पत्तने पूर्णतामगात् ॥

श्रीमद्गूर्जरदेशेऽणहिलपुरपत्तने श्रीसिद्धराजराज्ये आचार्य—श्रीहेमचन्द्रसूरीश्वरविरचितसिद्धहेमचन्द्राभिधानसाङ्गशब्दानुशासनं समाश्रित्याणहिलपुरपुत्तनाद् द्वादशगव्यूतिमित्ते दूरे उत्तरपश्चिमे दिग्विभागे वर्णासनदीतीरस्थ श्रीजामपुरग्रामवास्तव्य—श्रद्धवर्य**श्रीनेमचन्दश्रेष्ठि**—सुश्राविका **श्रीरतिदेवी**तनुज**शिवलालेन** महेशाने श्रीयशोविजयजैन-संस्कृत-पाठशालायां दशाब्दीं यावद् धर्मशास्त्रन्यायव्याकरणालङ्कारशास्त्रण्यभ्यस्य तत्रैव तानि शास्त्राण्यभ्यासयता सता विक्रम संवत् 2001 वर्षे प्रथमा हैमसंस्कृत-प्रवेशिका रचयितुं प्रारब्धा, ततः 2004 वर्षेऽणहिलपुरपत्तने समागत्य तत्र निवासं कुर्वता 2005 वर्षे समाप्तिं नीता । तदनन्तरं मध्यमा प्रवेशिका विरचय्य 2008 वर्षे समाप्ति नीता । ततः पर चेयमुत्तमा प्रवेशिका वैक्रमे 2031 वर्षे रचयितुं प्रारब्धा 2035 वर्षे समापिता प्रकाशिता च । एतावता यत्र सिद्धहेमव्याकरणसमवतारस्तत्रैव हैमसंस्कृत-प्रवेशिका-समवतारस्संजातः ।

॥ इति श्री हैम-संस्कृतप्रवेशिका उत्तमा समाप्ता ॥

तद्धित परिशिष्ट नियम

1. **स्यादि प्रत्यय** लगने पर, **अन्य** प्रत्यय लगने पर और **उत्तरपद** होने पर, एकवचन में **युष्मद्** और **अस्मद्** के **म्** तक के अवयव का क्रमशः **त्व** और **म** होता है। अर्थात् **त्वद्** और **मद्** होता है।
उदा. **त्वाम् । माम्** । **त्वया** । **मया । त्वद् । मद् । त्वयि । मयि । तवायं–त्वदीयः । मदीयः । त्वत्पुत्रः । मत्पुत्रः ।**
2. **य** कारादि तद्धित प्रत्यय लगने पर नामि स्वर का, रेफ के बाद दीर्घ नहीं होता है।
उदा. धूरं वहति **धुर्यः** । गिरि साधुः **गिर्यः** । (द्वि.पा. 3 नि. 5 का अपवाद)
3. **जिसमें पानी रहता है** ऐसे अर्थ में और संज्ञा में **उदक** शब्द का **मत् (मतु)** प्रत्यय लगने पर **उदन्** होता है।
उदा. **उदन्वान्** घटः । **उदन्वान्** मेघः । (=जलधारा)
उदन्वान् समुद्रः ऋषिः आश्रमश्च । (संज्ञा) ।
4. **णि, क्य** और **घुट् सिवाय के यकारादि** और **स्वरादि** प्रत्यय लगने पर–
(i) **पाद** का **पद्** होता है।
उदा. व्याघ्रस्येव पादौ अस्य व्याघ्रपाद–
व्याघ्रपादः अपत्यम् **वैयाघ्रपद्यः ।** (य प्रत्यय)
द्वौ पादौ अस्य द्विपाद्–द्विपदे हितम् **द्विपदीयम् ।**
(ii) **उदच्** का **उदीच्** होता है।
उदा. **उदीच्यः** । उदीचः पश्य ।
(iii) **अच्** का **च्** होता है और पूर्व का **स्वर दीर्घ** होता है।
उदा. **प्राच्यः । प्रतीच्यः । प्राची । प्रतीची ।**
(iv) **य कारादि, स्वरादि** और **मतु** प्रत्यय लगने के बाद **क्वस् उष्** होता है।
उदा. विदुषि साधुः **विदुष्यः** । विदुषः इदम् **वैदुषम् । विदुष्मान् ।**
5. **तस् प्रत्ययान्त सर्व, उभय, अभि** और **परि** से युक्त गौण नाम को द्वितीया विभक्ति होती है।

उदा. **सर्वतो** ग्रामं वनानि । **उभयतो** ग्रामं वनानि । **अभितो** ग्रामं वनानि ।
अभित:–उभयत:–परितो ग्राम क्षेत्राणि । परित:–सर्वत:। (षष्ठ्यपवाद:)

6. **रि, रिष्टात्, स्तात्, अस्तात्, अस्, अतस्** और **आत्** प्रत्ययान्त नाम से युक्त गौणनाम को षष्ठी विभक्ति होती है ।
उदा. (ऊर्ध्व) **उपरि** ग्रामस्य । **उपरिष्टात्** ग्रामस्य ।
(पर) **परस्तात्** ग्रामस्य । (पूर्व) **पुरस्ताद्** ग्रामस्य । पुरोग्रामस्य ।
(दक्षिण) **दक्षिणतो** ग्रामस्य । (उत्तर) **उत्तरात्** ग्रामस्य ।

7. **एन** प्रत्ययान्त नाम से युक्त गौणनाम को **द्वितीया और षष्ठी** विभक्ति होती है । परंतु एन प्रत्यय अञ्च् के बाद विहित न हो तो ।
उदा. पूर्वेण **ग्रामम्** । पूर्वेण **ग्रामस्य** ।
प्राग् ग्रामात् । यहाँ दिग् शब्द के योग में पंचमी विभक्ति होती है ।

8. अव्यय से भिन्न शब्द के **र्** का–
(i) प्रत्यय विषयक क, ख, प, फ बाद में होने पर **स्** होता है ।
उदा. **पयस्पाशम् । पयस्कल्पम् । पयस्कम् ।**
(ii) **काम्य** प्रत्यय बाद में होने पर **स्** के ही **र्** का **स्** होता है ।
उदा. **पयस्काम्यति** । परंतु अह:काम्यति में स् का र् नहीं होगा ।

9. नामि स्वर के बाद रहे **र्** का
(i) प्रत्यय विषयक क, ख, प, फ बाद में होने पर **ष्** होता है ।
उदा. **सर्पिष्पाशम् । सर्पिष्कल्पम् । सर्पिष्कम् ।**
(ii) **काम्य** बाद में होने पर **स्** के ही **र्** का **ष्** होता है ।
उदा. **सर्पिष्काम्यति** । परंतु गी:काम्यति–यहाँ स् का र् नहीं होगा ।

10. नाम से जुडे तकारादि प्रत्यय बाद में होने पर ह्रस्व नामि स्वर के बाद रहे पदान्त **स्** का **ष्** होता है ।
उदा. सर्पिषो भाव: **सर्पिष्ट्वम्** । **सर्पिष्टा** । त्व । तल् ।
सर्पिष: इति **सर्पिष्ट:** । तस् प्रत्यय ।
निर्गतो वर्णाश्रमेभ्यो **निष्ट्य:** चण्डाल: । त्य (त्यच्) प्रत्यय ।
चतुष्टय: वेद: । (चत्वारोऽवयवा अस्व) (तयट् प्रत्यय) ।
प्रकृष्टं सर्पि: **सर्पिष्टरम् । सर्पिष्टमम् ।** तरप् । तमप् ।
प्रकृष्टं वपु: । **वपुष्टरम् । वपुष्टमम् ।**

11. व्यंजन के बाद रहे **अपत्य** के **य** का, यकारादि तद्धित और **आ** कारादि सिवाय स्वरादि तद्धित प्रत्यय बाद में होने पर **लोप** होता है।
उदा. आदित्ये साधुः **आदित्यः** । आदित्यस्येदं **आदितीयं** मण्डलम् ।

12. **ङी, आत्, ई** और **ऊ** का **क** प्रत्यय लगने पर ह्रस्व होता है।
उदा. कुमारी-**कुमारिका** । सोमपा-**सोमपकः** ।
स्त्रीलिंग में—**सोमपिका**—अ का ई होता है । लक्ष्मीः—**लक्ष्मिका** । वधूः—**वधुका** ।

13. **कच्** प्रत्यय लगने पर ह्रस्व नहीं होता ।
उदा. **बहुकुमारीकः । बहुसोमपाकः । बहुलक्ष्मीकः । बहुवधूकः ।**

14. **कच्** प्रत्यय लगने पर, **आप्** विकल्प से ह्रस्व होता है ।
उदा. **प्रियखट्वकः । प्रियखट्वाकः ।** स्त्रीलिंग में **प्रियखट्विका** । इ-प्रत्यय ।

15. **दिग्** वाचि नाम और अधिक नाम, अन्य नाम के साथ संज्ञा में, तद्धित प्रत्यय के विषय में और उत्तरपद होने पर कर्मधारय समास होता है।
उदा. (1) दक्षिणाः कोशलाः **दक्षिणकोशला** जनपदः । संज्ञा में कर्मधारय ।
दक्षिणस्यां शालायां भवः **दाक्षिणशालः** । तद्धित में कर्मधारय ।
दक्षिणो गौः धनमस्य **दक्षिणगवधनः** । उत्तरपद में कर्मधारय ।
(2) अधिकया षष्ट्या क्रीतः **अधिकषाष्टिकः** । तद्धित में कर्मधारय ।
अधिको गौः धनमस्य **अधिकगवधनः** । उत्तरपद में कर्मधारय ।

16. संख्यावाचि नाम, अन्य नाम के साथ संज्ञा में, तद्धित प्रत्यय के विषय में, उत्तरपद होने पर और समाहार कहा जानेवाला हो तब कर्मधारय समास होता है और यहीं समास संज्ञा सिवाय **द्विगु समास** कहलाता है ।
उदा. 1) **पञ्चाम्रा :—** संज्ञा में कर्मधारय ।
2) द्वयोर्मात्रोरपत्यम् **द्वैमातुरः** । द्विगु ।
पञ्चसु कपालेषु संस्कृतः ओदनः **पञ्चकपाल ओदनः** । द्विगु ।
3) पञ्च गावो धनमस्य **पञ्चगवधनः** । द्विगु ।
4) पञ्चानां पूलानां समाहारः **पञ्चपूली** । द्विगु ।

17. ऐकार्थ्य–एक पद होने पर, स्यादि प्रत्यय का लोप होता है ।

उदा. **चित्रगु: । पुत्रीयति ।** उपगो: अपत्यम् **औपगव: ।**

18. अकारान्त कालवाचि नाम को सप्तमी विभक्ति के **तन, तर, तम** प्रत्यय और **काल शब्द** बाद में होने पर स्यादि प्रत्यय का विकल्प से लोप होता है ।

उदा. **पूर्वाह्णेतन: । पूर्वाह्णतन: । पूर्वाह्णेतराम् । पूर्वह्णतरे । पूर्वाह्णेतमाम् । पूर्वाह्णतमे । पूर्वाह्णेकाले । पूर्वाह्णकाले ।**

19. **क्यङ्, मानिन्** और **पित्** तद्धित प्रत्यय होने पर, परत: (=विशेष्य के वश से हुआ स्त्रीलिंग शब्द) पुंवत्–पुलिंग जैसा होता है ।

उदा. (1) श्यानीवाचरति-**श्येतायते ।** (श्येत=सफेद), स्त्रीलिंग में श्येनी ।

(2) दर्शनीयां मन्यते **दर्शनीयमानी** अयम् अस्या: ।

(3) अजायै हितम् **अजथ्य यूथम्** । भूतपूर्वा पट्वी **पटुचरी ।**

20. परत: स्त्रीलिंग और परत: जाति स्त्रीलिंग, **णि** प्रत्यय और तद्धित का यकारादि तथा स्वरादि प्रत्यय होने पर **पुंवत्** होता है ।

उदा. (1) पट्वीमाचष्टे **पटयति** । श्येन्यां साधु: **श्येत्य:** ।

भवत्या इदम् **भावत्कम् । भवदीयम् ।**

(2) हस्तिनीनां समूहो **हास्तिकम् ।**

21. **रित्** (र् इत् वाला) प्रत्यय होने पर परत: स्त्रीलिंग शब्द पुंवत् होता है । (ऊङ् सिवाय)

उदा. पटवी प्रकारोऽस्या: **पटुजातीया** ।

इषद्–अपरिसमाप्ता पट्वी **पटुदेशीया ।**

22. **लास** और **लेख** उत्तरपद होने पर एवं **अण्** और **य** प्रत्यय होने पर **हृदय** का **हृद्** होता है ।

उदा. हृदयस्य लास:–**हृल्लास:** । हृदयं लिखति **हृल्लेख: ।**

हृदयस्येदम् **हार्दम् ।** हृदयस्य प्रिय: **हृद्य: ।**

हृदये भवं, हृदयाय हितम् **हृद्यम् ।**

23. **य** प्रत्यय लगने पर **पाद** का **पद्** होता है ।

उदा. पादौ विध्यन्ति **पद्या:** शर्करा: । पादयोर्भवा: **पद्या:** पांशव: ।

पादाभ्यां हितम् **पद्यम्** घृतम् ।

24. **नासिका** का (i) **तस्** प्रत्यय लगने पर **नस्** होता है ।
उदा. नासिकाया: नासिकायां वा **नस्त: ।**
(ii) **य** प्रत्यय लगने पर, वर्ण सिवाय **नस्** होता है ।
उदा. नासिकायै हितम्, तत्र भवं वा **नस्यम्** । वर्णो **नासिक्य: ।**

25. **शिरस्** का–(i) **य** प्रत्यय लगने पर **शीर्षन्** होता है परंतु केश में विकल्प से होता है ।
उदा. शिरसि भव: **शीर्षण्य:** स्वर: व्रणो वा ।
शिरसे हितम् **शीर्षण्यं** तैलम् । शीर्षण्या: शिरस्या: केशा: ।
(ii) स्वरादि तद्धित प्रत्यय लगने पर **शीर्ष** होता है ।
उदा. शिरसि कृतम्, **शैर्षम्** । शिरसा तरति **शीर्षिक: ।**

26. **ईय** प्रत्यय लगने पर, **अन्य** का **अन्यद्** होता है ।
उदा. अन्येदम् **अन्यदीयम् ।**

व्याकरण में द्वित्व के विषय में कुछ नियम

1. ह्रस्व स्वर पर **ङ्, ण्, न्** का स्वर द्वित्व होता है । (1/3/27)
उदा. **क्रुङ्ङासते, सुगण्णिह, कृषन्नास्ते ।**

2. **आङ्** और **माङ्** को छोडकर पदान्त दीर्घ स्वर के बाद रहे **छ्** का विकल्प से **द्वित्व** होता है । (1/3/28) ।
उदा. **कन्याच्छत्रम् / कन्याछत्रम् । आच्छाया । माच्छिदत् ।**

3. पदान्त में रहे दीर्घ के स्थान पर हुए प्लुत के बाद रहे **छ्** का द्वित्व विकल्प से होता है । (1/3/29)
उदा. आगच्छ भो इन्द्रभूते$_3$! **च्छत्रमानय / छत्रमानय ।**

4. स्वर के बाद रहे **छ्** का द्वित्व होता है । (1/3/30)
उदा. अपदान्त में (i) **इच्छति**=इष्-इछ्-इछ्छ्-इच्छ्+अ+ति ।
(ii) **गच्छति**=गम्-गछ्-गछ्छ्-गच्छ्+अ+ति ।
पदान्त में–वृक्षच्छाया=वृक्ष+छाया–वृक्षछ्छाया–वृक्षच्छाया ।

5. स्वर के बाद रहे **र्-ह्** के बाद **र्-ह् और स्वर सिवाय** के वर्ण का विकल्प से **द्वित्व** होता है, परंतु आगे के सभी कार्य होने के बाद ।
उदा. i) **अर्क्कः** । अर्कः । (ii) **ब्रह्म्मः** । ब्रह्मः ।
प्रतिउदाहरण में
(i) पद्म **ह्रदः** । यहाँ अ के बाद `ह्' है फिर `ह्' के बाद र् है ।
(ii) **अर्हः** । यहाँ र् के बाद `ह्' है । इसलिए द्वित्व नहीं हुआ ।

6. दीर्घ सिवाय स्वर से **र्-ह् और स्वर सिवाय के वर्ण का विराम में** और **असंयुक्त व्यंजन बाद** में आने पर विकल्प से **द्वित्व** होता है । (1/3/32)
उदा. विराम पर–(i) **त्वक्क्** / त्वक् ।
(ii) एक व्यंजन के बाद – दधि + अत्र–**दद्ध्यत्र** / दध्यत्र ।
(iii) दीर्घ स्वर के बाद–**गो$_3$त्त्रातः** / गो$_3$त्रातः ।
प्रति उदाहरण में–(i) वर्या–अ के बाद र् है ।
(ii) वह्यम्–अ के बाद ह् है ।
(iii) तितउ–अ के बाद उ-स्वर है ।

7. अन्तस्था के बाद **ञ् सिवाय** वर्गीय व्यंजन का विकल्प से द्वित्व होता है । (1/3/33)
उदा. **उल्क्का**/उल्का । (ल् अंतस्था है)
प्रति उदाहरण – हल्मौ-हल् च ञ् च इति ।

8. **ञ् सिवाय के वर्गीय व्यंजन के बाद** में रहे **अन्तस्था का** विकल्प से द्वित्व होता है ।
उदा. **दध्य्यत्र** / दध्यत्र । यहाँ ध् के बाद अन्तस्था य् का विकल्प से द्वित्व हुआ है ।
विशेष : यहाँ अन्तस्था `र्' का द्वित्व न होते हुए वर्गीय व्यंजन का ही द्वित्व हुआ है ।

9. शिट् के बाद रहे सभी वर्ग के पहले और दूसरे व्यंजन का विकल्प से द्वित्व होता है ।
उदा. (i) **त्वंक्करोषि** / त्वंकरोषि ।
(ii) **त्वंक्खनसि** / त्वं खनसि ।

विशेष – शाकटायन आदि व्याकरण के अनुसार अनुनासिक से भी विकल्प से द्वित्व होता है । **त्वश्श्छात्रः** । त्वञ्छात्रः ।

10. सभी वर्ग के प्रथम और द्वितीय व्यंजन के बाद रहे **शिट्** का विकल्प से द्वित्व होता है । (1/3/36)
उदा. **तच्छ्शेते** / तच्शेते ।

11. **र्** के बाद रहे **श्** का **अ के बाद** द्वित्व नहीं होता है ।
उदा. **दर्शनम्** । यहाँ र् के बाद रेह श् का अ पर होने से द्वित्व नहीं हुआ ।

12. **आदिन्** और **पुत्रादिन्** पर रहे पुत्र में **'त्'** का आक्रोश विषय में द्वित्व नहीं होता है ।
उदा. पुत्रादिनी त्वमसि पापे ! पुत्रपुत्रादिनी भव । (=हे पापिनी ! तुं पुत्र को खाने वाली है, पुत्र के पुत्र को खाने वाली हो ।)
समास–पुत्रानत्तीत्येवंशीला इति पुत्रादिनी ।
यहाँ पर आक्रोश होने से द्वित्व नहीं हुआ है ।
प्रतिउदाहरण– (i) **पुत्त्रादिनी** शिशुमारी / पुत्रादिनी शिशुमारी ।
(=हे शिशुमारी ! तुम पुत्र को खाने वाली हो ।)
(ii) **पुत्त्रपुत्रादिनी** नागी / पुत्रपुत्रादिनीति वा ।
(=पुत्र के पुत्र को खानेवाली नागीन हो ।)
(पंडितवर्य कीर्तिभाई शाह-अमदाबाद से साभार)

धातुकोशः

अ

अगद (क[1].पर.)=औषध करना ।
अज् (ग.1 पर.)=जाना, फेंकना ।
अत् (ग.1 पर.)=नित्यगमन करना ।
अन्दोल (ग.10 पर.)=हिलना ।
अभि + वद् (ग.1 पर, ग. 10 उभ)= वंदन करना, अभिवादन करना ।
अर्घ् (ग.1 पर.)=करना ।
अवधीर (ग.10 पर.)=तिरस्कार करना ।
असु (क.पर.)=मन से जलना ।

इ

इष् (ग.4 पर.)=जाना ।

उ

उक्ष् (ग.1 पर.)=सिंचन करना, छांटना ।
उज्झ् (ग.1 पर.)=त्याग करना, छोड़ना ।
उद्धुष् (क. पर.)=उच्छ्वास लेना, रोमांचित होना ।
उद् + लम्ब् (ग.1 आ.)=ऊपर लटकना ।
उल्लल (ड) (ग.10 पर.)= उलटना ।
उषस् (क.पर.)=प्रभात होना ।

ऊ

ऊर्ज् (ग.10 पर.)=बल देना, जीना ।

ऋ

ऋच् (ग. 6 पर.)=स्तुति करना ।
ऋत् (ग. 1 पर.)=घृणा करना, जाना, स्पर्धा करना, नफरत करना ।

क

कण्डू (क. उभय)=खुजलाना ।
कत्थ् (ग. 1 आ.)=प्रशंसा करना ।
कदर्थि (नामधातु, पर.)=कदर्थना करना ।
कम् (ग. 1 आ.)=अभिलाषा करना ।
कल् (ग. 1 आ.)=संख्या करना, जानना ।
कल (ग. 10 पर.)=संख्या करना, जानना ।
कित् (ग. 1 पर.)=निवास करना, संशय करना, प्रतिकार करना ।
कील् (ग. 1 पर.)=बांधना ।
कुत्स (ग. 10 आ.)=निंदा करना ।
कूच् (ग. 1 पर.)=खोलना ।
कै (ग. 1 पर.)=बुलवाना ।
क्नूय् (ग. 1 आ.)=भीगना ।
क्लव् (ग. 1 आ.)=फीका पड़ना ।

टिप्पणी :– 1. क.=कण्डवादि धातु । पाठ 3 देखें ।

ख

खिद् (ग. 4 आ.)=खेद करना, दु:खी होना ।

खेल् (ग. 1 पर.)=खेलना ।

खेला (क.पर.)=खेल करना, विलास करना ।

ग

गद्गद (क.पर.)=बोलते हुए अटकना ।

गल् (ग. 1 पर.)=छानना ।

गुप् (ग. 1 पर.)=रक्षा करना ।

गुप् (ग. 1 आ)=छीपाना, गर्हा करना ।

गुप् (ग. 4 पर.)=व्याकुल होना ।

गुप् (ग. 10 पर.)=प्रकाशित करना, रक्षण करना ।

गृध् (ग. 4 पर.)=आसक्त होना ।

गृह (ग. 10 आ.)=ग्रहण करना ।

गॄ (ग. 6 पर.)=छानना, खाना ।

गल्भ् (ग. 1 आ.)=होशीयारी करना, धृष्टता करनी, सामना करना ।

घ

घट्ट् (ग. 1 आ., ग. 10 पर.)= चलाना, खोलना ।

घूर्ण् (ग. 1 आ., ग. 6 प.)= भ्रमण करना ।

च

चत् (ग. 1 उभय)=मांगना ।

चित् (ग. 10 पर.)=चित्र बनाना ।

चिक्ष् (ग. 1 पर.)=स्वच्छता रखना ।

चुलुम्प् (ग. 1 पर.)=छेद करना ।

चृत् (ग.6 पर.)=हिंसा करनी, गूंथना ।

ज

जप् (ग. 1 पर.)=जाप करना, चिन्तन करना ।

जभ् (ग. 1 पर.)=मैथुन सेवन करना।

जभ् (ग. 1 आ.)=अंग मरोडना, जंभाई लेना ।

जस् (ग. 4 पर.)=रखना, फेंकना।

जु (ग. 1 पर.)=वेगवाला होना ।

जुष् (ग. 6 आ.)=प्रीति करना, सेवा करना ।

ड/त

डिप् (ग. 6 पर.)=फेंकना ।

तक् (ग. 1 पर.)=हसना, ताकना ।

तन्द्रा (ग. 2 पर.)=आलस करना ।

तर्क् (ग. 1 पर.)=विचार करना ।

तिज् (ग. 1 आ.)=क्षमा करना ।

तिज् (ग. 10 पर.)=तीक्ष्ण करना ।

तिरस् (क. पर.)=आच्छादन करना छिपना ।

तुर् (ग. 1 पर.)=जल्दी करना ।

तृद् (ग. 6 उभय)=हिंसा करना । अनादर करना ।

त्रप् (ग. 1 पर.)=लज्जा पाना ।

द

दभ् (ग. 1 पर.)=दम्भ करना ।

दान् (ग. 1 उभय)=सरल होना।
दाश् (ग. 1 उभय)=देना।
दुल् (ग. 10 पर.)=दोलना।
दोलाय (नामधातु, आ.)=डोलना।
द्रगद्रगाय (नामधातु उभय)=द्रग-द्रग होना।

ध

धमधमाय (नामधातु उभय)= धम धम होना।
धूप् (ग. 1 पर.)=संताप देना।

न

नि + ध्यै (ग. 1 पर.)=देखना।
निर् + दिश् (ग. 6 पर.)=कहना, निर्देश करना।
निद् + वा (ग. 2 पर.)=शांत होना।

प

पण् (ग. 1 आ.)=व्यापार करना, खरीदना, बेचना, स्पर्धा करना, स्तुति करना।
पत (ग. 10 पर.)=पकडना।
पन् (ग. 1 आ.)=स्तुति करना।
पश् (ग. 1 उभय)=बाधा करना, गूंथना।
पस् (ग. 10 पर.)=बांधना।
पस् (ग. 1 उभय)=जाना, बांधना, बसना।
पिस् (ग. 1 पर.)=जाना।
पुर् (ग. 10 पर.)=पूरना, भरना।
पुष्प्य् (ग. 4 पर.)=खिलना।
प्रुष् (ग. 9 पर.)=सिंचन करना, छांटना।
प्रेङ्खोल (ग. 10 पर.)= झूला झूलना, डोलना।
प्लु (ग. 1 आ.)=जाना, कुदना, तैरना।

ब

बध् (ग. 1 आ.)=विरुप करना, बांधना।
बध् (ग. 10 पर.)=बांधना।
बंह् (ग. 1 आ.)=बढ़ना।

भ

भर्त्स् (ग. 10 आ.)=तिरस्कार करना।
भास् (ग. 1 आ.)=भासना, प्रकाशित होना।
भिषज् (क.पर.)=चिकित्सा करना।
भुज् (ग. 6 पर.)=टेढा होना।

म

मगध (क.पर.)=लपेटना, रखना।
मन्तु (क. पर.)=रोष करना।
मन्द् (ग. 1 आ.)=स्तुति करना, हर्ष करना, गर्व करना, आलस करना, गति करना।
मह् (ग. 1 पर.)=पूजा करना।
मह (ग. 10 पर.)=पूजा करना।
मही (क.आ.)=बढ़ना, पूजा करना।
मान् (ग. 1 आ.)=विचार करना।
(ग. 10 युजादि)=पूजा करना।

मिद् (ग. 1 आ., ग. 4 पर.)=स्नेह करना ।
मूत्र (ग. 10 पर.)=मूत्र करना ।
मेधा (क.पर.)=जल्दी से ग्रहण करना ।
मंह् (ग. 1 आ.)=बढना ।

र

रप् (ग. 1 पर.)=बोलना ।
रह् (ग. 1 पर.)=त्याग करना ।
रह (ग. 10 पर.)=त्याग करना ।

ल

लप् (ग. 1 पर.)=बोलना ।
लुञ्च् (ग. 1 पर.)=लोच करना ।
लुट् (ग. 1 पर.)=आलोटना ।
लुल् (ग. 1 पर.)=कंपना, डोलना ।
लोच् (ग.1 आ.)=देखना, विचारना ।
लोच् (ग. 10 पर.)=प्रकाशित होना, प्रकट करना ।

व

वञ्च् (ग. 1 पर.)=जाना ।
वल्गु (ग. 6 पर.)=पूजा करना ।
वश् (ग. 2 पर.)=इच्छा करना ।
वाश् (ग. 4 पर.)=बोलना ।
विच्छ् (ग. 6 पर.)=जाना ।
वि + तॄ (ग. 1 पर.)=देना
वीज (ग. 10 पर.)=हिलाना ।
वेला (क.पर.)=विलंब करना ।

श

शण् (ग. 10 पर.)=तीक्ष्ण करना ।
शान् (ग. 1 उभय)=तीक्ष्ण करना ।
शि (ग. 5 उभय)=पतला करना, तीक्ष्ण करना ।
शृध् (ग. 1 आ.)=वायु छोडना ।
शृध् (ग. 1 उभय)=भीगाना ।
शृध् (ग. 10 पर.)=पराभव करना ।

स

सपर (क. पर.)=पूजा करना ।
समर (क. पर.)=युद्ध करना ।
सुख (ग. 10 पर.)=सुख करना ।
सुख (क. पर.)=सुखी होना ।
सूच (ग. 10 पर.)=सूचना करना, चुगली करना ।
सूत्र (ग. 10 पर.)=गूंथना, व्यवस्था करना, प्रयत्न करना ।
सूद् (ग. 1 आ.)=नाश पाना ।
सूद् (ग. 10 पर.)=नाश पाना ।
संभूयस् (क. पर.)=बहुत होना ।
स्कन्द् (ग. 1 पर.)=जाना, शोषण करना ।
स्कम्भ् (ग. 5,9 पर.)=अटक जाना, अक्कड होना ।
स्कम्भ् (ग. 1 आ.)=अटक जाना, अकडना ।
स्कुम्भ् (ग. 5,9 पर.)=अटक जाना, अकडना ।
स्तम्भ् (ग. 1 आ.)=अटक जाना, अकडना ।

स्तम्भ् (ग. 5,9 पर.)=अटक जाना, अकडना ।

स्तुभ् (ग. 1 आ.)=अटक जाना, रुकना ।

स्तुम्भ् (ग. 5,9 पर.)=अटक जाना, अकडना ।

स्पश् (ग. 1 उभय)=बाधा करना, गूंथना, जाना ।

स्त्रु (ग. 1 पर.)=जाना, वहन करना।

हिन्दोल (ग. 10 पर.)=हिलना, निंदा करना ।

ह्णी (क.आ.)=लज्जा पाना, रोष करना ।

क्ष

क्षप् (ग. 10 पर.)=प्रेरणा करना, क्षय करना ।

शब्दकोशः

अ

अ (पुं)=आत्मा, विष्णु ।

अग (पुं)=वृक्ष, पर्वत ।

अग (वि.)=गमन नहीं करनेवाला ।

अगाध (वि.)=गहरा, अतिगंभीर ।

अङ्ग (नपुं.)=शरीर ।

अङ्गुलीय (नपुं.)=मुद्रिका, अंगूठी ।

अचल (पुं.)=पर्वत ।

अणुक (वि.)=निपुण ।

अतिसार (पुं.)=जुलाब लगना ।

अत्रि (पुं.)=एक ऋषि का नाम ।

अदभ्र (वि.)=पुष्कल, ज्यादा ।

अदिति (स्त्री.)=देवों की माता, द्वादश आदित्य की माता ।

अद्वैत (नपुं.)=अकेलापन ।

अधर (सर्व.)=नीचे का, निम्न ।

अधिराज (पुं.)=बडा राजा ।

अनलम् (अ.)=असमर्थ ।

अनवरत (वि.)=हमेशा, विराम रहित ।

अनु (अ.)=अनुसरण करके ।

अनुकाम (नपुं.)=इच्छानुसार ।

अनुजन (पुं.)=मित्र ।

अनुपालम्भ (वि.)=उपालंभ बिना ।

अनुशतिक (पुं.)=चोर ।

अन्तिकतस् (अ.)=नजदीक में ।

अन्तिकसद् (वि.)=पास रहा हुआ, शिष्य ।

अन्तितस् (अ.)=नजदीक से ।

अन्तिषद् (वि.)=पास रहा हुआ, शिष्य ।

अन्न संग्राह (पुं.)=अनाज की मुट्ठी ।

अपमित्य (सं.कृदन्त)=वापस देना ।

अपर (सर्व.)=बाद का, पीछे का ।

अपवरक (पुं.)=कमरा ।

अपमार्ग (पुं.)=एक वनस्पति का नाम ।

अपूप (पुं.)=मालपुआ, उत्तप्पा ।

अभ्री (स्त्री.)=लकडी की कुदाली ।

अरुन्तुद (वि.)=पीडा देनेवाला ।

अरुस् (नपुं.)=घाव, मर्मस्थल, व्रण ।
अर्घ (पुं.)=कींमत ।
अर्त्ति (स्त्री.)=पीडा ।
अर्भ (पुं.)=बालक ।
अर्य (पुं.)=स्वामी, वैश्य ।
अर्वाक (अ.)=आगे ।
अर्शस् (नपुं.)=हरस, मस्सा ।
अलम् (अ.)=समर्थ, पूरा ।
अलि (पुं.)=भ्रमर ।
अलीक (नपुं.)=झूठ, असत्य ।
अवधीरणा (स्त्री.)=तिरस्कार ।
अवर (सर्व.)=बाद का, छोटा ।
अवर्णवाद (पुं.)=निंदा, अपवाद ।
अवस् (पुं.)=बाद में ।
अवार (पुं.)=इस किनारे ।
अवारपार (पुं.)=समुद्र ।
अश्रान्त (वि.)=निरंतर, थके बिना ।
अश्मन् (पुं.)=पत्थर, पाषण ।
अश्वस्थ (पुं.)=पीपल का पेड ।
अस्ति (अ.)=धन, है ।
अहम् (अ.)=अहंकार ।

आ

आ. (अ.)=खेद अर्थ में ।
आकस्मिक (वि.)=अचानक होनेवाला ।
आगम (पुं.)=आगम ग्रंथ, तीर्थंकर और गणधर से प्राप्त हुए शास्त्र ।
आजि (स्त्री.)=युद्ध, लडाई, संग्राम ।
आढ्य (वि.)=संपन्न, युक्त ।
आतर (पुं.)=पानी के अधिक भराव को निकलने का मार्ग ।
आताम्र (वि.)=लाल, थोडा लाल ।
आतुर (वि.)=रोगी ।
आदित्य (पुं.)=सूर्यदेव ।
आभियोगिक (पुं.)=सेवक ।
आय (पुं.)=आवक, कमाई ।
आयत (वि.)=लंबा, नियमित ।
आयोगिन् (वि.)=अधिकारी ।
आर्हत् (वि.)=जैन, अरिहंत को देव के रुप में मानने वाला ।
आलोक (पुं.)=प्रकाश, देखना ।
आलोल (वि.)=अस्थिर ।
आवसथ (पुं.)=घर, मकान ।
आविष्ट्य (वि.)=प्रकट ।
आशा (स्त्री.)=दिशा, आशा ।
आशु (अ.)=शीघ्र, जल्दी ।
आसुति (स्त्री.)=मदिरा ।
आस्था (स्त्री.)=आदर, श्रद्धा, आशा ।
आस्यन्धय (वि.)=चुंबन करनेवाला ।
आस्य (नपुं.)=मुख ।

इ

इ (पुं.)=कामदेव ।
इक्ष्वाकु (पुं.)=देश अथवा क्षत्रिय राजा का नाम ।
इतरथा (अ.)=अन्यथा, नहीं तो ।
इध्म (नपुं.)=लकडा ।
इष्टि (स्त्री.)=एक हथियार ।
इहभवत् (वि.)=पूज्य ।

ई

ईषा (स्त्री.)=एक हथियार, ईश ।
ईश (पुं.)=पति, स्वामी, राजा ।

उ

उत्क (वि.)=उत्कंठित, ऊंचे मनवाला ।
उक्षन् (पुं.)=बैल ।
उच्चत: (अ.)=ऊपर से ।
उत्तंस (पुं.)=मुकुट ।
उत्स (पु.)=एकदेश अथवा राजा का नाम ।
उदक्या (स्त्री.)=रजस्वला स्त्री ।
उद्घट्टन (नपुं.)=प्रकाशन, खोलना ।
उद्दाम (वि.)=स्वतंत्र, निरंकुश ।
उद्धुर (वि.)=तत्पर, धूसरी रहित ।
उद्वाह (पुं.)=विवाह ।
उन्नीत (वि.)=निर्णीत ।
उन्मनस् (वि.)=ऊँचे मनवाला ।
उपगु (पुं.)=एक पुरुष या गोत्रादि का नाम ।
उपयम (पुं.)=पाणिग्रहण, विवाह ।
उपवस्तृ (वि.)=उपवासी ।
उपसर्या (स्त्री.)=ऋतुमती स्त्री ।
उपालम्भ (पुं.)=ठपका, उलाहना ।
उरच्छद (पुं.)=कवच, बख्तर ।
उरभ्र (पुं.)=भेड ।
उषा (स्त्री.)=रात्रि ।
उष्मन् (पुं.)=गरमी, भाप ।

ऊ

ऊर्ज (पुं.)=बल, जीवन, अन्न, पानी, उत्साह ।
ऊर्णा (स्त्री.)=ऊन ।
ऊर्णायु (पुं.)=भेड ।
ऊर्मि (स्त्री.)=कल्लोल, तरंग ।

ऋ

ऋति (स्त्री.)=गति, सत्यता ।
ऋतिंकर=गति करनेवाला ।

ए

एरण्ड (पुं.)=एरंड, अरंडी ।

ऐ

ऐन्द्री (स्त्री.)=पूर्वदिशा ।
ऐषमस् (अ.)=इस वर्ष ।

ओ

ओजस् (नपुं.)=बल, तेज ।

औ

औपवस्त्र (नपुं.)=उपवास के पारणे में खाने लायक आहार ।

अं

अंहस् (नपुं.)=पाप ।

क

क (पुं.)=ब्रह्मा, **(नपुं.)** मस्तक ।
कच्छू (स्त्री.)=खुजली, खाज ।
कञ्चुक (पुं.)=कंचुआ, कुर्ता ।
कट (पुं.)=चटाई, सुगंधी खस ।
कठ (पुं.)=कठ नाम के व्यक्ति ने व्याख्या किये हुए वेद को पढनेवाला ।

कण्डूया (स्त्री.)=खुजली ।
कद्रू (स्त्री.)=सर्प की माता, दक्ष प्रजापति की पुत्री ।
कपित्थ (पुं.)=कैथ का वृक्ष ।
(नपुं.)=कैथ का फल ।
कपिल (पुं.)=सांख्य दर्शन के प्रवर्तक आद्य पुरुष ।
कपोत (पुं.)=कबूतर ।
कम् (अ.)=दु:खी ।
कमण्डलू (स्त्री.)=चार पैरवाली पशु जाति, गाय ।
करीर (पुं.)=केर की झाड़ी ।
करीष (नपुं.)=बकरी की लींडी ।
कर्कर (पुं.)=कंकड ।
कर्णधार (पुं.)=नाविक ।
कर्णवेष्टक (पुं.)=कुन्डल ।
कर्मठ (वि.)=कर्मशूर ।
कल्यपाल (पुं.)=दारु रखनेवाला, कलाल ।
कवच (पुं.)=बख्तर ।
कश्मल (नपुं.)=पाप ।
काण्ड (पुं./नपुं.)=दंड, बाण, पर्व, वर्ग, वृक्ष की शाखा, अवसर ।
कादम्बरी (स्त्री.)=मदिरा, दारु ।
काद्रवेय (पुं.)=नाग, सांप ।
कार (पुं.)=करनेवाला ।
कार्थ (पुं.)=थोडा प्रयोजन ।
कालायस (नपुं.)=काललोह, उत्तमलोह ।
काश (पुं.)=घास की एक जाति ।
काशिल (नपुं.)=एक नगर ।
काषायी (स्त्री.)=भगवे रंग से रंगा हुआ ।
किशर (नपुं.)=एक सुगन्धि द्रव्य ।
कीलाल (नपुं.)=खून, पानी, मध ।
कु (स्त्री.)=पृथ्वी ।
कुरु (पुं.)=एक देश का नाम ।
कुरुजङ्गल (पुं.)=एक देश का नाम ।
कृपाण (पुं.)=तलवार ।
कृशानु (पुं.)=अग्नि ।
कृषि (स्त्री.)=खेती ।
कोपन (वि.)=क्रोधी ।
कोपनता (स्त्री.)=क्रोधीपना ।
क्रकच (पुं.)=करवत ।
क्लीब (नपुं.)=नपुंसक ।

ख

ख (नपुं.)=विवर, आकाश ।
खशय (पुं.)=खुल्ले में सोनेवाला ।
खाता (स्त्री.)=खाई ।
खारी (स्त्री.)=सोलह द्रोण का माप ।
खेचर (पुं.)=पक्षी, विद्याधर ।
खेल (पुं.)=खेल करनेवाला ।

ग

गणिका (स्त्री.)=वेश्या ।
गल्भ (वि.)=होशियार ।
गाधि (पुं.)=चंद्रवंशी राजा का नाम । विश्वामित्र ऋषि के पिता ।

गाधिसुत (पुं.)=विश्वामित्र ऋषि ।
गुण्ठन (नपुं.)=संपूर्ण शरीर को ढकने वाला ।
गुप्ति (स्त्री.)=छिपाना, कैदखाना ।
गुहाशय (पुं.)=सिंह, बाघ आदि ।
गृध्र (पुं.)=गीध पक्षी ।
गृह (पुं.बहुवचन)=घर । (गृहा:)
गोनर्द (पुं.)=एक नगर ।
गोद्रह (पुं.)=गोधरा गांव ।
गोपन (नपुं.)=छीपाना ।
गोपाया (स्त्री.)=रक्षण ।
गोमय (नपुं.)=गोबर ।
गोविन्दपद्या (स्त्री.)=गंगा नदी ।
ग्राम (पुं.)=समूह ।
ग्रावन् (पुं.)=पत्थर, कठिन, मजबूत, दृढ ।
ग्रावस्तुत् (पुं.)=याज्ञिक ।

घ

घट्ट्ना (स्त्री)=चलन, टकराना, अटकना, कदर्थना ।
घूक (पुं.)=ऊल्लू ।

च

चक्र (नपुं.)=समूह ।
चटक (पुं.)=चिडिया ।
चरट (पुं.)=लुटेरा ।
चराचर (नपुं.)=जगत् ।
चिकित्सा (स्त्री.)=दवाई, इलाज ।
चित्र (नपुं.)=चित्र, आश्चर्य ।
चित्रक (पुं.)=औषध विशेष, चिरायता ।
चीवर (नपुं.)=कपडा, वस्त्र ।
चुरा (स्त्री.)=चोरी ।
चूडा (स्त्री.)=चोटी, शिखा ।
चैद्य (पुं.)=चेदिदेश का राजा ।
च्यवन (नपुं.)=मरना ।

छ

छन्दस् (नपुं.)=वेद ।
छाग (पुं.)=बकरा ।

ज

जतु (नपुं.)=लाख ।
जम्बू (स्त्री.)=जामुन का वृक्ष, जामुनफल, जामुन के वर्णवाली गाय ।
जव (पुं.)=वेग ।
जात (पुं.)=समूह ।
जात्य (वि.)=जातिमान ।
जाम्बूनद (नपुं.)=सुवर्ण ।
जालिका (स्त्री.)=जाली ।
जाह्नवेय (पुं.)=गांगेय, भीष्म–पितामह ।
जुगुप्सा (स्त्री.)=गर्हा, घृणा ।
ज्यानि (स्त्री.)=जीर्णता, क्षय ।

त

तक्षक (पुं.)=सांप की एक जाति ।
तगर (नपुं.)=एक सुगंधि द्रव्य ।
तनुक (नपुं.)=सूत्र, सुत ।
तन्द्रालु (वि.)=आलसी ।
तमिस्र (नपुं.)=अंधकार का समूह ।
तरस् (नपुं.)=बल, वेग ।

तर्क (पुं.)=विचार ।
तल्प (नपुं.)=शय्या, गद्दी ।
तुरग (पुं.)=अश्व ।
तिग्म (वि.)=तीव्र, प्रचंड ।
तितउ (नपुं.)=चालनी ।
तित्तिरि (पुं.)=तितरपक्षी ।
तीक्ष्ण (वि.)=तीक्ष्ण, धारदार ।
तीर्थ (नपुं.)=तीर्थ, शासन, संघ ।
तुच्छ (वि.)=हलका, खराब, नकली ।
तुण्डि (स्त्री.)=बढी हुई नाभि ।
तुन्द (नपुं.)=तोंद, बडा पेट ।
तुर (पुं.)=वेग ।
तृणसा (स्त्री.)=एक नदी का नाम ।
तेजन (नपुं.)=तेज, **(पुं.)**=बाण ।
तेजस् (नपुं.)=तेज, प्रकाश ।
त्रपु (नपुं.)=एक धातु ।
त्रिककुद (पुं.)=लंका के पास का पर्वत ।
त्यद् (सर्व.)=वह (स्यः, त्यौ, त्ये) ।
त्वच् (पुं.)=चमडी ।
त्वरा (स्त्री.)=त्वरा, जल्दी ।
त्सरु (पुं.)=तलवार की मूठ ।

द

दक्ष (पुं.)=दक्ष प्रजापति, निपुण ।
दक्षिण (वि.)=अनुकूल ।
दक्षिणपूर्व (पुं.)=अग्नि कोना ।
दन्तच्छद (पुं.)=होठ ।
दानग्रहणिक (वि.)=कर ग्रहण करने वाला अधिकारी ।
दामा (स्त्री.)=डोरी, रज्जु, बंधन, माला ।
दिति (स्त्री.)=दैत्य की माता ।
दुराप (वि.)=कठिनाई से प्राप्त हो वैसा ।
दुर्ग (न.)=कोट, किला ।
दुर्वा (स्त्री.)=घास ।
दोला (स्त्री.)=झूला ।
द्युति (स्त्री.)=तेज, प्रकाश, वर्ण ।
द्राक् (अ.)=जल्दी से, शीघ्र ।
द्रु (नपुं.)=लकडा ।
द्रुवय (नपुं.)=लकडे से बना हुआ माप, अनाज भरने का माप ।
द्रोण (पुं.)=द्रोणाचार्य ।
द्रोण (पुं./नपुं.)=बत्तीस शेर का वजन, एक खारी का सोलहवाँ भाग ।
द्वन्द्व (नपुं.)=रहस्य ।
द्विषन्तप (वि.)=शत्रु को त्रास करनेवाला ।
द्वैमातुर (पुं.)=गणेश, जरासंघ ।

ध

धन्वन् (नपुं.)=धनुष, **(पुं.)**=मरुदेश।
धवल (पुं.)=सफेद, गीत ।
धिषण (वि.)=बुद्धिशाली, वाक्पटु।
धिषणा (स्त्री.)=बुद्धि, वाणी ।
धीवर (पुं.)=मच्छीमार ।
धूम (पुं.)=एक देश का नाम ।

न

नक्र (पुं.)=मगरमच्छ ।

नग (पुं.)=वृक्ष, पर्वत ।
नड (पुं.)=एक जाति का घास ।
नदसा (स्त्री.)=एक नदी का नाम ।
नदीष्ण (पुं.)=कुशल, तैरने में कुशल।
नन्दीश्वर (पुं.)=आंठवे द्वीप का नाम ।
नर्मन् (नपुं.)=हास्य, केली ।
नलिनी (स्त्री.)=कमलिनी ।
नाभि (पुं.)=ऋषभदेव प्रभु के पिता ।
नाल (पुं.)=नाल, कमलदंड ।
निकृति (स्त्री.)=माया, कपट ।
निकेतन (नपुं.)=निवास, घर ।
निदान (नपुं.)=रोग का मूल कारण ।
निधान (नपुं.)=निधि,भण्डार ।
निम्न (वि.)=नीचा ।
निम्नगा (स्त्री.)=नदी ।
निरङ्गी (स्त्री.)=मुंह ढकने वाला वस्त्र का छोर ।
निवातम् (अ.सर्व.)=वायु का अभाव ।
निशीथ (पुं.)=मध्यरात्रि ।
निषादकर्षू (पुं.)=एक देश का नाम ।
निष्ट्य (वि.)=चंडाल ।
निष्ठा (स्त्री.)=निश्चय, श्रद्धा ।
निष्ठुर (वि.)=प्रतिकूल, कठोर वाक्य बोलनेवाला ।
निस्त्रिंश (पुं.)=तलवार ।
नि:श्रेयस् (नपुं.)=मोक्ष ।
नीप (पुं.)=कदंबवृक्ष ।
नील (पुं)=हरा वर्ण ।
नीवी (स्त्री.)=नीचे के वस्त्र की गांठ ।
नु (अ.)=इव के अर्थ में उपयोगी अव्यय ।
नेमि (पुं.)=बाइसवें तीर्थंकर ।

प

पञ्चाल (पुं.)=एक देश अथवा राजा का नाम ।
पत्ति (पुं.)=सेवक ।
पत्र (नपुं.)=वाहन ।
पथिक (पुं.)=मुसाफिर, यात्रिक ।
पदकार (पुं.)=वैयाकरण, व्याकरण को जाननेवाला ।
पदाति (पुं.)=सेवक पैदल चलनेवाला ।
पद्माक्ष (नपुं.)=कमल की आंख ।
पण्य (नपुं.)=किराणा ।
पर (सर्व.)=बाद में, दूर ।
परश्वध (पुं.)=परशु, फरसी, कुल्हाडा ।
परासु (वि.)=मृत ।
परिचर्या (स्त्री.)=सेवा ।
परिजन (पुं.)=सेवक, नोकर, चाकर।
परित: (अ.)=चारों ओर ।
परिभव (पुं.)=अभिभव, पराभव पराजय ।
परिवेष (पुं.)=घेराव, गोल, मंडल ।
परन्तप (वि.)=शत्रु को संताप करनेवाला ।
पस्त्य (नपुं.)=गृह ।
पाण्डु (पुं.)=पांडुराजा ।

पात्र (न.)=भाजन ।
पार (पुं.)=उस किनारे ।
पारावार (पुं.)=समुद्र ।
पार्ष्णि (पुं.)=पैर के तल का पिछला भाग ।
पाश (पुं.)=गले बांधा हुआ वस्त्र ।
पिङ्ग (वि.)=पीला रंग ।
पटत् (व.कृदन्त)=पट पट आवाजवाला ।
पुत्रक (पुं.)=कृत्रिम पुत्र, गोद लिया हुआ ।
पुत्रकाम्या (स्त्री.)=पुत्र की इच्छा ।
पुरधूपायितृ (पुं.)=हर, महादेव ।
पुरीष (नपुं.)=विष्ठा, मल ।
पुरोहित (पुं.)=राजा का ज्योतिषी, पण्डित ।
पूग (पुं.)=समूह ।
पोपूया (स्त्री.)=पवित्रता ।
प्रकाम (वि.)=अत्यंत ।
प्रखर (वि.)=कठोर, प्रचण्ड, ज्यादा ।
प्रगल्भ (वि.)=शक्तिशाली, शूरवीर, प्रौढ प्रतिभावाले ।
प्रच्छद (पुं.)=पछेडी, धाबला ।
प्रजापति (पुं.)=ब्रह्मा, राजा ।
प्रणव (पुं.)=ॐकार शब्द ।
प्रणिधि (पुं.)=चार पुरुष ।
प्रतिजन (पुं.)=शत्रु ।
प्रतिश्रुत (स्त्री.)=अंगीकार स्वीकार ।
प्रपद (पुं.)=पैर का अग्रभाग ।
प्रभव (पुं.)=उत्पत्तिस्थान ।
प्रस्थ (पुं.)=एक सेर का माप ।
प्राय (वि.)=तुल्य, समान ।
प्राशितृ (वि.)=भक्षक, खानेवाला ।
प्राशित्र (नपुं.)=खाने लायक ।
प्रास (पुं.)=भाला ।
प्रियङ्गु (स्त्री.)=कांग, धान्य विशेष ।
प्रेक्षिन् (पुं.)=देश विशेष ।
प्रेषण (नपुं.)=प्रेरणा, आज्ञा, भेजना, जाना ।
प्रेषणा (स्त्री.)=प्रेरणा, आज्ञा, भेजना, जाना ।
प्लव (पुं.)=पूर, प्रवाह, कूद ।

फ

फलक (नपुं.)=ढाल, पाटला ।
फलकित् (पुं.)=देश विशेष ।

ब

बभ्रु (पुं.)=पीला रंग, नेवला ।
बहूला (स्त्री.)=गाय ।
बहुन्तुद (वि.)=*बहु-अतिशयेन तुदति ।*
बिभत्स (वि.)=खराब ।
बिलेशय (पुं.)=सांप ।
ब्रह्मन् (नपुं.)=मोक्ष, ज्ञान, ब्रह्मचर्य ।
ब्रह्मन् (पुं.)=ब्राह्मण, ब्रह्मा ।
ब्रह्मसूत्र (नपुं.)=यज्ञोपवीत, जनेव ।

ब्रुव (वि.)=निन्द्य, चुगली करनेवाला ।

भ

भ (नपुं.)=नक्षत्र ।

भटित्र (नपुं.)=सलिये पर पकाया हुआ मांस ।

भद्रमातृ (स्त्री.)=भद्रमाता, भद्रामाता ।

भारवाह (वि.)=भार वहन करनेवाला ।

भास्करज (पुं.)=मनु, कर्ण ।

भीरु (स्त्री.)=डरपोक ।

भीष्ण (वि.)=भयंकर ।

भुज (पुं.)=हाथ, कुटिलता ।

भ्रश (वि.)=ज्यादा, अतिशय ।

म

मख (पुं.)=यज्ञ ।

माञ्जिष्ठा (स्त्री.)=मजीठ ।

मन्त्रकार (पुं.)=मंत्री ।

मद्र (पुं.)=एक देश का नाम ।

मद्र (नपुं.)=कल्याण ।

मधु (वि.)=मीठाश, मधुरता ।

मन (पुं.)=एक प्रजापति, शास्त्र कर्ता।

मह (पुं.)=उत्सव ।

माणवक (पुं.)=बालक, छोटी उम्र का व्यक्ति ।

मातृवेश्मन् (नपुं.)=माता का घर, मायका ।

माथुर (पुं.)=मथुरा का राजा ।

मास् (पुं.)=चन्द्रमा ।

माहेयी (स्त्री.)=गाय ।

मीन (पुं.)=मछली ।

मीमांसा (स्त्री.)=विचार ।

मुञ्ज (पुं.)=घास की एक जाती ।

मृणाल (पुं./नपुं.)=कमलदंड ।

मेदिनी (स्त्री.)=पृथ्वी ।

य

यथाकाम (नपुं.)=इच्छानुसार ।

यथामुख (नपुं.)=प्रतिबिंब ।

यद्वद् (अ.)=यथा, जैसे ।

यम (पुं.)=यमराज ।

यव (पुं.)=जव ।

यातुधान (पुं.)=राक्षस ।

यायावर (वि.)=अतिशय जाने के स्वभाववाला । भ्रमण करने का स्वभावी ।

याव (पुं.)=अलता, लाख का रस, महावर ।

युग (पुं./नपुं.)=धूसरी, जोडा ।

युग्मधर्मिन् (वि.)=युगलिक ।

यौवत (नपुं.)=*युवतीना समूहः ।*

यौवन (नपुं.)=*युवतीनां समूहः ।* (मतान्तर)

र

रज्जु (स्त्री.)=रज्जु, राजलोक ।

राजक (नपुं.)=राजाओं का समूह ।

रेवन्त (पुं.)=सूर्यपुत्र ।

रैवतक (पुं.)=गिरनार पर्वत ।

रोदस् (न,द्विवचन)=पृथ्वी और स्वर्ग।
रोधस् (न.)=कीनारा, तट।

ल

लोलुभ (वि.)=लुब्ध, अतिशय लोभी।
लोलूया (स्त्री.)=बारंबार कांटना।
लोहित (वि.)=लाल।

व

वटि (स्त्री.)=वटी, गोली।
वधुटिका (स्त्री.)=छोटी बहू।
वनीपक (पुं.)=याचक।
वर्णासा (स्त्री.)=बनास नदी।
वर्ध्र (नपुं.)=चमडे की पट्टी।
वलि (स्त्री.)=करचली, झुर्रिया।
वश (पुं.)=इच्छा।
वशा (स्त्री.)=हाथिनी।
वसा (स्त्री.)=मेद, चरबी।
वह (स्त्री.)=बैल की खांध।
वहंलिह (पुं.)=बैल।
वणिज (पुं.)=व्यापारी।
वातमज (पुं.)=मृग, हिरण।
वात्या (स्त्री.)=घूमता हुआ वायु।
वालधि (पुं.)=पूंछ।
वाशन (पुं.)=इच्छा करनेवाला, बोलनेवाला। *वाशयति–वाशनः।*
वाह (पुं.)=घोडा, वहन करना।
वाह्याली (स्त्री.)=घोड़ा घुमाने की जगह।
विकाल (पुं.)=अकाल, संध्याकाल।
विकृति (स्त्री.)=विकार।
विग्रह (पुं.)=शरीर, युद्ध, अलग करना।
विजृम्भित (नपुं.)=प्रकट किया हुआ।
विदग्ध (वि.)=होशियार, चतुर, पंडित।
विदेह (पुं.)=देश अथवा राजा का नाम।
विधु (पुं.)=चन्द्रमा।
विधुत (भू. कृदन्त)=पराभूत।
विधुन्तुद (पुं.)=राहु।
विनता (पुं.)=गरुड की माता।
विरल (वि.)=थोडा।
विरल विरल (वि.)=थोडा-थोडा।
विश्रवस् (पुं.)=कुबेर के पिता।
विश्वक् (अ.)=चारों ओर।
विश्वधेनु (पुं.)=एक देश का नाम।
विहायस् (नपुं.)=आकाश।
विहंगम (पुं.)=पक्षी।
वृत्ति (स्त्री.)=आजीविका, व्यापार।
वृन्द (नपुं.)=समूह।
वृष (पुं.)=बैल, काम।
वृषल (पुं.)=शूद्र।
वेतस (पुं.)=बेंथ का पेड।
वेष (पुं.)=नेपथ्य, पहनावा। (मतांतर से *वेश*)
वेहत् (स्त्री.)=गर्भघातिनी गाय।
वैद्युत (वि.)=बिजली संबंधी।
वैधुर्य (नपुं.)=दुःखीपना।

वैनतेय (पुं.)=गरुड ।
वैमानिक (वि.)=विमान में होनेवाला देव ।
वैरङ्गिक (वि.)=वैरागी ।
वैश्रवण (पुं.)=धनद, कुबेर ।
व्याल (पुं.)=दुष्टहाथी, सांप, बाघ आदि हिंसक प्राणी ।

श

शकलित (वि.)=टुकडा हुआ ।
शकुनि (पुं.)=पक्षी ।
शक्ति (स्त्री.)=एक हथियार ।
शक्रजित् (पुं.)=इन्द्रजीत–रावणपुत्र ।
शङ्कु (पुं.)=खीला ।
शङ्ख (पुं.)=कान और भाल के बीच का स्थान ।
शची (स्त्री.)=इन्द्राणी ।
शचीकामयितृ (पुं.)=इन्द्र ।
शतद्रु (स्त्री.)=एक नदी का नाम ।
शबला (स्त्री.)=विचित्र रंग की गाय ।
शम् (अ.)=सुख ।
शर्ध (नपुं.)=अधोवायु निकलना ।
शष्कुलि (स्त्री.)=जलेबी ।
शाकुन्तल (पुं.)=दुष्यन्त की पत्नी शकुंतला का पूत्र–भरत ।
शातमातुर (पुं.)=भरत ।
शात्रव (नपुं.)=शत्रुओं का समूह ।
शाद (पुं.)=हराघास, कीचड ।
शाल (पुं.)=झाड, किला ।
शाव (पुं.)=बालक, बच्चा ।
शिखण्ड (पुं.)=चोटी, बाबरी ।
शिखा (स्त्री.)=शिखा, चोटी, कलगी।
शिश्चान (पुं.)=क्रोन्च पक्षी ।
शिति (पुं./वि.)=श्याम वर्ण, काला।
शिव (पुं.)=महादेव ।
शुक (पुं.)=पोपट ।
शुण्ड (पुं.)=दारु, मदिरा ।
शुण्डा (स्त्री.)=दारु, मदिरा ।
शुण्डिका (वि.)=दारु बेचने वाला । दारु की दुकान ।
शुभम् (अ.)=कल्याण ।
शेवधि (पुं.).)=निधि, भण्डार ।
शेष (पुं.).)=थोडा, अल्प ।
श्रवस् (नपुं.)=कान ।
श्राद्ध (पुं./नपुं.)=श्राद्ध कर्म, पिण्डदान ।
श्राविष्ठायन (पुं.)=एक गोत्र का नाम ।
श्येन (पुं.)=बाजपक्षी ।
श्लथ (वि.)=शिथिल, ढीला, थका हुआ ।

ष

षाण्मातुर (पुं.)=कार्तिकेय ।

स

सत्रशाला (स्त्री.)=दानशाला, यज्ञशाला ।
सपर्या (स्त्री.)=पूजा ।
सभर्तृका (स्त्री.)=सौतन, सपत्नी ।

समस्या (स्त्री.)=अपूर्ण श्लोक ।
समा (स्त्री.)=वर्ष ।
समित् (स्त्री.)=युद्ध, लडाई ।
समीरण (पुं.)=पवन ।
समुद्रगा (स्त्री.)=नदी ।
सरस् (नि.)=सरोवर ।
सरित् (स्त्री.)=नदी ।
सात्म्य (नपुं.)=प्रकृति के अविरुद्ध आहार-पानी ।
सामन् (नपुं.)=साम, प्रिय–मधुर–वचन ।
सार (पुं.)=सार, बल ।
सांकाश्य (नपुं.)=एक गांव का नाम ।
सिध्म (नपुं.)=चर्म रोग ।
सीर (नपुं.)=हल ।
सुपर्णा (स्त्री.)=गुरुड की माता ।
सुपर्णी (स्त्री.)=गरुड की माता ।
सुरभि (स्त्री.)=गाय ।
सुराप (वि.)=मदिरा पीने वाला ।
सुवर्णवलज (नपुं.)=एक नगर का नाम ।
सूत्र (नपुं.)=सूत्र, व्यवस्था ।
सूत्रधार (पुं.)=व्यवस्था रखनेवाला ।
सूना (स्त्री.)=वधस्थान ।
सौहार्द (न.)=प्रेम ।
सौदामनी (स्त्री.)=बिजली ।
सौनिक (पुं.)=कसाई ।
सौपर्णेय (पुं.)=गरुड ।
सौहृद (न.)=प्रेम ।
संग्राह (पुं.)=मुट्ठी ।
संपूट (पुं.)=इकट्ठे किये हुए दो कोडिये ।
संमुख (नपुं.)=प्रतिबिंब ।
संहनन (नपुं.)=संघयण, शरीर का संरचना ।
स्तनयित्नु (पुं.)=मेघ ।
स्तम्भ (पुं.)=थंभा, अक्कड ।
स्तोम (पुं.)=रुकना ।
स्थगित (वि.)=ढका हुआ ।
स्नातक (वि.)=वेद के पार की पाया हुआ ।
स्रुघ्न (नपुं.)=एक गांव का नाम ।
स्वयम्भूरमण (पुं.)=अंतिम समुद्र ।
स्वर् (अ.)=स्वर्ग, आकाश ।
स्वर्गोप्तृ (पुं.)=इन्द्र ।
स्वाति (स्त्री.)=स्वाति नक्षत्र ।

ह

हरित (पुं.)=हरा वर्ण ।
हाला (स्त्री.)=मदिरा, ताडी का रस ।
हुण्डा (स्त्री.)=खराब ।
हृषीक (नपुं.)=इन्द्रिय ।
हेषा (स्त्री.)=घोडे की आवाज ।
होड (पुं.)=मूर्ख ।

क्ष

क्षत्र (पुं.)=क्षत्रिय ।
क्षेम (नपुं.)=कल्याण ।

नोट

जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर, मरुधररत्न, पू.आ. श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा. द्वारा मुख्यतया हिन्दी भाषा में आलेखित 277 पुस्तकों में से उपलब्ध एवं अवश्य पठनीय साहित्य-सूची

Sr. No.	पुस्तक का नाम	मूल्य	Sr. No.	पुस्तक का नाम	मूल्य
1.	Pearls of Preaching	60/-	42.	New Message for a New Day	600/-
2.	Panch Pratikraman Sootra	100/-	43.	आओ ! पर्युषण प्रतिक्रमण करें !	150/-
3.	अमृत रस का प्याला	300/-	44.	इन्द्रिय पराजय शतक	150/-
4.	ध्यान साधना	40/-	45.	दूसरा कर्मग्रन्थ	55/-
5.	शंका समाधान (भाग-5)	160/-	46.	तीसरा कर्मग्रन्थ	90/-
6.	शत्रुंजय यात्रा	40/-	47.	चौथा कर्मग्रन्थ	140/-
7.	शत्रुंजय की भाव यात्रा	230/-	48.	पाँचवाँ कर्मग्रन्थ	160/-
8.	आओ संस्कृत सीखें भाग-2	400/-	49.	छठा-कर्मग्रन्थ	210/-
9.	दंडक सूत्र विवेचन	90/-	50.	नित्य देववंदन	निशुल्क
10.	प्रवचन का अमृत	200/-	51.	संबोह-सित्तरि (वैराग्य का अमृत कुंभ)	160/-
11.	पर्युषण अष्टानिका प्रवचन	120/-	52.	श्री सिद्धहेमचन्द्र-शब्दानुशासनम् (भाग:-1)	1170/-
12.	गणधर-संवाद	80/-	53.	श्री सिद्धहेमचन्द्र-शब्दानुशासनम् (भाग:-2)	1040/-
13.	आओ ! उपधान पौषध करें !	130/-	54.	श्री सिद्धहेमचन्द्र-शब्दानुशासनम् (भाग:-3)	900/-
14.	श्री नमस्कार महामंत्र	180/-	55.	श्री सिद्धहेमचन्द्र-शब्दानुशासनम् (भाग:-4)	1270/-
15.	संस्मरण	50/-	56.	श्री भद्रंकर प्रश्नोत्तरी	170/-
16.	आध्यात्मिक पत्र	60/-	57.	अध्यात्मयोगी से प्रश्नोत्तर	160/-
17.	चिंतन का अमृत कुंभ	80/-	58.	योग की आठ दृष्टियाँ	430/-
18.	पंच-प्रतिक्रमण सूत्र (भाग-1)	210/-	59.	10 श्रमण-धर्म	250/-
19.	पंच-प्रतिक्रमण सूत्र (भाग-2)	220/-	60.	साचा माणस बनीए ! (गुजराती)	300/-
20.	पंच-प्रतिक्रमण सूत्र (भाग-3)	125/-	61.	शुभ-संदेश	250/-
21.	पंच-प्रतिक्रमण सूत्र (भाग-4)	135/-	62.	भक्ति से मुक्ति	200/-
22.	विवेकी बनो	90/-	63.	सहनशील बनों (22 परीषह)	180/-
23.	श्रमण क्रिया के मुख्य सूत्र	200/-	64.	आओ ! प्राकृत सीखें भाग-1	350/-
24.	प्रवचन-वर्षा	60/-	65.	आओ ! प्राकृत सीखें भाग-2	300/-
25.	आओ श्रावक बनें !	25/-	66.	नवकार-प्रवचन	180/-
26.	व्यसन-मुक्ति	100/-	67.	जीवन-प्रसंग	360/-
27.	श्रावक जीवन दर्शन	250/-	68.	सात वासुदेव-प्रतिवासुदेव बलदेव	50/-
28.	महावीर प्रभु की पट्टधर परंपरा 58-80	280/-	69.	समाधि मृत्यु	80/-
29.	प्रतिक्रमण उपयोगी संग्रह	80/-	70.	पर्युषण अष्टाह्निका प्रवचन	120/-
30.	समाधि मृत्यु	80/-	71.	प्रतिक्रमण उपयोगी संग्रह	80/-
31.	तीन भाष्य	150/-	72.	श्रमण-हितशिक्षा	250/-
32.	आठ कर्म निवारण पूजाएं	200/-	73.	हृदय प्रदीप (भाग-1)	260/-
33.	तत्त्वार्थ-सूत्र-भाग-1	200/-	74.	हृदय प्रदीप (भाग-2)	260/-
34.	तत्त्वार्थ-सूत्र-भाग-2	200/-	75.	हार्दिक-भावांजलि	210/-
35.	सज्झायों का स्वाध्याय	100/-	76.	हालार-गौरव वज्रसेन-सौरभ	200/-
36.	कोयंबत्तुर-प्रवचन	150/-	77.	आओ ! भाव सामायिक करें !	200/-
37.	दक्षिण भारत प्रवचन	160/-	78.	चिंतन की चांदनी	200/-
38.	विविध देववंदन	100/-	79.	आओ ! संस्कृत सीखें ! भाग-3	360/-
39.	नवतत्त्व विवेचन	110/-			
40.	लघु संग्रहणी	140/-			
41.	समाधि की साधना	300/-			

पुस्तक प्राप्ति स्थान : दिव्य सन्देश प्रकाशन C/o. सुरेन्द्र जैन, Office No. 304, 3rd Floor, बे व्यु बिल्डींग, विंग-ईस्ट बे, डॉ. एम.बी. वेलकर स्ट्रीट, कालबादेवी, मुंबई-400 002. M. 84 84 84 84 51 (only whatsapp)

Kamal PRINTER'S
M. 9820530299